तालसताय की श्रेष्ठ कहानियाँ

तालसताय

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :—

प्रभात प्रकाशन,

मथुरा.

★

अनुवादक

राजनाथ एम० ए०

★

प्रथम संस्करण

१९५६

★

मूल्य

तीन रुपया

★

★

मुद्रक :—

सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस,

मथुरा.

कहानी-क्रम

काकेशस का कैदी	१.
रीछ का शिकार	४३.
बहुत मंहगा	५७.
मूर्ख इवान की कहानी	६४.
दो वृद्ध	१०७.
दो हुसार	१४२.
एक घोड़े की कहानी	२४०.

काकेशस का क़ैदी

झिलिन नामक एक अफसर काकेशस में तैनात फौज में नौकर था।

एक दिन उसे घर से आया हुआ एक ख़त मिला। यह उसकी माँ के पास से आया था जिसने लिखा था—"मैं बुड्ढी होती जा रही हूँ और मरने से पहले अपने बेटे को एक बार और देखना चाहती हूँ। आओ और मुझसे आखिरी सलाम कर मुझे दफना जाओ और फिर, अगर भगवान की इच्छा हो तो मेरा आशीष लेकर फिर नौकरी पर लौट जाना। लेकिन मैंने तुम्हारे लिए एक लड़की ढूँढ़ ली है सो समझदार, भली और थोड़ी सी जायदाद की वारिस हैं। अगर तुम उसे प्रेम कर सको तो उससे शादी कर लेना और घर पर रहना।"

झिलिन ने इस पर विचार किया। यह बिल्कुल सच था कि बुढ़िया की तन्दुरुस्ती बड़ी तेजी से गिरती जा रही थी और शायद उसे अपनी माँ को दुबारा जिन्दा देखने का मौका न मिल सके। उसके लिए जाना ही ठीक रहेगा और अगर लड़की अच्छी हो तो उससे शादी क्यों न कर ली जाय?

इसलिए वह अपने कर्नल के पास गया, छुट्टी मन्जूर कराई अपने साथियों से विदा माँगी, सिपाहियों को जाने की खुशी में चार घड़े वोदका शराब पिलाई और चलने को तैयार हो गया।

इन दिनों काकेशस में युद्ध के बादल छाए हुए थे। रात या दिन में सड़कों पर सफर करना खतरे से खाली नहीं था। अगर कोई रूसी अपने किले से थोड़ी भी दूर घोड़े पर या पैदल जाने की हिम्मत करता तो तातार उसे मार डालते या पकड़ कर पहाड़ियों में ले जाते। इसलिए यह प्रबन्ध किया गया था कि हफ्ते में दो वार सिपाहियों की एक टोली एक क़िले से दूसरे क़िले तक यात्रियों को पहुँचाने के लिए आया जाया करेगी।

गर्मियों के दिन थे। सूरज निकलते निकलते असबाब की गाड़ियों का कारवाँ क़िले के नीचे तैयार खड़ा था। सिपाही बाहर निकले और सब सड़क पर चल दिए। झिलिन घोड़े पर सवार था और सामान की गाड़ियों के साथ एक गाड़ी पर उसका सामान ले जाया जा रहा था। उन्हें सोलह मील जाना था। गाड़ियों का कारवाँ धीरे धीरे चल रहा था। कभी सिपाही रुक जाते, या शायद किसी गाड़ी का एक पहिया निकल जाता या कोई घोड़ा आगे बढ़ने से इन्कार कर देता और तब सबको रुक जाना पड़ता।

दुपहर का सूरज ढल चुका था परन्तु वे लोग आधा रास्ता भी नहीं तय कर पाए थे। धूल उड़ रही थी और मौसम गर्म था। धूप जला रही थी और कहीं भी छाया नहीं दिखाई पड़ती थी, चारों तरफ एक खुला मैदान था—सड़क के किनारे न कोई पेड़ था और न एक भी झाड़ी।

झिलिन आगे आगे चल रहा था। वह सामान की गाड़ियों को पास आ जाने देने के लिए रुक गया। तब उसने सूचना देने वाली तुरही की आवाज अपने पीछे सुनी। कारवाँ फिर रुक गया था। इसलिए वह सोचने लगा। 'क्या यह अच्छा न होगा कि मैं अकेला ही आगे चल दूं? मेरा घोड़ा बहुत अच्छा है। अगर तातार हमला करते हैं तो मैं भाग कर बच सकता हूँ। फिर भी शायद इन्तजार करना ही ज्यादा अच्छा रहेगा।''

वह बैठा हुआ सोच रहा था कि कोस्तिलिन नामक एक घुड़सवार अफसर बन्दूक लिए हुए उसके पास आया और बोला:—

"चलो झिलिन हम लोग अकेले ही आगे बढ़ें। यह भयानक है। मैं भूख से मरा जा रहा हूँ और गर्मी असह्य हो उठी है। मेरी कमीज़ पसीने से तरबतर हो गई है।"

कोस्तिलिन एक मोटा भारी भरकम आदमी था और उसके लाल चेहरे से पसीने की धारें बह रहीं थीं। झिलिन ने कुछ देर सोचा

और फिर पूछा, "तुम्हारी बन्दूक भरी है ?"

"हाँ, भरी है ।"

"अच्छा, तो चलो चलें मगर इस शर्त पर कि दोनों साथ रहेंगे ।"

इस तरह वे लोग बातें करते हुए और चारों तरफ गौर से निगाहें फेंकते हुए मैदान से गुजरने वाली उस सड़क पर आगे बढ़ लिए। वे चारों तरफ दूर दूर तक देख सकते थे। मगर मैदान को पार करने के बाद सड़क दो पहाड़ियों के बीच में स्थित एक घाटी में होकर जाती थी। झिलिन ने कहा: 'अच्छा हो कि हम लोग उस पहाड़ी पर चढ़ कर चारों तरफ देख लें वरना अचानक तातार हम लोगों पर टूट पड़ेंगे।"

परन्तु कोस्तिलिन ने जबाव दिया। "क्या फायदा होगा ? चलो आगे बढ़ें।"

फिर भी झिलिन सहमत नहीं हुआ।

"नहीं," वह बोला; "तुम चाहो तो यहाँ इन्तज़ार कर सकते हो परन्तु मैं तो जाऊँगा और चारों तरफ देखूँगा।" और उसने अपना घोड़ा बायीं तरफ को मोड़ दिया-पहाड़ी पर ऊपर चढ़ने के लिए। झिलिन का घोड़ा शिकारी था और झिलिन को चढ़ाई पर इस तरह ले गया मानो उसके पंख लगे हों। [उसने इसे सौ रूबल में एक झुंड में से बछेड़े के रूप में खरीदा था और खुद ही पाल-पोस कर बड़ा किया था।] वह मुश्किल से पहाड़ी की चोटी तक पहुँचा था कि उसने लगभग तीस तातारों को अपने आगे सौ गज की दूरी पर देखा। जैसे ही उन पर उसकी निगाह पड़ी उसने घोड़ा पीछे मोड़ दिया परन्तु तातारों ने भी उसे देख लिया और पूरी तेजी से उसके पीछे घोड़े छोड़ दिए। दौड़ते हुए उन लोगों ने अपनी बन्दूकें निकाल ली। घोड़ा अपनी पूरी ताक़त से झिलिन को नीचे की तरफ उड़ाए लिए जा रहा था और झिलिन कोस्तिलिन को पुकार रहा था: "अपनी बन्दूक तैयार कर लो।"

और मन ही मन उसने अपने घोड़े से कहा: "मेरे बच्चे मुझे

इस मुसीबत से बाहर निकाल ले चल; लड़खड़ाना मत क्योंकि अगर तू लड़खड़ाया तो सब खेल खत्म हो जायगा। एक बार मैं बन्दूक तक पहुँच गया तो फिर वे मुझे कैदी नहीं बना सकेंगे।"

परन्तु इन्तज़ार करने की बजाय कोस्तिलिन ने जैसे ही तातारों को देखा, वह मुड़ा और पूरी तेज़ी से किले की तरफ भाग लिया अपने घोड़े को कभी इस तरफ चाबुक से मारता और कभी दूसरी तरफ मारता हुआ। धूल में केवल उसके घोड़े की उछलती हुई पूंछ ही दिखाई पड़ रही थी।

झिलिन ने देखा कि चौकसी का यह काम बुरा रहा। बंदूक जा चुकी थी और वह सिर्फ अपनी तलवार से क्या कर सकता था? उसने बच निकलने के इरादे से साथ के सिपाहियों की तरफ अपना घोड़ा मोड़ दिया परन्तु उसका रास्ता रोकने के लिए छः तातार तेजी से बढ़े आ रहे थे। उसका घोड़ा बहुत तेज था परन्तु तातारों के घोड़े इससे भी तेज थे और साथ ही वे लोग उसके रास्ते के बीच में थे। उसने अपने घोड़े की लगाम खींच कर रास्ता बदलने की कोशिश की परन्तु घोड़ा इतना तेज दौड़ रहा था कि रुक न सका और सीधा तातारों की तरफ दौड़ा। उसने एक लाल दाढ़ी वाले तातार को बन्दूक लिए अपनी तरफ चीखते और दाँत निकाले हुए आते देखा।

"आह, "झिलिन ने सोचा—"मैं जानता हूँ कि तुम कितने शैतान हो। अगर तुम मुझे जिन्दा पकड़ लोगे तो मुझे गड्ढे में डाल कर कोड़ों से पीटोगे। मैं जिन्दा हाथ नहीं आऊँगा।"

झिलिन हालांकि कद्दावर नहीं था लेकिन बहादुर था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और यह सोचते हुए उस लाल दाढ़ी वाले तातार पर झपटा कि—"या तो मैं उससे बच कर निकल जाऊँगा या अपनी तलवार से उसे घायल कर दूंगा।"

वह अभी उससे एक घोड़े की दूरी पर था जब कि उस पर

पीछे से गोली चलाई गई और उसका घोड़ा घायल हो गया। घोड़ा अपने पूरे भार को लिए झिलिन को दबाते हुए जमीन पर गिर पड़ा।

उसने उठने की कोशिश की परन्तु दो बदबूदार तातार उसके ऊपर बैठे हुए थे और उसके हाथों को पीठ पीछे बाँध रहे थे। उसने कोशिश की और उन्हें दूर फेंक दिया परन्तु तीन और घोड़ों पर से कूद पड़े और बंदूकों के कुन्दे से उसके सिर पर चोट करने लगे। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया और वह पीछे गिर पड़ा। तातारों ने उसे पकड़ लिया और अपनी जीनों से फालतू रस्सियाँ लेकर उसके हाथों को मरोड़ कर पीछे की तरफ किया और तातारी गाँठ लगा कर बांध दिया। उन्होंने उसकी टोपी गिरा दी, बूट उतार लिए, पूरी खाना तलाशी ली, कपड़े फाड़ दिए और उसका रुपया पैसा और घड़ी छीन ली।

झिलिन ने चारों तरफ अपने घोड़े को देखा। बेचारा घोड़ा एक किनारे पड़ा हुआ था बिल्कुल वैसे ही जैसे कि गिरा था और जमीन को छूने की कोशिश करते हुए अपनी टाँगों को हवा में फटकार रहा था। उसके सिर में एक छेद था और उसमें से काला खून बाहर निकल रहा था जिससे चारों तरफ दो दो फीट तक धूल की कीचड़ सी बन गई थी।

एक तातार घोड़े के पास गया और उस पर से ज़ीन उतारने लगा। घोड़ा अब भी पैर फटकार रहा था इसलिए तातार ने अपना खंजर निकाला और उसकी सांस की नली काट दी। उसके गले से एक सीटी की सी आवाज़ निकली। घोड़ा एक बार तड़फड़ाया और सब समाप्त हो गया।

तातारों ने ज़ीन और तस्मे निकाल लिए। लाल दाढ़ी वाला तातार अपने घोड़े पर चढ़ा और दूसरों ने झिलिन को उसके पीछे ज़ीन पर बैठा दिया। उसे गिरने से रोकने के लिए उन्होंने उसे तातार की कमर साथ के बाँध दिया और फिर वे सब पहाड़ियों की तरफ चल दिए।

इस तरह झिलिन वहाँ बैठा हुआ इधर-उधर हिलता रहा। उसका सिर उस तातार की दम घोंटने वाली बदबूदार पीठ से बारबार टकरा जाता था। वह उस मजबूत पीठ और पुट्ठेदार गर्दन (जिसका पिछला भाग घुटा हुआ और नीला था) के अलावा और कुछ भी नहीं देख पा रहा था। झिलिन का सिर घायल हो चुका था। खून उसकी आँखों के ऊपर सूखकर चिपक गया था और वह जीन पर न तो अपनी बैठक को ही बदल सकता था और न उस खून को ही पोंछने में समर्थ था। उसके हाथ इतने कस कर बांधे गए थे कि उसकी हँसली की हड्डियाँ दर्द करने लगी थीं।

वे बहुत दूर तक पहाड़ियों पर चढ़ते और उतरते रहे। फिर वे एक नदी पर पहुंचे जिसे उथली जगह पर उन्होंने पार किया और फिर एक घाटी में से गुजरने वाला पथरीली सड़क पर आ निकले।

झिलिन ने यह देखने की कोशिश की कि वे लोग कहाँ जा रहे थे परंतु उसकी पलकें खून से चिपक गई थीं और वह मुड़ नहीं सकता था।

शाम का धुंधलका फैलने लगा था। उन्होंने एक दूसरी नदी पार की और एक पथरीली पहाड़ी की बगल में चढ़ने लगे। यहाँ धुंए की गन्ध आ रही थी और कुत्ते भौंक रहे थे। वे एक 'आउल' [एक तातारी गाँव] में पहुंच गये थे।

वहाँ तातार अपने घोड़ों पर से उतरे। तातारी बच्चे आये और खुशी से चीखते और झिलिन पर पत्थर फेंकते हुए उसके चारों तरफ खड़े हो गये।

तातार ने बच्चों को भगा दिया, झिलिन को नीचे उतारा और अपने आदमियों को पुकारा। एक नोगेय* ने, जिसके गालों की हड्डियाँ उठी हुई थी और जो सिर्फ एक कमीज पहने हुए था [और वह भी

---

* एक तातारी उपजाति।

इतनी फटी हुई कि उसकी पूरी छाती नङ्गी दिखाई पड़ रही थी]
उसकी पुकार का जवाब दिया। तातार ने उसे एक हुक्म दिया। वह गया और बेड़ियाँ ले आया। बेड़ियाँ दो शाहबलूत के लट्ठों को लोहे के कड़ों से जोड़कर बनाई गई थीं। एक कड़े में कब्जा और ताला पड़ा हुआ था।

उन्होंने झिलिन के हाथों को खोला, बेड़ी को उसके पैरों में डाला और उसे खींचकर एक खत्ती में ले गए जहाँ उन्होंने उसे भीतर धकेल दिया और दरवाजे पर ताला लगा दिया।

झिलिन खाद के एक ढेर पर गिर पड़ा। वह कुछ देर तक चुपचाप पड़ा रहा फिर अँधेरे में टटोल कर उसने एक मुलायम जगह ढूँढ़ी और वहाँ बैठ गया।

२.

उस रात झिलिन मुश्किल से सो पाया। यह वर्ष का वह भाग था जब रातें छोटी होतीं हैं। दिन की रोशनी दीवाल की एक सन्धि में से शीघ्र ही दिखाई देने लगी। वह उठा, सन्धि को और चौड़ा करने के लिए उसे खुरचा और बाहर झांकने लगा।

उस छेद से उसने पहाड़ी से नीचे की तरफ जाती हुई एक सड़क देखी। दाहिनी तरफ एक तातारी झोंपड़ी थी जिसके पास दो पेड़ थे, देहरी पर एक काला कुत्ता लेटा हुआ था और एक बकरी और मेमने पूंछ हिलाते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। फिर उसने एक जवान तातारी औरत को देखा जो एक लम्बा ढीला-ढाला, चमकीले रङ्गों वाला चोगा, पाजामा और उसके नीचे दिखाई पड़ने वाले ऊँचे बूट पहने हुई थी। उसने अपने सिर पर एक कोट डाल रखा था जिसके ऊपर वह एक धातु का बना हुआ पानी से भरा घड़ा लिये जा रही थी।

वह अपने साथ एक घुटी खोपड़ी वाले छोटे से तातारी लड़के को हाथ पकड़े लिए जा रही थी जो सिर्फ एक कमीज पहने हुए था।

जब वह घडे को सम्हाले हुए चलती थी तो उसके गर्दन के पुट्ठे हरकतें करने लगते थे। यह औरत झोंपडी में पानी लाई और तुरंत ही वह लाल दाढ़ी वाला तातार रेशमी पोशाक पहने हुए बाहर आया। उसकी बगल में एक चांदी की मूंठवाला खञ्जर लटक रहा था, नंगे पैरों में जूते थे और एक ऊँची काली भेड़ की खाल की टोपी सिर पर पीछे की तरफ झुकी हुई रखी थी। वह बाहर आया, अंगड़ाई ली और अपनी लाल दाढ़ी को थपथपाया। कुछ देर खड़ा रहा, अपने नौकर को हुक्म दिया और चल दिया।

फिर दो लड़के अपने घोड़ों को पानी पिला कर लौटते हुऐ सामने से निकले। घोड़ों की नाकें भीगी हुई थीं। घुटी खोपड़ियों वाले कुछ और लड़के सिर्फ कमीजे पहने हुए बिना पाजामे के नङ्ग-धड़ङ्ग बाहर की तरफ दौड़े। वे एक साथ इकट्ठे हुए, खत्ती के पास आए, एक टहनी उठाई और उसे इस दरार में घुसेड़ने लगे। झिलिन जोर से चीख पड़ा। बच्चे चिल्लाये और लापरवाही से इधर-उधर भाग गए। भागते समय उनके नंगे घुटने धूप में चमक रहे थे।

झिलिन बहुत प्यासा था, उसका गला चटक रहा था और उसने सोचा "अगर वे लोग सिर्फ आते चाहे भलेही मुझे एक नजर देखने के लिये ही सही।"

तब उसने किसी को खत्ती का ताला खोलते हुए सुना। लाल दाढ़ी वाला तातार भीतर घुसा। उसके साथ एक छोटा, साँवला, चमकीली काली आँख, लाल गाल और छोटी दाढ़ी वाला आदमी और था। उसका चेहरा खिला रहता था और वह हमेशा हँसता रहता था। यह आदमी दूसरे से भी ज्यादा कीमती पोशाक पहन रहा था। वह सुनहरी गोट वाली नीले रेशम की पोशाक, पेटीमें एक बड़ा रुपहली खंजर, रुपहरी कामदार लाल मोरक्को चमड़े के स्लीपर और उनके ऊपर भारी मोटे जूतों का एक जोड़ा और सिर पर सफेद भेड़ की खाल की टोपी पहने हुए था।

लाल दाढ़ी वाला तातर भीतर घुसा, कुछ बुदबुदाया जैसे कि गुस्से में हो और अपने खंजर से खेलता और झिलिन की तरफ कनखियों से भेड़िये की तरह घूरता हुआ दरवाजे की चौखट का सहारा लेकर खड़ा हो गया। साँवला व्यक्ति, चुस्त और खुशदिल और इस तरह चलता हुआ मानो स्प्रिंग लगी हों, सीधा झिलिन के पास आया। उसके सामने पाल्थी मार कर बैठ गया, उसके कंधों को थपथपाया और अपनी बोली में तेजी से बोलने लगा। उसके दाँत दिखाई देते थे। वह बराबर आँख मारता रहा, जीभ चटकाता रहा और बराबर दुहराता रहा-"अच्छा रूस, अच्छा रूस।"

झिलिन एक भी शब्द नहीं समझ सका परन्तु बोला—"पानी! मुझे पीने को पानी दो।"

साँवला आदमी सिर्फ हँसा। "अच्छा रूस" उसने कहा और फिर अपनी भाषा में बातें करने लगा।

झिलिन ने अपने हाथों और होठों से इशारे किये कि वह पीने के लिए कुछ चाहता है।

साँवला आदमी समझ गया और हँसा। फिर उसने दरवाजे से बाहर देखा और किसी को पुकारा—"दीना!" एक छोटी लड़की दौड़ती हुई भीतर आई। वह लगभग तेरह साल की छरहरी, दुबली-पतली लड़की थी। उसका चेहरा उस साँवले तातार के चेहरे से मिलता था। यह साफ था कि वह उसकी लड़की थी। उसकी आँखें भी स्वच्छ और काली थीं और चेहरा देखने में सुन्दर था। वह चौड़ी आस्तीनों और बिना कमरबंद का एक लम्बा नीला गाऊन पहने हुए थी। उसके गाऊन की गोट, सामने के हिस्से और आस्तीनों पर लाल मगजी लगी हुई थी। वह पाजामा और स्लीपर पहने हुई थी और स्लीपरों के ऊपर ऊँची एड़ी के मजबूत जूते पहन रखे थे। गले में चाँदी के रूसी सिक्कों का एक हार पड़ा हुआ था। सिर खुला था और उसके काले बाल एक

रिबन से बँधे हुए थे और सुनहरी लेस और चाँदी के सिक्कों से उनका श्रृङ्गार किया गया था।

उसके बाप ने कोई हुक्म दिया। वह दौड़ी गई और एक धातु का जग लिये हुए लौटी। उसने झिलिन को पानी दे दिया और सिकुड़ कर इस तरह बैठ गई कि उसके घुटने उसके सिर से जा लगे और वहाँ बैठी हुई वह आँखें फाड़ कर झिलिन को पानी पीते हुए देखने लगी मानो वह एक जङ्गली जानवर हो।

जब झिलिन ने खाली जग उसे वापस लौटाया तो वह अचानक एक जङ्गली बकरी की तरह, इस तरह पीछे की तरफ उछल पड़ी कि जिसे देखकर उसका बाप हँसने लगा। बाप ने उसे कुछ और लाने के लिये भेज दिया। उसने जग उठाया, बाहर दौड़ी और एक गोल तख्ते पर बिना खमीर वाली कुछ रोटियाँ लिये हुए वापस आई और फिर आँखें फाड़कर उसकी तरफ देखती हुई सिकुड़ कर बैठ गई।

फिर तातार लोग चले गए और दुबारा ताला बंद कर दिया।

कुछ देर बाद वह नेगोय आया और बोला—"आद्या, मालिक, आद्या!"

वह भी रूसी भाषा नहीं जानता था। झिलिन सिर्फ इतना ही समझ सका कि उससे कहीं जाने के लिये कहा जा रहा था।

झिलिन नेगोय के पीछे-पीछे चल दिया परंतु लंगड़ाता जा रहा था क्योंकि बेड़ियाँ उसके पैरों को इस तरह जकड़े हुए थीं जिससे वह बड़ी मुश्किल से कदम उठा पाता था। खत्ती से बाहर निकलने पर उसने लगभग दस घरों वाला एक तातारी गाँव और छोटे गुम्बज वाली एक तातारी मस्जिद देखी। एक घर के सामने कसे कसाये तीन घोड़े खड़े हुए थे। छोटे बच्चे उनकी लगामें पकड़े खड़े थे। वह साँवला तातार इस घर से बाहर निकला और झिलिन को अपने पीछे आने का इशारा करने लगा। फिर वह हँसा, अपनी भाषा में कुछ बोला और वापस घर में लौट गया।

झिलिन भीतर घुसा। कमरा सुन्दर था। दीवालें मिट्टी से चिकनी बना दी गई थीं। सामने वाली दीवाल के पास पंखों के चमकीले रंग के गद्दों का ढेर लगा हुआ था। बगल की दीवालों पर कीमती कालीन लटके हुए थे और उन पर बन्दूकें, पिस्तौलें और तलवारें जो सब चांदी से मढ़ी हुई थीं, लटक रही थीं। एक दीवाल से बिल्कुल सटी हुई कच्चे फर्श के बराबर ऊँची एक छोटी सी अंगीठी बनी हुई थी। फर्श भी अनाज साफ करने की जगह की तरह बिल्कुल साफ था। एक कोने में एक लम्बी चौड़ी जगह पर रुंयेदार चमड़ा बिछा हुआ था जिस पर कम्बल बिछे हुए थे और इन कम्बलों पर कोमल पंखों से भरे हुए तकिए पड़े थे। और इन पाँच तकियों पर पाँच तातार बैठे हुए थे—साँवला, लाल बालों वाला और तीन मेहमान। वे लोग अपने घर के भीतर पहनने वाले स्लीपर पहने हुए थे और हरेक ने अपने पीछे एक एक तकिया लगा रखा था। उनके सामने एक गोल तख्ते पर बाजरे की रोटियाँ, एक प्याले में पिघलाया हुआ मक्खन और एक सुराही में 'बुजा' अर्थात् तातारी बियर रखी हुई थी। वे लोग मक्खन और रोटी दोनों ही अपने हाथों से उठा उठा कर खा रहे थे।

साँवला व्यक्ति उछल पड़ा और झिलिन को एक तरफ बैठाने का हुक्म दिया—कालीन पर नहीं बल्कि खाली धरती पर। फिर वह खुद कालीन पर बैठ गया और अपने मेहमानों से बाजरे की रोटियाँ और 'बुजा' खाने पीने के लिए आग्रह करने लगा। नौकर ने झिलिन को बैठा दिया। उसके बाद उसने अपने ऊपरी जूते उतारे, उन्हें दरवाजे के पास जहाँ और जूते रखे हुए थे, रखा और अपने मालिकों के पास उस रुंए-दार खाल पर बैठ कर उन्हें खाते हुए देखने लगा और साथ ही साथ अपने होठ भी चाटता रहा।

तातारों ने पेट भर कर खाया। एक औरत उसी लड़की की सी पोशाक पहने हुए—एक लम्बा चोगा और पाजामा पहने सिर पर एक

रूमाल बांधे हुए आई और बचा हुआ सामान उठा ले गई और एक सुन्दर तसला और संकरे मुँह वाली एक सुराही उठा लाई। तातारों ने हाथ धोए, हाथ जोड़े और घुटनों के बल बैठ गए। उन्होंने चारों तरफ फूंका और नमाज पढ़ी। इसके बाद जब वे लोग कुछ देर बातें कर चुके तो मेहमानों में से एक झिलिन की तरफ मुड़ा और रूसी भाषा में बातें करने लगा।

"तुम्हें काजी मुहम्मद ने पकड़ा था," उसने कहा और लाल दाढ़ी वाले तातार की तरफ इशारा किया, "और काज़ी मुहम्मद ने तुम्हें अब्दुल मुराद को दे दिया है," उसने साँवले तातार की तरफ इशारा किया। "अब्दुलमुराद अब तुम्हारा मालिक है।"

झिलिन खामोश था। फिर अब्दुल मुराद बातें करने, हंसने, झिलिन की तरफ इशारा करने और दुहराने लगा "बहादुर रूस, अच्छा रूस।"

दुभाषिए ने कहा, "वह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अपने घर खत लिखो और उनसे छुटकारे के लिए रुपया भेजने के लिये कहो और जैसे ही रुपया आ जायगा वह तुम्हें छोड़ देगा।"

झिलिन ने क्षण भर सोचा और बोला-"वह कितना रुपया मांगता है?"

तातारों ने कुछ देर आपस में बातें कीं और तब दुभाषिए ने कहा—"तीन हजार रूबल।"

"नहीं," झिलिन बोला, "मैं इतना नहीं दे सकता।"

अब्दुल उछला और हाथ हिलाते हुए झिलिन से बातें करने लगा, पहले ही की तरह यह सोचते हुए कि वह समझ जायगा। दुभाषिए ने अनुवाद किया, "तुम कितना दोगे?"

झिलिन ने सोचा और बोला, "पाँच सौ रूबल।" यह सुनकर तातार जल्दी जल्दी बातें करने लगे। अब्दुल लाल दाढ़ी वाले पर खीज उठा और इतनी जल्दी जल्दी बोलने लगा कि उसके मुँह से झाग निकलने

लगे। लाल दाढ़ी वाले ने सिर्फ अपनी आँखें सिकोड़ीं और जबान चटखाई।

कुछ देर बाद वे लोग खामोश हुए और दुभाषिए ने कहा—
"मालिक के लिए पाँच सौ रूबल काफी नहीं होंगे। उसने तुम्हारे लिए खुद दो सौ दिए हैं। काजी मुहम्मद उसका कर्जदार था और अब्दुल ने तुम्हें कर्ज के भुगतान में ले लिया है। तीन हजार रूबल! इससे कम में काम नहीं चलेगा। अगर तुम लिखने से इन्कार करोगे तो तुम्हें एक गढ़े में डाल दिया जायगा और कोड़ों से मार लगाई जायगी।"

"उँह!" झिलिन ने सोचा, "जितना ही ज्यादा कोई इनसे डरता है उतना ही नतीजा खराब निकलता है"

इसलिए वह उछल कर खड़ा हो गया और बोला, "तुम उस कुत्ते से कह दो कि अगर वह मुझे धमकाने की कोशिश करेगा तो मैं कुछ भी नहीं लिखूंगा और उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। मैं तुम कुत्तों से कभी भी नहीं डरा और न कभी डरूँगा।"

दुभाषिए ने अनुवाद किया और फिर वे लोग एक साथ बोलने लगे। वे लोग बहुत देर तक बड़बड़ाते रहे और तब वह साँवला व्यक्ति उछला, झिलिन के पास आया और बोला—"ढिजिट रूस, ढिजिट रूस!" (उनकी भाषा में 'ढिजिट' का अर्थ है, 'बहादुर') और हँसा और दुभाषिए से कुछ कहा जिसने अनुवाद किया: "एक हज़ार रूबल से वह सन्तुष्ट हो जायगा।"

झिलिन अड़ा रहा: "मैं पाँच सौ से ज्यादा नहीं दूँगा और अगर तुम मुझे मार डालोगे तो तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा।"

तातारों ने कुछ देर आपस में बातें कीं फिर नौकर को कुछ लाने के लिए भेजा और कभी दरवाजे की तरफ और कभी झिलिन की तरफ देखने लगे। नौकर लौटा और उसके पीछे एक मोटा, नंगे पैर, चिथड़े पहने हुए आदमी आया जिसके पैरों में भी बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं।

झिलिन आश्चर्य से स्तम्भित रह गया: यह कोस्तिलिन था।

वह भी पकड़ लिया गया था। उन्हें पास पास बैठा दिया गया और वे लोग एक दूसरे से जो घटना घटी थी बताने लगे। जब वे लोग बातें, कर रहे थे तातार उन्हें खामोशी के साथ देख रहे थे। झिलिन ने, जो कुछ उसके साथ बीता था, बताया। और कोस्तिलिन ने बताया कि किस तरह उसका घोड़ा रुक गया था, उसकी बन्दूक का निशाना चूक गया था और इसी अब्दुल ने उसके पास पहुँच कर उसे गिरफ्तार कर लिया था।

अब्दुल उछला, कोस्तिलिन की तरफ इशारा किया और कुछ बोला। दुभाषिए ने बताया कि वे दोनों अब एक ही मालिक से सम्बन्ध रखते हैं और जो पहले छुटकारे का रुपया दे देगा उसे ही पहले आजाद कर दिया जायगा।

"अच्छा सुनो," उसने झिलिन से कहा, "तुम नाराज हो उठते हो परन्तु तुम्हारा साथी सीधा है। उसने घर लिख दिया है और वे लोग पाँच हजार रूबल भेज देंगे। इसलिए उसे अच्छा खाना दिया जायगा और उसके साथ अच्छा वर्ताव किया जायगा।"

झिलिन ने जवाब दियाः "मेरा साथी जो चाहे सो कर सकता है, हो सकता है कि वह अमीर हो मगर मैं नहीं हूँ। जैसा कि मैंने कहा है वैसा ही होना चाहिए। मुझे मार डालो, अगर तुम चाहो—तुम्हें इससे कुछ भी नहीं मिलेगा, लेकिन मैं पाँच सौ रूबल से ज्यादा के लिए नहीं लिखूँगा।"

वे लोग चुप थे। अचानक अब्दुल उछल पड़ा, एक छोटा सा बक्स लाया, एक कलम, स्याही और कागज का टुकड़ा निकाला, उन्हें झिलिन को दिया उसके कन्धे को थपथपाया और इशारा किया कि वह लिखे। वह पाँच सौ रूबल लेने के लिए राजी हो गया था।

"जरा ठहरो!" झिलिन ने दुभाषिए से कहा, "उससे कहो कि वह हमें अच्छा खाना दे, हमें अच्छे कपड़े और बूट दे और हम दोनों को एक साथ रहने दे। यहाँ हम लोगों के लिए अधिक आनन्दप्रद

रहेगा । उसे हमारे पैरों में से इन बेड़ियों को निकाल देना चाहिए।" और झिलिन ने अपने मालिक की तरफ देखा और हँस पड़ा।

मालिक भी हंसा, दुभाषिए की बातें सुनीं और बोला: "मैं उन्हें अच्छे से अच्छे कपड़े दूंगा; एक लबादा और पैरों में ठीक आने वाले शानदार बूट दूंगा। मैं उन्हें राजकुमारों की तरह खाना खिलाऊँगा, अगर वे चाहें तो एक साथ उस खत्ती में रह सकते हैं। मगर मैं बेड़ियाँ नहीं खोल सकता वर्ना वे भाग जायेंगे। फिर भी उन्हें रात को हटा दिया जाया करेगा।" वह उछला और यह कहते हुए झिलिन के कन्धे को थपथपाने लगा: "तुम अच्छा, मैं अच्छा।"

झिलिन ने खत लिखा परन्तु पता गलत लिख दिया जिससे कि यह अपने गन्तव्य स्थान पर न पहुँच सके, खुद यह सोचते हुए कि मैं भाग जाऊँगा !

झिलिन और कोस्तिलिन को वापिस खत्ती में ले जाया गया और उन्हें कुछ भूसा, एक पानी की सुराही, कुछ रोटी, दो पुराने लबादे और कुछ फटे हुए फौजी बूट—जो निश्चित रूप से रूसी सिपाहियों की लाशों पर से उतार लिए गए थे—दे दिये गए। रात को उनके पैरों की बेड़ियाँ खोल दी गईं और उन्हें खत्ती में बन्द कर ताला लगा दिया गया।

३.

झिलिन और उसका मित्र इस तरह पूरे एक महीने तक रहते रहे। मालिक हमेशा देखता और कहता: "तुम इवान, अच्छा ! मैं अब्दुल अच्छा।" मगर वह उन्हें बुरा खाना देता था जिसमें बाजरे के आटे की बिना खमीर वाली चपटी रोटियाँ और कभी बिना पकाया सना हुआ आटा होता था।

कोस्तिलिन ने दुबारा घर खत लिखा। वह रुपये के आने के इन्तजार में ऊँघने और प्रतीक्षा करने के अलावा और कुछ भी नहीं करता

था। वह कई दिनों तक खत्ती में पड़ा हुआ सोता रहता या खत आने के इन्तजार में दिन गिनता रहता।

झिलिन जानता था कि उसका खत किसी के भी पास नहीं पहुँचेगा इसलिए उसने दूसरा खत नहीं लिखा। उसने सोचाः मुझे छुड़ाने के लिए मेरी माँ इतना रुपया कहाँ पा सकेगी? असलियत यह है कि मैं जो कुछ भेजता हूँ वह उसी पर गुजर बसर करती है। अगर उसे पाँच सौ रूबल इकट्ठे करने पड़े तो वह पूरी तरह से बर्बाद हो जायगी। भगवान की कृपा से मैं भाग निकलूँगा।"

इसलिए वह भागने की स्कीम बनाता हुआ मौका देखता रहा।

वह गाँव में सीटी बजाता हुआ घूमता, या काम करने बैठ जाता। मिट्टी के खिलौने बनाता या डालियों की टोकरियाँ बुनता क्योंकि झिलिन अच्छा दस्तकार था।

एक बार उसने एक नाक, हाथों और पैरों वाली गुड़िया बनाई। उसे तातारी चोगा पहनाया और छत पर रख दिया। जब तातारी औरतें पानी लाने के लिए बाहर आईं तो मालिक की लड़की दीना ने उस गुड़िया को देखा और औरतों को बुलाया जिन्होंने अपने घड़े उतार कर नीचे रख दिए और खड़ी खड़ी उसकी तरफ देखने और हँसने लगीं। झिलिन ने गुड़िया उतारी और उनकी तरफ बढ़ा दी। वे हँसी मगर उसे लेने की हिम्मत नहीं कर सकीं। उसने गुड़िया नीचे रख दी और खत्ती में चला गया—यह देखने के लिए कि क्या होता है।

दीना गुड़िया के पास दौड़ी गई, चारों तरफ देखा, उसे उठाया और भाग गई।

सुबह दिन निकलने पर झिलिन ने बाहर देखा। दीना घर से बाहर आई और गुड़िया के साथ चौखट पर बैठ गई। गुड़िया को उसने लाल कपड़े पहना रखे थे और उसे बच्चे की तरह झुला रही थी—एक तातारी लोरी गाती हुई। एक बुढ़िया बाहर आई, उसे डाटा और गुड़िया

को छीन कर उसके टुकड़े कर दिए तथा दीना को काम करने भेज दिया।

परन्तु झिलिन ने दूसरी गुड़िया बनाई, पहली से भी अच्छी और दीना को दे दी। एक बार दीना एक छोटी सी सुराही लाई, उसे जमीन पर रखा, झिलिन की तरफ गौर से देखती हुई बैठ गई और सुराही की तरफ इशारा करती हुई हँसने लगी।

"इसे इतनी खुशी किस बात से हो रही है ?" झिलिन ताज्जुब करने लगा। उसने सुराही को उठा लिया, यह सोचते हुए कि इसमें पानी होगा परन्तु वह दूध निकला। उसने दूध पी लिया और बोला—"यह अच्छा है!"

दीना कितनी खुश थी! "अच्छा, इवान, अच्छा!" वह बोली और उछल कर ताली बजाने लगी। फिर सुराही उठा कर भाग गई। उसके बाद वह हर रोज चुपचाप उसके लिए थोड़ा सा दूध ले आती।

तातारी लोग बकरी के दूध से एक तरह का पनीर बनाते हैं जिसे अपने घरों की छतों पर सुखाते हैं। दीना कभी कभी चुरा कर यह पनीर उसे दे जाती थी। एक बार जब अब्दुल ने एक भेड़ मारी तो दीना अपनी आस्तीन में छिपा कर गोश्त का एक टुकड़ा उसे दे गई। वह सिर्फ इतना करती कि चीजों को पटक देती और भाग जाती।

एक दिन बहुत जोर का तूफान आया और एक घन्टे तक मूसलाधार पानी पड़ता रहा। सब नाले उतरा उठे। नदी के छिछले भाग में पानी चढ़ता चढ़ता सात फीट तक ऊँचा चढ़ गया और धारा इतनी तेज बह उठी कि पत्थर भी बहने लगे। चारों तरफ छोटी छोटी नदियाँ सी उमड़ पड़ीं और पहाड़ों में होने वाला गड़गड़ाहट का शोर लगातार होता रहा। जब तूफान खत्म हो गया तो गाँव की सड़क पर नाला सा बहने लगा। झिलिन ने अपने मालिक से एक चाकू मांग लिया और इसकी मदद से उसने एक छोटा सा बेलन बनाया और थोड़े से छोटे छोटे तख्ते काट कर

एक पहिया तैयार किया जिसमें दो गुड़िया बांध दीं—एक एक दोनों तरफ। छोटी लड़कियाँ कुछ कपड़ों की कतरनें उठा लाईं और उसने उन गुड़ियों में से एक को किसान के तथा दूसरी को किसान-औरत के से कपड़े पहना दिए। फिर उन्हें अपनी अपनी जगह बांध दिया और पहिए को इस तरह लगाया जिससे कि पानी की धार से वह घूमने लगे। पहिए ने घूमना शुरू किया और गुड़ियायें नाचने लगीं।

सारा गाँव आकर इकट्ठा हो गया। छोटे लड़के और लड़कियाँ, तातारी मर्द और औरतें, सब आए और आश्चर्य करने लगे।

"आह, रूस! आह, इवान!"

अब्दुल के पास एक रूसी दीवाल-घड़ी थी जो टूट गई थी। उसने झिलिन को बुलाया और उसे दिखाया। "इसे मुझे दो; मैं इसकी मरम्मत कर दूंगा," झिलिन ने कहा।

उसने चाकू से उसे खोल डाला, पुर्जों को अलग छांटा और फिर उन्हें यथास्थान जमा दिया और घड़ी ठीक चलने लगी।

मालिक बहुत खुश हुआ और उसे अपनी एक पुरानी पोशाक भेंट की जिसमें छेद ही छेद थे। झिलिन को उसे स्वीकार करना पड़ा। जो कुछ भी हो वह रात को चादर की तरह उसे ओढ़ तो सकता था।

उसके बाद झिलिन की शोहरत बढ़ने लगी और तातार दूर दूर के गाँवों से कभी बन्दूक या पिस्तौल का ताला और कभी घड़ी ठीक कराने के लिए लाने लगे। उसके मालिक ने उसे कुछ औजार दे दिए—संडसी, बर्मा और एक रेती।

एक दिन एक तातार बीमार पड़ गया और वे लोग झिलिन के पास यह कहते हुए आए—"चलो और उसे ठीक कर दो!" झिलिन डाक्टरी के बारे में कुछ भी नहीं जानता था परन्तु वह देखने गया और अपने आप सोचने लगा, "शायद वह किसी तरह ठीक हो जाय।"

वह खत्ती में वापस आया, बालू में कुछ पानी मिलाया और फिर तातारों की उपस्थिति में उस पर कुछ शब्द बुदबुदाए और बीमार आदमी को पीने के लिए दे दिया। उसके सौभाग्य से वह ठीक हो गया।

झिलिन कुछ कुछ उनकी बोली समझने लगा और कुछ तातारों से उसकी जान पहचान हो भी गई। जब उन्हें उसकी जरूरत पड़ती, वे पुकारते—'इवान ! इवान !' फिर भी कुछ उसकी तरफ कनखियों से देखते मानों जंगली जानवर को देख रहे हों।

लाल दाढ़ी वाला तातार झिलिन से कुढ़ता था। जब कभी वह उसे देखता भौंहें चढ़ाता और मुड़ जाता या गालियाँ देता। वहाँ एक बुड्ढा आदमी और था जो गाँव में नहीं रहता था मगर पहाड़ी के नीचे से ऊपर आया करता था। झिलिन ने उसे सिर्फ उस समय देखा जब वह मस्जिद को जा रहा था। उसका कद छोटा था और वह टोपी के चारों तरफ एक सफेद कपड़ा बांधे रहता था। उसकी दाढ़ी और मूछें कतरी रहती थीं और बरफ की तरह सफेद थीं। उसका चेहरा झुर्रीदार और ईंट की तरह लाल था। उनकी नाक गरुड़ की तरह मुड़ी हुई थी, उसकी कंजी आँखों में निर्दयता झलकती थी और दो दाढ़ों को छोड़ कर उसके एक भी दाँत नहीं था। वह साफा बाँधे, लकड़ी के सहारे झुका हुआ चलता और चारों तरफ भेड़िये की तरह घूरता रहता। अगर वह झिलिन को देख पाता तो गुस्से से बफरता और पीठ मोड़ लेता।

एक बार झिलिन पहाड़ी से नीचे यह देखने उतरा कि यह बुड्ढा कहाँ रहता है। वह पगडंडी पर चलता चला गया और पत्थर की दीवाल से घिरे हुए एक छोटे से बाग के पास आ निकला। दीवाल के पीछे उसने चेरी और खूबानी के पेड़ और चपटी छत्त वाली एक झोंपड़ी देखी। वह और नजदीक आया और उसने पुआल के बने हुए मधुमक्खी के छत्ते और मधुमक्खियों को चारों तरफ भनभनाते हुए देखा। वह बुड्ढा

घुटनों के बल झुका हुआ एक छत्ते के साथ कुछ कर रहा था। झिलिन देखने के लिए आगे झुका और उसकी बेड़ियां खड़खड़ा उठीं। बुड्ढा पीछे की तरफ मुड़ा और चीख कर उसने पेटी से एक पिस्तौल निकाली और झिलिन पर दाग दी। झिलिन किसी तरह पत्थर की दीवाल की आड़ लेकर बच गया।

बुड्ढा झिलिन के मालिक के पास शिकायत करने गया। मालिक ने झिलिन को बुलाया और हंसता हुआ बोलाः "तुम इस बुड्ढे के घर क्यों गए थे?"

"मैंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, मैं सिर्फ यह देखना चाहता था कि यह कैसे रहता है।"

मालिक ने, जो कुछ झिलिन ने कहा था, दुहरा दिया।

परन्तु बुड्ढा गुस्से में था। उसने फुसकार छोड़ी और अपनी दाढ़ें दिखाते हुए झिलिन की तरफ घूंसा दिखा दिखाकर बड़बड़ाता रहा।

झिलिन पूरी बातें नहीं समझ सका परन्तु उसने अनुमान लगाया कि वह अब्दुल से कह रहा था कि उसे रूसियों को गाँव में नहीं रखना चाहिए वरन् उन्हें मार देना चाहिए। अन्त में बुड्ढा वापस चला गया।

झिलिन ने मालिक से पूछा कि यह बुड्ढा कौन था।

"वह एक बड़ा आदमी है," मालिक ने कहा। "वह हम लोगों में सबसे बहादुर था। उसने बहुत से रूसियों को मारा था और किसी समय बहुत मालदार था। उसके तीन बीवियाँ और आठ बेटे थे और वे सब एक ही गाँव में रहते थे। फिर रूसी आए और उन्होंने गाँव को बर्बाद कर दिया और उसके सात बेटे मार डाले। सिर्फ एक बेटा बचा और उसने रूसियों को आत्म-समर्पण कर दिया। बुड्ढा गया और स्वयं भी आत्म-समर्पण कर दिया और रूसियों के साथ तीन महीने रहा। तीन महीने बाद उसे अपना बेटा मिला, उसे उसने अपने हाथों जान से

मार दिया और फिर बच कर भाग आया। उसके बाद उसने लड़ना छोड़ दिया और खुदा की इबादत करने मक्का चला गया। इसीलिए वह साफा पहनता है। जो मक्का हो आता है हाजी कहलाने लगता है और साफा पहनता है। वह तुम लोगों को पसन्द नहीं करता। वह मुझे तुमको मार डालने के लिए कहता है। मगर मैं तुम्हें मार नहीं सकता। मैंने तुम्हारे लिए धन दिया है और दूसरी बात यह कि मैं तुम्हें प्यार करने लगा हूँ, इवान। मारना तो दूर रहा अगर मैंने तुमसे वायदा न कर लिया होता तो मैं तुम्हें यहाँ से जाने भी नहीं देता।" और वह रूसी भाषा में यह कहते हुए हँसने लगा, "तुम इवान अच्छा; मैं अब्दुल अच्छा।"

४

झिलिन इस तरह एक महीने वहाँ रहा। दिन में वह गाँव में बेकार घूमता रहता या कोई हाथ का काम किया करता परन्तु रात को जब गाँव में पूर्ण निस्तब्धता छा जाती वह खत्ती का फर्श खोदा करता। यह खुदाई का काम आसान नहीं था क्योंकि वहाँ पत्थर थे मगर वह उन्हें रेती की मदद से काट डालता। आखिरकार उसने बाहर निकलने लायक एक बड़ा सा छेद दीवाल के नीचे बना लिया।

"काश कि मैं यहाँ की ज़मीन से परिचित होता," उसने सोचा, "और इस बात से कि मुझे किस तरफ जाना है! परन्तु कोई भी तातार मुझे नहीं बताएगा।"

इसलिए उसने एक दिन ऐसा चुना जबकि उसका मालिक बाहर गया हुआ था और वह भोजन के उपरान्त गाँव की पीछे वाली पहाड़ी पर चढ़ने और चारों तरफ का निरीक्षण करने के लिए चल दिया। परन्तु घर छोड़ने से पहले मालिक हमेशा अपने लड़के को झिलिन पर निगाह रखने और उसे नजरों से ओझल न होने देने की आज्ञा दे जाया करता था। इसलिए वह लड़का यह चीखता हुआ झिलिन के पीछे दौड़ा--

"मत जाओ ! अब्बा इसकी आज्ञा नहीं देते । अगर तुम वापस नहीं आओगे तो मैं पड़ोसियों को बुला दूंगा ।"

झिलिन ने उसे फुसलाने की कोशिश की और कहा: "मैं दूर नहीं जा रहा हूँ—मैं सिर्फ इस पहाड़ी पर चढ़ना चाहता था। मैं एक रूखड़ी खोजना चाहता हूँ—बीमार आदमियों का इलाज करने के लिए। अगर तुम चाहो तो मेरे साथ आ सकते हो । मैं इन बेड़ियों के पड़े रहते कैसे भाग सकता हूँ ? कल मैं तुम्हारे लिए एक तीर-कमान बना दूंगा ।"

इस तरह उसने लड़के को राजी कर लिया और दोनों चल दिए। पहाड़ी को देखने से उसकी चोटी ज्यादा दूर नहीं लगती थी। परन्तु पैरों में बेड़ियाँ पड़ी रहने से उसे चलने में तकलीफ होती थी । झिलिन ऊपर चढ़ता चला गया । वह चोटी पर पहुँचने के लिए सिर्फ इतना ही कर सका । वहाँ वह बैठ गया और चारों तरफ की ज़मीन को गौर से देखने लगा । खत्ती के पीछे दक्षिण की तरफ एक घाटी थी जिसमें घोड़ों का एक झुंड चर रहा था और घाटी की तलहटी में एक और तातारी गाँव दिखाई दे रहा था । उसके परे एक ऊँची पहाड़ी थी और उसके बाद एक पहाड़ी और थी । इन पहाड़ियों के मध्य, दूर दिखाई देने वाली नीलिमा में जंगल थे और उससे भी और आगे पहाड़ थे जो बराबर ऊँचे उठते चले गये थे । उनमें सबसे ऊँचा चीनी जैसी सफेद बर्फ से ढका हुआ था और एक बर्फीली चोटी और सबसे ऊपर उठी हुई थी । पूरब और पच्छिम की तरफ ऐसी और भी पहाड़ियाँ थीं और घाटियों में जगह जगह बसे हुए गाँवों में से धुँआ उठ रहा था। "आह" उसने सोचा, "यह सब तातारी प्रदेश हैं ।" और वह रूस की तरफ मुड़ा । अपने पैरों के नीचे उसने एक नदी और छोटे छोटे बागों से घिरा हुआ वह तातारी गाँव देखा जिसमें वह रहता था । उसे नदी किनारे बैठ कर कपड़े धोती हुई तातारी स्त्रियां छोटी गुड़ियों की तरह दिखाई दे रही थीं । गाँव के परे एक पहाड़ी थी, दक्षिण वाली पहाड़ी से नीची और उससे परे जंगलों से

भली प्रकार ढकी हुई दो पहाड़ियाँ और थीं। और इनके बीच में एक सपाट नीला मैदान और उस मैदान में आगे बहुत दूर कोई चीज थी जो धुँए के बादल की तरह लग रही थी। झिलिन ने याद करने की कोशिश की कि जब वह किले में रहता था तो सूरज किधर निकलता और किधर डूबता था और उसने देखा कि इसमें कोई सन्देह नहीं था—वह रूसी किला इसी मैदान में होना चाहिए। जब वह भागेगा तो इन्हीं दो पहाड़ियों के बीच होकर उसे अपना रास्ता अपनाना पड़ेगा।

सूरज डूबने लगा था। सफेद बर्फीले पहाड़ लाल हो गए और काली पहाड़ियाँ और भी काली हो उठीं। घाटी में से धुन्ध उठने लगी और वह घाटी वाला मैदान जिसमें उसने उस रूसी किले के होने की कल्पना की थी, डूबते हुए सूरज की लाली से ऐसा लगने लगा जैसे उसमें आग लग गई हो। झिलिन ने गौर से देखा। उसे घाटी में चिमनी के धुँए की तरह कोई चीज कांपती हुई सी लगी और उसे विश्वास हो गया कि रूसी किला वहीं था।

देर हो गई थी। मुल्ला की अजान सुनाई पड़ी। जानवर घर लौट रहे थे, गाएं रंभा रही थीं और लड़का बराबर कहता रहा, "घर चलो!" परन्तु झिलिन जाना नहीं चाहता था।

अन्त में, आखिरकार, वे वापस लौटे। "अच्छा," झिलिन ने सोचा, "अब जब कि मुझे रास्ता मालूम हो गया है भाग जाने का समय आ गया।" उसने उसी रात भागने की सोची। रात अंधेरी थी—चांद धुंधला पड़ गया था। परन्तु दुर्भाग्य से तातार लोग उसी शाम को लौट आए। आम तौर पर वे लोग खुश होते हुए जानवरों को आगे आगे हांकते हुए लौटते थे। परन्तु इस बार उनके पास जानवर नहीं थे। वे सिर्फ एक तातार का शव लेकर घर लौटे थे—लाल दाढ़ी वाले के भाई को लेकर जो मारा गया था। वे लोग उदास वापस आए और उसे दफनाने के लिए इकट्ठे हो गए। झिलिन भी देखने के लिए आया।

उन्होंने बिना कफन के मुर्दे को लिनिन के टुकड़े में लपेटा, उसे गाँव से बाहर ले गए और पेड़ों के नीचे घास पर लिटा दिया। मुल्ला और बड़े बूढ़े आए। उन्होंने अपनी टोपियों के चारों तरफ कपड़े लपेटे, जूते उतारे और मुर्दे के पास बराबर एड़ियों के बल बैठ गए।

मुल्ला सामने था। उसके पीछे साफा बांधे हुए तीन बुड्ढे कतार में बैठे थे और उनके पीछे और तातार थे। सब लोग आँखें नीची किए खामोश बैठे थे। बहुत देर तक सब इसी तरह बैठे रहे। अन्त में मुल्ला ने सिर उठाया और कहा: "अल्लाह!" उसने सिर्फ वही एक शब्द कहा और उन सब ने फिर अपनी आँखें नीची कर लीं और बहुत देर तक फिर खामोश रहे। वे लोग बिना हिला डुले और बिना किसी तरह का शब्द किए चुपचाप बैठे रहे।

मुल्ला ने फिर अपना सिर उठाया और बोला: "अल्लाह!" और उन सब ने दुहराया: "अल्लाह अल्लाह!" और फिर खामोश हो गए।

मुर्दा घास पर चुपचाप पड़ा हुआ था और वे लोग इतने खामोश बैठे थे मानों खुद भी मुर्दे हों। उनमें से एक भी नहीं हिला। वहां पर वृक्षों की पंक्तियों के हिलने से उत्पन्न मरमराहट के अतिरिक्त और कोई भी शब्द नहीं सुनाई पड़ता था। फिर मुल्ला ने एक प्रार्थना दुहराई और वे सब उठ खड़े हुए। उन्होंने मुर्दे को हाथों पर उठा लिया और जमीन में बने हुए एक गढ़े की तरफ ले चले। वह मामूली गढ़ा नहीं था परन्तु जमीन के अन्दर गुफा की तरह खोदा गया था। उन्होंने मुर्दे को हाथ और पैरों से पकड़ कर उठाया, उसे झुकाया और जमीन के नीचे बैठी हुई स्थिति में हाथ जोड़े हुए, धीरे धीरे नीचे उतारने लगे।

नोगेय कुछ हरी घास ले आया जिसे उन्होंने उस गढ़े के मुँह में ठूंस दिया और जल्दी से उसे मिट्टी से ढक कर जमीन को एकसा समतल बना दिया और कब्र के ऊपर एक पत्थर ऊँचा करके गाड़ दिया।

फिर उन लोगों ने मिट्टी को पैरों से दबाया और दुबरा कब्र के सामने कतार में बहुत देर तक खामोश बैठे रहे।

अन्त में वे उठे "अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!" कहा और गहरी सांसें भरीं!

लाल दाढ़ी वाले तातार ने बुड्ढों को धन दिया; फिर वह भी उठा, एक हन्टर उठाया, अपने माथे पर हन्टर से तीन बार चोट की और घर चला गया।

दूसरे दिन सुबह झिलिन ने उस लाल दाढ़ी वाले तातार को तीन और आदमियों के साथ एक घोड़ी को गाँव से बाहर ले जाते हुए देखा। जब वे लोग गाँव से बाहर निकल आए तो लाल दाढ़ी वाले तातार ने अपनी पोशाक उतारी और अपनी मजबूत बाहों की आस्तीन ऊपर चढ़ाते हुए उठाया। फिर उसने एक खंजर निकाला और एक पत्थर पर घिस कर तेज किया। दूसरे दो तातारों ने घोड़ी का सिर ऊपर उठाया और उसने उसका गला काट दिया, उसे नीचे गिराया और अपने बड़े-बड़े हाथों से उसकी चमड़ी उतारनी शुरू कर दी। औरतें और लड़कियां आईं और उन्होंने उसकी अंतड़ियाँ और भीतरी हिस्सा साफ करना शुरू किया। घोड़ी के टुकड़े टुकड़े कर दिए गए और उन्हें झोपड़ी में ले जाया गया और सारा गाँव उस तातार की झोपड़ी पर मृतक-भोज खाने के लिए इकट्ठा हो गया।

तीन दिन तक वे लोग घोड़ी का मांस खाते रहे, 'बुजा' पीते रहे और मृतक के लिए प्रार्थना करते रहे। सब तातार घर पर थे। चौथे दिन खाने के समय झिलिन ने उन्हें जाने की तैयारी करते देखा। घोड़े बाहर लाए गए, वे लोग तैयार हुए और लगभग दस व्यक्ति (लाल दाढ़ी वाला उनमें था) घोड़ों पर चले गए परन्तु अब्दुल घर पर रह गया। चाँद निकलना शुरू हुआ था और रातें अभी अंधेरी थीं।

"आह !" झिलिन ने सोचा, "आज की रात निकल भागने की है।" और उसने कोस्तिलिन से कहा परन्तु कोस्तिलिन के साहस ने उसका साथ नहीं दिया।

"हम कैसे भाग सकते हैं ?" वह बोला। "हम रास्ता तक तो जानते नहीं।"

"मैं रास्ता जानता हूँ," झिलिन ने कहा।

"अगर तुम जानते हो तो भी," कोस्तिलिन बोला, "हम लोग एक रात में किले तक नहीं पहुँच सकते।"

"अगर नहीं पहुँच सकते," झिलिन ने उत्तर दिया, "तो हम लोग जंगल में सो रहेंगे। यह देखो, मैंने थोड़ा सा पनीर बचा लिया है। यहां बैठ कर औंघने से क्या फायदा ? अगर वे तुम्हारे छुटकारे का धन भेज देते हैं तो अच्छी बात है परन्तु मान लो वे इतना धन इकट्ठा नहीं कर पाये तो ? तातार लोग आजकल नाराज हैं क्योंकि रूसियों ने उनका एक आदमी मार डाला है। वे हमें मारने की बातें करते हैं।"

कोस्तिलिन ने इस पर सोचा।

"अच्छा, चलो, चलें," वह बोला।

५.

झिलिन रेंग कर उस छेद में घुसा, उसे और चौड़ा किया जिससे कोस्तिलिन भी निकल आए और फिर वे लोग बैठ कर गाँव में पूरी खामोशी छा जाने का इन्तजार करने लगे।

जैसे ही खामोशी छा गई, झिलिन दीवाल के नीचे रेंगा, बाहर निकला और फुसफुसा कर कोस्तिलिन से बोला, "आओ !" कोस्तिलिन रेंगता हुआ निकला परन्तु ऐसा करने में उसका पैर एक पत्थर पर पड़ गया और आवाज हुई। मालिक के पास एक बहुत बदमाश पहरा देने वाला धारीदार कुत्ता था जिसका नाम उल्याशिन था। झिलिन ने कुछ

दिन पहले से ही उसे रोटी खिलाने की सावधानी बरती थी। उल्याशिन ने आवाज सुनी और भौंकने तथा कूदने लगा। दूसरे कुत्ते भी यही करने लगे। झिलिन ने धीरे से सीटी बजाई और उसके सामने पनीर का एक टुकड़ा फेंक दिया। उल्याशिन झिलिन को जानता था। उसने दुम हिलाई और भौंकना बन्द कर दिया।

परन्तु मालिक ने कुत्ते का भौंकना सुन लिया था वह अपनी झोंपड़ी में से उसे पुकारने लगा "हे, हे, उल्याशिन!"

फिर भी झिलिन ने उल्याशिन के कान के पीछे खुजाया और कुत्ता खामोश होकर उसके पैरों से अपना शरीर रगड़ते हुए दुम हिलाने लगा।

वे एक कोने में कुछ देर तक छिपे बैठे रहे। फिर चारों तरफ निस्तब्धता छा गई। सिर्फ एक भेड़ ने अपने बाड़े में खाँसा और गढ़े में पड़े हुए पत्थरों पर पानी गिरने की आवाज आती रही। चारों तरफ अंधेरा था। ऊपर तारे चमक रहे थे और डूबता हुआ चांद पहाड़ी के पीछे दिखाई दे रहा था—उसकी नोकें ऊपर की तरफ थीं। घाटियों में दूध की तरह सफेद कोहरा छा रहा था।

झिलिन उठा और अपने साथी से बोला, "अच्छा, दोस्त, चलो।"

वे रवाना हुए। मगर वे कुछ कदम ही आगे बढ़े होंगे कि उन्हें छत पर से मुल्ला की अजान सुनाई दीः "अल्लाह, बिस्मिल्लाह! अल्-रहमान!" इसका मतलब यह था कि लोग बाग मस्जिद की तरफ जा रहे होंगे। इसलिए वे फिर बैठ गए—एक दीवाल के पीछे छिप कर और बहुत देर तक इन्तजार करते रहे जब तक कि सब लोग निकल न गए। अन्त में फिर खामोशी छा गई।

"अच्छा अब! भगवान हमारी मदद करे!" उन्होंने अपने ऊपर क्रॉस का पवित्र निशान बनाया और एक बार फिर चल पड़े। वे एक

अहाते में होकर गुजरे और नीचे नदी के किनारे पहाड़ी की तरफ गए, नदी पार की और घाटी में चलने लगे।

कोहरा घना था मगर सिर्फ जमीन के पास। ऊपर तारे पूरी तरह चमक रहे थे। झिलिन तारों की मदद से रास्ता ढूढ़ता हुआ चल रहा था। कुहरे में ठंडक थी और चलना आसान लग रहा था। सिर्फ उनके बूट तकलीफ दे रहे थे क्योंकि वे घिसे और टूटे हुए थे। झिलिन ने अपने बूट उतार कर फेंक दिए और एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदता हुआ तथा तारों से रास्ता मालूम करता हुआ नंगे पैर चल दिया। कोस्तिलिन पिछड़ने लगा।

"धीरे चलो," उसने कहा, "इन दुष्ट बूटों ने मेरे पैर छालों से भर दिए हैं।"

"उन्हें उतार दो!" झिलिन बोला, "उनके बिना चलने में आसानी रहेगी।"

कोस्तिलिन नंगे पैरों चलने लगा परन्तु उसे और भी तकलीफ होने लगी। पत्थरों से उसके तलवे कट जाते थे और वह पिछड़ने लगा। झिलिन ने कहा: "अगर तुम्हारे पैर घायल हो जाते हैं तो घाव फिर भर जांयगे मगर अगर तातार हमें पकड़ लेते हैं और मार डालते हैं तो यह और भी ज्यादा बुरा होगा।"

कोस्तिलिन ने जवाब नहीं दिया परन्तु बराबर कराहता हुआ आगे बढ़ने लगा।

घाटी में होकर उन्हें बहुत दूर तक चलना था। तब उन्होंने दाहिनी तरफ कुत्तों को भौंकते हुए सुना। झिलिन रुका, चारों तरफ देखा और हाथों से टटोल टटोल कर पहाड़ी पर चढ़ने लगा।

"आह!" उसने कहा, "हम लोग रास्ता भूल गए और दाहिनी तरफ बहुत ज्यादा बढ़ आए हैं। यहां दूसरा तातारी गाँव है जो मुझे

पहाड़ी पर से दिखाई दे रहा है। हमें पीछे लौट कर बायीं तरफ वाली उस पहाड़ी पर जाना चाहिए। वहां जंगल जरूर होना चाहिए।

परन्तु कोस्तिलिन बोला: "एक मिनट ठहरो! मुझे जरा दम ले लेने दो। मेरे पैर सारे कट गए हैं और लहूलुहान हो रहे हैं।"

"परवाह मत करो, दोस्त! वे दुबारा ठीक हो जांयगे। तुम्हें और धीरे से उछल कर चलना चाहिए, इस तरह।"

और झिलिन पीछे दौड़ा और बांयी ओर पहाड़ी पर खड़े जंगल की तरफ मुड़ा।

कोस्तिलिन अब भी कराहता जाता था और पीछे रह गया था। झिलिन ने सिर्फ कहा: "हुश!" और आगे बढ़ता गया।

वे पहाड़ी के ऊपर पहुंच गए। वहां उन्हें एक जंगल मिला जैसा कि झिलिन ने कहा था। वे जंगल में घुस गए और कंटीली झाड़ियों में होकर आगे बढ़ने लगे जिससे उनके कपड़े फट गए। अन्त में वे एक पगडंडी पर आ निकले और उसी के सहारे आगे बढ़े।

"ठहरो!" उन्होंने पगडंडी पर घोड़े की टापों की आवाज सुनी और रुक कर सुनने लगे। घोड़े की टापों की सी आवाज सुनाई दी परन्तु फिर बन्द हो गयी। वे आगे बढ़े और फिर उन्हें वही आवाज सुनाई दी जब उन्होंने गौर से सुना तो यह भी बन्द हो गयी। झिलिन रेंगता हुआ उसके पास पहुँचा और उसने पगडंडी के उस हिस्से पर जहां अंधेरा कम था कोई चीज खड़ी देखी। यह घोड़े की तरह लग रहा था फिर भी बिल्कुल घोड़ा जैसा नहीं था और उस पर एक अजीब सी चीज थी जो बिल्कुल आदमी की तरह नहीं थी। उसने इसे फुरफुराते सुना। "यह कौन हो सकता है?" झिलिन ने धीरे से सीटी बजाई और वह जानवर पगडंडी छोड़ कर झाड़ियों की तरफ भागा। जंगल लकड़ियों के टूटने की आवाज से भर उठा मानों तूफान टहनियों को तोड़ता हुआ तेजी से चला जा रहा हो।

कोस्तिलिन इतना डर गया कि जमीन पर गिर पड़ा। परन्तु झिलिन हँसा और बोला: "यह तो एक बारहसिंगा है। तुम सुन नहीं रहे हो कि अपने सींगों से वह टहनियों को तोड़ता चला जा रहा है। हम उससे डर रहे थे और वह हमसे डर रहा है।

वे आगे बढ़े। ध्रुवतारा डूबने लगा था। सुबह करीब थी और उन लोगों को यह भी मालूम नहीं था कि वे लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं या नहीं। झिलिन ने सोचा कि यह वही रास्ता है जिससे तातार उसे लाये थे और यह कि वे अब भी रूसी किले से लगभग सात मील दूर थे। परन्तु उसके पास सही रास्ता जानने का कोई निश्चित साधन नहीं था और रात में कोई भी आसानी से रास्ता भूल जाता है। कुछ देर बाद वे लोग एक खुली जगह में आ निकले। कोस्तिलिन बैठ गया और बोला: "जो तुम्हारी मर्जी हो सो करो, मैं अब आगे नहीं चल सकता। मेरे पैर साथ नहीं दे रहे।"

झिलिन ने उसे समझाने की कोशिश की।

"नहीं, मैं वहाँ कभी नहीं पहुँच सकूंगा, मेरे बस का नहीं।"

झिलिन गुस्सा हो गया और उससे कठोरतापूर्वक बोला:

"अच्छा, तो मैं अकेला आगे चला जाऊँगा। गुड बाई।"

कोस्तिलिन उछल पड़ा और साथ चल दिया। वे तीन मील और बढ़ गए। जङ्गल में कोहरा और भी घना होकर जम गया था। उन्हें अपने सामने गज भर दूर भी नहीं दिखाई पड़ता था और तारे धुंधले पड़ गये थे।

अचानक उन्हें अपने सामने घोड़े की टापें सुनाई पड़ीं। उन्होंने उसके नालों का पत्थरों पर बजना सुना। झिलिन जमीन पर सीने के बल सीधा लेट गया और जमीन से कान लगाकर सुनने लगा।

"हाँ, यही बात है। एक घुड़सवार हमारी तरफ आ रहा है।"

वे पगडंडी छोड़कर भाग दिए और झाड़ियों में घुसकर इन्तजार

करने लगे। झिलिन सड़क की तरफ रेंगा और देखा कि एक तातार घोड़े पर सवार गायों को हांकता और कुछ गुनगुनाता हुआ चला जा रहा था। तातार आगे निकल गया। झिलिन कोस्तिलिन के पास वापस लौट आया।

"भगवान उसे हम से दूर ले गया। उठो, चलो, आगे बढ़ें।"

कोस्तिलिन ने उठने की कोशिश की परन्तु गिर पड़ा।

"मैं नहीं चल सकता। यकीन करो मेरे वस का नहीं! मुझमें शक्ति नहीं रही।"

वह शरीर से भारी और तगड़ा था और पसीने से बुरी तरह नहा रहा था। कुहरे से ठिठुर कर और पैरों के लहूलुहान हो जाने से वह पूरी तरह लंगड़ा हो गया था।

झिलिन ने उसे उठाने की कोशिश की कि कोस्तिलिन अचानक चीख पड़ा: "ओह! कितना दर्द होता है।"

झिलिन का दिल बैठ गया।

"तुम चीख किसलिए रहे हो? वह तातार अभी पास ही है। उसने तुम्हारी आवाज सुन ली होगी।" और उसने अपने आप सोचा: "यह सचमुच पूरी तरह पस्त हो चुका है। अब मैं उसके साथ क्या करूँ? अपने साथी को छोड़ कर भाग जाना तो ठीक नहीं रहेगा।"

"अच्छा, अब उठो और मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। अगर तुम दरअसल नहीं चल सकते तो मैं तुम्हें ले चलूँगा।"

उसने सहारा देकर कोस्तिलिन को उठाया और उसकी जांघों के नीचे अपने हाथ लगा दिए। फिर वह उसे लिए हुए पगडंडी पर चलने लगा।

"भगवान के लिए," झिलिन ने कहा, "अपने हाथों से मेरी गर्दन मत घोंटो! मेरे कन्धे पकड़े रहो।"

झिलिन को अपना बोझा बहुत भारी लगा। उसके पैर भी घायल हो गए थे और वह थक चुका था। रह रह कर वह कोस्तिलिन को सम्हालने के लिए रुकता, उसे झटका देकर ऊपर उठाता जिससे वह सीधा बैठ सके और फिर आगे चल देता।

उस तातार ने कोस्तिलिन की चीख को अवश्य सुन लिया होगा। झिलिन ने अचानक किसी को अपने पीछे घोड़ा भगाते हुए और तातारी भाषा में चीखते हुए सुना। वह झाड़ियों की तरफ झपटा। तातार ने अपनी बन्दूक उठाई और गोली छोड़ी परन्तु उनके नहीं लगी। वह अपनी भाषा में चिल्लाया और सड़क पर दौड़ता हुआ चला गया।

"अब हम लोग मारे गए, दोस्त!" झिलिन ने कहा—"वह कुत्ता हम लोगों को ढूंढने के लिए तातारों को इकट्ठा करेगा। अगर हम लोग यहाँ से दो मील और आगे नहीं निकल जाते तो मारे गए समझो।" और उसने अपने आप सोचा—"इस शैतान को मैंने अपने ऊपर क्यों सवार करा लिया? अगर मैं अकेला होता तो बहुत पहले निकल गया होता।"

"तुम अकेले चले जाओ," कोस्तिलिन बोला। "तुम मेरे लिए अपने को क्यों बर्बाद करते हो?"

"नहीं, मैं नहीं जाऊँगा। अपने साथी को छोड़कर भागना ठीक नहीं होगा।"

उसने फिर कोस्तिलिन को अपने कन्धे पर चढ़ा लिया और लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा। वे इस तरह आधा मील या कुछ अधिक आगे बढ़ गए। वे अब भी जंगल में थे और उन्हें उसका छोर नहीं दिखाई दे रहा था। परन्तु इस समय तक कोहरा हटने लगा था और बादल घिरते से लग रहे थे। तारे अब दिखाई नहीं देते थे। झिलिन पूरी तरह थक चुका था। वे लोग पगडंडी के किनारे पत्थरों से घिरे हुए एक

झरने के पास पहुँचे। झिलिन रुका और कोस्तिलिन को नीचे उतार दिया।

"मुझे थोड़ा सा सुस्ता लेने दो और पानी पी लेने दो," उसने कहा, "और आओ, थोड़ा सा पनीर खालें। अब ज्यादा दूर नहीं होगा।"

परन्तु वह मुश्किल से पानी पीने के लिये झुका ही था कि उसने अपने पीछे टापों की आवाज सुनी। फिर वे लोग झाड़ियों की तरफ लपके और एक सीधी ढलान के नीचे लेट गये।

उन्होंने तातारों की आवाजें सुनीं। तातार ठीक उसी जगह रुक गए जहाँ से उन लोगों ने पगडंडी छोड़ी थी। तातारों ने कुछ बातें कीं और फिर ऐसा लगा कि उन्होंने सूंघ कर पता लगाने के लिये एक कुत्ता छोड़ा। टहनियों के चटकने को आवाज हुई और झाड़ियों के पीछे से एक अजीब सा कुत्ता सामने निकल आया। वह रुका और भौंकने लगा।

फिर तातार (वे भी अजनबी थे) चढ़कर पास आये, झिलिन और कस्तिलिन को पकड़ा, बाँधा, घोड़ों पर बैठाया और उन्हें लेकर चल दिये।

जब वे लगभग दो मील चल चुके तो उन्हें अब्दुल—उनका मालिक, दो और तातारों के साथ मिला। उन अजनबियों से बातें करने के बाद उसने झिलिन और कोस्तिलिन को अपने दो घोड़ों पर बैठाया और उन्हें गाँव वापिस ले आया।

अब्दुल इस समय न तो हँसा और न उसने एक भी शब्द कहा।

दिन निकलते तक वे लोग गाँव में वापस आ गए और उन्हें सड़क पर बैठा दिया गया। बच्चे चारों तरफ से चीखते-चिल्लाते, पत्थर फेंकते और उन्हें कोड़ों से पीटते हुए इकट्ठे हो गए।

तातार एक घेरे में इकट्ठे हुए। पहाड़ी की तलहटी में रहने वाला वह बुड्ढा भी वहाँ था। वे बहस करने लगे और झिलिन ने उन्हें यह विचारते हुए सुना कि उसके और कोस्तिलिन के साथ क्या किया जाय।

कुछ बोले कि उन्हें पहाड़ों में और भीतर भेज दिया जाय परन्तु उस बुड्ढे ने कहा "उन्हें मार डालना चाहिये।"

अब्दुल ने यह कहते हुए उसका विरोध किया : "मैंने उनके लिये रुपये दिए हैं और मुझे उनके बदले में छुटकारे का धन मिलना चाहिये।" परन्तु उस बुड्ढे ने कहा : "वे तुम्हें कुछ भी नहीं देंगे और सिर्फ मुसीबत लाएँगे। रूसियों को खिलाना पाप है। उन्हें मार डालो और इस मामले को खत्म करो।"

वे तितर-बितर हो गए। जब वे लोग चले गए तो मालिक झिलिन के पास आया और बोला : "अगर तुम्हारे छुटकारे का रुपया एक पखवारे के भीतर नहीं भेजा गया तो मैं तुम्हारे कोड़े लगाऊँगा, और अगर तुमने फिर भागने की कोशिश की तो मैं तुम्हें कुत्ते की मौत मार डालूँगा। एक खत लिखो और ठीक तरह से लिखो।

उनके पास कागज लाया गया और उन्होंने खत लिख दिए। उनके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गईं और उन्हें मस्जिद के पीछे लगभग बारह फीट लम्बे चौड़े गहरे गढ़े के पास ले जाया गया जिसमें उन्हें उतार दिया गया।

६.

अब उनकी जिन्दगी बड़ी मुश्किल हो उठी थी। उनकी बेड़ियाँ कभी नहीं खोली जाती थीं और उन्हें साफ हवा में भी नहीं निकाला जाता था। बिना पकाया हुआ आटा उनके पास फेंक दिया जाता था मानो वे कुत्ते हों और एक टीन में पानी लटका दिया जाता था।

गढ़ा संकरा और सीलनदार था। उसमें से भयानक बदबू आती थी। कोस्तिलिन बुरी तरह बीमार पड़ गया। उसकी देह सूज गई और दर्द करने लगी। वह पूरे समय या तो कराहता रहता या सोता रहता।

झिलिन भी निराश हो उठा, उसने देखा कि स्थिति खराब है। वह भागने का कोई उपाय नहीं सोच सका।

उसने एक सुरङ्ग खोदने की कोशिश की परन्तु मिट्टी रखने के लिए कोई जगह नहीं थी। उसके मालिक ने यह देख लिया और उसे मार डालने की धमकी दी।

एक दिन वह गढ़े के फर्श पर बैठा हुआ आजादी के बारे में सोच रहा था और बुरी तरह निराश हो रहा था कि अचानक उसकी गोदी में एक रोटी गिरी, फिर दूसरी गिरी और उसके बाद बेरों की वर्षा सी होने लगी। उसने ऊपर देखा और वहाँ दीना बैठी हुई थी। दीना ने उसकी तरफ देखा, हँसी और भाग गई। और झिलिन ने सोचा : "क्या दीना मेरी मदद नहीं कर सकती ?"

उसने गढ़े में थोड़ी सी जगह साफ करली, कुछ मिट्टी इकट्ठी की और खिलौने बनाना शुरू कर दिया। उसने आदमी, घोड़े और कुत्ते बनाए, यह सोचते हुए कि : "जब दीना आएगी तो मैं इन्हें उसके पास ऊपर फेंक दूँगा।"

परन्तु दीना दूसरे दिन नहीं आई। झिलिन ने घोड़ों के टापों की आवाज सुनी। कुछ लोग उधर से गुजरे और तातार मस्जिद के पास एक मीटिंग करने के लिए इकट्ठे हुए। वे लोग चीखे और बहस की। 'रूसी' शब्द कई बार दुहराया गया। उसे उस बुड्ढे की आवाज सुनाई दी। यद्यपि वह यह नहीं समझ सका कि क्या कहा गया परन्तु उसने अनुमान लगाया कि रूसी फौजें कहीं पास ही थीं और यह कि तातार इस बात से भयभीत होकर कि वे यहाँ गाँव में आ सकते हैं, यह नहीं जान सके कि इन कैदियों का क्या करें।

कुछ देर बातें करने के बाद वे लोग चले गए। एकाएक उसने अपने सिर के ऊपर खसखसाहट की आवाज सुनी और उसने दीना को गढ़े के किनारे पर घुटनों को अपने सिर के ऊपर किए उकड़ूँ बैठकर गढ़े

में झांकते देखा। वह नीचे की तरफ इस तरह झुकी हुई थी कि उसके सिर में लगे हुए सिक्के गढ़े के ऊपर झूल रहे थे। उसके नेत्र तारों की तरह चमक रहे थे। उसने अपनी आस्तीन में से पनीर के दो टुकड़े निकाले और उस पर फेंक दिए। झिलिन ने उन्हें उठा लिया और बोला: "तुम पहले क्यों नहीं आई? मैंने तुम्हारे लिए कुछ खिलौने बनाए हैं। लो, लपको!" और उसने एक के बाद एक खिलौने ऊपर फेंकने शुरू कर दिए।

परन्तु दीना ने सिर हिलाया और उनकी तरफ देखा तक नहीं।

"मुझे नहीं चाहिए," वह बोली। वह कुछ देर खामोश बैठी रही और फिर कहने लगी: "इवान, वे तुम्हें मारना चाहते हैं!" और उसने अपने गले की तरफ इशारा किया।

"मुझे कौन मारना चाहता है?"

"अब्बाजान, वह बुड्ढा कहता है कि उसे तुमको जरूर मार डालना चाहिए। परन्तु मुझे तुम्हारे लिए अफसोस हो रहा है।"

झिलिन ने जवाब दिया, "अच्छा, अगर तुम्हें मेरे लिए अफसोस है तो मुझे एक लम्बा बाँस ला दो।"

उसने अपना सिर हिलाया और कहा कि: "मैं नहीं ला सकती।"

उसने हाथ जोड़े और उससे प्रार्थना की: "दीना, महरबानी करके ला दो! प्यारी दीना, मैं तुमसे भीख माँगता हूँ।"

"मैं नहीं ला सकती," उसने कहा, "वे मुझे लाते हुए देख लेंगे। वे सब घर पर हैं।" और वह चली गई।

जब शाम हुई तो झिलिन बैठा हुआ अब भी रह-रह कर ऊपर की तरफ देखता था और आश्चर्य करता था कि क्या होने वाला है। तारे चमक रहे थे परन्तु अभी चाँद नहीं निकला था। मुल्ला की आवाज सुनाई दी फिर चारों तरफ खामोशी छा गई। झिलिन यह सोचते हुए झपकियाँ लेने लगा कि लड़की यह करने में डर जायगी।

अचानक उसने अपने सिर पर मिट्टी का गिरना महसूस किया। उसने ऊपर देखा और एक लम्बे बाँस को गढ़े के सामने वाली दीवार में अटका हुआ देखा। वह कुछ देर तक अटका रहा और फिर खिसकता हुआ नीचे आ गया। झिलिन सचमुच प्रसन्न था। उसने उसे पकड़ लिया और नीचे खींचा। यह एक मजबूत बाँस था, वही जिसे उसने पहले मालिक की छत पर देखा था।

उसने ऊपर देखा। ऊपर दूर आकाश में तारे झिलमिला रहे थे और ठीक गढ़े के ऊपर अँधकार में दीना की आँखें बिल्ली की आँखों की तरह चमक रही थीं। वह गढ़े के किनारे पर नीचे की तरफ झुकी और फुसफुसाई, "इवान ! इवान !" अपने मुँह के सामने हाथ हिलाती हुई यह इशारा करते हुए कि वह धीरे से बोले।

"क्या है ?" झिलिन ने कहा।

"दो को छोड़कर और सब चले गए हैं।"

तब झिलिन ने कहा, "अच्छा, कोस्तिलिन, चलो, एक बार और आखिरी कोशिश करने दो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" परन्तु कोस्तिलिन ने उसकी बात नहीं सुनी।

"नहीं," वह बोला, "यह स्पष्ट है कि मैं यहाँ से निकल नहीं सकता। मैं कैसे जा सकता हूँ जबकि मैं मुश्किल से करवट बदल पाता हूँ ?"

"अच्छा, तो फिर अलविदा ! बुरा मत मानना !" और उन्होंने एक दूसरे के चुम्बन लिए। झिलिन ने बाँस पकड़ा, दीना से उसे पकड़े रहने को कहा और चढ़ना शुरू कर दिया। वह दो एक बार फिसला, बेड़ियाँ परेशान कर रही थीं। कोस्तिलिन ने उसकी मदद की और वह ऊपर पहुँचने में कामयाब हो गया। दीना, अपने नन्हे से हाथों से, पूरी ताकत लगाकर, हँसती हुई, उसकी कमीज खींचने लगी।

झिलिन ने बाँस बाहर निकाला और कहा : "इसे उसी जगह वापस रख आओ दीना, वर्ना उन्हें मालूम हो जायगा और तुम पर मार पड़ेगी।"

वह बाँस को खींचती हुई ले गई और झिलिन पहाड़ी के नीचे चल दिया। जब वह उस खड़ी ढलान पर से उतर गया तो उसने एक नोंकीला पत्थर लिया और बेड़ियों के ताले को तोड़ने की कोशिश की। परन्तु वह एक मजबूत ताला था और वह उसे तोड़ न सका और साथ ही उस तक झुकना बहुत मुश्किल था। फिर उसने किसी को फुर्ती से उछलते हुए पहाड़ी की ढलान पर दौड़ते हुए सुना। उसने सोचा : "निश्चित रूप से दीना फिर आ रही है।"

दीना आई, एक पत्थर उठाया और बोली : "मुझे कोशिश करने दो।"

वह घुटनों के बल बैठ गई और ताला तोड़ने की कोशिश करने लगी परन्तु उसके नन्हें से हाथ छोटी छोटी टहनियों की तरह नाजुक थे और उनमें ताकत नहीं थी। उसने पत्थर फेंक दिया और रोने लगी। फिर झिलिन दुबारा ताले पर जुट गया और दीना उसकी बगल में उसके कन्धे पर हाथ रख कर बैठ गई।

झिलिन ने चारों तरफ देखा और पहाड़ी के पीछे एक लाल रोशनी देखी। चाँद अभी निकल रहा था। "आह!" उसने सोचा, "चाँद निकलने से पहले मुझे घाटी से निकल कर जंगल में पहुँच जाना चाहिए था।" इसलिए वह उठा और पत्थर को फेंक दिया। बेड़ियाँ हों या न हों उसे चलना ही चाहिए।

"अलविदा, दीना प्यारी!" उसने कहा, "मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा।"

दीना ने उसे पकड़ लिया और अपने हाथों से उसके शरीर पर

ऐसी जगह ढूँढ़ने लगी जहां उस पनीर को रख सके जो वह अपने साथ लाई थी। उसने पनीर के टुकड़े उससे ले लिए।

"शुक्रिया, मेरी नन्हीं! जब मैं चला जाऊँगा तो तुम्हारे लिये गुड़िया कौन बनाएगा?" और उसने उसका सिर थपथपाया।

दीना हाथों में अपना मुँह छिपाकर फूट-फूट कर रो उठी। फिर वह एक जवान बकरी की तरह पहाड़ी पर दौड़ती हुई चढ़ गई। उसकी चोटी में गुथे हुए सिक्के उसकी पीठ से टकरा कर बज उठे।

झिलिन ने अपने ऊपर पवित्र क्रास का निशान बनाया, बेड़ियों के ताले को बजने से बचाने के लिए हाथ में पकड़ लिया और अपने बेड़ी वाले पैर को घसीटता और चाँद के निकलने की जगह की तरफ देखता हुआ सड़क पर चल दिया। अब उसे रास्ता मालूम था। अगर वह सीधा चला तो उसे लगभग छः मील चलना पड़ेगा। काश कि वह चाँद के पूरी तरह निकलने से पहले जङ्गल तक पहुँच जाता! उसने नदी पार की। पहाड़ी के पीछे वाली रोशनी सफेद होती जाती थी। अब भी पीछे उसकी तरफ देखता हुआ वह घाटी में चलता चला गया। चाँद अभी दिखाई नहीं दिया था। रोशनी और ज्यादा तेज हो गई और घाटी का एक हिस्सा साफ होता जा रहा था और परछाइयाँ उसके नजदीक आती हुई पहाड़ी की तलहटी की तरफ सिकुड़ती चली जा रही थीं।

झिलिन छाया में छिपता हुआ आगे बढ़ता गया। वह जल्दी कर रहा था परन्तु चाँद उससे भी तेजी से उठ रहा था। दाहिनी तरफ वाली पहाड़ियों की चोटियाँ अब चमक उठी थीं। जैसे ही वह जङ्गल के नजदीक पहुँचा, सफेद चाँद, पहाड़ियों के पीछे से ऊपर उठ आया और दिन की सी रोशनी फैल गई। कोई भी पेड़ों की पत्तियों तक को देख सकता था। पहाड़ी पर चाँदनी छा रही थी परन्तु खामोशी थी मानो जिन्दगी का नामो-निशान तक न हो। नीचे बहने वाली नदी की कलकल ध्वनि के अतिरिक्त और कोई भी शब्द सुनाई नहीं दे रहा था।

बिना किसी से मुठभेड़ हुए झिलिन जंगल में पहुँच गया, एक अँधेरी जगह ढूंढ़ी और बैठकर सुस्ताने लगा।

उसने आराम किया और पनीर का एक टुकड़ा खाया। फिर उसने एक पत्थर ढूंढ़ा और बेड़ियों के ताले को तोड़ने पर जुट गया। उसने अपने हाथ घायल कर लिए परन्तु ताले को नहीं तोड़ सका। वह उठा और सड़क पर चल दिया। एक मील से कुछ ही कम चलने के बाद वह बुरी तरह पस्त हो गया और उसके पैरों में दर्द होने लगा। हर दस कदम के बाद उसे रुकना पड़ता था। "इसके अलावा और कोई चारा नहीं है," उसने सोचा, "जब तक कि मुझ में जरा भी ताकत रहे मुझे इसी तरह घिसटता हुआ आगे बढ़ना है। अगर मैं बैठ गया तो फिर खड़ा भी नहीं हो सकूंगा। मैं किले तक नहीं पहुँच सकता, परन्तु जब दिन निकल आएगा तो मैं जंगल में लेट जाऊँगा, सारा दिन वहीं रहूँगा और रात को फिर चल दूंगा।"

वह सारी रात चलता रहा। घोड़ों पर सवार दो तातार उधर से गुजरे मगर उसने उनकी आवाज बहुत दूर से सुन ली थी इसलिए वह एक पेड़ के पीछे छिप गया।

चाँद पीला पड़ने लगा और ओस गिरने लगी। पौ फटने वाली थी और झिलिन जंगल के आखिरी छोर तक भी नहीं पहुँच पाया था। "खैर," उसने सोचा, "मैं तीस कदम और चलूँगा और फिर पेड़ों की तरफ मुड़ कर वहाँ बैठ जाऊँगा।

वह तीस कदम और चला और उसने देखा कि वह जंगल के छोर पर पहुँच गया है। वह किनारे पर गया। अब पूरी तरह रोशनी हो गई थी और ठीक उसके सामने वह मैदान और किला था। बांयी तरफ, उस ढलान की तलहटी के बिल्कुल पास, एक आग बुझ रही थी और उसमें से उठता हुआ धुंआ चारों तरफ फैलता जा रहा था। आग के चारों तरफ आदमी इकट्ठे थे।

उसने टकटकी बांध कर गौर से देखा और उसे बन्दूकें चमकती हुई दिखाई दीं। वे सिपाही थे—कज्जाक सिपाही।

झिलिन खुशी से भर उठा। उसने अपनी बची खुची ताकत इकट्ठी की और पहाड़ी के नीचे की तरफ दौड़ा, अपने आपसे यह कहते हुए "भगवान न करे कि इस समय मुझे कोई घुड़सवार तातार देख ले, इस खुले मैदान में! मैं पास हूँ फिर भी वहां समय से नहीं पहुँच सकूँगा।"

मुश्किल से उसने यह कहा होगा कि दो सौ गज की दूरी पर, बायीं तरफ एक छोटे से टीले पर उसने तीन तातारों को देखा।

उन्होंने भी उसे देख लिया और झपटे। उसका दिल बैठ गया। उसने अपने हाथ हिलाये और पूरी ताकत से चीखा, "भाइयो, भाइयो, मदद करो!"

कज्जाकों ने उसकी आवाज सुन ली और उनमें से कुछ लोग घोड़ों पर चढ़ कर तातारों का रास्ता काटने के लिए झपटे। कज्जाक दूर थे और तातार पास थे, मगर झिलिन ने भी अपनी आखिरी कोशिश की। बेड़ियों को हाथ से ऊपर उठाकर वह कज्जाकों की तरफ दौड़ा—मुश्किल से यह जानते हुए कि वह क्या कर रहा है। वह अपने ऊपर क्रॉस का निशान बनाता जा रहा था और चिल्ला रहा था, "भाइयो, भाइयो, भाइयो।"

वहाँ लगभग पन्द्रह कज्जाक थे। तातार डर गए और उसके पास पहुँचने से पहले ही रुक गए। झिलिन लड़खड़ाता हुआ कज्जाकों तक पहुँच गया।

उन्होंने उसे चारों तरफ से घेर लिया और सवाल पूछने लगे—"तुम कौन हो? क्या हो? कहाँ के हो?"

परन्तु झिलिन पूरी तरह टूट चुका था और रोने और बार बार 'भाइयो! भाइयो!' दुहराने के अलावा और कुछ भी नहीं बोल सका।

तब सिपाही भागते हुए आए और उसे घेर कर खड़े हो गए—एक ने उसे रोटी दी, दूसरे ने मोथी दी, तीसरे ने वोदका दी; एक उसके चारो तरफ लबादा लपेटने लगा, दूसरा बेड़ियाँ तोड़ने लगा।।

अफसरों ने उसे पहचान लिया और उसके साथ किले पहुँचे। सिपाही उसे वापस आया देखकर खुश थे और उसके साथी उसके चारों तरफ इकट्ठे हो गए।

झिलिन ने अपनी सारी आप-बीती उन्हें सुना दी।

"इस तरह मैं घर गया और शादी की" उसने कहा, "नहीं। यह साफ दिखाई देता है कि भाग्य इसके विपरीत था।"

इस तरह वह काकेशस में नौकरी करता रहा। एक महीना बीतने से पहले ही कोस्तिलिन को रिहा कर दिया गया था—पाँच हजार रूबल छुटकारे के बदले में लेकर। जब वे लोग उसे वापस लाए तो वह अधमरा हो रहा था।

रीछ का शिकार*

हम लोग रीछ का शिकार खेलने गए हुए थे। मेरे साथी ने एक रीछ पर गोली चलाई थी परन्तु इससे सिर्फ उसके गोश्त में घाव लगा था। बरफ पर खून के निशान थे परन्तु रीछ भाग गया था।

हम सब जंगल में यह तय करने के लिए एक जगह इकट्ठे हुए कि हम लोगों को तुरन्त ही रीछ का पीछा करना चाहिए या दो तीन दिन तक इन्तजार करना चाहिए जब तक कि वह फिर एक जगह जमकर रहने लगे। हम लोगों ने रीछ का हांका करने वाले किसानों से पूछा कि क्या उसी दिन रीछ का पता लगाना सम्भव हो सकेगा।

"नहीं यह असम्भव है," रीछ का हांका करने वाले एक बुड्ढे ने कहा, "आप लोगों को रीछ को एक जगह जम जाने देना चाहिए। पाँच दिन के बाद उसे घेरना सम्भव हो सकेगा परन्तु अगर आप इस समय उसका पीछा करते हैं तो आप उसे भयभीत कर और आगे भगा देंगे और वह एक जगह नहीं जमेगा।"

परन्तु एक नौजवान, रीछ का हांका करने वाला, उस बुड्ढे से बहस करने लगा, यह कहते हुए कि इसी समय रीछ को घेरना सम्भव है।

"इस तरह की बरफ पर," उसने कहा, "वह ज्यादा दूर नहीं जायेगा क्योंकि वह एक भारी भरकम मोटा रीछ है। वह शाम से पहले ही कहीं बैठ जायेगा और अगर नहीं बैठता है तो मैं बरफ के जूते पहन कर उसे पकड़ लूंगा।"

मेरा साथी, जिसके मैं साथ था, रीछ का पीछा करने के खिलाफ था और इन्तजार करने की सलाह दे रहा था। मगर मैंने कहा :

---

*यह घटना ताल्स्ताय के साथ सन् १८५८ में घटी थी।

"हमें बहस करने की जरूरत नहीं। तुम जैसा चाहो करो परन्तु मैं देमयान के साथ उसका पीछा करूँगा। अगर हम उसे घेर लेते हैं तो अच्छा है। अगर नहीं घेर पाते तो हमारा कुछ नुकसान नहीं। अभी काफी समय है और हमारे पास आज करने के लिए और कोई काम भी नहीं है।"

इस तरह यही तय हुआ।

अन्य लोग स्लेजों* के पास गए और गाँव को वापस लौट गए। देमयान और मैंने कुछ रोटियाँ लीं और जंगल में पीछे ठहर गए जब वे सब हमें छोड़कर चले गये तो देमयान और मैंने अपनी बन्दूकों की जाँच की और अपने गर्म कोटों के निचले हिस्से को अपनी पेटी से बांध कर, हम लोग रीछ के निशान देखते हुए चल दिए।

मौसम अच्छा था–शीतल और शान्त परन्तु बरफ के जूते पहन कर चलना कठिन था। बरफ गहरी और मुलायम थी। जंगल में यह कहीं भी सख्त नहीं हुई थी और पहले दिन ताजी बरफ पड़ चुकी थी जिससे हमारे बरफ के जूते बरफ में छः इंच तक घुस जाते थे और कभी-कभी और भी गहरे।

रीछ के निशान दूर से दिखाई देते थे और हम लोग यह देख सके कि वह किस तरह गया था। कभी कभी पेट तक बरफ में धंस जाता था और चलता हुआ बरफ में हल सा चलाता गया था। पहले पहल, जब तक कि हम लोग बड़े-बड़े पेड़ों के नीचे थे, हमें उसके निशान दिखाई देते रहे, परन्तु जब छोटी छोटी चीड़ की घनी झाड़ियाँ सी आने लगीं तो देमयान रुक गया।

"अब हमें रास्ता छोड़ देना चाहिए," वह बोला, "शायद वह यहीं कहीं बैठ गया है। आप बरफ से यह देख सकते हैं कि वह यहां बैठा जरूर है। हमें रास्ता छोड़ कर, चक्कर काट कर चलना चाहिए।

*बरफ पर चलने वाली बिना पहियों की गाड़ी।

परन्तु खामोशी के साथ । खाँसना या चीखना मत वर्ना हम उसे डरा कर आगे भगा देंगे ।''

इसलिये रास्ता छोड़कर, हम लोग बांयी तरफ मुड़ गए । परन्तु जब हम लोग लगभग पाँच सौ गज जा चुके थे, हमारे बिलकुल सामने फिर रीछ के निशान दिखाई दिए । हमने उनका अनुसरण किया और वे हमें सड़क पर ले आए । वहाँ हम रुके, सड़क की जांच करते हुए कि रीछ किधर गया था । जगह जगह बरफ पर रीछ के पंजों के निशान थे और जगह जगह किसी किसान के छाल के जूतों के निशान बन रहे थे । यह साफ था कि रीछ गाँव की तरफ गया था ।

जैसे ही हम लोग सड़क पर आगे बढ़े, देमयान बोलाः—

"अब सड़क को देखने से कोई फायदा नहीं । हमें बगल की मुलायम बरफ पर पड़े हुए निशानों से इस बात का पता लगाना चाहिए कि वह बांयी तरफ मुड़ा है या दाहिनी तरफ । वह कहीं न कहीं मुड़ा जरूर होगा क्योंकि वह गांव तक नहीं जायगा ।"

हम लोग सड़क के सहारे सहारे लगभग एक मील तक चले और फिर अपने सामने हमने रीछ के निशानों को सड़क से हटते हुए देखा । हमने इसे गौर से देखा । कितना अद्‌भुत ! यह बिल्कुल रीछ के निशान थे सिर्फ ये सड़क से जंगल की तरफ न जाकर जंगल से सड़क की तरफ आए थे । पंजे सड़क की तरफ थे ।

"यह कोई दूसरा रीछ होगा," मैंने कहा ।

देमयान ने इसे देखा और कुछ देर तक सोचता रहा ।

"नहीं," वह बोला, "यह वही है । उसने चालाकी से काम लिया है और सड़क छोड़ते समय उलटे पैरों से चला है ।"

हमने निशानों का पीछा किया और पाया कि बात ठीक थी ।

रीछ लगभग दस कदम तक उलटा चला था और फिर एक चीड़ के पेड़ के पीछे घूमा था और सीधा चल दिया था। देमयान रुका और बोलाः

"अब हम उसे निश्चित रूप से पकड़ लेंगे। हमारे सामने एक दलदल है और वह वहीं ठहर गया होगा, चलिए, घूम कर चलें।"

हम लोगों ने एक चीड़ की झाड़ी में से होकर रास्ता बनाना शुरू किया। मैं इस समय तक थक चुका था और अब आगे बढ़ना और भी मुश्किल हो रहा था। कभी मैं कोमल झाड़ियों पर फिसल जाता और मेरे बरफ के जूते उनमें फंस जाते; कभी कोई छोटा सा चीड़ का पौधा मेरे पैरों के बीच में आ जाता था। अभ्यास न होने के कारण मेरे बरफ के जूते फिसल जाते और कभी मेरा पैर बरफ से ढके हुए किसी तने या लट्ठे पर पड़ जाता। मैं बुरी तरह थकता जा रहा था और पसीने से नहा रहा था। मैंने अपना रुंएदार कोट उतार लिया। और वहां मेरे साथ देमयान चल रहा था। वह ऐसे फिसलता चला जा रहा था जैसे नाव में बैठा हो। उसके बरफ के जूते मानो अपने आप फिसलते चले जाते थे। उसके पैर न किसी में उलझते और न फिसलते। उसने मेरा रुंएदार कोट भी ले लिया और उसे कन्धे पर डाल लिया और मुझसे आगे बढ़ने की प्रार्थना करता रहा।

हम लोग दो मील और आगे चले और दलदल की दूसरी तरफ आ निकले। मैं पिछड़ता जा रहा था। मेरे बरफ के जूते बराबर फिसल रहे थे और मेरे पैर लड़खड़ा उठे थे। अचानक देमयान, जो मेरे आगे आगे चल रहा था, रुका और उसने अपने हाथ हिलाए। जब मैं उसके पास आया तो वह हाथ से इशारा करता हुआ नीचे झुका और फुसफुसायाः

"आप उस झाड़ी के ऊपर नीलकंठ को चहचहाते हुए देख रहे हैं? यह रीछ की गन्ध दूर से ही पा जाता है। उसे वहीं होना चाहिए।"

हम लोग मुड़े और आधा मील के लगभग और चले और फिर उसी पुराने रास्ते पर आ गए। इस तरह हम लोग रीछ के बिल्कुल पास थे जो अब उसी रास्ते के आसपास होना चाहिए जिसे हम छोड़ आए हैं। हम रुके। मैंने अपनी टोपी उतारी और सारे कपड़े ढीले कर लिए। मुझे इतनी गर्मी महसूस हो रही थी मानो मैं वाष्प-स्नान कर रहा हूँ और इतना भीग गया था जैसे कि पानी में डूबा हुआ चूहा। देमयान का चेहरा भी लाल हो रहा था। उसने आस्तीन से मुँह का पसीना पोंछा।

"अच्छा, सरकार," वह बोला, "हम लोगों ने अपना काम कर लिया और अब थोड़ा आराम करना चाहिए।"

शाम की रोशनी जंगल में होकर लाल दिखाई पड़ने लगी थी। हमने अपने बरफ के जूते उतार लिए और उन पर बैठ गए और अपने झोलों में से कुछ रोटी और नमक निकाला। पहले मैंने थोड़ी सी बरफ खाई और फिर रोटी; और रोटी इतनी अच्छी लगी कि मैंने सोचा कि मुझे जीवन में ऐसी पहले कभी नहीं मिली थी। हम वहाँ बैठे हुए तब तक आराम करते रहे जब तक कि शाम का धुँधलका न छा गया और तब मैंने देमयान से पूछा कि क्या गाँव यहाँ से दूर है।

"हाँ," उसने कहा, "लगभग आठ मील होगा। हम लोग रात को वहाँ चलेंगे परन्तु इस समय हमें आराम करना चाहिए। सरकार, रुंएदार कोट पहन लीजिए वर्ना ठंड लग जायगी।"

देमयान बरफ पर लेट गया और चीड़ की कुछ टहनियाँ तोड़कर उनका एक बिस्तर बनाया। हम दोनों पास पास लेट गए, अपनी बाँहों का तकिया लगाकर। मुझे याद नहीं कि मैं कैसे सो गया। दो घन्टे बाद मैं किसी चीज के चटखने की आवाज सुनकर जाग पड़ा।

मैं इतनी गहरी नींद सोया था कि मुझे यही पता नहीं चला कि मैं कहाँ था। मैंने अपने चारों तरफ देखा। कितना अद्भुत! मैं एक

बड़े से कमरे में था जो पूरा चमक रहा था और जिसके खम्भे सफेद और चमकदार थे और जब मैंने ऊपर की तरफ देखा तो पाया कि एक अत्यन्त ललित सफेद नक्काशीदार गुम्मज है जिसका रंग चमकीला काला है और जिसमें रंगीन रोशनियाँ लगी हुई हैं। अच्छी तरह देखने के बाद मुझे याद आया कि हम लोग जंगल में थे और जिन्हें मैंने एक बड़ा कमरा और खम्भे समझा था वे बरफ और पाले से ढके हुए पेड़ थे और रंगीन रोशनियाँ टहनियों के बीच में से चमकते हुए तारे थे।

रात में पाला पड़ा था। सारी टहनियाँ इससे ढकी हुई थीं। देमयान पाले से ढक गया था, यह मेरे कोट पर जम गया था और पेड़ों पर से नीचे टपक रहा था। मैंने देमयान को जगाया। हम लोगों ने अपने बरफ के जूते पहने और चल दिए। जंगल में पूरी खामोशी थी। हमारे बरफ के जूतों की बरफ पर चलने की आवाज के अलावा और कोई भी आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। सिवाय इसके कि कभी कभी कोई पेड़ पाले के बोझ से टूट कर सारे जङ्गल को गुंजा देता था। सिर्फ एक बार हमने किसी जिन्दा जानवर की आवाज सुनी। कोई चीज हमारे पास फुदकी और भाग गई। मुझे पूरा यकीन हो गया कि यह रीछ था परन्तु जब हम उस जगह पहुँचे जहाँ से आवाज आई थी तो हमें खरगोशों के पैरों के निशान दिखाई पड़े और हमने अनेक 'एस्पन' वृक्ष के पौधे देखे जिनकी छाल खा डाली गई थी। हमने खरगोशों को चौंका दिया था जब वे अपना पेट भर रहे थे।

हम लोग सड़क पर निकल आए और उसी पर चलने लगे—अपने बरफ के जूते पीछे घसीटते हुए। अब चलना आसान लग रहा था। हमारे बरफ के जूते उस सख्त जमीन वाली सड़क पर हमारे पीछे घिसटते हुए आपस में टकरा उठते थे। हमारे बूटों के नीचे बरफ चटकती थी और पाला हमारे चेहरों पर रोंए की तरह जमता जा रहा था। टहनियों के बीच में होकर देखने से ऐसा लगता था मानो तारे हमसे

मिलने के लिए भागे चले आ रहे हों, कभी चमकते, कभी गायब हो जाते जैसे कि सारा आसमान चल रहा हो।

मैंने अपने साथी को सोते पाया परन्तु उसे जगाया और बताया कि कैसे हम लोग रीछ का पता लगा आए हैं। अपने किसान मेजवान से सुबह हांके के लिए आदमी इकट्ठा करने के लिए कह कर हम लोगों ने खाना खाया और सोने के लिए लेट गए।

मैं इतना थक गया था कि अगर मेरा साथी मुझे न जगाता तो दोपहर तक सोता रहता। मैं उछल पड़ा और देखा कि वह कपड़े पहन चुका था और अपनी बन्दूक को ठीक कर रहा था।

"देमयान कहाँ है?" मैंने पूछा।

"जङ्गल में, बहुत देर हुई। वह तुम्हारे बनाए हुए निशानों पर जाकर यहाँ लौट भी आया और अब हाँका करने वालों को देखने गया है।"

मैंने हाथ मुँह धोया और कपड़े पहने और अपनी बन्दूकों में गोलियां भरीं। फिर हम लोग एक स्लेज में बैठे और चल दिए।

गहरा पाला अब भी पड़ रहा था। चारों तरफ शान्ति थी और सूरज दिखाई नहीं दे रहा था। हमारे ऊपर घना कोहरा था और पाले ने अब भी सब चीजों को ढक रखा था।

सड़क पर करीबन दो मील चलने के बाद जैसे ही हम जङ्गल के नजदीक आए हमने एक गुफा में से धुंआ उठता देखा और हम फौरन ही डंडे लिए हुए किसान मर्दों और औरतों के एक झुण्ड के पास पहुँच गए।

हम लोग गाड़ी से उतरे और उनके पास गए। मर्द आलू भून रहे थे, हँस रहे थे और औरतों से बातें कर रहे थे।

देमयान भी वहीं था। जब हम लोग वहाँ पहुंचे वे लोग उठ खड़े हुए और देमयान उन्हें उस घेरे पर तैनात करने के लिए ले चला

जो हम कल बना आये थे। वे लोग एक कतार में चले—मर्द और औरत-सब मिला कर तीस प्राणी। बरफ इतनी गहरी थी कि हमें उनका सिर्फ कमर से ऊपर का हिस्सा ही दिखाई पड़ रहा था। वे जङ्गल की तरफ मुड़े और मैं और मेरा दोस्त उनके पीछे २ चल दिए।

हालांकि उन लोगों के चलने से रास्ता बन गया था फिर भी चलना कठिन था। परन्तु दूसरी बात यह भी थी कि गिरना असम्भव था : जैसे कि दो बरफ की दीवालों के बीच चल रहे हों।

इसी तरह हम लोग लगभग आधा मील चले जबकि हमने एकाएक देमयान को दूसरी तरफ से आते हुए देखा—अपने बरफ के जूतों पर दौड़ते और हम लोगों को अपने साथ आने का इशारा करते हुए। हम उसकी तरफ गए और उसने हमें अपने खड़े होने की जगह दिखाई। मैंने अपनी जगह सँभाली और अपने चारों तरफ देखा।

मेरी बांयी तरफ लम्बे चीड़ के दरख्त थे जिनके बीच में होकर मैंने एक अच्छा सा रास्ता देखा और पेड़ों के पीछे एक काले धब्बे की तरह एक हांका करने वाले को खड़ा देखा। मेरे सामने चीड़ के छोटे पौधों का एक झुरमुट था, आदमी के बराबर ऊँचा। उसकी शाखाएँ बोझ से झुकी हुईं और बरफ से एक दूसरे से गुँथी हुई थीं। जंगल के इस भाग में होकर, भारी बरफ से ढका हुआ और सीधा मेरे खड़े होने की जगह की तरफ आता हुआ, एक रास्ता था। झुरमुट मेरी दाहिनी तरफ तक फैला हुआ था और एक छोटे से खुले मैदान में समाप्त होता था जहाँ मैंने देमयान को मेरे साथी को खड़ा करते हुए देखा।

मैंने अपनी दोनों बन्दूकों की जाँच की और सोचा कि मेरा कहाँ खड़ा रहना ज्यादा अच्छा रहेगा। मेरे पीछे तीन कदम पर एक लम्बा चीड़ का दरख्त था।

"मैं यहीं खड़ा हूंगा," मैंने सोचा, "और फिर मैं अपनी दूसरी बन्दूक को इस पेड़ के सहारे खड़ा कर सकता हूँ।" मैं पेड़ की तरफ

बढ़ा, हर कदम पर घुटनों तक बरफ में धँसता हुआ । मैंने बरफ को पैरों से रौंदा और खड़े होने के लिए एक गज लम्बी चौड़ी जगह साफ कर ली । एक बन्दूक मैंने हाथ में लेली, दूसरी भरी हुई पेड़ के सहारे टिका दी । फिर मैंने अपने खंजर को म्यान से निकाला और फिर उसी में रख दिया, इस बात की जाँच करने के लिए कि जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाल सकूँगा या नहीं ।

जैसे ही मैंने ये तैयारियाँ समाप्त कीं, मैंने देमयान को जङ्गल में चीखते सुना :

"वह उठ खड़ा हुआ है, वह उठ खड़ा हुआ है ।"

और जैसे ही देमयान चिल्लाया, घेरे में खड़े हुए किसानों ने विभिन्न स्वरों में शोर मचाते हुए उत्तर दिया ।

"उठा, उठा, उठा ! ओ ! ओ !" आदमी चिल्लाए ।

"ए, ए, ए !" ऊँची आवाज में औरतें चीखीं ।

रीछ घेरे के भीतर था और जैसे ही देमयान ने उसे आगे खदेड़ा, आदमी चारों तरफ बराबर चीखने लगे । सिर्फ मैं और मेरा दोस्त चुपचाप स्थिर खड़े थे, रीछ का अपनी तरफ आने का इन्तजार करते हुए । जब कि मैं खड़ा हुआ गौर से देख और सुन रहा था, मेरा दिल बुरी तरह धड़क उठा । मैं अपनी बन्दूक को जोर से पकड़े हुए कांपने लगा ।

"अब," मैंने सोचा, "वह अचानक आएगा, मैं निशाना लगाऊँगा, बन्दूक छोड़ूँगा और वह गिर पड़ेगा—"

अचानक, मेरी बांयी तरफ, मगर कुछ दूर पर, मैंने किसी चीज के बरफ पर गिरने की आवाज सुनी । मैंने लम्बे चीड़ के दरख्तों के बीच में से देखा और मुझे लगभग पचास कदम दूर, पेड़ के तनों के पीछे, कोई बड़ी और काली चीज दिखाई पड़ी । मैंने निशाना साधा, और इन्तजार करने लगा, यह सोचते हुए :

"क्या वह और नजदीक नहीं आयेगा ?"

इन्तजार करते हुए मैंने उसे कान हिलाते, घूमते और वापस जाते देखा, और तब मुझे उसके पूरे शरीर की झलक दिखाई दी । वह एक विशाल दैत्य जैसा था । उत्तेजित होकर मैंने गोली छोड़ी और उसे बहक कर एक पेड़ में लगते सुना । धुंए में से गौर से मैंने देखा कि मेरा रीछ लापरवाही से घेरे में वापस मुड़ा और पेड़ों के बीच गायब हो गया ।

"खैर," मैंने सोचा, "मेरा चान्स मारा गया । वह मेरे पास वापस नहीं आयेगा । या तो मेरा साथी उसे मार देगा या वह हांका करने वालों के बीच में से बच निकलेगा । हर हालत में वह मुझे दूसरा मौका नहीं देगा ।"

मैंने अपनी बन्दूक दुबारा भरी और फिर खड़ा होकर आहट लेने लगा । किसान चारों तरफ चिल्ला रहे थे, परन्तु दाहिनी तरफ, जहाँ मेरा साथी खड़ा था उससे ज्यादा दूर नहीं, मैंने एक औरत को बुरी तरह डर कर चीखते सुना :

"वह यह रहा ! वह यह रहा ! यहाँ आओ ! ओह ! ओह ! ए ! ए !"

स्पष्ट था कि वह रीछ को देख रही थी । मैंने उसकी आशा छोड़ कर उससे यही उम्मेद की थी और दाहिनी तरफ अपने साथी की ओर देख रहा था । फौरन ही मैंने देमयान को एक डंडा लिए और बिना बरफ के जूते पहने एक पगडंडी पर अपने मित्र की ओर दौड़ते हुए देखा । वह उसके पास सिकुड़ कर बैठ गया, अपने डंडे से इशारा करता हुआ मानो किसी की तरफ निशाना साध रहा हो । और तब मैंने अपने मित्र को बन्दूक उठाकर उसी दिशा में निशाना साधते हुए देखा । धांय ! उसने बन्दूक दागी ।

"अच्छा," मैंने सोचा, "उसने रीछ को मार डाला।"

परन्तु मैंने देखा कि मेरा साथी रीछ की तरफ नहीं दौड़ा। स्पष्ट था कि या तो उसका निशाना चूक गया था या गोली का घातक प्रभाव नहीं पड़ा था।

"रीछ भाग जायगा," मैंने सोचा, "वह वापस भाग जायगा मगर मेरी तरफ दुबारा नहीं आयेगा, परन्तु यह क्या?"

कोई चीज तूफान की तरह मेरी तरफ चली आ रही थी—बफरती हुई। मैंने बरफ को अपने बिल्कुल नजदीक उड़ते हुए देखा। मैंने सीधा अपने सामने की ओर देखा और वहाँ वह रीछ था-पगडंडी पर झाड़ी में से होकर सीधा मेरी तरफ दौड़ाता हुआ और स्पष्ट रूप से खुद भी डरा हुआ। वह मुश्किल से छः कदम की दूरी पर होगा और मैं उसका पूरा शरीर देख रहा था—उसका काला वक्ष और विशाल मस्तक जिस पर एक लाल सा धब्बा था। वह भूल कर सीधा, अपने चारों तरफ बरफ उड़ाता हुआ, मेरी तरफ चला आ रहा था। मैंने उसकी आँखों से देखा कि उसने मुझे नहीं देखा था परन्तु भय से पागल होकर अन्धे की तरह चला आ रहा था और उसका रास्ता उसे सीधा उस पेड़ की तरफ ला रहा था जिसके नीचे मैं खड़ा हुआ था। मैंने अपनी बन्दूक उठाई और दाग दी। इस समय तक वह लगभग मेरे सिर पर आ पहुँचा था और मैंने देखा कि मेरा निशाना चूक गया। मेरी गोली उसके बगल में होकर निकल गई और उसने बन्दूक की आवाज तक नहीं सुनी बल्कि सीधा मेरी तरफ झपटा। मैंने बन्दूक नीची की और फिर दागी—उसके सिर को लगभग छूते हुए। धाँय! उसके गोली लगी परन्तु वह मरा नहीं।

उसने अपना सिर ऊपर उठाया और कान पीछे कर, दाँत निकाले हुए मुझ पर झपटा।

मैंने झपट कर अपनी दूसरी बन्दूक उठाई परन्तु इससे पहले कि मैं उसे छू सकूँ वह मेरे ऊपर टूट पड़ा और मुझे बरफ पर गिराता हुआ सीधा मेरे ऊपर होकर निकल गया।

"भगवान को धन्यवाद है, उसने मुझे छोड़ दिया," मैंने सोचा।

मैंने उठने की कोशिश की परन्तु किसी चीज ने मुझे दबा लिया और उठने से रोक दिया। अपनी तेजी में रीछ मुझे छोड़ कर आगे निकल गया था परन्तु फिर लौटा और अपने पूरे बोझ को लिए हुए मुझ पर गिर पड़ा था। मैंने अनुभव किया कि कोई भारी चीज मुझे नीचे दबा रही थी और मेरे मुँह के ऊपर कोई गर्म चीज थी और मैंने अब जाना कि वह मेरे पूरे चेहरे को अपने मुँह में पकड़े हुए था। मेरी नाक उसके मुँह में थी। मैंने उसकी गर्म सांस को महसूस किया और मेरी नाक में उसके खून की गन्ध आई। वह मेरे कन्धों को अपने पंजों से दबाए हुए था जिससे मैं हिल न सकूँ। मैं सिर्फ इतना ही कर सका कि अपने सिर को उसके मुंह से अलग हटा कर, अपने सीने की तरफ झुका सका—अपनी नाक और आँखों को छुड़ाते हुए जब कि उसने उनमें अपने दाँतों को घुसाने की कोशिश जारी रखी। फिर मैंने महसूस किया कि उसने मेरे माथे को, बिल्कुल बालों के पास, अपने निचले जबड़े वाले दांतों से तथा मेरी आँखों के नीचे वाले गोश्त को अपने ऊपरी जबड़े के दाँतों से पकड़ रखा है और दाँतों को दबाता जा रहा है। मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे मेरे चेहरे को चाकूओं से गोदा जा रहा हो। मैंने निकलने की कोशिश की जबकि उसने कुत्ते की तरह अपने जबड़ों को बन्द करने की जल्दी की। मैंने किसी तरह अपना चेहरा मोड़ने में सफलता पा ली परन्तु उसने फिर उसे अपने मुँह में लेने की कोशिश शुरू कर दी।

"अब," मैंने सोचा, "मेरा अन्त आ गया है।"

फिर मैंने उस बोझ को उठते हुए महसूस किया और ऊपर

देखने पर पाया कि अब रीछ वहाँ नहीं था। वह मेरे ऊपर से अलग कूद कर भाग गया था।

जब मेरे साथी और देमयान ने देखा कि रीछ ने मुझे गिरा दिया है तो वे मेरे लिए परेशान हो उठे और मुझे बचाने दौड़े। अपनी जल्दबाजी में मेरा साथी गल्ती कर बैठा। बने बनाए रास्ते पर जाने के बजाय वह सीधा गहरी बरफ में होकर दौड़ा और गिर पड़ा। जब कि वह बरफ में से निकलने की कोशिश कर रहा था, रीछ मुझे काट रहा था। परन्तु देमयान, जिस स्थिति में वह था उसी तरह, बिना बन्दूक के सिर्फ एक डंडा हाथ में पकड़े, पगडंडी पर चीखता हुआ दौड़ा।

"वह मालिक को खाए डाल रहा है! वह मालिक को खाए डाल रहा है!"

और दौड़ते हुए वह रीछ से बोला :

"ओह, शैतान, तू क्या कर रहा है? छोड़ दे! छोड़ दे!"

रीछ ने उसकी आज्ञा मान ली और मुझे छोड़ कर भाग खड़ा हुआ।

जब मैं उठा तो बरफ पर इतना खून पड़ा हुआ था मानों एक भेड़ मार डाली गई हो और गोश्त लोथड़ों की शकल में मेरी आँखों के ऊपर लटक रहा था हालांकि अपनी उस उत्तेजना में मैंने दर्द महसूस नहीं किया।

इस समय तक मेरा साथी आ गया था और दूसरे लोग भी मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गए थे। उन्होंने मेरा घाव देखा और उस पर बरफ रख दी। परन्तु मैंने अपने घावों को भूल कर सिर्फ यह पूछा :

"रीछ कहाँ है? वह किधर होकर गया है?"

अचानक मैंने सुना :

"वह यह रहा! वह यह रहा!"

और हमने रीछ को फिर अपनी तरफ दौड़ते देखा । हमने अपनी बन्दूकें उठा लीं परन्तु जब तक कि हम में से किसी को उस पर गोली छोड़ने का मौका मिलता वह बगल में होकर आगे निकल गया। वह भयंकर हो उठा था और फिर मुझे खाना चाहता था परन्तु इतने ज्यादा आदमियों को देख कर डर गया। हमने उसके चिन्हों से देखा कि उसके सिर से खून बह रहा था और हम उसका पीछा करना चाहते थे, परन्तु क्योंकि मेरे घावों में भयंकर दर्द होने लगा था हम लोग शहर को डाक्टर की खोज में चल दिए ।

डाक्टर ने मेरे घावों को रेशम के टांके लगा कर सीं दिया और वे जल्दी ही भरने लगे।

एक महीने बाद हम लोग उस रीछ का शिकार करने फिर गए परन्तु मुझे उसे मारने का एक भी मौका नहीं मिला। वह घेरे से बाहर ही नहीं आया परन्तु भयङ्कर रूप से घुर्राता हुआ उसी में चक्कर काटता रहा।

देमयान ने उसे मारा। रीछ का निचला जबड़ा टूट गया था और उसका एक दाँत मेरी गोली से उखड़ गया था।

वह बड़ा लम्बा चौड़ा जानवर था और उसके काले बाल बहुत सुन्दर थे ।

मैंने उसकी खाल भुस भरवा दिया और अब वह मेरे कमरे में रखा हुआ है। मेरे माथे के घाव इस तरह भर गए थे कि उनके निशान मुश्किल से दिखाई देते हैं।

बहुत मंहगा

भूमध्य सागर के किनारे, फ्रांस और इटली की सीमाओं के पास, मोनाको नामक एक छोटा सा राज्य है। अनेक छोटे २ देहाती कस्बे इस राज्य से ज्यादा निवासियों को रखने का गर्व कर सकते हैं क्योंकि इस राज्य में कुल मिलाकर लगभग सात हजार व्यक्ति रहते हैं और अगर राज्य की पूरी जमीन इन लोगों में बांट दी जाय तो हरेक के हिस्से में एक एकड़ जमीन भी नहीं आएगी। परन्तु इस छोटे से राज्य में एक असली राजा रहता है। उसके पास महल हैं, दरबारी हैं, मन्त्री हैं, बड़ा पादरी है, सेनापति हैं और एक फौज है।

यह फौज बड़ी नहीं है, कुल मिलाकर साठ आदमी हैं परन्तु फिर भी यह फौज है। दूसरी जगहों की तरह यहाँ भी कर लगते हैं: तम्बाकू का कर, शराब का कर और चुङ्गी का कर। यद्यपि वहाँ के रहने वाले दूसरे देश वालों की तरह शराब और तम्बाकू पीते हैं तो भी वे इतने थोड़े हैं कि वहाँ के राजा को अपने दरबारियों का, अफसरों का और खुद अपना खर्च चलाना मुश्किल हो जाता अगर उसने आमदनी का एक नया और खास जरिया न ढूँढ़ निकाला होता। यह विशेष आमदनी एक जुआघर से होती है जहाँ लोग एक खास तरह का जुआ खेलते हैं। आदमी जुआ खेलते हैं, और चाहे वे जीतें या हारें, वहाँ का अधिकारी हरेक दांव पर एक निश्चित प्रतिशत की रकम वसूल कर लेता है और अपनी आमदनी में से वह राजा को एक बड़ी धनराशि कर के रूप में देता है। इसका कारण, कि वह इतनी बड़ी रकम देता है, केवल यह है कि अब सारे यूरोप में केवल एक ही जुआघर बचा रह गया है। कुछ छोटे २ जर्मनी के राजाओं ने इसी तरह के जुआघर खोल रखे थे परन्तु कुछ साल हुए उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया

था। उन्हें रोकने का कारण यह था कि इन जुआघरों से बहुत नुकसान होता था। एक आदमी आता और अपना भाग्य अजमाता, फिर वह अपना सब कुछ दांव पर लगा देता और हार जाता, फिर वह उस धन को भी दांव पर लगाने का खतरा उठाता जो कि उसका अपना नहीं होता और उसे भी हार जाता और तब निराश होकर वह या तो डूब मरता या अपने को गोली मार लेता। इसलिए जर्मनों ने इस तरह धन कमाने से अपने शासकों को रोक दिया। परंतु मोनाको के राजा को रोकने वाला कोई नहीं था और इस व्यापार पर उसका एकाधिकार कायम रहा।

इसलिए अब जो कोई जुआ खेलना चाहता है, मोनाको जाता है। चाहे वे हारें या जीतें, राजा को इससे लाभ होता है। जैसी कि कहावत है: "तुम ईमानदारी से परिश्रम कर महल नहीं खड़े कर सकते।" और मोनाको का राजा जानता है कि यह गन्दा काम है परन्तु वह करे तो करे क्या? उसे जिन्दा रहना है। और शराब और तम्बाकू से आमदनी करना भी कोई अच्छा काम नहीं है। इसलिए वह रहता है और शासन करता है, धन बटोरता है और एक असली राजा की शान शौकत के साथ अपना दरबार लगाता है।

उसका राज्याभिषेक होता है, उसका दरबार लगता है, वह इनाम देता है, सजा देता है और क्षमा दान देता है। और उसके अपने पुनर्निरीक्षण करने वाले कौन्सिलें, कानून और अदालतें हैं, बिल्कुल दूसरे राजाओं की तरह मगर सिर्फ छोटे पैमाने पर।

अब कुछ साल पहले ऐसा हुआ कि इस गुड्डे राजा के राज्य में एक कत्ल हो गया। उस राज्य के रहने वाले शान्तिप्रिय हैं और ऐसी घटना पहले कभी नहीं हुई थी। पूरी सज-धज के साथ जज लोग इकट्ठे हुए और पूरे न्यायपूर्ण ढंग से उन्होंने इस मामले को सुना। वहाँ जज, सरकारी वकील, जूरी और बैरिस्टर सभी थे। उन्होंने बहसें कीं और न्याय किया और अन्त में उन्होंने कानून के मुताबिक उस अपराधी का

सिर धड़ से उड़ा देने का दंड दिया। यहां तक सब ठीक रहा। दूसरे दिन उन्होंने राजा के पास इस सजा की खबर भेजी। राजा ने सजा पढ़ी और उस पर अपनी सही लगा दी : "अगर अपराधी को मारना है तो मार दो।"

इस मामले में सिर्फ एक ही अड़चन थी और वह यह थी कि न तो उनके पास सिर काटने की मशीन थी और न जल्लाद। मंत्रियों ने इस मामले पर विचार किया और तय किया कि फ्रांसीसी सरकार से इस बारे में पूछा जाय कि क्या फ्रांसीसी सरकार उन्हें सिर काटने की एक मशीन और अपराधी का सिर काटने के लिए एक कुशल जल्लाद उधार दे देगी और अगर देगी तो महरबानी करके यह भी बता दे कि इसमें कितना खर्च होगा। इस विषय का पत्र भेज दिया गया। एक हफ्ते बाद जवाब आया : 'एक मशीन और एक विशेषज्ञ भेजा जा सकता है और इसकी कीमत सोलह हजार फ्रांक होगी।' यह खत राजा के सामने रखा गया। उसने इस पर विचार किया। "सोलह हजार फ्रांक! उस बदमाश की इतनी कीमत नहीं है," उसने कहा। "किसी तरह यह मामला इससे सस्ते में नहीं निबट सकता? क्योंकि सोलह हजार फ्रांक यहाँ की पूरी आबादी पर दो फ्रांक फी आदमी के हिसाब से भी ज्यादा है। जनता इसे सहन नहीं कर सकेगी और इससे दंगा उठ खड़ा हो सकता है।"

इसलिए एक काउन्सिल बुलाई गई कि क्या किया जाय, और यह तय किया गया कि इसी तरह की समस्या इटली के राजा के सामने रखी जाय। फ्रांसीसी सरकार जनतंत्रीय है और राजाओं का यथेष्ट सम्मान नहीं करती परन्तु इटली का राजा अपने ही वर्ग का है और हो सकता है कि वह इस काम को सस्ते में करवा दे। इसलिए पत्र लिखा गया और तुरन्त ही उत्तर भी आ गया।

इटली की सरकार ने लिखा कि उसे मशीन और एक विशेषज्ञ भेजने में प्रसन्नता होगी और इसका सारा खर्चा बारह हजार फ्रांक बैठेगा

जिसमें सफर खर्च भी शामिल है। यह सस्ता था परन्तु फिर भी यह बहुत ज्यादा लगा। उस बदमाश की इतनी कीमत नहीं थी। इसका अब भी यह मतलब था कि करों के अलावा दो फीसदी हरेक से और लिया जाया। दूसरी काउन्सिल बुलाई गई। उन्होंने बहस की और विचार किया कि इसे कम से कम खर्चे में कैसे निपटाया जाय। क्या अपने किसी सिपाही को यह काम मामूली और घरेलू तरीके से करने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता? सेनापति को बुलाया और पूछा: "क्या तुम एक ऐसा सिपाही नहीं दे सकते जो इस आदमी का सिर काट दे? लड़ाई में उन्हें आदमियों को मारने में हिचक नहीं होती। दरअसल इसी काम के लिए उन्हें ट्रेनिंग दी जाती है।" इसलिए सेनापति ने सिपाहियों से इस बारे में बातें कीं कि क्या उनमें से कोई इस काम की जिम्मेदारी नहीं ले सकता। परन्तु किसी भी सिपाही ने हामी नहीं भरी। "नहीं," उन्होंने कहा, "हमें नहीं मालूम कि यह काम कैसे किया जाता है, यह ऐसा काम नहीं है कि जिसकी हमें शिक्षा दी गई हो।"

अब क्या किया जाता? फिर मन्त्रियों ने सोचा और बार-बार विचार किया। उन्होंने एक कमीशन बैठाया, एक समिति बनाई और एक उप-समिति बनाई और अन्त में उन्होंने तय किया कि सबसे बढ़िया तरीका यह रहेगा कि मौत की सजा को जन्म-कैद में बदल दिया जाया। इससे राजा को दया दिखाने का अवसर मिलेगा और यह सस्ता भी पड़ेगा।

राजा इससे सहमत हो गया और इस तरह इसका प्रबन्ध किया गया। अब एकमात्र अड़चन यह थी कि वहाँ जन्म-कैद की सजा पाने वाले कैदी के लिए कोई उपयुक्त जेल नहीं थी। वह एक छोटी सी हवालात थी जिसमें कभी-कभी अपराधियों को थोड़े समय के लिए बन्द

कर दिया जाता था परन्तु हमेशा काम में लाने योग्य कोई मजबूत जेल नहीं थी। किसी तरह, वे एक जगह प्राप्त करने में सफल हो गए जिससे काम चल जाता। उन्होंने उस नौजवान को वहाँ बन्द कर दिया और और उस पर एक गारद तैनात हो गया। गारद को उस अपराधी की निगरानी करनी थी और राजमहल के रसोईघर से उसके लिए खाना भी लाना था।

कैदी को वहाँ रहते हुए एक साल गुजर गया। मगर जब एक साल गुजर गया तो राजा ने एक दिन अपने आय-व्यय का ब्यौरा देखते समय खर्च की एक नई मद देखी। यह उस कैदी को रखने में व्यय हुई धनराशि थी। यह कोई छोटी रकम नहीं थी। उस पर एक स्पेशल गारद था और उस आदमी का खाना भी था। यह सब मिलाकर छः सौ फ्रांक सालाना से भी ज्यादा पड़ा था। और सबसे खराब बात यह थी कि वह कैदी अब भी नौजवान और हट्टा-कट्टा था और पचास वर्ष तक जिन्दा रह सकता था। जब इस मामले पर सोचा गया तो यह बहुत गम्भीर साबित हुआ। इस तरह काम नहीं चल सकता। इसलिए राजा ने अपने मन्त्रियों को बुलाया और कहा :

"आप लोगों को इस बदमाश का इन्तजाम करने के लिए कोई सस्ता सा तरीका ढूँढ़ना पड़ेगा। मौजूदा इंतजाम बहुत खर्चीला है।" मन्त्रीगण आपस में मिले और बार-बार विचार किया। अन्त में उनमें से एक बोला : "सज्जनो, मेरी राय में तो उस गारद को हटा देना चाहिए।" "मगर तब वह भाग जायगा," दूसरे मन्त्री ने जबाव दिया। "अच्छा," पहले बोलने वाले ने कहा, 'उसे भाग जाने दो। हमारी बला से वह जहन्नुम में जाय।" इसलिए उन्होंने अपने फैसले की सूचना राजा को दी और वह उनसे सहमत हो गया। गारद को हटा दिया गया और वे इंतजार करने लगे कि देखें अब क्या होता है।

जो हुआ वह यह था कि भोजन के समय वह अपराधी बाहर निकला और गारद को न पाकर खुद ही भोजन लाने के लिए राजमहल के रसोईघर को चल दिया। जो कुछ उसे दिया गया वह उसने ले लिया, जेल वापस लौटा, भीतर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया और वहीं ठहर गया। दूसरे दिन भी यही घटना घटी। वह ठीक समय पर खाना लेने गया, परन्तु वहाँ से भाग जाने का उसने कोई लक्षण नहीं दिखाया। अब क्या किया जाता ? उन्होंने इस मामले पर फिर विचार किया।

"हमें उससे साफ-साफ कह देना पड़ेगा," उन्होंने कहा, "कि हम उसे रखना नहीं चाहते।" इसलिए न्यायमंत्री ने उसे बुलवाया।

"तुम भाग क्यों नहीं जाते ?" मंत्री ने कहा, "तुम्हें रोकने के लिए कोई गारद नहीं है। तुम जहाँ चाहो जा सकते हो। राजा कुछ भी नहीं कहेगा।"

"मैं कहता हूँ कि राजा बुरा नहीं मानेगा," उस आदमी ने जवाब दिया, "परन्तु मैं अब कहीं नहीं जा सकता। मैं क्या कर सकता हूँ ? तुम लोगों ने यह सजा देकर मेरे चरित्र को नष्ट कर दिया है और आदमी मुझे देखकर मुँह मोड़ लेंगे। दूसरी बात यह कि मेरी काम करने की आदत छूट गई है। तुम लोगों ने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया है। यह ठीक नहीं है। पहली स्थिति में जब एक बार तुम मुझे मौत की सजा दे चुके थे तो तुम्हें उसे पूरा कर मुझे मार डालना चाहिए था। परन्तु तुम लोगों ने ऐसा नहीं किया। पहली बात तो यह है। मैंने इसके बारे में शिकायत नहीं की। फिर तुम लोगों ने मुझे जन्म-कैद की सजा दी और मेरा खाना लाने के लिए एक गारद लगा दिया परन्तु कुछ दिनों बाद तुमने उसे हटा लिया और मुझे अपना खाना खुद लाना पड़ा। फिर भी मैंने शिकायत नहीं की। परन्तु अब तुम लोग सचमुच यह चाहते हो कि मैं चला जाऊँ ! मैं इससे सहमत नहीं हो सकता। तुम लोग जो चाहो सो करो मगर मैं नहीं जाऊँगा।"

अब क्या किया जाता ? एक बार फिर काउन्सिल बुलाई गई। वे कौन सा तरीका अख्तियार कर सकते थे ? वह जाना नहीं चाहता था। उन्होंने गौर किया और सोचा विचारा। उससे छुटकारा पाने का सिर्फ एक ही तरीका था कि उसके सामने उसे पेन्शन देने का प्रस्ताव रखा जाय। और इसलिए उन्होंने राजा को सूचना दी। "इसका और कोई हल नहीं है;" उन्होंने कहा, "हमें किसी न किसी तरह उससे छुटकारा पाना ही चाहिए।" पेन्शन के लिए निश्चित की गई धनराशि छः सौ फ्रांक थी और उसकी सूचना कैदी को दे दी गई।

"खैर" वह बोला, मुझे कोई उज्र नहीं जब तक कि तुम इसे बराबर ठीक वक्त पर देते रहोगे। इसी शर्त पर मैं जाने को तैयार हूँ।"

इस तरह मामला तय हो गया। अपनी पेन्शन का एक तिहाई उसे पेशगी मिल गया और वह उस राजा का राज्य छोड़कर चला गया। रेल से यह सिर्फ पन्द्रह मिनट का रास्ता था। उसने सीमा पार की और सीमा पर ही जाकर बस गया जहाँ उसने थोड़ी सी जमीन खरीदी, साग-सब्जी बोना शुरू कर दिया और अब आराम से रहता है। वह अपनी पेन्शन लेने के लिए ठीक समय पर जाता है। पेन्शन लेकर वह जुआघर पहुँचता है, दो या तीन फ्रांक दांव पर लगाता है; कभी हार जाता है कभी जीत जाता है और फिर घर लौट आता है। वह शान्तिपूर्वक और अच्छी तरह रहता है।

यह अच्छी बात है कि उसने अपना अपराध ऐसे मुल्क में नहीं किया था जहाँ के लोग एक आदमी का सिर काटने में उसे, जीवन भर जेल में डाले रखने का खर्चा उठाने में हिचकिचाते नहीं हैं।

मूर्ख इवान की कहानी

पुराने जमाने में एक विशेष देश के एक विशेष प्रांत में एक अमीर किसान रहता था जिसके तीन बेटे थे : सिपाही साइमन, मोटा-तारास और मूर्ख इवान। साथ ही एक अविवाहित बेटी मार्या भी थी जो गूंगी और बहरी थी। सिपाही साइमन राजा की सेवा में युद्ध करने चला गया, मोटा तारास शहर में एक व्यापारी के यहाँ चला गया और मूर्ख इवान अपनी कुमारी बहन के साथ घर पर खेत जोतने के लिए रह गया और तब तक जोतता रहा जब तक कि उसकी पीठ न झुक गई।

सिपाही साइमन ने ऊँची पदवी और जायदाद पाई और एक बड़े आदमी की लड़की से शादी करली। उसकी तनख्वाह बहुत ज्यादा थी और उसकी जायदाद बड़ी लम्बी चौड़ी थी फिर भी उसका पूरा नहीं पड़ता था। पति जो कुछ भी कमाता उसकी शौकीन पत्नी सब खर्च कर डालती और उनके पास कभी भी काफी पैसा नहीं रहा।

इसलिए सिपाही साइमन अपनी जागीर में रुपया वसूल करने गया परन्तु उसके कारिन्दे ने कहा : "आमदनी कहाँ से हो ? हमारे पास न तो जानवर हैं, न औजार हैं, न घोड़े हैं, न हल हैं, न हेंगी हैं। हमको पहले इन्हें इकट्ठा करना चाहिए और तब पैसा आएगा।"

तब सिपाही साइमन अपने बाप के पास गया और बोला : "पिताजी, आप अमीर हैं परन्तु आपने मुझे कुछ भी नहीं दिया। आपके पास जो कुछ है उसका बँटवारा कर दीजिये और मुझे तीसरा हिस्सा दे दीजिए जिससे मैं अपनी जागीर की दशा सुधार सकूँ।

परन्तु बुड्ढे ने कहा : "तुम मेरे घर में कुछ भी नहीं लाए। मैं तुम्हें तीसरा हिस्सा क्यों दूं ? ऐसा करना इवान और उस लड़की के साथ अन्याय होगा।"

लेकिन साइमन ने जवाब दिया: "वह मूर्ख है और यह लड़की बुढ़िया हो गई है और साथ ही गूंगी और बहरी भी है। इन लोगों के लिए जायदाद रखने से इनका क्या भला होगा?"

बुड्ढे ने कहा: "हम देखेंगे कि इवान इस विषय में क्या कहता है।"

और इवान ने कहा: "जो वह चाहे ले लेने दो।"

इसलिए सिपाही साइमन ने अपने बाप की जायदाद में से अपना हिस्सा ले लिया और उसे अपनी जागीर में उठा ले गया और फिर राजा की नौकरी करने चल दिया।

मोटे तारास ने भी काफी धन कमाया और एक व्यापारी की लड़की से शादी कर ली परन्तु फिर भी उसकी भूख न बुझी। इसलिए वह भी अपने बाप के पास आया और बोला: "मुझे मेरा हिस्सा दे दीजिए।"

परन्तु बुड्ढा तारास को भी उसका हिस्सा नहीं देना चाहता था और कहने लगा: "तुम यहाँ कुछ भी नहीं लाए। घर में जो कुछ भी है सब इवान की कमाई है और फिर हम लोग उसके और उस लड़की के साथ अन्याय क्यों करें?"

परन्तु तारास बोला: "उसे क्या चाहिए? वह मूर्ख है। वह शादी नहीं कर सकता, कोई भी उसे नहीं अपनायेगा। और उस बहरी लड़की को भी कुछ नहीं चाहिए। देखो इवान!" उसने कहा "मुझे आधा अनाज दे दो। मुझे औजार नहीं चाहिए और जानवरों में से मैं सिर्फ उस भूरे घोड़े को लूंगा जो हल जोतने में तुम्हारे किसी काम का नहीं।"

इवान हँसा और बोला: "तुम जो चाहो सो ले लो। मैं और कमाने के लिए महनत कर लूँगा।"

इसलिए उन्होंने तारास को भी एक हिस्सा दे दिया और तारास अनाज को गाड़ी पर लाद कर और भूरे घोड़े को लेकर शहर चला गया। और इवान के पास पहले ही की तरह अपनी किसानी जिन्दगी चलाने और अपने माँ बाप की मदद करने के लिए सिर्फ एक बुड्ढी घोड़ी बाकी बची।

२.

अब शैतान इस बात को देखकर उद्विग्न हो उठा कि ये तीनों भाई बंटवारे के ऊपर लड़े नहीं और शान्तिपूर्वक अलग अलग हो गए। उसने तीन पिशाचों को बुलाया।

"देखो," उसने कहा, "वहाँ तीन भाई हैं: सिपाही साइमन, मोटा तारास और मूर्ख इवान। उन्हें आपस में लड़ना चाहिए था परन्तु शान्ति पूर्वक रह रहे हैं और आपस में दोस्तों की तरह मिलते हैं। मूर्ख इवान ने सारे मामले को मेरे खिलाफ बिगाड़ रखा है। अब तुम तीनों जाओ और उन तीनों भाइयों से सम्बन्ध स्थापित करो और उन्हें तब तक परेशान करते रहो जब तक कि वे परस्पर एक दूसरे की आँखें न निकाल लें। तुम सोचते हो कि तुम इस काम को कर सकोगे?"

"हाँ, हम लोग इसे कर लेंगे," उन्होंने जवाब दिया।

"तुम इसे कैसे शुरू करोगे?"

"क्यों," उन्होंने कहा, "सबसे पहले हम उन्हें बर्बाद कर देंगे। और जब उनके पास खाने के लिए एक टुकड़ा भी नहीं बचेगा हम उन्हें एक साथ बांध देंगे और तब वे अवश्य एक दूसरे से लड़ने लगेंगे।"

"बहुत सुन्दर; मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग अपने काम को समझते हो। जाओ, और तब तक वापस मत आना जब तक कि उन्हें आपस में लड़ा न दो वर्ना मैं जिन्दा ही तुम्हारी खाल उधेड़ दूंगा!"

वे तीनों पिशाच एक दलदल में पहुँचे और विचार करने लगे कि काम कैसे शुरू किया जाय। वे आपस में बहुत देर तक झगड़ते रहे—हरेक सबसे आसान काम लेना चाहता था। परन्तु अन्त में उन्होंने चिट्ठी डाल कर काम बांटना तय किया कि किस भाई को कौन सा पिशाच सम्हालेगा अगर एक पिशाच अपना काम दूसरों से पहले समाप्त कर लेगा। तो वह आकर दूसरों की मदद करेगा। इसलिए पिशाचों ने चिट्ठी डाली और एक समय निश्चित कर दिया जब वे इसी दलदल में आकर फिर इकट्ठे होंगे और यह देखेंगे कि किसे कामयाबी मिली है और किसे मदद की जरूरत है।

निश्चित समय आया और वे पिशाच समझौते के अनुसार फिर दलदल में इकट्ठे हुए। और हरेक ने बताना शुरू किया कि उनके काम की क्या हालत है। पहला पिशाच जो सिपाही साइमन पर तैनात था, बोलाः "मेरा काम ठीक चल रहा है। कल साइमन अपने भाई के घर लौट आएगा।"

उसके साथियों ने पूछा, "तुमने यह कैसे किया ?"

"पहले," वह कहता है, "मैंने साइमन को इतना बहादुर बना दिया कि उसने अपने राजा के लिए संसार-विजय कर देने का प्रस्ताव रखा और राजा ने उसे अपना सेनापति बना दिया और हिन्दुस्तान के राजा से लड़ने के लिए भेजा। वे युद्ध करने के लिए इकट्ठे हुए परन्तु पहली ही रात को मैंने साइमन के कैम्प की सारी बारूद गीली कर दी और हिन्दुस्तान के राजा के लिए अगणित फूस के सिपाही बना दिए। और जब साइमन के सिपाहियों ने फूस के सिपाहियों द्वारा अपने को घेरे जाते हुए देखा तो वे डर गए। साइमन ने उन्हें गोली चलाने की आज्ञा दी परन्तु उनकी बन्दूकें और तोपें नहीं चल सकीं। इस पर साइमन के सिपाही बुरी तरह डर गए और भेड़ों की तरह भागने लगे और हिन्दुस्तान के राजा ने उन्हें कत्ल कर दिया। साइमन अपमानित हुआ। उसकी

जागीर छीन ली गई है और कल उनका इरादा उसे जान से मार देने का है। मेरे लिए सिर्फ एक दिन का काम और करने को रह गया है। मुझे उसे जेल से छुड़ा देना है जिससे कि वह अपने घर भाग आए। कल मैं, तुम लोगों में से जो चाहेगा, उसकी मदद करने को तैयार रहूँगा।"

फिर दूसरा पिशाच जो तारास पर तैनात था बताने लगा कि उसने क्या किया। "मुझे मदद नहीं चाहिए," उसने कहा, "मेरा काम ठीक चल रहा है। तारास एक हफ्ते से ज्यादा नहीं ठहर सकता। पहले मैंने उसे लालची और मोटा बना दिया। उसका लालच इतना ज्यादा बढ़ गया कि जो कुछ भी वह देखता उसी को खरीद लेना चाहता। उसने ढेर सारा सामान खरीदने में अपना सारा धन खर्च कर दिया है और अब भी और खरीदता जा रहा है। इस समय तक उसने रुपया उधार लेकर लगाना शुरू कर दिया है। उसका कर्जा उसके गले का बोझ बन गया है और वह उसमें इस तरह फंस चुका है कि अब निकल नहीं सकता। एक हफ्ते में ही उसे हुन्डियों के भुगतान करने हैं और उससे पहले ही मैं उसका सारा सामान बर्बाद कर दूंगा। वह भुगतान करने में असमर्थ रहेगा और उसे अपने पिता के घर लौट जाना पड़ेगा।"

तब उन्होंने तीसरे पिशाच (इवान वाले) से पूछाः "और तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?"

उसने कहा, "मेरा काम ठीक नहीं चल रहा है। पहले मैंने उसकी शराब में थूक दिया जिससे उसका पेट दर्द करने लगा और फिर मैं उसके खेत पर पहुँचा और जमीन को पीट पीट कर पत्थर की तरह सख्त बना दिया जिससे कि वह उसे जोत न सके। मैंने सोचा कि वह इसे जोत नहीं सकेगा मगर जैसा कि वह मूर्ख है वह हल लेकर आया और कूंड़ बनाने लगा। वह अपने पेट के दर्द के मारे कराहने लगा

परन्तु फिर भी उसने हल चलाना बन्द नहीं किया। मैंने उसका हल तोड़ दिया लेकिन वह घर गया, दूसरा ले आया और फिर जोतने लगा। मैं जमीन के अन्दर घुस गया और हल के फार को पकड़ लिया, परन्तु उसे पकड़ना बड़ा मुश्किल था। वह हल पर बुरी तरह दबाव डाल रहा था और हल का फार बहुत तेज था जिससे मेरे हाथ कट गए। उसने सारा खेत जोत डाला है, सिर्फ एक छोटी सी पट्टी बाकी बची है। आओ, भाइयो! मेरी मदद करो क्योंकि अगर हम उस पर काबू नहीं पा सकते तो हमारी सारी मेहनत बेकार हो जायगी। अगर वह मूर्ख अड़ा रहता है और जमीन पर बराबर काम करता है तो उसके भाइयों को किसी चीज की कमी महसूस नहीं होगी क्योंकि वह उन दोनों का पेट भरता रहेगा।"

सिपाही साइमन के पिशाच ने दूसरे दिन मदद करने के लिए आने का वायदा किया और इसलिए वे लोग अपने-अपने काम पर चले गए।

३.

इवान ने सारा खेत जोत लिया था सिर्फ एक छोटी सी पट्टी बाकी रह गई थी। वह उसे जोतने के लिए आया। यद्यपि उसके पेट में दर्द था फिर भी खेत तो जोतना ही था। उसने साज की रस्सियाँ ढीली कीं, हल घुमाया और काम शुरू कर दिया। उसने एक कूंड़ जोता परन्तु लौटते समय हल अटकने लगा मानो किसी जड़ में फँस गया हो। यह पिशाच था जिसने अपने पैरों को मोड़कर हल की फार पकड़ रखी थी और उसे पीछे खींच रहा था।

"कैसी अजीब बात है?" इवान ने सोचा, "यहाँ खेत में एक भी जड़ नहीं थी और फिर भी अभी एक जड़ कहाँ से रह गई।"

और जैसे ही इवान ने भगवान् का नाम लिया, पिशाच पानी में फेंके गए पत्थर की तरह सीधा जमीन में घुस गया। वहाँ सिर्फ एक छेद रह गया।

इवान ने बाकी बची हुई दोनों जड़ें अपनी टोपी में रख लीं और खेत जोतने लगा। उसने पट्टी को पूरा जोता, हल मोड़ा और घर चल दिया। उसने घोड़े का साज उतारा, झोंपड़ी में घुसा और वहाँ अपने बड़े भाई सिपाही साइमन और उसकी बीवी को खाने की मेज पर बैठे हुए पाया। साइमन की जागीर जब्त करली गई थी, वह खुद बड़ी मुश्किल से जेल से भाग पाया था और वापस अपने बाप के घर रहने को लौट आया था।

साइमन ने इवान को देखा और बोला : "मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए आया हूँ। जब तक कि मुझे दूसरी नौकरी मिले मुझे और मेरी बीवी को भोजन दो।"

"अच्छी बात है," इवान ने कहा, "तुम हमारे साथ ठहर सकते हो!"

परन्तु जब इवान उस बेंच पर बैठने को हुआ तो उस महिला को उसकी गन्ध पसन्द नहीं आई और वह अपने पति से बोली : "मैं एक गन्दे किसान के साथ बैठकर खाना नहीं खा सकती।"

इसलिए सिपाही इवान ने कहा, "मेरी बीवी कहती है कि तुम्हारी गन्ध अच्छी नहीं है। इसलिए अच्छा हो कि तुम बाहर चले जाओ और वहीं खाना खाओ।"

"अच्छी बात है" इवान ने कहा, "हर हालत में मुझे रात बाहर ही बितानी है क्योंकि मुझे घोड़ी को चराने ले जाना है।"

इसलिए उसने कुछ रोटी और अपना कोट लिया और घोड़ी के साथ खेतों पर चला गया।

४.

उस रात अपना काम समाप्त कर, जैसा कि आपस में तय हुआ था, साइमन वाला पिशाच इवान वाले पिशाच को ढूँढने और उस मूर्ख को वस में करने के लिए आया। वह खेत में गया और चारों तरफ बारबार खोजने लगा मगर अपने साथी के बजाय उसे वहाँ सिर्फ एक छेद दिखाई दिया।

"यह स्पष्ट है," उसने सोचा, "कि मेरे साथी पर कोई मुसीबत पड़ी है। मुझे उसका स्थान ग्रहण करना चाहिए। खेत जोत लिया गया है इसलिए उस मूर्ख को घास के मैदान में पकड़ना चाहिए।"

इसलिए वह पिशाच चरागाह में पहुँचा और इवान के घास के खेत को पानी से लबालब भर दिया जिससे सारी घास कीचड़ के नीचे दब गई।

सुबह इवान चरागाह में लौटा, अपना हँसिया तेज किया और घास के खेत को काटने चल दिया। उसने घास काटना शुरू किया परन्तु अभी उसने एक दो हाथ ही चलाये थे कि उसके हँसिया की धार इस तरह मुड़ गई जिससे कि वह बिल्कुल न काट सके। उसे दुबारा तेज करने की जरूरत थी। इवान कुछ देर तक उससे जूझता रहा और फिर बोला: "इससे कोई फायदा नहीं। मुझे घर जाकर इस हँसिए को ठीक करने के लिए औजार लाना ही पड़ेगा और साथ ही थोड़ा सा रोटी का टुकड़ा भी ले आऊँगा। अगर मुझे यहाँ एक हफ्ता भी रहना पड़ा तो मैं यहाँ से तब तक नहीं हटूँगा जब तक कि पूरी घास न कट जाय।"

पिशाच ने यह सुना और सोचने लगा: "यह मूर्ख कड़ी समस्या है। मैं इस तरह इस पर काबू नहीं पा सकूँगा। मुझे धोखा देने का कोई दूसरा तरीका अख्तियार करना चाहिए।"

इवान लौटा, अपना हँसिया तेज किया और घास काटना शुरू कर दिया। पिशाच रेंग कर घास में घुस गया और हँसिए को धार की उल्टी तरफ से पकड़ने की कोशिश करने लगा जिससे कि उसकी नोंक जमीन में घुस जाय। इवान को यह काम बड़ा मुश्किल लगा परन्तु उसने सारा मैदान साफ कर दिया। सिर्फ एक छोटी सी पट्टी बाकी बची जो दलदल में थी। पिशाच दलदल में घुस गया और सोचने लगाः "भले ही मेरे पंजे कट जांय मगर मैं उसे काम नहीं करने दूँगा।"

इवान दलदल में पहुँचा। घास घनी नहीं थी परन्तु फिर भी हँसिया चलाने में मुश्किल पड़ रही थी। इवान को गुस्सा चढ़ आया और वह अपनी पूरी ताकत से हँसिया घुमाने लगा। पिशाच को हँसिया छोड़ देना पड़ा। वह हँसिये के साथ चलने में असमर्थ था और यह देखकर कि यह खतरनाक काम है, एक झाड़ी में जा छिपा। इवान ने हँसिया घुमाया, झाड़ी को पकड़ा और पिशाच की आधी पूंछ काट ली। फिर उसने घास काटना समाप्त किया, अपनी बहन से उसे इकट्ठा करने को कहा और खुद राई काटने चल दिया। वह अपना हँसिया लेकर वहाँ पहुँचा परन्तु पुंछकटा पिशाच वहाँ पहले ही से मौजूद था। उसने राई के पेड़ों को इस तरह फँसा दिया कि हँसिया चलाना असम्भव हो गया। परन्तु इवान घर गया और खुर्पा ले आया और उससे काटने लगा और उससे सारा खेत काट डाला।

"अब समय आ गया," वह बोला, "कि जौ काटना शुरू कर देना चाहिए।"

पुंछकटे पिशाच ने यह सुना और सोचने लगा, "मैं राई काटने में तो इसे रोक नहीं सका मगर जौ काटने में रोक दूँगा। सिर्फ सुबह तक इन्तजार करो।"

सुबह होने पर पिशाच जल्दी से जौ के खेत पर पहुँचा और

खेत उस समय तक कट चुका था। इवान ने उसे रात में ही काट डाला था जिससे कि कम अनाज झड़े। पिशाच नाराज़ हो उठा।

"उसने मुझे घायल कर डाला है और बुरी तरह थका दिया है- मूर्ख कहीं का। यह काम तो युद्ध से भी कठिन है। यह पापी मूर्ख कभी सोता ही नहीं। इससे पार पाना बड़ा कठिन है। मैं उसके घास के ढेर में घुस कर उसे खराब कर दूँगा।"

इसलिए पिशाच राई में घुसा और गट्ठों में घूमने लगा घास सड़ने लगी। उसने उसे गर्म किया, खुद गर्म हो गया और पड़ कर सो गया।

इवान ने घोड़ी जोती और बहन के साथ गाड़ी में राई ढोने को चल दिया। वह ढेर के पास आया और गाड़ी में राई लादने लगा। उसने दो गठरियों को हटाया और फिर अपनी हेंगी घुसेड़ी—सीधी पिशाच की पीठ में। वह हेंगी उठाता है और देखता है कि उसकी कीलों पर एक पुंछकटा, जिन्दा पिशाच छूटने की कोशिश कर रहा है, तड़फड़ा रहा है और कूद कर भागने का प्रयत्न कर रहा है।

"क्यों, गन्दे जानवर, तुम फिर यहाँ आ गए?"

"मैं दूसरा हूँ," पिशाच बोला, "पहले वाला मेरा भाई था। मैं तुम्हारे भाई साइमन के साथ था।"

"खैर," इवान बोला, "तुम चाहे कोई भी क्यों न हो मगर तुम्हारी भी वही गति हुई है।"

वह उसे गाड़ी पर पछाड़ने ही वाला था कि पिशाच चीख उठा: "मुझे छोड़ दो और मैं सिर्फ तुम्हारा पीछा ही नहीं छोड़ दूँगा बल्कि तुम मुझसे जो करने को कहोगे मैं वही करूँगा।"

"तुम क्या कर सकते हो?"

"मैं, तुम जिस चीज से चाहो, उससे सिपाही बना सकता हूँ।"

"परन्तु उनसे क्या काम निकलेगा?"

"तुम उनसे कोई भी काम ले सकते हो, वे, जो तुम चाहो, वही काम कर सकते हैं।"

"वे गा सकते हैं?"

"हाँ, अगर तुम उनसे कहो तो।"

"अच्छी बात है, तुम मेरे लिए थोड़े से बना सकते हो।"

और पिशाच बोला, "देखो, राई का एक गट्ठा लो, फिर इसे सीधा जमीन पर दे मारो और सिर्फ यह कहो :

"ओ राई के गट्ठे मेरे गुलाम
यह हुक्म है :
जहाँ एक फूस का टुकड़ा है
एक सिपाही दीखना चाहिए!"

इवान ने एक राई का गट्ठा लिया, उसे जमीन पर पटक दिया और वही कहा जो पिशाच ने कहने के लिए कहा था। राई का गट्ठा बिखर गया और फूल के सब तिनके सिपाहियों में बदल गए। उनके सामने एक तुरही वाला और एक ढोल वाला बाजा बजा रहे थे, इस तरह कि वहाँ एक पूरी फौज खड़ी थी।

इवान हँसा।

"कितना चतुर!" उसने कहा। "यह बहुत अच्छा! लड़कियाँ कितनी खुश होंगी।"

"अब मुझे जाने दो," पिशाच ने कहा।

"नहीं," इवान बोला, "मुझे अपने सिपाही बिना अनाज वाले भूसे से बनाने चाहिए वर्ना अच्छा अनाज बर्बाद हो जायेगा। मुझे यह बताओ कि उन्हें फिर गट्ठे में कैसे बदला जायगा। मैं अनाज अलग करना चाहता हूँ।

और पिशाच ने कहा, दुहराओ :

"हरेक फूस बन जा
जो पहले सिपाही था,
अपने सच्चे गुलाम को,
यह हुक्म है।"

इवान ने यही कहा और राई का गट्ठा दुबारा आ गया।

पिशाच ने फिर प्रार्थना करनी शुरू की, "अब मुझे जाने दो।"

"अच्छी बात है।" और इवान ने उसे गाड़ी के बगल में दबाया, उसे अपने हाथों से पकड़ा और हेंगी से छुड़ा लिया।

"भगवान् तुम्हारी मदद करे।" वह बोला।

और जैसे ही उसने भगवान् का नाम लिया पिशाच पानी में फेंके गए एक पत्थर की तरह जमीन में घुस गया। सिर्फ एक छेद बाक़ी रह गया।

इवान घर लौटा और वहाँ उसने अपने दूसरे भाई तारास और उसकी बीबी को खाने की मेज पर बैठे देखा।

मोटा तारास अपना कर्जा नहीं चुका सका था इसलिए अपने कर्जदारों से बचकर भागा और अपने पिता के घर वापिस लौट आया। जब उसने इवान को देखा तो बोला, "देखा इवान, जब तक कि मैं दूसरा व्यापार शुरू करूँ मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे और मेरी बीबी को अपने पास रखो।"

"अच्छी बात है," इवान ने कहा, "अगर तुम चाहो तो यहाँ रह सकते हो।"

इवान ने अपना कोट उतारा और मेज पर बैठ गया परन्तु उस व्यापारी की बीबी ने कहा : "मैं इस विदूषक के साथ नहीं बैठ सकती। इस पर से पसीने की बदबू आती है।"

फिर मोटे तारास ने कहा, "इवान, तुम पर से तेज बदबू आती है। जाओ और बाहर खाना खाओ।"

"अच्छी बात है," इवान ने थोड़ी सी रोटी लेकर बाहर अहाते में जाते हुए कहा : "हर हालत में समय हो गया है कि मैं चरागाह में जाकर घोड़ी को चराऊँ ।"

५.

तारास वाला पिशाच भी उसी रात को समझौते के मुताबिक, अपने साथी को मूर्ख इवान पर विजय प्राप्त करने में मदद करने के लिए वहाँ आ गया। वह अनाज के खेत में आया, बहुत देर तक चारों तरफ अपने साथियों को ढूँढ़ता रहा परन्तु कोई न मिला । उसे सिर्फ एक छेद मिला। वह घास के खेत में गया और वहाँ उसे दलदल में एक पिशाच की पूंछ और राई के कटे हुए खेत में एक दूसरा छेद मिला।

"यह स्पष्ट है कि मेरे साथियों पर दुर्भाग्य की मार पड़ी," उसने सोचा। "मुझे उनकी जगह लेनी चाहिए और उस मूर्ख को ठीक करना चाहिए ।"

इसलिए वह पिशाच इवान की तलाश में चल दिया जिसने इस समय तक अनाज इकट्ठा कर लिया था और जङ्गल में पेड़ काट रहा था। वे दोनों भाई एक साथ रहने में बड़ी घुटन महसूस करने लगे थे और उन्होंने इवान से उनके लिए नए मकान बनाने को पेड़ काटने के लिए कहा था।

वह पिशाच जङ्गल में भाग गया, पेड़ पर चढ़कर शाखाओं में छिप गया और पेड़ गिराने में इवान के काम में रोड़े अटकाने लगा। इवान ने एक पेड़ के तने को नीचे से काटा जिससे वह ठीक तरह से नीचे गिर पड़े परन्तु गिरते समय यह एक तरफ को मुड़ गया और कुछ टहनियों में फँस गया। इवान ने एक लम्बा लट्ठा बनाया जिससे कि उसे एक तरफ किया जा सके और बड़ी मुश्किल से उसे नीचे गिराने में सफल हुआ। इसके बाद वह दूसरा पेड़ गिराने में जुट गया—फिर वही

घटना घटी और अपनी पूरी कोशिशों के बाद वह उसे साफ कर सका। उसने तीसरा पेड़ काटना शुरू किया और फिर वही घटना घटी।

इवान ने लगभग पचास छोटे पेड़ काट लेने की आशा की थी मगर दस भी नहीं काट पाया था कि रात हो गई और वह थक गया। उसकी देह पर से पसीना भाप की तरह उठने लगा मगर वह फिर भी अपने काम में लगा रहा। उसने अपनी कुल्हाड़ी पेड़ में गाड़ दी और आराम करने लगा।

वह पिशाच यह देख कर कि इवान ने अपना काम रोक दिया, बड़ा ख़ुश हुआ।

"आखिरकार," उसने सोचा, "उसे थका ही डाला। वह अब यह काम बन्द कर देगा। अब मैं भी थोड़ा आराम कर सकता हूँ।"

वह पैर फैला कर एक शाखा पर बैठ गया और प्रसन्नता से मुँह बन्द कर हँसने लगा। परन्तु इवान जल्दी ही उठ बैठा, कुल्हाड़ी बाहर खींची, घुमाई और दूसरी तरफ से इतनी जोर से मारी कि पेड़ फौरन कट गया और शोर करता हुआ जमीन पर आ गया। पिशाच ने इसकी उम्मीद नहीं की थी और उसे अपने पैर निकालने का भी मौका नहीं मिला। नतीजा यह हुआ कि पेड़ के नीचे उसका पंजा फंस गया। इवान ने टहनियाँ साफ करनी शुरू कीं, जब पेड़ पर लटकते हुए एक जिन्दा पिशाच पर उसकी निगाह पड़ी। इवान को आश्चर्य हुआ।

"ओह, गन्दे जानवर," वह कहता है, "तो तुम फिर यहाँ आ गए।"

"मैं दूसरा हूँ," पिशाच कहता है। "मैं तुम्हारे भाई तारास के साथ था।"

"तुम चाहे कोई से भी हो, तुम्हारा अन्त आ गया," इवान बोला और अपनी कुल्हाड़ी घुमाते हुए उसकी मूंठ से उसे मारने ही

वाला था परन्तु पिशाच दया की भीख मांगने लगा। "मुझे मत मारो" उसने कहा, "और मैं, जो तुम कहोगे, वही करूँगा।"

"तुम क्या कर सकते हो ?"

"मैं तुम्हारे लिए धन बना सकता हूँ, जितना तुम चाहो उतना।"

"अच्छी बात है, थोड़ा सा बनाओ।" इसलिए पिशाच ने उसे धन बनाना सिखाया।

उसने कहाः "इस शाहबलूत के पेड़ की थोड़ी सी पत्तियाँ लो और उन्हें अपने हाथों में रगड़ो, और सोना जमीन पर गिरने लगेगा।"

इवान ने थोड़ी सी पत्तियाँ लीं और उन्हें रगड़ा और उसके हाथों में से सोना गिरने लगा।

"यह चीज बहुत अच्छी रहेगी," उसने कहा, "वे लोग छुट्टियों में इससे खेला करेंगे।"

"अब मुझे जाने दो," पिशाच ने प्रार्थना की।

"अच्छी बात है," इवान बोला और एक ढेकली से उसने पिशाच को आजाद कर दिया। "अब भाग जाओ! और भगवान तुम्हारी मदद करे," वह कहता है।

और जैसे ही उसने भगवान का नाम लिया वह पिशाच पानी में फेंके गए एक पत्थर की तरह जमीन में घुस गया। सिर्फ एक छेद रह गया।

६.

इस तरह उन भाइयों ने घर बनाए और अलग अलग रहना शुरू कर दिया। और इवान ने फसल का काम पूरा किया, बीयर (शराब) बनाई और भाइयों को आने वाली छुट्टियाँ अपने साथ बिताने के लिए निमंत्रण दिया। उसके भाई नहीं आए।

"हम लोग किसानी दावतों में रुचि नहीं लेते," उन्होंने कहा।

इसलिए इवान ने किसानों और उनकी बीबियों को दावत दी और तब तक शराब पीता रहा जब तक कि मतवाला न बन गया। फिर वह सड़क पर नाचने वालों के एक झुंड में पहुँचा और उनके पास जाकर उसने स्त्रियों से अपने सम्मान में एक गीत गाने के लिए कहा। "क्योंकि," वह बोला, "मैं तुम्हें कुछ ऐसी चीज दूँगा जो तुमने जिन्दगी में पहले कभी न देखी होगी।"

स्त्रियाँ हँसीं और उसके प्रशंसा के गीत गाने लगीं और जब गा चुकीं तो बोलीं, "अब हमें अपनी चीज दो।"

"मैं अभी लाया," उसने कहा।

उसने अनाज रखने की एक टोकरी उठाई और जङ्गल में भाग गया। स्त्रियाँ हँसने लगीं। "वह मूर्ख है!" वे बोलीं और इधर उधर की बातें करने लगीं।

परन्तु फौरन ही इवान उस टोकरी में कोई भारी सी चीज भरे हुए वापस दौड़ा आया।

"यह लोगी?"

"हाँ! इसे हमें दे दो!"

इवान ने एक मुट्ठी में सोना भरा और स्त्रियों की तरफ फेंक दिया। आपको वह दृश्य देखना चाहिए था कि वे लोग किस तरह उस पर उठाने को टूट पड़ीं और चारों तरफ खड़े हुए आदमी दौड़े और एक दूसरे से छीना झपटी करने लगे। एक बुढ़िया कुचल कर अधमरी हो गई। इवान हँसने लगा।

"ओह, मूर्ख!" वह कहता है, "तुमने इस दादी को क्यों कुचल डाला? शान्त हो जाओ और मैं तुम्हें थोड़ा सा और दे दूँगा।" और उसने थोड़ा सा उनकी तरफ और फेंक दिया। आदमियों ने चारों तरफ भीड़ कर ली और इवान ने अपने पास का सारा सोना उनके

बीच फेंक दिया। उन्होंने और मांगा लेकिन इवान ने कहा, "इस समय मेरे पास और नहीं है : दूसरी बार मैं तुम लोगों को थोड़ा सा और दूँगा। अब आओ नाचें और तुम लोग मेरे लिए गाना गा सकते हो।"

औरतों ने गाना, गाना शुरू कर दिया।

"तुम्हारा गाना अच्छा नहीं है," वह कहता है।

"तुमको इनसे अच्छे और कहाँ सुनने को मिलेंगे ?" वे कहती हैं।

"मैं तुम्हें अभी दिखाऊँगा," वह जवाब देता है।

वह गोदाम में गया, एक गट्ठा उठाया, उसका अनाज झाड़ा, उसे खड़ा किया और जमीन पर दे मारा।

"अब," उसने कहा :

"ओ गट्ठे ! मेरे गुलाम
यह हुक्म है :
जहाँ एक फूस का तिनका था
एक सिपाही होना चाहिए।"

और वह गट्ठा बिखर गया और बहुत से सिपाही बन गए। ढोल और तुरही बजने लगे। इवान ने सिपाहियों को गाने बजाने की आज्ञा दी। वह उन्हें बाहर सड़क पर ले गया और आदमी आश्चर्य-चकित हो उठे। सिपाहियों ने बाजा बजाया और गाना गाया और तब इवान उन्हें वापस खलिहान में ले गया, (हरेक से अपना पीछा करने के लिए मना कर) उन्हें फिर गट्ठे के रूप में बदला और उसे उसकी जगह पर फेंक दिया।

फिर वह घर गया और अस्तबल में सोने के लिए लेट गया।

दूसरी सुबह सिपाही साइमन ने ये सब बातें सुनीं और अपने भाई के पास पहुँचा।

"मुझे बताओ," वह कहता है, "तुम्हें वे सिपाही कहाँ से मिले और तुम उन्हें कहाँ ले गए ?"

"इससे तुम्हें क्या मतलब ?" इवान बोला।

"इससे क्या मतलब ? क्यों, उन सिपाहियों द्वारा एक व्यक्ति जो चाहे सो कर सकता है। वह एक राज्य जीत सकता है।"

इवान को आश्चर्य हुआ।

"सचमुच!" उसने कहा, "तुमने यह बात पहले क्यों नहीं कही ? मैं तुम्हारे लिए जितने तुम चाहो उतने बना सकता हूँ। यह अच्छा हुआ कि लड़की ने और मैंने बहुत सा भूसा इकट्ठा कर रखा है।"

इवान अपने भाई को खलिहान में ले गया और बोला :

"देखो, अगर मैं तुम्हारे लिए सिपाही बना दूँ तो तुम उन्हें फौरन वहाँ से बाहर ले जाना क्योंकि अगर हमें उन्हें खाना खिलाना पड़ा तो वे एक दिन ही में सारे गाँव को खा डालेंगे।"

सिपाही साइमन ने सिपाहियों को बाहर ले जाने का वचन दिया और इवान ने उन्हें बनाना शुरू कर दिया। उसने एक गट्ठा उठाया और जमीन पर दे मारा—एक पूरी फौज खड़ी हो गई। उसने दूसरा गट्ठा पटका और वहाँ दूसरी फौज खड़ी थी। उसने इतने सिपाही बनाए कि सारा मैदान भर गया।

"इतने काफी होंगे ?" उसने पूछा।

साइमन बहुत खुश था। वह बोला : "काफी होंगे ! धन्यवाद, इवान !"

"अच्छी बात है," इवान ने कहा, "अगर तुम्हें और जरूरत हो तो वापस आ जाना। मैं और बना दूँगा इस साल भूसा बहुत हुआ है।"

सिपाही साइमन ने फौरन अपनी फौज की कमान सम्भाली, उन्हें इकाट्ठा किया, सङ्गठित किया और युद्ध करने चला गया।

मुश्किल से अभी सिपाही साइमन गया ही था कि मोटा तारास आ पहुँचा। उसने भी कल की बातें सुन ली थीं। वह अपने भाई से बोला :

"मुझे वह जगह दिखाओ जहाँ से तुम सोना लाए थे। अगर मेरे पास शुरू करने के लिए थोड़ा सा सोना हो तो मैं उससे दुनियाँ का सारा सोना खींच लाऊँगा।"

इवान को आश्चर्य हुआ।

"सचमुच," वह बोला, "तुम्हें मुझसे पहले ही कहना चाहिए था। मैं जितना तुम चाहो उतना बना सकता हूँ।"

उसका भाई बहुत प्रसन्न हुआ।

"मुझे प्रारम्भ करने के लिए तीन कटोरी भर कर दे दो।"

"अच्छी बात है," इवान ने कहा। "जङ्गल में चलो, या अच्छा तो यह होगा कि घोड़ी जोत कर ले चलें क्योंकि तुम उसे उठा कर नहीं ला सकोगे।"

वे दोनों जङ्गल में गए और इवान ने शाहबलूत की पत्तियाँ मसलनी शुरू कर दीं और सोने का एक ढेर इकट्ठा कर दिया।

"इतना काफी होगा ?"

तारास बहुत खुश था।

"अभी के लिए इतना काफी होगा," उसने कहा, "धन्यवाद, इवान।"

"अच्छी बात है," इवान कहता है, "अगर तुम्हें और ज्यादा की जरूरत हो तो वापस आ जाना। अभी तो बहुत सी पत्तियाँ बच रही हैं।"

मोटे तारास ने एक गाड़ी भर सोना लिया और व्यापार करने चल दिया।

इस तरह दोनों भाई चले गए : साइमन युद्ध करने और तारास

खरीदने और बेचने। और सिपाही साइमन ने अपने लिए एक राज्य जीत लिया और मोटे तारास ने व्यापार में बहुत धन कमाया।

जब वे दोनों भाई आपस में मिले तो उन्होंने एक दूसरे को बताया कि साइमन को कैसे सिपाही मिले और तारास को कैसे धन प्राप्त हुआ। सिपाही साइमन ने अपने भाई से कहा, "मैंने एक राज्य जीत लिया है और शान से रहता हूं, परन्तु मेरे पास अपने सिपाहियों को रखने के लिए काफी धन नहीं है।"

मोटे तारास ने कहा, "और मैंने बहुत धन पैदा किया है परन्तु मुसीबत यह है कि मेरे पास उसकी रक्षा करने के लिए सिपाही नहीं हैं।"

वे इवान के पास गए और साइमन ने कहा :

"प्यारे भाई, मेरे पास सिपाही काफी नहीं हैं। मेरे लिए एक दो गट्ठर और बना दो।"

इवान ने सिर हिला दिया।

"नहीं" वह कहता है, "अब एक भी सिपाही और नहीं बनाऊँगा।"

"परन्तु तुमने वायदा किया था कि तुम बना दोगे।"

"मैं जानता हूँ कि मैंने वायदा किया था परन्तु मैं और नहीं बनाऊँगा।"

"मगर क्यों नहीं बनाएगा, मूर्ख !"

"क्योंकि तुम्हारे सिपाहियों ने एक आदमी मार डाला था। मैं उस दिन सड़क के किनारे खेत जोत रहा था। मैंने देखा कि एक औरत एक गाड़ी में कफन ले जा रही थी और रो रही थी। मैंने उससे पूछा कि कौन मर गया। वह बोली, "साइमन के सिपाहियों ने युद्ध में मेरे पति को मार डाला है।" मैंने सोचा था कि सिपाही सिर्फ बाजा

बजाएँगे मगर उन्होंने एक आदमी की हत्या करदी। मैं तुम्हें और नहीं दूंगा।"

वह इस बात पर अड़ गया और उसने और सिपाही नहीं बनाए।

मोटा तारास अभी इवान से उसके लिए और सोना बना देने की प्रार्थना करने लगा मगर इवान ने सिर हिला दिया।

"नहीं, मैं और नहीं बनाऊँगा," उसने कहा।

"तुमने वायदा नहीं किया था ?"

"किया था, परन्तु मैं और नहीं बनाऊँगा," उसने जबाव दिया।

"क्यों नहीं बनाएगा, मूर्ख !"

"क्योंकि तुम्हारे सोने के सिक्कों ने माइकेल की बेटी से उसकी गाय छीन ली थी।"

"कैसे ?"

"सिर्फ ले गए। माइकेल की लड़की के पास एक गाय थी। उसके बच्चे दूध पिया करते थे। परन्तु उस दिन उसके बच्चे मेरे पास दूध मांगने आए। मैंने कहा, "तुम्हारी गाय कहाँ है ?" उन्होंने जबाव दिया, "मोटे तारास का कारिन्दा आया और उसने माँ को सोने के तीन टुकड़े दिए और माँ ने उसे गाय दे दी, इसलिए अब हमारे पास पीने को कुछ भी नहीं रहा।" मैंने सोचा था कि तुम उन सोने के टुकड़ों से सिर्फ खेलोगे मगर तुमने उन बच्चों की गाय छीन ली। मैं तुम्हें और नहीं दूंगा।"

और इवान इस बात पर अड़ गया और उसे और सोना बनाकर नहीं दिया। इसलिए दोनों भाई चले गए और चलते २ वे इस बात पर विचार करने लगे कि उनकी परेशानियाँ किस तरह दूर हों। और साइमन ने कहा :

"देखो: मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या करना चाहिए। तुम मुझे

मेरे सिपाहियों को खिलाने के लिए धन दोगे और मैं तुम्हें अपना आधा राज्य और तुम्हारे धन की रक्षा करने के लिए काफी सिपाही दूंगा।" तारास राजी हो गया। इसलिए भाइयों ने जो कुछ उनके पास था आपस में बांट लिया और दोनों राजा बन गए और दोनों ही अमीर हो गए।

८.

इवान अपनी गूंगी बहनों के साथ खेतों में काम करते हुए माँ बाप के पालन पोषण में मन लगाए घर पर रहता रहा। अब ऐसा हुआ कि इवान का रखवाली करने वाला कुत्ता बीमार पड़ा, सूख गया और मरने के करीब हो गया। इवान ने उस पर रहम खाकर अपनी बहन से थोड़ी सी रोटी ली, उसे अपनी टोपी में रखा और बाहर ले गया और कुत्ते के सामने फेंक दी। परन्तु टोपी फटी थी इसलिए रोटी के साथ एक छोटी सी जड़ी जमीन पर गिर पड़ी। बुड्ढा कुत्ता उसे रोटी के साथ खा गया और जैसे ही उसने उसे निगला वह उछला और खेलने, भौंकने और पूंछ हिलाने लगा। संक्षेप में यह कि वह फिर ठीक हो गया।

माँ बाप ने यह देखा और आश्चर्यचकित हो उठे।

"तुमने कुत्ते को कैसे ठीक किया?" उन्होंने पूछा।

इवान ने जवाब दिया: "मेरे पास हर दर्द को दूर करने वाली दो जड़ी थीं और वह उनमें से एक निगल गया।"

अब उसी समय यह हुआ कि राजा की लड़की बीमार पड़ गई। राजा ने हर गाँव और शहर में मुनादी करवा दी कि जो कोई उसे ठीक कर देगा वह उसे इनाम देगा और अगर कोई अविवाहित व्यक्ति राजकुमारी को ठीक कर देगा तो उसके साथ राजकुमारी की शादी कर

दी जायगी। दूसरी जगहों की तरह इवान के गाँव में भी घोषणा की गई।

माँ बाप ने इवान को बुलाया और कहा: "तुमने सुना कि राजा ने क्या घोषणा की है? तुमने कहा था कि तुम्हारे पास ऐसी जड़ी है जो हर बीमारी को ठीक कर देती है। जाओ और राजा की लड़की को ठीक करदो और तुम जिन्दगी भर सुखी रहोगे।"

"अच्छी बात है," उसने कहा।

इवान ने जाने की तैयारी की और उन्होंने उसे सबसे अच्छे कपड़े पहनाए। परन्तु जैसे ही वह दरवाजे से बाहर निकला उसकी मुलाकात एक टूटे हाथ वाली बुढ़िया से हो गई।

"मैंने सुना है," वह बोली, "कि तुम आदमियों को अच्छा कर देते हो। मैं प्रार्थना करती हूँ कि मेरा हाथ ठीक कर दो क्योंकि मैं अपने आप अपने जूते भी नहीं पहन सकती।"

"अच्छी बात है," इवान बोला, और उस जड़ी को उस बुढ़िया को देते हुए उसे निगल जाने को कहा। उसने जड़ी निगल ली और ठीक हो गई। वह फौरन ही अपना हाथ हिलाने लगी।

उसके माँ बाप उसके साथ राजा के पास चलने के लिए बाहर आए परन्तु जब उन्होंने सुना कि उसने वह जड़ी दे डाली है और अब उसके पास राजकुमारी को देने के लिए कुछ भी नहीं बचा तो वे उसे फटकारने लगे।

"तुमने एक भिखारिन पर तो रहम किया लेकिन तुम्हें राजकुमारी के लिए कोई दुख नहीं।" उन्होंने कहा। परन्तु इवान को राजकुमारी के लिए भी दुख था। इसलिए उसने गाड़ी जोती, बैठने के लिए उसमें भूसा रखा और चलने के लिए बैठ गया।

"कहाँ जा रहे हो, मूर्ख?"

"राजा की लड़की को ठीक करने।"

"परन्तु तुम्हारे पास उसे ठीक करने के लिए कुछ भी तो है नहीं।"

"फिकर मत करो," उसने कहा और चल दिया।

वह राजा के महल पर आया और जैसे ही उसने चौखट पर पैर रखा राजकुमारी ठीक हो गई। राजा बहुत खुश हुआ और इवान को अपने पास लाने की आज्ञा दी और उसे सुन्दर पोशाक पहनाई।

"मेरे दामाद बन जाओ," राजा ने कहा।

"अच्छी बात है," इवान बोला।

और इवान ने राजकुमारी से शादी करली। राजा कुछ दिनों बाद ही मर गया और इवान राजा हो गया। इस तरह तीनों भाई राजा थे।

९.

तीनों भाई राज्य करने लगे। सबसे बड़ा भाई सिपाई साइमन खूब फला फूला। अपने फूस के सिपाहियों के अलावा उसने असली सिपाही भरती किए। उसने अपने सारे राज्य में घोषणा करवा दी कि हर दस घरों के पीछे एक सिपाही की भरती की जायगी। और हर सिपाही को लम्बा तथा शरीर और चेहरे मोहरे से साफ सुथरा होना चाहिये। उसने ऐसे बहुत से सिपाही इकट्ठे कर लिए और उन्हें शिक्षा दी और जब कभी किसी ने भी उसका विरोध किया तो उसने फौरन अपने सिपाही भेजे और रास्ता साफ कर लिया जिससे हरेक उससे डरने लगा और उसकी जिन्दगी चैन से गुजरने लगी। जिस चीज पर भी उसकी निगाह पड़ी या उसने इच्छा की, उसकी हो गई। उसने अपने सिपाही भेजे और मनचाही चीज प्राप्त करली।

मोटा तारास भी मौज से रहने लगा। उसे जो धन मिला था उसे उसने बर्बाद नहीं किया बल्कि और बढ़ाया। उसने अपने राज्य में

शान्ति और व्यवस्था स्थापित की। उसने अपने धन को खजानों में रखा और जनता पर कर लगाए। उसने मनुष्य पर, पैदल और गाड़ी पर चलने पर, जूतों, मोजों और कपड़े पर लगाने वाली बेलों पर कर लगाए। और जो उसने चाहा वही पाया। धन प्राप्त करने के लिए लोगबाग उसके पास हरेक चीज ले पहुँचते और उसके लिए काम करने को तैयार रहते क्योंकि हरेक धन चाहता था।

मूर्ख इवान के दिन भी कुछ बुरे नहीं कट रहे थे। जैसे ही उसने अपने ससुर को दफ ा कर छुट्टी पाई, अपने सारे राजसी कपड़े उतार डाले और अपनी बीवी को सौंप दिए कि सन्दूक में रख दो। और उसने फिर अप ी वही मोटी कमीज, ब्रीचिज और किसानी जूते पहन लिए और काम करना शुरू कर दिया।

"मुझे बड़ा ीरस लगता है," उसने कहा, "मैं मोटा होता जा रहा हूँ। मेरी भूख और ींद जाती रही है!" इसलिए वह अपने माँ-बाप और गूँगी बहन को अपने साथ रहने के लिए लिवा लाया और पहले की तरह मेहनत करने लगा।

आदमियों ने कहा, "मगर आप एक राजा हैं!"

"ठीक है," उसने कहा, "परन्तु एक राजा को भी खाना खा ा-पड़ता है।"

उसका एक मन्त्री उसके पास आया और बोला, "तनख्वाह देने के लिए हमारे पास धन नहीं है।"

"अच्छी बात है," वह कहता है, "तो तनख्वाह मत दो।"

"तब कोई भी नौकरी नहीं करेगा।"

"अच्छी बात है, मत करने दो। उन्हें काम करने के लिए अधिक समय मिलेगा। उन्हें खाद ढोने दो। अभी बहुत सफाई करनी बाकी पड़ी है।"

और लोग-बाग इवान के सामने न्याय के लिए लाए गए। एक

ने कहा : "इसने मेरा धन चुरा लिया है।" और इवान ने फैसला दिया, "अच्छी बात है, यह जाहिर करता है कि उसे उसकी जरूरत थी।"

और उन सब को पता चल गया कि इवान मूर्ख है। उसकी बीबी ने उससे कहा, "लोग-बाग कहते हैं कि तुम मूर्ख हो।"

"अच्छी बात है," इवान बोला।

उसकी बीबी इस बारे में बहुत समय तक सोचती रही मगर वह भी मूर्ख थी।

"क्या मुझे अपने पति के साथ जाना चाहिए ? जहाँ सुई जाती है धागा भी जाता है," वह बोली।

इसलिए उसने अपनी शाही पोशाक उतार डाली, उन्हें सन्दूक में बन्द कर दिया और गूँगी लड़की के पास काम सीखने पहुँची। उसने काम सीख लिया और अपने पति की मदद करने लगी।

सब अकलमन्द आदमी इवान का राज्य छोड़ गए, सिर्फ मूर्ख रह गए।

किसी के पास धन नहीं था। वे रहते और काम करते। अपना पेट भरते और दूसरों को खिलाते।

१०.

शैतान उन तीनों भाइयों की बर्बादी का समाचार सुनने के लिए अपने पिशाचों का बहुत दिनों तक इन्तजार करता रहा मगर कोई खबर नहीं मिली। इसलिए वह खुद इसकी खोजबीन करने चल दिया। उसने चारों तरफ खोजा, परन्तु उन तीनों पिशाचों के स्थान पर उसे सिर्फ तीन छेद मिले।

"यह स्पष्ट है कि वे असफल रहे," उसने सोचा, "अब मुझे खुद ही यह काम करना पड़ेगा।"

इसलिए वह भाइयों की तलाश में चल दिया परन्तु इस समय वे अपनी पुरानी जगहों पर नहीं थे। उसने उन्हें तीन विभिन्न राज्यों

में पाया। तीनों राज्य कर रहे थे। इससे शैतान बड़ा नाराज हो उठा। "अच्छा," उसने कहा, "अब मुझे खुद ही यह काम करना चाहिए।"

पहले वह राजा साइमन के पास गया। वह उसके पास अपने असली रूप में न जाकर एक सेनापति का रूप धर राजमहल पहुँचा।

"राजा साइमन, मैंने सुना है," उसने कहा, "कि आप एक बड़े योद्धा हैं और क्योंकि मैं इस काम में दक्ष हूँ इसलिए आपकी सेवा करना चाहता हूँ।"

राजा साइमन ने उससे सवाल किए और यह देखकर कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है, उसे नौकर रख लिया।

नए सेनापति ने राजा साइमन को एक मजबूत फौज कैसे बनाई जाती है, बताना शुरू कर दिया।

"सबसे पहले," उसने कहा, "हमें और सिपाहियों की भरती करनी चाहिए क्योंकि आपके राज्य में बहुत से आदमी बेकार हैं। हमें बिना किसी लिहाज के हरेक नौजवान को भरती कर लेना चाहिए। तब आपके पास पहले से पाँच गुनी ज्यादा फौज हो जायगी। दूसरी बात यह है कि हमें नई राइफलें और तोपें प्राप्त करनी चाहिए। मैं ऐसी राइफलें बनाऊँगा जो एक बार में सौ गोलियाँ चलाएँगी। गोलियाँ मटर के दानों की तरह उड़ेंगी। और मैं ऐसी तोपें बना दूंगा जो अपनी आग में चाहे आदमी हो, चाहे घोड़ा या दीवाल सबको भस्म कर देंगी।"

राजा साइमन ने नए सेनापति की बातें सुनीं, बिना किसी अपवाद के हरेक नौजवान की लामबन्दी का हुक्म दिया और नए कारखाने बनवाए जिनमें उसने नई तरह की राइफलें और तोपें ढेर की ढेर बनवाईं। फिर उसने जल्दी से अपने पड़ोसी राजा से लड़ाई छेड़ दी। जैसे ही दूसरी फौज से उसकी मुठभेड़ हुई राजा साइमन ने अपने सिपाहियों को उस पर गोली बरसाने और तोपों से आग उगलने का

हुक्म दिया और एक ही चोट में उसने दुश्मन राजा की आधी फौज बेकार करदी। पड़ौसी राजा इस बुरी तरह डर गया कि उसने हथियार डाल दिए और अपना राज्य उसे दे दिया। राजा साइमन बड़ा खुश हुआ।

"अब," वह बोला, "मैं हिन्दुस्तान के राजा को जीतूंगा।"

मगर हिन्दुस्तान के राजा ने साइमन के विषय में सुन रखा था और उसके सारे आविष्कारों को अपना लिया था और कुछ अपने नए आविष्कार कर लिए थे। हिन्दुस्तान के राजा ने सिर्फ नौजवानों की भरती ही नहीं की थी बल्कि हरेक स्त्री को भी सेना में भरती कर लिया था और राजा साइमन से भी बड़ी सेना इकट्ठी कर ली थी। उसने साइमन की राइफलों और तोपों की नकल कर ली थी और हवा में उड़ कर दुश्मन पर फटने वाले बम बरसाने का नया तरीका ईजाद कर लिया था।

राजा साइमन हिन्दुस्तान के राजा से लड़ने चल दिया, इस उम्मीद में कि उस राजा की तरह वह उसे भी हरा देगा, परन्तु हंसिया जो इतनी अच्छी तरह काटता था अब उसकी धार कुंठित हो चुकी थी। हिन्दुस्तान के राजा ने साइमन की फौज को एक गोली के टप्पे की दूरी पर भी नहीं आने दिया बल्कि अपनी नारी-सेना को हवा में उड़कर साइमन की फौज पर फटने वाले बम बरसाने के लिए भेज दिया। स्त्रियों ने उस फौज पर ऐसे बम बरसाने शुरू कर दिये कि जैसे केकड़ों पर सुहागा बरस रहा हो। फौज भाग खड़ी हुई और साइमन अकेला रह गया। इस तरह हिन्दुस्तान के राजा ने साइमन का राज्य ले लिया और सिपाही साइमन जान बचा कर भाग गया।

उसके भाई को समाप्त कर शैतान राजा तारास के पास पहुँचा। एक व्यापारी का रूप धारण कर वह तारास के राज्य में जाकर बस गया, एक व्यापार करने की संस्था स्थापित की और धन खर्च करने लगा। उसने हर चीज के लिए तगड़ी कीमत दी और हरेक इस नए व्यापारी के

पास धन बटोरने के लिए आने लगा। और जनता के पास इतना धन हो गया कि वह समय पर कर चुकाने लगी और उसने पिछला बकाया भी चुका दिया। राजा तारास बहुत खुश हुआ।

"नए व्यापारी को धन्यवाद है," उसने सोचा "मेरे पास पहले से भी ज्यादा धन हो जायगा और मेरी जिंदगी और भी आराम से कटने लगेगी।"

राजा तारास नए-नए कार्य—क्रम बनाने लगा और उसने एक नया महल बनवाना शुरू कर दिया। उसने नोटिस घुमवाया कि आदमियों को उसके लिए लकड़ी और पत्थर लाने चाहिये, और काम करने के लिए आना चाहिए और उसने हर चीज के लिए ऊँची कीमतें तय करदीं। राजा तारास ने सोचा था कि आदमी पहले की ही तरह झुंड के झुंड काम करने आएंगे परन्तु उसे आश्चर्य हुआ कि सारा पत्थर और लकड़ी उस व्यापारी के यहाँ पहुँच रही थी और सारे कारीगर भी वहीं चले गये थे। राजा तारास ने कीमतें बढ़ा दीं परन्तु व्यापारी ने उससे भी ज्यादा बढ़ाईं। राजा तारास के पास बहुत धन था परन्तु उस व्यापारी के पास उससे भी ज्यादा था। उसने हर मामले में राजा को नीचा दिखाया।

राजा का महल बनना बन्द हो गया; इमारत आगे नहीं बन सकी।

राजा तारास ने एक बाग लगवाने की स्कीम बनाई और जब शरद ऋतु आई तो उसने आदमियों को बुलवाया कि वे आएं और बाग लगाएं मगर कोई भी नहीं आया। सब लोग उस व्यापारी का एक तालाब खोदने में लगे हुए थे। जाड़े आए और राजा तारास ने अपने नए ओवर कोट के लिए सेबल नामक प्राणी की रोयेंदार खालें खरीदनी चाहीं। उसने उन्हें खरीदने के लिए आदमी भेजे परन्तु वे लौट आए और बोले—"बाजार में एक भी खाल नहीं बची है। व्यापारी ने सब खरीद ली हैं। उसने ज्यादा से ज्यादा कीमत दी और उन खालों के कालीन बनवा लिए।

राजा तारास ने कुछ घोड़े खरीदने चाहे। उसने खरीदने के लिए आदमी भेजे परन्तु वे लोग यह कहते हुए लौट आए कि "उस व्यापारी ने सारे अच्छे घोड़े खरीद लिए हैं। उनसे तालाब भरने के लिए पानी ढुलवाया जा रहा है।"

राजा के सारे काम पूरी तरह रुक गए। कोई भी उसके लिए काम नहीं करता था क्योंकि हरेक उस व्यापारी के कामों में व्यस्त था। वे लोग राजा तारास के पास कर चुकाने के लिए सिर्फ उस व्यापारी का दिया हुआ धन देने के लिए ही आते थे।

और राजा ने इतना धन इकट्ठा कर लिया कि उसके पास रखने को जगह नहीं रही और उसकी जिन्दगी हराम हो उठी। उसने नई स्कीम बनाना बन्द कर दीं। वह सिर्फ जिन्दा रहने में ही खुश रहता परन्तु उसकी जिन्दगी भी मुश्किल से कट रही थी। उसके पास हर चीज की कमी हो गई। एक एक करके उसके रसोइए, कोचवान और नौकर उसे छोड़ कर उस व्यापारी के पास चले गये। जल्दी ही उसके पास खाने के सामान की भी कमी पड़ गई। जब वह कोई चीज खरीदने किसी को बाजार भेजता तो वहाँ कुछ भी नहीं मिलता था। व्यापारी ने सब चीजें खरीद ली थीं और जनता राजा के पास सिर्फ कर चुकाने के लिए धन लेकर ही आती थी।

राजा तारास बहुत नाराज हुआ और उस व्यापारी को अपने राज्य से निकाल दिया। मगर वह व्यापारी उसकी सरहद पर ही जाकर बस गया और पहले की ही तरह रहने लगा। व्यापारी के धन की खातिर लोग राजा के बजाय उसी के पास सब कुछ लेकर पहुँचने लगे।

राजा तारास की हालत खराब हो गई। कई दिनों तक उसे खाने तक को कुछ भी नहीं मिला और चारों तरफ यह अफवाह उड़ने लगी कि वह व्यापारी राजा को भी खरीदने की डींग हांक रहा है। राजा तारास भयभीत और किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उठा।

ऐसे समय सिपाही साइमन उसके पास आया, यह कहते हुए कि—"मेरी मदद करो, क्योंकि हिन्दुस्तान के राजा ने मुझे जीत लिया है।"

परन्तु राजा तारास खुद गले तक मुसीबतों में डूबा हुआ था। "मैंने खुद," वह बोला, "दो दिन से कुछ भी नहीं खाया है।"

११.

दो भाइयों से निबट कर शैतान इवान के पास पहुँचा। उसने एक सेनापति का रूप बनाया और इवान के पास आकर उसे इस बात के लिए फुसलाने लगा कि उसे एक फौज रखनी चाहिये।

"राजा के लिए," वह कहने लगा, "एक सेना रखे बिना ठीक नहीं रहता। सिर्फ मुझे हुक्म दे दीजिए और आपकी प्रजा में से आदमी एकत्रित कर एक फौज बना दूँगा।"

इवान ने उसकी बात सुनी। "अच्छी बात है," इवान ने कहा "एक फौज बनाओ और उसे अच्छी तरह गाना, गाना सिखाओ। मुझे उनका गाना अच्छा लगता है।"

इस तरह शैतान इवान के राज्य में आदमियों की भरती करने चला। उसने उनसे जाकर सिपाहियों में नाम लिखाने के लिए कहा और बताया कि हरेक को थोड़ी शराब और एक सुन्दर लाल टोपी मिलेगी।

लोग हँसने लगे।

"हमारे पास काफी शराब है," उन्होंने कहा, "हम खुद बना लेते हैं और जहाँ तक टोपियों का सवाल है, औरतें सब तरह की बना लेतीं हैं, यहाँ तक कि किनारे पर झब्बे लगी हुई भी।"

किसी ने भी फौज में नाम नहीं लिखाया।

शैतान इवान के पास आया और कहने लगाः "आपकी मूर्ख

प्रजा अपनी मर्जी से फौज में नाम नहीं लिखाएगी। हमें उसको मजबूर करना पड़ेगा।

"अच्छी बात है," इवान ने कहा,—"तुम कोशिश कर सकते हो।"

इसलिए शैतान ने नोटिस घुमाया कि सब आदमियों को फौज में भरती होना पड़ेगा और जो कोई इन्कार करेगा इवान उसे फाँसी पर लटका देगा।

लोग सेनापति के पास आए और बोले—"तुम कहते हो कि अगर हम लोग सिपाही नहीं बनेंगे तो राजा हमें मरवा डालेगा परन्तु तुम यह नहीं बताते कि अगर हम भरती हो जायेंगे तो इससे क्या फायदा होगा। हमने कहते सुना है कि सिपाही मारे जाते हैं।"

"हाँ, कभी कभी ऐसा हो जाता है।"

जब लोगों ने यह सुना तो अकड़ गए।

"हम नहीं जायेंगे" उन्होंने कहा। "घर पर मरना ज्यादा अच्छा है। हर हालत में हमें मरना है।" "मूर्खो, तुम मूर्ख हो!" शैतान ने कहा—"एक सिपाही मारा भी जा सकता है और नहीं भी मर सकता है परन्तु अगर तुम नहीं जाओगे, राजा इवान तुम्हें निश्चित रूप से मरवा डालेगा।" लोग पशोपेश में पड़ गए और मूर्ख इवान के पास सलाह लेने पहुँचे।

"एक सेनापति आया है," वे बोले, "जो कहता है कि हम सब को सिपाही बन जाना चाहिए। अगर तुम सिपाही बन जाओगे, वह कहता है कि, तुम मारे भी जा सकते हो और नहीं भी मारे जा सकते। मगर अगर तुम नहीं बनोगे तो राजा इवान निश्चित रूप से तुम्हें मरवा डालेगा। क्या यह सच है?"

इवान हंसा और बोला—"मैं अकेला तुम सब को कैसे जान से मार सकता हूं? अगर मैं मूर्ख न होता तो इस बात को तुम्हें समझा देता, परन्तु जैसी कि हालत है मैं खुद इसे समझ नहीं पा रहा हूँ।"

"तो," उन्होंने कहा,—"हम नहीं बनेंगे।"

"अच्छी बात है," वह कहता है, "मत बनो।"

इसलिए वे लोग सेनापति के पास गए और भरती होने से इन्कार कर दिया। और शैतान ने देखा कि यह खेल समाप्त हो गया और वह कंकड़ेपुर के राजा के पास पहुँचा।

"हमें युद्ध करना चाहिए" वह कहता है, "और राजा इवान को जीतना चाहिए। यह सच है कि वहाँ धन नहीं है मगर वहाँ अनाज, पशु और सब चीजों की बहुतायत है।"

इसलिए कंकड़ेपुर के राजा ने युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दीं। उसने एक बड़ी फौज इकट्ठी की, उसे राइफलें और तोपों से सजाया, सरहद की तरफ बढ़ा और इवान के राज्य में घुस गया।

लोग इवान के पास आए और कहने लगे—कंकड़ेपुर का राजा हमसे लड़ने आ रहा है।"

"अच्छी बात है" इवान बोला "उसे आने दो।"

सरहद पार कर कंकड़ेपुर के राजा ने इवान की फौज का पता लगाने के लिए अपने जासूस भेजे। उन्होंने चारों तरफ देखा मगर वहाँ कोई फौज नहीं थी। वे किसी फौज के कहीं भी दिखाई पड़ने का बहुत देर तक इन्तजार करते रहे परन्तु वहाँ फौज का कोई भी निशान तक नहीं था और न कोई लड़ने के लिए ही था। कंकड़ेपुर के राजा ने तब गाँवों पर कब्जा करने का हुक्म दिया। सिपाही एक गाँव में पहुँचे और वहाँ लोग—मर्द और औरतें दोनों—आश्चर्यचकित होकर उन सिपाहियों को देखने के लिए बाहर निकल आए। सिपाहियों ने उनके अनाज और जानवरों को लेना शुरू कर दिया। लोगों ने उन्हें ले लेने दिया और विरोध नहीं किया। सिपाही दूसरे गाँव में पहुँचे। वहाँ भी वही हुआ सिपाही एक दिन, दो दिन तक यही करते रहे और हर जगह वही हुआ। लोगों ने उन्हें सब चीजें ले लेने दीं और किसी ने भी

विरोध नहीं किया और सिपाहियों को अपने साथ रहने के लिए निमंत्रित किया ।

"बेचारे !" उन्होंने कहा, "अगर तुम्हारे अपने मुल्क में तुम्हारी जिन्दगी मुश्किल से कटती है तो तुम हमारे यहाँ आकर हमेशा के लिए हमारे साथ क्यों नहीं रह जाते ?"

सिपाही बराबर आगे बढ़ते गए फिर भी कोई फौज नहीं—सिर्फ लोग रहते, अपना पेट भरते और दूसरों का पालन करते । वे सिर्फ विरोध ही नहीं करते बल्कि सिपाहियों को वहीं ठहर जाने और अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करते । सिपाहियों को यह काम बड़ा नीरस लगा और वे कंकड़ेपुर के राजा के पास गए और कहने लगे—"हम यहाँ युद्ध नहीं कर सकते, हमें कहीं दूसरी जगह ले चलो । युद्ध करना ठीक है मगर यह क्या हो रहा है ? यह तो जैसे मटर का शोरबा बनाने जैसा काम है । हम यहाँ अब और युद्ध नहीं करेंगे ।"

कंकड़ेपुर का राजा नाराज हो उठा और उसने सारे राज्य को रौंद डालने, गांवों कोबर्बाद करने, अनाज और घरों को जलाने और जनवरों को मार डालने की आज्ञा दी । "और अगर तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया" उसने कहा, "मैं तुम सबको मार डालूंगा ।"

सिपाही डर गए और राजा के हुक्म के मुताबिक काम करने लगे । उन्होने घरों और अनाज को जलाना और जानवरों को मारना शुरू कर दिया । परन्तु मूर्खों ने अब भी विरोध नहीं किया और सिर्फ रोने लगे । बुड्ढे रोए, बुढ़ियायें रोईं और नौजवान रोए ।

"तुम हमें नुक्सान क्यों पहुँचाते हो ?" उन्होंने कहा । "तुम अच्छी चीजों को बर्बाद क्यों करते हो ? अगर तुम्हें उनकी जरूरत है तो तुम उन्हें अपने लिए क्यों नहीं ले लेते ?"

आखिरकार सिपाही इसे और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सके । उन्होंने और आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया । फौज बिखर गई और भाग गई ।

१२.

शैतान को यह काम भी छोड़ देना पड़ा। वह सिपाहियों की मदद से इवान पर काबू नहीं पा सका। इसलिए उसने एक सभ्य सज्जन व्यक्ति का रूप बनाया और इवान के राज्य में बस गया। वह जैसे कि उसने तारास पर विजय प्राप्त की थी उसी तरह धन के जोर से इवान को जीतना चाहता था।

"मैं चाहता हूँ" वह कहता है कि तुम्हारी दशा में उन्नति हो। मैं तुम्हें ज्ञान और सुबुद्धि सिखाना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे यहाँ एक संस्था खोलूंगा और व्यापार का संगठन करूँगा।"

"अच्छी बात है," इवान बोला, "अगर तुम चाहते हो तो आओ और हमारे साथ रहो।"

दूसरे दिन सुबह वह सभ्य व्यक्ति एक सोने से भरी बोरी और एक कागज का टुकड़ा लेकर चौक में पहुँचा और बोला—"तुम सब सूअरों की तरह रहते हो। मैं तुम्हें ठीक ढंग से रहना सिखाना चाहता हूँ। इस स्कीम के अनुसार मेरे लिए एक मकान बनाओ। तुम काम करोगे जिस तरह कि मैं बताऊँ उस तरह और मैं तुम्हें सोने के सिक्के मजदूरी के बदले में दूँगा।" और उसने उन्हें सोना दिखाया।

मूर्ख आश्चर्यचकित रह गए। उन लोगों में सोने का व्यवहार नहीं चलता था। वे अपनी चीजों को अदला-बदली कर लेते थे और मेहनत के रूप में एक दूसरे को कीमत चुकाते थे। उन्होंने उन सोने के सिक्कों को ताज्जुब से देखा।

"कैसी अच्छी छोटी सी चीजें हैं।" वे कहने लगे।

और वे उन सोने के टुकड़ों के बदले में उसे अपनी चीजें और मेहनत देने लगे। और शैतान जैसा कि उसने तारास के राज्य में किया था, यहाँ भी हाथ खोल कर सोने के टुकड़े लुटाने लगा और वहाँ

के लोग उसके बदले में अपनी हर चीजें देने और हर तरह का काम करने लगे।

शैतान बहुत खुश हुआ और सोचने लगा : "इस बार काम ठीक चल रहा है। अब मैं इस मूर्ख को उसी तरह बर्बाद कर दूँगा जिस तरह कि तारास को किया था और उसकी आत्मा और शरीर दोनों को खरीद लूँगा।"

परन्तु जैसे ही उन मूर्खों के पास सोने के टुकड़े इकट्ठे हुए उन्होंने वे अपनी स्त्रियों को हार बनाने के लिए दे दिए। लड़कियों ने उन्हें अपनी चोटियों में गूँथा और अन्त में बच्चे उनसे गलियों में खेलने लगे। हरेक के पास काफी टुकड़े इकट्ठे हो गये थे और उन्होंने उन्हें लेना बन्द कर दिया। परन्तु उस सभ्य व्यक्ति का मकान अभी आधा भी नहीं बन पाया था और अभी साल भर के लिए अनाज और जानवर भी इकट्ठे नहीं हुए थे। इसलिए उसने नोटिस निकाला कि वह चाहता है कि लोग आएँ और उसका काम करें और यह कि उसे अनाज और जानवरों की जरूरत है। हरेक काम और हरेक चीज के लिए वह और भी ज्यादा सोने के टुकड़े देने के लिए तैयार है।

परन्तु कोई भी काम करने नहीं आया और न कोई चीज ही पहुँची। सिर्फ कभी कभी कोई छोटी लड़की या लड़का एक अण्डा लेकर उसके पास जाता और बदले में सोने के टुकड़े ले आता परन्तु और कोई भी उसके पास नहीं गया और वह भूखों मरने लगा, और भूखा होने की वजह से वह गांव में गया कि खाने के लिए कुछ खरीद सके। उसने एक घर में कोशिश की और एक मुर्गी के बदले में एक सोने का टुकड़ा देना चाहा। घर वाली ने नहीं लिया।

"मेरे पास पहले से ही बहुत हैं।" वह बोली।

उसने एक विधवा के घर एक मछली खरीदनी चाही और एक सोने का टुकड़ा दिखाया।

"मुझे यह नहीं चाहिए, मेरे अच्छे मालिक," उसने कहा, "मेरे यहाँ इससे खेलने वाले बच्चे ही नहीं हैं और अद्‌भुत चीजों के रूप में मेरे पास तीन सिक्के पहले ही रखे हैं ।"

उसने एक किसान के यहां रोटी खरीदने की कोशिश की परन्तु उसने भी सोना नहीं लिया ।

"मुझे इसकी जरूरत नहीं है," उसने कहा, "परन्तु अगर तुम ईसा के नाम पर मांगते हो तो जरा ठहरो । मैं घर मालकिन से रोटी का एक टुकड़ा काटने के लिए कहे देता हूँ :"

यह सुनकर शैतान ने थूका और भाग खड़ा हुआ । ईसा के नाम पर कोई चीज लेना तो दूर रहा उसे ईसा का नाम सुनने से ही चाकू के गोदने का सा दर्द होता था ।

और इसीलिए उसे रोटी नहीं मिली । हरेक के पास सोना था और जहाँ भी शैतान गया किसी ने उसे सोने के बदले में कोई भी चीज नहीं दी और हरेक ने कहा : "या तो कोई दूसरी चीज लाओ या आओ और काम करो या जो तुम चाहते हो उसे ईसा के नाम पर भीख के रूप में ग्रहण करो ।"

परन्तु शैतान के पास सोने के अलावा और कुछ भी नहीं था । काम से उसे रुचि नहीं थी और जहाँ तक ईसा के नाम पर कोई चीज मांगने का सवाल था वह ऐसा नहीं कर सका । भूख के मारे शैतान का बुरा हाल हो उठा ।

"तुम और क्या चाहते हो जबकि मैं सोना दे रहा हूँ ?" उसने कहा, "तुम सोने से हर चीज खरीद सकते हो और हर तरह का मजदूर रख सकते हो ।" मगर मूर्खों ने उसकी बात नहीं सुनी ।

"नहीं, हमें धन नहीं चाहिए," उन्होंने कहा, "हमें कोई कर्ज नहीं चुकाना, कोई कर नहीं देने, इसलिए हम इसका क्या करेंगे ?"

शैतान भूखा ही सो गया ।

इस घटना की सूचना मूर्ख इवान को दी गई। लोग आए और उससे पूछाः "हमें क्या करना चाहिए ? एक सभ्य व्यक्ति आया है जो खाना, पीना और अच्छे कपड़े पहनना पसन्द करता है परन्तु वह काम करना पसन्द नहीं करता, ईसा के नाम पर भीख नहीं मागता बल्कि हरेक को सोने के टुकड़े दिखाता है। पहले तो लोगों ने उसे, जो उसने चाहा, सब दिया जब तक कि उनके पास काफी सोने के टुकड़े इकट्ठे न हो गए परन्तु अब उसे कोई भी कुछ नहीं देता। उसके साथ क्या किया जाय ? वह जल्दी ही भूखा मर जायेगा।"

इवान ने सुना।

"अच्छी बात है," वह बोला, "हमें उसे भोजन देना चाहिए। उसे नम्बर वार हरेक घर में रहने दो जैसा कि गड़रिया करता है।"❀

इसके अलावा और कोई चारा नहीं थाः शैतान को यह चक्कर काटना शुरू करना ही पड़ा।

समय आने पर उसका नम्बर इवान के घर जाने का आया। शैतान खाना खाने वहाँ गया। गूँगी लड़की खाना तैयार कर रही थी।

उस लड़की को अक्सर ऐसे आलसी आदमियों से धोखा उठाना पड़ा था जो बिना अपना काम पूरा किये जल्दी खाना खाने आ जाते थे और सारा हलुआ खा जाया करते थे इसलिए वह आलसी आदमियों को उनके हाथ देखकर पहचान लिया करती थी। उन्हें, जिनके हाथों में गट्टे पड़े रहते थे, वह मेज पर बैठाया करती थी परन्तु औरों को सिर्फ बची खुची जूठन खाने को मिलती थी।

शैतान मेज पर जा बैठा परन्तु उस गूंगी लड़की ने उसके हाथ पकड़े और उन्हें देखा—उन पर कहीं भी गट्टे के निशान नहीं थे। हाथ

❀ अक्सर ऐसा प्रबन्ध किया जाता है कि जो गड़रिया किसी रूसी गाँव के जानवरों को चराता है वह नम्बर वार हरेक गाँव वाले के घर में जाकर रहता है और वहीं खाना खाता है।

साफ और चिकने थे जिनके नाखून लम्बे थे। गूंगी लड़की घुर्राई और उसने शैतान को खींच कर मेज से उठा दिया। इवान की बीबी ने उससे कहा, "बुरा मत मानिए, महाशय। मेरी ननद किसी को भी, जिसके हाथों पर गट्ठे नहीं होते, मेज पर नहीं बैठने देती। परन्तु थोड़ी देर ठहरिए, जब और लोग खा चुकेंगे तब तुम्हें बचा खुचा खाने को मिलेगा।"

शैतान को बुरा लगा कि राजा के घर में वे लोग उसे सुअर की तरह खाना खिलाना चाहते हैं। उसने इवान से कहा: "तुम्हारे राज्य में यह बेवकूफी का कानून है कि हरेक को अपने हाथ से काम करना चाहिए। यह तुम्हारी बेवकूफी है जिसने इसकी ईजाद की है। क्या आदमी सिर्फ अपने हाथों से ही काम करते हैं? तुम्हारी समझ में बुद्धिमान लोग किससे काम करते हैं?"

और इवान ने कहा, "हम मूर्ख इस बात को कैसे जान सकते हैं? हम लोग अपना ज्यादातर काम अपने हाथों और पीठ से करते हैं।"

"यह इसलिए कि तुम मूर्ख हो! मगर मैं तुम्हें सिर से काम करना सिखाऊँगा। तब तुम्हें मालूम होगा कि हाथों की अपेक्षा सिर से काम करना अधिक लाभदायक है।"

इवान को आश्चर्य हुआ।

"अगर ऐसी बात है," वह बोला, "तो हम लोगों को मूर्ख कहना कुछ मतलब रखता है।"

और शैतान कहता रहा: "मगर सिर से काम करना आसान नहीं है। तुम लोग मुझे खाने को कुछ भी नहीं देते क्योंकि मेरे हाथों में गट्ठे नहीं हैं, मगर तुम यह नहीं जानते कि सिर से काम करना सौ गुना ज्यादा मुश्किल है। कभी कभी सिर फटने लगता है।"

इवान गम्भीर हो गया।

"तो, दोस्त, तुम अपने को इतना दुख क्यों देते हो? जब सिर

फटता है तो क्या अच्छा लगता है ? क्या हाथ और पीठ से काम करना ज्यादा आसान नहीं होगा ?"

परन्तु शैतान ने कहा: "यह सब मैं तुम मूर्खों पर रहम खाने की वजह से करता हूँ। अगर मैं अपने को कष्ट न दूँ तो तुम लोग हमेशा मूर्ख ही बने रहोगे। परन्तु अपने सिर से काम करने के बाद अब मैं तुम लोगों को सिखा सकता हूँ।"

इवान आश्चर्यचकित हो उठा।

"तो सिखा दो न !" उसने कहा, "जिससे कि जब हमारे हाथ थक जाया करेंगे तो हम उन्हें आराम देने के लिए कुछ देर सिर से काम कर लिया करेंगे।"

और शैतान ने लोगों को सिखाने का वायदा कर लिया। इस-लिए इवान ने अपने सारे राज्य में मुनादी करवा दी कि एक सभ्य व्यक्ति आया है जो हरेक को यह सिखाएगा कि सिर से कैसे काम किया जाता है; और यह कि हाथों के बजाय सिर से ज्यादा काम किया जा सकता है; इसलिए लोगों को आना चाहिए और सीखना चाहिए।

इवान के राज्य में एक ऊंचा बुर्ज था जिसमें बहुत सी सीढ़ियाँ थीं जो ऊपर लगी लालटेन तक पहुँचाती थीं। इवान उस सभ्य व्यक्ति को वहां ऊपर ले गया जिससे कि हरेक उसे देख सके।

इस तरह उस सभ्य व्यक्ति ने बुर्ज के ऊपर अपना आसन जमाया और बोलना शुरू कर दिया। जनता उसे देखने के लिए आई। उन लोगों ने सोचा था कि वह सभ्य व्यक्ति सचमुच उन लोगों को यह दिखायेगा कि बिना हाथों का प्रयोग किए सिर से काम कैसे किया जाता है। परन्तु शैतान ने लम्बी स्पीच देते हुए उन्हें सिर्फ यह बताया कि वे लोग बिना काम किए कैसे रह सकते हैं। लोग इससे कुछ भी नहीं समझ सके। उन्होंने देखा और सोचा और अन्त में अपना अपना काम करने चले गए।

शैतान बुर्ज पर पूरे दिन खड़ा रहा और फिर दूसरे दिन भी, बराबर स्पीच देता हुआ। मगर वहाँ इतनी देर तक खड़े खड़े उसे भूख लग आई और मूर्खों ने इस बात को सोचा तक नहीं कि उसके लिए वहां बुर्ज पर खाना दे आएं। उन्होंने सोचा कि यदि वह हाथों की बनिस्वत सिर से ज्यादा अच्छा काम कर सकता है तो हर हालत में अपने लिए खाना जुटा लेगा।

तीसरे दिन भी शैतान व्याख्यान देता हुआ बुर्ज पर खड़ा रहा। लोग पास आए, कुछ देर देखा और फिर चले गए।

और इवान ने पूछा, "क्यों, क्या उस सभ्य व्यक्ति ने अभी अपने सिर से काम करना शुरू किया ?"

"अभी नहीं किया," लोगों ने कहा; "वह अभी तक बके जा रहा है।"

शैतान एक दिन और बुर्ज पर खड़ा रहा मगर कमजोर होने लगा जिससे वह लड़खड़ा उठा और उसका सिर एक खम्भे से टकरा गया। एक आदमी ने इसे देखा और इवान की बीबी को बताया और वह दौड़ी हुई अपने पति के पास पहुँची जो खेत में काम कर रहा था।

"चलो और देखो," वह बोली, "वे कहते हैं कि वह सभ्य व्यक्ति सिर से काम करना शुरू कर रहा है।"

इवान को आश्चर्य हुआ।

"सचमुच ?" वह कहता है और उसने अपना घोड़ा मोड़ा और बुर्ज की तरफ चल दिया। और जब तक कि वह बुर्ज के पास पहुँचे, शैतान भूख से बुरी तरह थक चुका था और लड़खड़ाता हुआ खम्भे से अपना सिर टकरा रहा था। और जैसे ही इवान बुर्ज के पास पहुँचा शैतान लुढ़का, गिरा और धम, धम, धम करता हुआ सीधा नीचे वाली सीढ़ियों पर जा गिरा। वह गिरते समय हर सीढ़ी पर अपना सिर टकराता हुआ गिनता चला आया था।

"अच्छा !" इवान कहता है, "इस सभ्य-व्यक्ति ने सच कहा था कि 'कभी २ सिर फटने लगता है।' यह तो छालों से भी बुरा है। ऐसे काम के बाद तो सिर सूज जायगा।"

शैतान सबसे निचली सीढ़ी पर गिरा और उसका सिर जमीन से टकराया। इवान उसके पास यह देखने को जाने ही वाला था कि उसने कितना काम किया था—कि अचानक धरती फटी और शैतान उसमें गिर गया। सिर्फ एक छेद बाकी बचा।

इवान ने सिर खुजाया।

"कितना बुरा था," वह कहता है, "यह उन्हीं शैतानों में से एक था। उन सबका बाप होगा।"

इवान अब भी जिन्दा है और लोग उसके राज्य में भरते चले जा रहे हैं। उसके भाई उसके साथ रहने आ गए हैं और वह उन्हें भी खाना देता है। हरेक से जो उसके पास आता है और कहता है "मुझे खाना दो।" इवान कहता है—"अच्छी बात है। तुम हमारे साथ रह सकते हो। हमारे पास हरेक चीज की बहुतायत है। सिर्फ उसके राज्य में एक विशेष कानून है : जिसके हाथ में गट्ठे होते हैं उसे मेज पर खाना मिलता है, जिसके नहीं होते उसे बचा खुचा खाने को मिलता है।"

दो वृद्ध

पुराने जमाने में दो वृद्ध पुरुष रहते थे जिन्होंने जरूसलेम में भगवान् की पूजा करने के लिए तीर्थयात्रा पर जाने का निश्चय किया। उनमें से एक सम्पन्न किसान था जिसका नाम एफिम तारासिच शेवेलेव था। दूसरा किसान एलिशा बोद्रोव उतना सम्पन्न नहीं था।

एफिम एक शान्त, गम्भीर और दृढ़ विचार वाला मनुष्य था। वह न शराब पीता था, न तम्बाखू का प्रयोग करता था और न सुंघनी सूंघता था और उसने अपने जीवन में कभी भी बुरी बात नहीं कही थी। दो एक बार वह गांव का मुखिया रह चुका था और जब उसने यह पद छोड़ा तो उसका हिसाब बिल्कुल साफ था। उसका परिवार बड़ा था: दो पुत्र और एक विवाहित पौत्र, सब उसी के साथ रहते थे। वह स्वस्थ, लम्बी दाढ़ी वाला और सीधा था और यह उसी समय हुआ जब वह साठ साल की अवस्था पार कर चुका जब उसकी दाढ़ी का एकाध बाल सफेद होना प्रारम्भ हुआ।

एलिशा न अमीर था और न गरीब। पहले वह बढ़ई का काम किया करता था परन्तु अब क्योंकि वह वृद्ध होता जा रहा था घर पर रहने लगा था और शहद की मक्खियाँ पालने लगा था। उसका एक पुत्र काम की तलाश में बाहर चला गया था और दूसरा घर पर ही रहता था। एलिशा एक दयालु और प्रसन्न स्वभाव वाला वृद्ध पुरुष था। यह सच है कि कभी कभी वह शराब पीता था, सुंघनी सूंघता था और गाने का शौकीन था परन्तु वह शांतिप्रिय था और अपने परिवार और पड़ौसियों के साथ उसके सम्बन्ध बहुत अच्छे थे। वह कद का छोटा और साँवला था। उसके एक घुंघराली दाढ़ी थी और अपने आराध्य सन्त एलिशा की तरह उसका सिर पूरा गंजा था।

"आह, मित्र, जब हम लोग मर जायंगे तो उनका काम हमारे बिना चलता रहेगा। अब अपने पुत्र को कुछ तजुर्बा हासिल कर लेने दो।"

"यह बिल्कुल ठीक है; लेकिन, फिर भी जब कोई एक काम शुरू करता है तो उसे पूरा हुआ देखना पसन्द करता है।"

"आह, मित्र, हम सब कामों को पूरा नहीं कर सकते। उस दिन घर की औरतें ईस्टर के लिए कपड़े धो रही थीं और घर साफ कर रही थीं। यहां कोई चीज ठीक करनी थी, दूसरी जगह कुछ और ठीक करना था और वे सब काम पूरा नहीं कर सकीं। इसलिए मेरी सबसे बड़ी पुत्रवधू, जो एक समझदार स्त्री है, कहती है : "हमें धन्यवाद देना चाहिए कि छुट्टी हमारी प्रतीक्षा बिना किए ही आ जाती है वर्ना हम चाहे जितनी सख्त मेहनत करें हम इसके लिए कभी भी तैयार नहीं हो सकते।"

एफिम सोचने लगा।

"मैंने इस इमारत पर काफी खर्च कर दिया है," उसने कहा, "और यात्रा पर कोई भी खाली जेब लिए नहीं जा सकता। हम लोगों को सौ सौ रूबल–और यह छोटी रकम नहीं है, लेकर चलना चाहिए।"

एलिशा हंसने लगा।

"अच्छा, रहने दो, दोस्त!" तुम्हारे पास मुझसे दस गुना अधिक है और फिर भी तुम रुपये की बात करते हो। सिर्फ यह बताओ कि कब चलना है, और हांलाकि इस समय मेरे पास कुछ भी नहीं है परन्तु उस समय तक काफी हो जायगा।"

एफिम भी मुस्कराने लगा।

"प्यारे दोस्त, मैं नहीं जानता था कि तुम इतने अमीर हो," उसने कहा, "क्यों, तुम कहाँ से इकट्ठा कर लोगे?"

"मैं कुछ घर से झपटूँगा और अगर वह काफी नहीं होगा तो

मैं दस शहद की मक्खी के छत्ते अपने पड़ोसी को बेच दूँगा। वह बहुत दिन से उन्हें खरीदना चाह रहा है।"

"अगर इस साल मक्खियाँ खूब बैठीं तो तुम्हें इसके लिए अफसोस होगा।"

"इसके लिए अफसोस होगा मुझे! नहीं, दोस्त! मैंने अपने पापों के अलावा और किसी भी चीज के लिए जिन्दगी में कभी भी अफसोस नहीं किया। आत्मा से मूल्यवान और कुछ भी नहीं है।"

"यह ठीक है; फिर भी घर के कामों की उपेक्षा करना ठीक नहीं है।"

"परन्तु तब क्या होगा अगर हमारी आत्माओं की उपेक्षा हुई? यह और भी बुरा है। हमने प्रतिज्ञा की थी इसलिए हमें चलना चाहिए! अब, सचमुच, चल दो।"

२.

एलिशा अपने साथी को राजी करने में सफल हो गया। सुबह, खूब अच्छी तरह विचार करने के उपरान्त एफिम एलिशा के पास आया।

"तुम ठीक हो," उसने कहा, "चलो, चल दो। जिन्दगी और मौत भगवान के हाथ में है। अब हमें जरूर चलना चाहिए जब तक कि हम लोग जिन्दा हैं और हममें शक्ति बाकी है।"

एक हफ्ते बाद दोनों बृद्ध चलने के लिए तैयार थे। एफिम के पास काफी पैसा था। उसने सौ रूबल खुद ले लिए और दो सौ अपनी बीबी के पास छोड़ दिए।

एलिशा भी तैयार हो गया। उसने दस छत्ते अपने पड़ोसी को बेच दिए—उन नई मक्खियों के साथ जो गर्मियों से पहले उन पर बैठ सकती थीं। उसने उनके सत्तर रूबल लिए। सौ की धनराशि में से बाकी रहे धन को उसने परिवार के लोगों से इकट्ठा किया और ऐसा करने में सब को लगभग खुक्ख कर डाला। उसकी बीबी ने अपना वह सारा

धन दे दिया जो वह अपने अन्तिम संस्कार के लिए जोड़ती चली आ रही थी और उसकी पुत्रबधू ने भी, जो कुछ उसके पास था, सब दे दिया।

एफिम ने अपने सबसे बड़े लड़के को हर चीज के बारे में खास हिदायतें दीं : कब और कितनी घास काटनी है, खाद कहाँ इकट्ठी करनी है और झोंपड़ी को किस तरह ठीक करना तथा उस पर छत डालनी है। उसने हर चीज के बारे में सोचा और उसी के हिसाब से हुक्म दिए। दूसरी तरफ, एलिशा ने अपनी बीबी को सिर्फ यह समझाया कि उसे मक्खियों को उन छत्तों से दूर रखना है, जिन्हें वह बेच चुका था, और इस बात का ध्यान रखे कि बिना किसी तरह की चालाकी के पड़ोसी को उसकी अमानत मिल जाय। घर के मामलों के बारे में उसने जिक्र तक नहीं किया।

"तुम जैसा मौका देखो, जैसी जरूरत समझो, वैसा ही करना" वह बोला, "तुम्हीं लोग घर के मालिक हो और तुम्हीं इस बात को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकोगे कि तुम्हारा हित किस में है।"

इस तरह दो बृद्ध तैयार हो गए। उनके घरवालों ने उनके लिए मठरियाँ सेकीं, थैले बनाए और पैरों में पट्टी बांधने के लिए लिनिन के लम्बे लम्बे टुकड़े काटे। बृद्धों ने चमड़े के नए जूते पहने और अपने साथ कुटी हुई छाल के बने हुए जूतों के अतिरिक्त जोड़े रख लिए। उनके परिवार वाले उनके साथ गांव की सीमा तक पहुँचाने गए और वहाँ उन्हें बिदा दी और दोनों बृद्ध अपनी तीर्थयात्रा पर रवाना हो गए।

एलिशा ने बड़ी प्रसन्न मुद्रा में घर छोड़ा और जैसे ही वह गाँव के बाहर पहुँचा घर की सारी चिन्ताओं को भूल गया। उसे सिर्फ इस बात की चिन्ता थी कि अपने साथी को कैसे खुश रखे, किसी से भी कोई कड़ा शब्द कहने से कैसे बचे, किस तरह अपनी मंजिल पर पहुँचे और शान्ति और प्रेम के साथ घर लौट आए। सड़क पर चलते हुए एलिशा

या तो कोई प्रार्थना करता जाता या मन ही मन उन सन्तों की जीवनियों के बारे में सोचता रहता जो उसे अच्छी तरह याद थीं। जब वह रास्ते में किसी से मिलता, या रात बिताने के लिए कहीं ठहरता तो वह अच्छे से अच्छा व्यवहार करने का प्रयत्न करता और पवित्र चर्चायें करता। इस तरह वह प्रसन्नतापूर्वक यात्रा करता रहा। सिर्फ वह एक बात नहीं छोड़ सका—सुंघनी सूंघना। हालांकि वह अपनी सुंघनी की डिबिया घर छोड़ आया था फिर भी वह उसके लिए परेशान रहता था। फिर उसे रास्ते में एक आदमी मिला जिसने उसे थोड़ी सी सुंघनी दी। रह रह कर वह पीछे रह जाता (जिससे कि उसका साथी ललचा न उठे) और थोड़ी सी सुंघनी सूंघ लेता।

एफिम भी अच्छी तरह और दृढ़तापूर्वक यात्रा कर रहा था। वह न कोई बुरा काम करता और न बेकार की बातें कहता परन्तु उसका हृदय इतना निश्चिन्त नहीं था। घर की चिन्ताएं उसके दिमाग को परेशान करती रहती थीं। वह बराबर परेशान रहता कि न जाने घर पर क्या हो रहा होगा। क्या वह अपने पुत्र को अमुक आज्ञा देना भूल तो नहीं गया था? क्या उसका पुत्र ठीक तरह से काम कर रहा होगा? अगर रास्ता चलते हुए वह आलू बोते हुए या खाद ढोई जाते हुए देखता तो सोचने लगता कि क्या उसका बेटा उसी तरह काम कर रहा होगा जैसा कि उसे बताया गया था? और उसके मन में प्रबल इच्छा उत्पन्न होने लगती कि वह वापस लौट चले और उसे बताए कि काम कैसे किया जाता है या खुद काम करने लगे।

३.

दोनों वृद्ध पाँच हफ्तों तक चलते रहे। उनके घर के बने हुए छाल के जूते घिस गए थे और उन्होंने नए जूते खरीदने शुरू कर दिए थे जब कि वे छोटे रूस पहुँचे। जब से उन्होंने घर छोड़ा था उन्हें अपने खाने और रात बिताने के लिए पैसे देने पड़ते थे परन्तु जब वे छोटे रूस

पहुँचे तो वहां के निवासी उन्हें अपने अपने घरों में ठहराने के लिए आपस में होड़ करने लगे। वे उन्हें अपने घरों में ले जाते और खाना खिलाते और बदले में एक भी पैसा स्वीकार नहीं करते थे। और इससे भी बड़ी बात यह थी कि वे रास्ते में खाने के लिए उनके थैलों में रोटियाँ या मठरियाँ रख देते थे।

इस तरह बिना एक भी पैसा खर्च किए उन्होंने पाँच सौ मील की यात्रा पूरी की। परन्तु जब वे दूसरे सूबे में दाखिल हुए तो एक ऐसे जिले में पहुँचे जहाँ फसल मारी गई थी। किसान फिर भी उन्हें रात को मुफ्त ठहराते परन्तु बिना पैसे लिए अब खाना नहीं खिला पाते थे। कभी कभी उन्हें रोटी भी नहीं मिलती थी। उन्होंने रोटी के लिए पैसे देने चाहे परन्तु वहाँ किसी के पास थी ही नहीं। लोगों ने कहा कि पिछली साल यहाँ पूरी फसल मारी गई थी। जो अमीर थे वे बर्बाद हो गए और उन्हें अपना सब कुछ बेच देना पड़ा। मध्यम स्थिति के लोग साधन हीन हो गए और गरीब, जिन्होंने अपना देश नहीं छोड़ा था, इधर उधर भीख मांगते फिरते थे या घर पर भूखों मर रहे थे। जाड़ों में उन्हे छिलके या छालों पर दिन काटने पड़े थे।

एक रात वे बृद्ध एक छोटे से गाँव में जाकर रुके। उन्होंने पन्द्रह पाउन्ड रोटी खरीदी, वहाँ सोए और दिन की गर्मी से बचने के लिए दिन निकलने से पहले ही उठ कर चल दिए। जब वे लगभग आठ मील चल लिए तो एक झरने के पास बैठ गए और एक प्याले में पानी भर, उसमें रोटी डुबा डुबा कर खाने लगे। फिर उन्होंने अपने पैरों की पट्टियाँ बदलीं और कुछ देर आराम किया। एलिशा ने अपनी सुंघनी की डिबिया निकाली। एफिम ने उसे देखकर सिर हिलाया।

"यह क्या बात है कि तुम इस गन्दी चीज को छोड़ नहीं पाते?" वह बोला।

एलिशा ने अपना हाथ हिलाया। "यह बुरी आदत मुझ से भी ज्यादा ताकतवर है," उसने कहा।

फौरन ही वे उठ खड़े हुए और चल दिए। लगभग आठ मील और चलने के बाद वे एक बड़े गाँव में पहुँचे और उसके बीच में होकर गुजरे। इस समय तक गर्मी बढ़ चुकी थी। एलिशा थक गया था और आराम करना और पानी पीना चाह रहा था परन्तु एफिम नहीं रुका। दोनों में एफिम तेज चलने वाला था और एलिशा को उसके बराबर चलने में मुश्किल उठानी पड़ती थी।

"सिर्फ मुझे थोड़ा सा पानी मिल जाता," उसने कहा।

"अच्छी बात है, पी लो, एफिम बोला। "मुझे प्यास नहीं लगी है।"

एलिशा रुक गया

"तुम चलो," उसने कहा, "मैं उस छोटी झोपड़ी में जाता हूँ। मैं अभी तुम्हें पकड़ लूँगा।"

"अच्छी बात है," एफिम ने कहा और वह उस ऊँची सड़क पर अकेला ही चल दिया जबकि एलिशा झोंपड़ी की तरफ मुड़ा।

यह मिट्टी से लिपी पुती एक छोटी सी झोंपड़ी थी—फर्श काला था और ऊपरी भाग पर सफेदी हो रही थी परन्तु मिट्टी जगह जगह चटक गई थी। यह स्पष्ट था कि इसकी लिपाई हुए बहुत दिन हो चुके थे और छत का छप्पर एक तरफ टूटा हुआ था। झोंपड़ी में घुसने का रास्ता अहाते में होकर था। एलिशा अहाते में घुसा और उसने झोंपड़ी के चारों तरफ बने हुए मिट्टी के चबूतरे के बिल्कुल पास एक आदमी को लेटे हुए देखा जिसके दाढ़ी नहीं थी और कमीज पाजामे के अन्दर घुसी हुई थी जैसा कि छोटे रूस में आम रिवाज है। वह व्यक्ति छाया में लेटा होगा परन्तु अब सूरज ऊपर चढ़ आया था और उस पर धूप पूरी तरह पड़ रही थी। हालांकि वह सो नहीं रहा था फिर भी वहीं लेटा हुआ था। एलिशा ने उसे पुकारा और पानी मांगा परन्तु उस व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"वह या तो बीमार है या बोलना नहीं चाहता," एलिशा ने सोचा, और दरवाजे के पास जाकर उसने झोंपड़ी में एक बच्चे को रोते हुए सुना। उसने दरवाजे का कड़ा पकड़ा जो दरवाजे के हत्थे का काम देता था और खटखटाया।

"ओ, मालिको!" उसने पुकारा। कोई उत्तर नहीं। उसने दुबारा अपनी लकड़ी से खटखटाया।

"ओ, ईसाइयो!" कोई भी आवाज नहीं आई।

"ओ, भगवान के सेवको!" फिर भी कोई जवाब नहीं।

एलिशा मुड़ने को ही था जब कि उसने सोचा कि उसे दरवाजे के दूसरी तरफ कराहने की आवाज सुनाई दी।

"हे मेरे भगवान, इन आदमियों पर जरूर कोई मुसीबत आई है? अच्छा हो कि मैं देख लूँ।"

और एलिशा झोंपड़ी में घुसा।

४.

एलिशा ने कड़ा घुमाया; दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं था। उसने दरवाजा खोला और संकरी दहलीज में होकर आगे बढ़ा। रहने वाले कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। बांयी तरफ ईंटों का चूल्हा था; सामने दीवाल के सहारे पवित्र मूर्त्तियां रखने का एक आला था और उसके सामने एक मेज रखी हुई थी। मेज के सहारे एक बेंच पड़ी थी जिस पर एक बुढ़िया बैठी हुई थी—नंगे सिर और सिर्फ एक कपड़ा पहने हुए। वह मेज पर सिर टिकाये बैठी थी और उसके पास एक पतला मोम के से रंग का लड़का था जिसका पेट बढ़ा हुआ था। वह बुढ़िया की आस्तीन खींचते हुए और बुरी तरह चीख कर कुछ मांग रहा था। एलिशा भीतर घुसा। झोंपड़ी के भीतर हवा बड़ी बदबूदार थी। उसने चारों तरफ निगाह घुमाई और देखा कि चूल्हे के पीछे एक औरत जमीन पर लेटी हुई थी। वह आँखें बन्द किए जमीन पर सीधी पड़ी हुई थी।

उसका गला घर्र-घर्र कर रहा था। कभी वह एक टांग पसार देती, कभी उसे ऊपर सिकोड़ लेती और बराबर करवटें बदल रही थी। और यह बदबू उसी औरत से आ रही थी। यह स्पष्ट था कि वह खुद अपना कोई काम नहीं कर सकती थी और कोई भी उसकी जरूरतों को पूरा करने वाला नहीं था। बुढ़िया ने सिर ऊपर उठाया और अजनवी को देखा।

"तुम क्या चाहते हो ?" उसने पूछा। "भाई, तुम क्या चाहते हो ? हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

एलिशा उसकी बात समझ गया हालांकि वह छोटे रूस की देहाती भाषा बोल रही थी।

"खुदा के बन्दे, मैं पानी पीने आया हूँ।" उसने कहा।

"यहाँ कोई नहीं है–कोई भी नहीं–हमारे पास पानी लाने के लिए कुछ भी नहीं है। अपना रास्ता पकड़ो।"

तब एलिशा ने पूछा :

"तो क्या तुम लोगों में कोई भी इस हालत में नहीं है कि उस औरत की सेवा कर सके ?"

"नहीं, हमारे पास कोई नहीं है। मेरा बेटा बाहर मर रहा है और हम लोग यहाँ मर रहे हैं।"

छोटे बच्चे ने अजनवी को देख कर रोना बन्द कर दिया था परन्तु जब बुढ़िया बातें करने लगी तो उसने फिर रोना शुरू कर दिया और उसकी आस्तीन पकड़ कर चीखा :

"रोटी, दादी, रोटी।"

एलिशा उस बुढ़िया से पूछने ही वाला था कि वह आदमी लड़खड़ाता हुआ झोंपड़ी में घुसा। वह दहलीज में दीवाल को पकड़ २ कर आया था परन्तु जैसे ही वह रहने के कमरे में घुस रहा था, देहली के पास कौने में गिर पड़ा और बेंच के पास पहुँचने के लिए पुनः उठने की

कोशिश न कर वह रुक-रुक कर बोलने लगा। वह एक बार में एक शब्द कहता, सांस लेने के लिए रुकता और हांफने लगता।

"बीमारी ने हमें जकड़ लिया है..." उसने कहा, "और अकाल ने। वह मर रहा है...भूख से।"

और उसने बच्चे की तरफ इशारा किया और सिसकने लगा।

एलिशा ने अपनी पीठ पर पड़े हुए थैले में झटका दिया और अपनी बाहों से रस्सियाँ खोल कर उसे जमीन पर रख दिया। फिर उसने थैले को ऊपर उठाया और उसकी रस्सियां खोलीं। थैला खोल कर उसने रोटी का एक टुकड़ा निकाला, चाकू से उसमें से एक टुकड़ा काटा और उस आदमी को पकड़ा दिया। आदमी ने उसे नहीं लिया बल्कि उस छोटे बच्चे और चूल्हे के पीछे सिकुड़ी पड़ी एक छोटी बच्ची की तरफ इशारा किया, मानो कह रहा हो।

"इसे उन्हें दे दो।"

एलिशा ने टुकड़े को लड़के की तरफ बढ़ाया। जब लड़के को रोटी की गन्ध आई, उसने अपनी बांहें फैला दीं और टुकड़े को अपने दोनों नन्हें से हाथों से पकड़ कर उसमें मुँह मारा और इस तरह कि उसकी नाक उसमें घुस गई। छोटी लड़की चूल्हे के पीछे से निकल आई और रोटी पर आँखें जमा दीं। एलिशा ने उसे भी एक टुकड़ा दिया। फिर उसने और टुकड़ा काटा और बुढ़िया को दे दिया और वह भी उसे चबाने लगी।

"अगर सिर्फ थोड़ा सा पानी ले आया जाता," उसने कहा, "इनके गले सूख गए हैं। कल मैंने थोड़ा सा पानी लाने की कोशिश की थी—या शायद आज ही—मुझे याद नहीं, मगर मैं गिर पड़ी और आगे नहीं जा सकी और बाल्टी वहीं पड़ी रह गई अगर किसी ने ले ना ली हो तो।"

एलिशा ने पूछा कि कुंआ कहाँ है। बुढ़िया ने उसे बता दिया।

एलिशा बाहर गया, बाल्टी ढूंढ़ी, पानी लाया और उन लोगों को पिलाया। बुढ़िया और बच्चों ने पानी के साथ थोड़ी रोटी और खाई मगर वह आदमी नहीं खा सका।

"मैं नहीं खा सकता!" उसने कहा।

इस पूरे समय तक उस युवती ने चेतना के कोई लक्षण नहीं दिखाए परन्तु इधर से उधर करवटें बदलती रही। एलिशा फौरन ही गाँव की दुकान पर गया और थोड़ा सा बाजरा, नमक, आटा और तेल खरीद लाया। उसने एक कुल्हाड़ी ढूंढ़ ली, कुछ लकड़ियां फाड़ीं और आग जलाई। छोटी लड़की ने उसकी मदद की। फिर उसने थोड़ा सा शोरवा उबाला और उन भूखे प्राणियों को भोजन कराया।

५.

उस आदमी ने थोड़ा सा खाया, बुढ़िया ने भी थोड़ा सा लिया और छोटी लड़की और लड़के ने प्याले को चाट पोंछ कर साफ कर दिया और फिर एक दूसरे की बाहों में लिपट कर गहरी नींद में सो गए।

उस आदमी ने और बुढ़िया ने तब बताना शुरू किया कि उनकी यह हालत कैसे हो गई।

"हम पहले से ही काफी गरीब थे," वे बोले, "लेकिन जब फसल मारी गई, तो हम जो कुछ इकट्ठा कर सके वह शरद ऋतु तक चला। जाड़े आते आते हमारे पास कुछ भी नहीं बचा और हमें पड़ोसियों से तथा हरेक से भीख मांगनी पड़ी। पहले तो उन्होंने दी फिर मना करना शुरू कर दिया। कोई भी हमारी मदद कर प्रसन्न होता परन्तु उनके पास देने को कुछ था ही नहीं और हमें मांगने में शर्म आती थी। हम चारों तरफ से कर्ज से घिरे हुए थे और हमें दूसरों का पैसा, आटा और रोटी चुकानी थी।

"मैं काम की तलाश में घूमा" उस आदमी ने कहा, "परन्तु कोई काम नहीं मिला। हर जगह लोग सिर्फ खाने भर पर नौकरी करने को तैयार थे। एक दिन कोई छोटा मोटा काम मिल जाता और फिर दो दिन काम की तलाश में भटकना पड़ता। फिर यह बुढ़िया और लड़की भीख मांगने लगीं। परन्तु उन्हें बहुत कम मिल पाती क्योंकि रोटियों का अकाल था। फिर भी हम किसी तरह दिन काटते रहे और उम्मीद की कि अगली फसल तक किसी तरह गुजारा हो ही जायगा मगर बसन्त ऋतु आते आते लोगों ने कुछ भी देना बन्द कर दिया। और तब इस बीमारी ने हमें जकड़ लिया। हालत दिन पर दिन बदतर होती चली गई। एक दिन हमें कुछ खाने को मिल जाता और फिर दो दिन तक कुछ भी नहीं मिलता। हमने घास खानी शुरू कर दी। कह नहीं सकता कि यह घास थी या कि क्या था जिसने मेरी बीवी को बीमार बना दिया। वह अपने पैरों पर खड़ी होने में अशक्त हो गई, मुझमें शक्ति रही नहीं थी और घर में कोई भी चीज ऐसी नहीं बची थी जिससे हमारा उद्धार हो सकता।"

"मैं अकेली कुछ दिनों तक जूझती रही," बुढ़िया बोली, "परन्तु अन्त में खाने की कमी से मैं भी टूट गई और बहुत कमजोर हो गई। लड़की भी कमजोर हो गई और सहमी सी रहने लगी। मैंने उससे पड़ोसियों के यहाँ जाने को कहा, परन्तु वह झोंपड़ी से बाहर नहीं निकलती। चुपचाप जाकर कौने में बैठ जाती। परसों एक पड़ोसिन ने भीतर झांका परन्तु यह देख कर कि हम लोग भूखे और बीमार हैं वह लौटी और हमें छोड़ कर चली गई। उसके मालिक को बाहर चला जाना पड़ा था और उसके पास अपने बच्चों को खिलाने के लिए भी कुछ नहीं बचा था और इसलिए हम लोग लेटे हुए मौत का इन्तजार कर रहे हैं।"

उनकी कहानी सुन कर एलिशा ने उस दिन अपने साथी को पकड़ने का इरादा छोड़ दिया और सारी रात उन्हीं के साथ रहा।

सुबह वह उठा और घर का काम करना प्रारम्भ कर दिया मानो कि यह उसका अपना घर हो। उसने बुढ़िया की मदद से आटा गूंधा और आग जलाई। फिर वह उस छोटी लड़की को साथ लेकर बहुत जरूरी सामान लेने पड़ोसियों के पास गया क्योंकि झोंपड़ी में कुछ भी नहीं बचा था। रोटी के लिए सब कुछ बेच दिया गया था—रसोई के बर्तन, कपड़े, सब कुछ। इसलिए एलिशा ने जरूरत की चीजें इकट्ठी करनी शुरू कर दीं, कुछ चीजें उसने खुद बनाईं और कुछ खरीदीं। वह वहाँ एक दिन रहा, फिर दूसरे दिन और फिर तीसरे दिन भी। लड़के में जान आ गई और जब एलिशा काम करने बैठता वह खिसक कर आता और उससे सट कर बैठ जाता। लड़की भी खिल उठी और हर काम में उसकी मदद करने लगी एलिशा के पीछे दौड़ती और पुकारती हुई:

"बापू, बापू।"

बुढ़िया भी स्वस्थ हो गई और एक पड़ोसी के यहाँ मिलने गई, वह आदमी भी अच्छा हो गया और दीवाल का सहारा लेकर कुछ कुछ चलने-लगा। सिर्फ उसकी बीबी नहीं उठ सकी परन्तु उसको तीसरे दिन होश आ गया और खाना मांगने लगी।

"अच्छा," एलिशा ने सोचा, "मैंने रास्ते में इतना समय बर्बाद करने की उम्मीद नहीं की थी। अब मुझे चल ही देना चाहिए।"

६.

चौथा दिन गर्मियों के उपवास का तोड़ने का दिन था और एलिशा ने सोचा:

"मैं रुकूँगा और इन लोगों के साथ उपवास तोड़ूंगा। मैं जाकर उनके लिए कुछ खरीद लाऊँगा और उन्हीं के साथ खाऊँगा और कल शाम को चल दूँगा।"

इसलिए एलिशा गाँव में गया, दूध, गेहूँ का आटा और अन्य सामान खरीदा और उन्हें कल के लिए पकाने और सेकने में बुढ़िया की

मदद करने लगा। पारायण वाले दिन एलिशा गिरजे गया और तब झोंपड़ी में बैठ कर अपने मित्रों के साथ उसने उपवास तोड़ा। उस दिन वह युवती उठी और थोड़ा सा चल सकी। पति ने दाढ़ी बना ली थी और एक साफ कमीज पहने हुए था जिसे उस बुढ़िया ने साफ कर दिया था। वह गांव में एक अमीर किसान के यहां दया की भीख मांगने चल दिया जिसके यहाँ उसका हल और घास के खेत गिरवी रखे हुए थे। उसने उससे प्रार्थना की कि वह अगली फसल तक उसे खेत जोतने की आज्ञा दे दे, परन्तु शाम होने पर वह बड़ा उदास होकर वापस आया और रोने लगा। उस अमीर किसान ने कोई रहम नहीं दिखाया बल्कि कहने लगा: "मेरा पैसा लाओ!"

एलिशा फिर विचार में डूब गया। "अब ये लोग कैसे दिन काटेंगे?" उसने सोचा। "दूसरे लोग घास काटने जायेंगे परन्तु इन लोगों के पास काटने को कुछ भी नहीं होगा, उनका घास का खेत गिरवी रखा है। राई पक जायगी। दूसरे लावनी करेंगे (और इस वर्ष धरती माता कितनी अच्छी फसल दे रही थी) परन्तु इनके पास आगे के लिए कुछ भी नहीं है। इनकी तीन एकड़ जमीन उस अमीर के यहाँ बन्धक है। जब मैं चला जाऊँगा तो ये लोग फिर उसी हालत को पहुँच जायेंगे जिसमें मैंने उन्हें पाया था।"

एलिशा पशोपेश में पड़ गया परन्तु अन्त में उसने तय किया कि उस शाम को वह नहीं जायेगा बल्कि कल तक और ठहरेगा। वह बाहर अहाते में सोने गया। उसने प्रार्थना की और लेट गया परन्तु सो नहीं सका। एक तरफ वह काफी रुपया और समय बर्बाद कर चुका था, दूसरी तरफ वह उन लोगों के लिए दुखी था।

"इसका कोई अन्त नहीं दिखाई देता," उसने कहा। "पहले मैंने सिर्फ उन्हें पानी पिलाना और हरेक को रोटी का एक एक टुकड़ा देना सोचा था और जरा देखो तो सही कि इसने मुझे कहाँ से कहाँ

पहुँचा दिया है। अब तो मामला घास और अनाज के खेतों के छुड़ाने का है। और जब मैं यह कर चुकूंगा तो मुझे उनके लिये एक गाय और उस आदमी के लिए एक घोड़ा खरीदना पड़ेगा ताकि वह अनाज के गट्ठरों को घर ला सके। तुमने अपने को अच्छे गोरखधन्धे में फँसा लिया है भाई एलिशा! तुम अपना रास्ता भूल गए हो और अपनी बुद्धि खो बैठे हो।"

एलिशा उठ बैठा, अपना कोट उठाया जिसे वह तकिए की तरह लगाए हुए था, उसकी तह खोली, सुंघनी निकाली और जरा सी सूंघी, यह सोचते हुए कि शायद यह उसकी विचारधारा को स्पष्ट कर दे।

परन्तु नहीं! उसने सोचा, और किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सका। उसे चला ही जाना चाहिए और फिर दया की भावना ने उसे रोक लिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने फिर कोट की तह की और अपने सिर के नीचे रख लिया। वह इस तरह बहुत देर तक लेटा रहा जब तक कि मुर्गे ने पहली बांग दी: वह तब तक उनींदा हो उठा था। और अचानक ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे जगा दिया हो। उसने देखा कि वह यात्रा के लिये कपड़े पहन कर तैयार खड़ा है, झोला उसकी पीठ पर पड़ा है और लाठी हाथ में है और दरवाजा चौपट खुला पड़ा था जिससे कि वह आसानी से खिसक जा सके। वह जाने ही वाला था कि उसका थैला एक तरफ चहारदीवारी में फँस गया। उसने छुड़ाने की कोशिश की परन्तु तब उसकी पैर की पट्टी दूसरी तरफ अटक कर खुल गई। उसने थैला खींचा और देखा कि यह चहारदीवारी से नहीं अटका हुआ है परन्तु वह छोटी लड़की इसे पकड़े हुए थी और रो रही थी:

"बापू, बापू, रोटी।"

उसने अपने पैर को देखा और वहाँ वह छोटा लड़का उसके पैर की पट्टी पकड़े बैठा था जब कि झोंपड़ी का मालिक और बुढ़िया उन्हें खिड़की में से देख रहे थे।

एलिशा जाग पड़ा और सुनाई देने वाली आवाज में अपने आप कहने लगा :

"कल मैं उनके खेत छुड़ा दूँगा और उन्हें एक घोड़ा, अगली फसल तक के लिए काफी आटा और बच्चों के लिए एक गाय खरीद दूँगा या दूसरी तरफ जब तक कि मैं भगवान् को खोजने समुद्र पार जाऊँगा तब तक उसे अपने हृदय में खो बैठूँगा।"

तब एलिशा सो गया और सुबह होने तक सोता रहा। वह जल्दी उठ बैठा और उस अमीर किसान के पास जाकर उसने घास और अनाज के खेतों को छुड़ा लिया। एक हंसिया खरीदा (क्योंकि वह भी बेच डाला गया था) और इसे अपने साथ ले आया। तब उसने उस आदमी को घास काटने भेजा और खुद गाँव में गया। उसने सुना था कि चौक में एक घोड़ा और एक गाड़ी बिकाऊ थी। उसने मालिक से सौदा किया और उन्हें खरीद लिया। फिर उसने आटे का एक बोरा खरीदा, उसे गाड़ी में रखा और गाय की तलाश में चल दिया। जब वह रास्ते में जा रहा था तो उसे दो औरतें बातें करते हुए जाती मिलीं। यद्यपि वे छोटे रूस की बोली में बातें कर रही थीं फिर भी जो कुछ वे कह रही थीं, वह समझ गया।

"पहले तो ऐसा लगा कि वे उसे नहीं जानते थे, उन्होंने सोचा कि वह कोई साधारण व्यक्ति है। वह पीने के लिए पानी मांगने भीतर आया और फिर वहीं रह गया। जरा सोचो तो सही कि उसने उनके लिए क्या क्या चीजें खरीदी हैं। उनका कहना है कि आज ही सुबह उसने चौक में उनके लिए एक गाड़ी और घोड़ा खरीदा है। दुनियाँ में ऐसे आदमी ज्यादा नहीं होते। उनके दर्शन करने चाहिए।"

एलिशा ने सुना और समझ गया कि उसकी प्रशंसा की जा रही है और वह गाय खरीदने नहीं गया, परन्तु सराय को लौटा, घोड़े के पैसे दिए, उसे जोता, झोंपड़ी तक आया और उतर पड़ा। झोंपड़ी के

रहने वाले आश्चर्यचकित हो उठे जब उन्होंने घोड़े को देखा। उन्होंने सोचा कि शायद यह उन्हीं के लिए हो परन्तु पूछने का साहस न कर सके। आदमी दरवाजा खोलने बाहर आया।

"दादा, तुम्हें यह घोड़ा कहाँ मिल गया?" उसने पूछा।

"क्यों, मैंने खरीदा है," एलिशा बोला। "यह सस्ता बिक रहा था। जाओ और थोड़ी सी घास काट लाओ और इसके रात को खाने के लिए नांद में डाल दो और बोरा भीतर उठा ले जाओ।"

उस आदमी ने घोड़े को खोला और बोरे को गोदामघर में ले गया। फिर उसने कुछ घास काटी और नांद में डाल दी। सब सोने के लिए लेट गए। एलिशा बाहर गया और सड़क के किनारे लेट गया। उस शाम को वह अपना थैला अपने साथ बाहर ले गया। जब सब सो गए, वह उठा, अपने थैले को ठीक किया और बांधा, पैरों में पट्टियाँ लपेटीं, कोट और जूते पहने और एफिम को पकड़ने चल पड़ा।

७.

जब एलिशा तीन मील से ज्यादा रास्ता तय कर चुका तो पौ फटने लगी। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया, अपना थैला खोला, अपने पैसे गिने और देखा कि उसके पास सिर्फ सत्तरह रूबल और बीस कोपेक बचे थे।

"अच्छा," उसने सोचा, "इससे समुद्र पार करने में कोई लाभ नहीं। अगर मैं रास्ते में भीख मांगूं तो यह बिल्कुल न जाने से भी बुरा होगा। मित्र एफिम मेरे बिना जेरुसलेम पहुँच जायगा और मन्दिरों में मेरे नाम से एक मोमबत्ती जला देगा। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे भय है कि इस जीवन में मैं अपनी प्रतिज्ञा कभी भी पूरी नहीं कर सकूँगा। मुझे धन्यवाद देना चाहिए कि यह प्रतिज्ञा एक दयालु मालिक और ऐसे के प्रति की गई थी जो पापियों को क्षमा कर देता है।

एलिशा उठा, थैले को उछाल कर अपने कन्धों पर रखा और लौट दिया। जिससे कि कोई उसे पहिचान न ले, उसने गांव को बचाने के लिए एक लम्बा चक्कर काटा और तेजी से घर की ओर चल दिया। घर से आते समय रास्ता उसे कठिन लगा था और उसे एफिम के साथ साथ चलने में बड़ी मुश्किल उठानी पड़ी थी, परन्तु अब वापसी सफर में भगवान् ने उसकी सहायता की जिससे उसे तनिक भी थकावट महसूस नहीं हुई। चलना उसे बच्चों का सा खेल लगा। वह अपनी लाठी हिलाता हुआ चला और रोज चालीस से पचास मील पार किए।

जब एलिशा घर पहुँचा फसल समाप्त हो चुकी थी। उसका परिवार उसे दुबारा देख कर बहुत प्रसन्न हुआ और सब यह जानना चाहते थे कि क्या हुआ: क्यों और कैसे वह पीछे रह गया? और जेरुसलेम पहुँचे बिना वह घर क्यों लौट आया? परन्तु एलिशा ने उन्हें नहीं बताया।

"भगवान् की मर्जी नहीं थी कि मैं वहाँ पहुँच सकूँ," उसने कहा, "रास्ते में मेरा पैसा खो गया और मैं अपने साथी से पीछे रह गया। भगवान् के लिए मुझे माफ करो।"

एलिशा ने बचा हुआ धन अपनी बीबी को दे दिया। फिर उसने घर के हालचाल पूछे। सब ठीक चल रहा था, काम पूरा हो चुका था, कोई भी चीज छोड़ी नहीं गई थी और सब शान्ति और प्रेमपूर्वक रह रहे थे।

एफिम के परिवार वालों ने उसकी वापसी की खबर उसी दिन सुन ली, और अपने बड्ढे का हालचाल पूछने आए और एलिशा ने उन्हें भी वही उत्तर दिया।

"एफिम तेज चलने वाला है। 'सन्त पीटर दिवस' से तीन दिन पहले हम बिछुड़ गए और मैं उसे फिर पकड़ लेना चाहता था परन्तु कई घटनाएं घटीं। मेरा पैसा खो गया और आगे जाने का कोई साधन नहीं रहा इसलिए मैं वापस लौट आया।

उन लोगों को सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना बुद्धिमान व्यक्ति इतनी मूर्खता का काम करे : यात्रा के लिए चल पड़ा हो और मञ्जिल तक न पहुँचा हो और अपना सारा पैसा खो दिया हो। उन्होंने कुछ दिनों तक इस बात पर आश्चर्य किया और फिर इस बारे में सब कुछ भूल गए। और एलिशा भी इसे भूल गया : वह फिर अपने घर के काम में लग गया। अपने बेटे की मदद से उसने जाड़ों के लिए ईंधन काट कर इकट्ठा किया। उसने और उसकी बीबी ने अनाज ठीक किया। फिर उसने बाहरी बैठक के छप्पर को ठीक किया, मक्खियों पर छाया की और पड़ौसी को वे दस छत्ते दे दिए जो उसने बसंत में उसे बेच दिए थे और उनसे आए हुए मक्खियों के सारे झुंड भी उसे ही दे दिए। उसकी बीबी ने यह कोशिश की कि इन छत्तों से मक्खियों के कितने समूह उत्पन्न हुए थे, यह न बताए। परन्तु एलिशा अच्छी तरह जानता था कि किन छत्तों से मक्खियाँ पैदा हुई थीं और किनसे नहीं हुई थीं। और दस की जगह उसने पड़ौसी को सत्तरह मक्खियों के झुंड दे दिए। जाड़ों के लिए सब चीजों का पूरा प्रबन्ध कर एलिशा ने अपने बेटे को काम ढूंढ़ने के लिए भेज दिया और खुद छाल के जूते बनाने और छत्तों के लिए लट्ठों में खोखले बनाने लगा।

८.

उस पूरे दिन जब एलिशा उन बीमार आदमियों के साथ झोंपड़ी में ठहरा हुआ था, एफिम उसका इन्तजार करता रहा। आराम करने से पूर्व वह थोड़ा और आगे चला था। वह इन्तजार करता रहा, करता रहा, एक झपकी ले ली, फिर जग पड़ा और फिर बैठा इन्तजार करता रहा, परन्तु उसका साथी नहीं आया। वह निगाहें फैलाए देखता रहा जब तक कि उसकी आँखें दर्द न करने लगीं। इस समय सूरज एक पेड़ के पीछे डूब रहा था और एलिशा का कहीं पता नहीं था।

"शायद वह मुझसे आगे निकल गया," एफिम ने सोचा,

"या शायद किसी ने उसे गाड़ी पर बैठा लिया हो और वह यहाँ से गुजर गया हो जब कि मैं सो रहा था और मुझे न देख सका हो। परन्तु वह मुझे देख ही कैसे सकता था? यहाँ इस स्टेपी के मैदान में कोई भी बहुत दूर तक देख सकता है। क्या मैं वापस लौट चलूँ? मान लो कि वह मुझसे आगे हुआ तो हम दोनों एक दूसरे से पूरी तरह बिछुड़ जांयगे और यह और भी बुरा होगा। अच्छा यही होगा कि मैं आगे बढ़ूं रात को ठहरने के स्थान पर हम लोग अवश्य मिल जांयगे।"

वह एक गाँव में आया और चौकीदार से पूछा कि अगर अमुक रूपरेखा वाला एक वृद्ध पुरुष आये तो उसे उस झोंपड़ी में पहुँचा दे जिसमें हाकिम ठहरा हुआ था। परन्तु एलिशा उस रात नहीं आया। एफिम आगे चल दिया; रास्ते में सबसे पूछता हुआ कि क्या उन्होंने एक छोटा सा, गंजी खोपड़ी वाला बुड्ढा देखा था? किसी ने भी ऐसा मुसाफिर नहीं देखा था। एफिम को आश्चर्य हुआ मगर यह कहते हुए आगे बढ़ता गया:

"ओडेसा में तो हम लोग जरूर ही मिल जांयगे, या जहाज पर मुलाकात हो जायगी," और उसने इस बारे में ज्यादा चिन्ता नहीं की।

रास्ते में उसे एक तीर्थयात्री मिला जो लबादा पहने हुए था। उसके बाल लम्बे थे और वह सिर पर पादरियों जैसी खोपड़ी नुमा टोपी लगाए हुए था। यह यात्री 'माउन्ट एथोस' की यात्रा कर चुका था और अब दूसरी बार जेरुसलेम जा रहा था। एक रात वे दोनों एक ही स्थान पर रुके और मिलने के बाद साथ साथ यात्रा करने लगे।

वे सही सलामत ओडेसा पहुँच गए और वहाँ उन्हें जहाज के इन्तजार में तीन दिन ठहरना पड़ा। विभिन्न स्थानों के अगणित यात्रियों की भी यही स्थिति थी। एफिम ने फिर एलिशा के बारे में पूछताछ की परन्तु किसी ने भी उसे नहीं देखा था।

एफिम ने विदेश जाने के लिए पासपोर्ट (पार-पत्र) बनवाया

जिसमें पाँच रूबल खर्च हुए। उसने जेरूसलेम की वापसी टिकट के लिए चालीस रूबल दिए और सफर के लिए रोटी और मछली खरीद लीं।

वह तीर्थयात्री एफिम को बताने लगा कि वह किस तरह बिना किराया दिए जहाज पर सफर कर सकता है परन्तु एफिम ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। "नहीं, मैं किराया देने के लिए तैयार होकर चला था और मैं किराया दूँगा," उसने जबाव दिया।

जहाज पर सामान लाद दिया गया और यात्री उस पर सवार हो गए। एफिम और उसका नया साथी भी उनमें थे। लंगर उठाए गए और जहाज समुद्र की तरफ चल दिया।

दिन भर जहाज अच्छी तरह चलता रहा परन्तु रात को हवा तेज चलने लगी। जहाज हिलने लगा और उसमें पानी भरने लगा। यात्री डर गए; औरतें चीखने चिल्लाने लगीं और कुछ कमजोर आदमी आश्रय की खोज में जहाज पर इधर उधर भाग दौड़ करने लगे। एफिम भी डर गया था परन्तु उसने जाहिर नहीं होने दिया और डेक पर जहाँ वह ठहरा था उसी जगह बैठा रहा, टेम्बोव के रहने वाले एक वृद्ध पुरुष के पास। उस जगह वे दोनों पूरी रात और पूरे दूसरे दिन बैठे रहे, अपने अपने बोरे पकड़े। तीसरे दिन वातावरण शान्त हो गया और पाँचवे दिन उन्होंने कुस्तुन्तुनिया में लंगर डाला। कुछ यात्री किनारे पर सन्त सोफिया के गिरजे को देखने गए जिस पर आजकल तुर्कों का अधिकार था। एफिम जहाज पर ही बना रहा। उसने सिर्फ थोड़ी सी सफेद रोटी खरीदी। वहाँ वे चौबीस घन्टे पड़े रहे और फिर समुद्र में चल दिए। स्मरना पर वे फिर रुके और उसके बाद अलेक्जेन्ड्रिया पर। परन्तु अन्त में वे सही सलामती से जाफा जा पहुँचे जहाँ सब यात्रियों को उतरना था। वहाँ से जेरुसलेम सड़क द्वारा लगभग चालीस मील दूर था। उतरते समय लोग फिर भयभीत हो उठे। जहाज ऊँचा था और यात्रियों को नीचे नावों में उतारा जा रहा था जो इतनी हिल रही थीं कि उन्हें चूक कर पानी में गिर

पड़ना मामूली सी बात थी । दो आदमी पानी में गिर ही पड़े लेकिन अन्त में सब लोग सुरक्षित जमीन पर उतर गए ।

वे लोग पैदल चल पड़े और तीसरे दिन दोपहर को जेरुसलेम पहुँचे । वे शहर से बाहर, रूसी आवास में ठहर गए जहाँ उनके पासपोर्टों पर सही की गई । तब, खाने के बाद, एफिम अपने साथी उस यात्री के साथ पवित्र स्थानों को देखने के लिए गया । अभी वह समय नहीं आया था जब उन्हें 'पवित्र समाधि' को देखने जाने दिया जाता इसलिए वे पादरी के दफ्तर में गए । सब यात्री नहीं इकट्ठे हुए । औरतों को मर्दों से अलग कर दिया गया जिन्हें नंगे पैरों एक घेरे में बैठने के लिए कहा गया । तब एक पादरी हाथ में एक तौलिया लिए उनके पैरों को धोने के लिए आया । उसने उन्हें धोया, पोंछा और फिर उन्हें चूमा और घेरे में बैठे हुए प्रत्येक प्राणी के साथ ऐसा ही किया । औरों के साथ एफिम के पैर भी धोए और चूमे गए । वह विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं के मध्य खड़ा रहा, स्वयं प्रार्थना की, समाधियों पर मोमबत्तियाँ चढ़ाईं, अपने माता पिता के नाम लिखी हुईं पुस्तिकाएं दीं जिससे कि गिरजे में होने वाली प्रार्थना के समय उनका भी उल्लेख किया जाय । यहाँ, पादरी के दफ्तर में उन्हें खाना और शराब दी गई । दूसरी सुबह वे लोग मिश्र की मेरी की गुफा पर गए जहाँ वह प्रायश्चित करती हुई रही थी । यहाँ भी उन्होंने मोमबत्तियाँ चढ़ाईं और प्रार्थना करवाई । वहाँ से वे लोग अब्राहम के मठ में पहुँचे और उस स्थान को देखा जहाँ अब्राहम भगवान पर बलि चढ़ाने के लिए अपने बेटे को क़त्ल करना चाह रहा था । फिर वे लोग उस स्थान पर गए जहाँ मेरी माग्देलेन को ईसा ने दर्शन दिए थे । साथ ही वहीं उन्होंने ईसा के भाई जेम्स का गिरजा देखा । उस यात्री ने एफिम को ये सारे स्थान दिखाए और बताया कि हर जगह पर उसे कितना धन चढ़ाना चाहिए । दोपहर को वे अपने आवास को लौटे और खाना खाया । जैसे ही वे लेटने और आराम करने की तैयारियाँ कर रहे थे वह यात्री चीख उठा और अपने कपड़ों की खाना तलाशी लेने लगा ।

"मेरा बटुआ चुरा लिया गया है, उसमें तेईस रूबल थे," उसने कहा, "दो दस दस रूबल के नोट और बाकी की रेजगारी थी।"

उसने गहरी सांसें लीं और बहुत देर तक रोता चिल्लाता रहा परन्तु अब कोई चारा नहीं था इसलिए वे सोने के लिए लेट गए।

जब एफिम लेटा हुआ था तो उसे इस विचार ने धर दबाया।

"इस यात्री का पैसा किसी ने भी नहीं चुराया है," उसने सोचा, "मुझे यकीन नहीं कि उसके पास कुछ था भी। उसने कहीं भी एक पैसा नहीं दिया हालांकि उसने मुझसे दिलवाये। यहाँ तक कि मुझ से एक रूबल उधार भी ले लिया।"

यह विचार उसके दिमाग में उठा ही था कि एफिम ने अपने को फटकारना शुरू कर दिया, यह कहते हुए : "मुझे किसी भी व्यक्ति के प्रति धारणा बनाने का क्या अधिकार है ? यह पाप है। मैं इसके बारे में अब नहीं सोचूँगा।" परन्तु जैसे ही उसने दूसरी बातों पर सोचना प्रारम्भ किया उसे फिर उस यात्री का ध्यान आ गया। वह धन में कितनी रुचि लेता प्रतीत होता था और यह कितना बुरा लगा जब उसने कहा कि उसका बटुवा चुरा लिया गया है।

"उसके पास कभी एक भी पैसा नहीं था," एफिम ने सोचा, "यह सब बनी बनाई बातें हैं।"

शाम होने पर वे उठ बैठे और 'पुनर्जीवन गिरिजा' में, जहाँ मसीह की समाधि है, अर्द्धरात्रि की प्रार्थना में भाग लेने चल दिए। यात्री एफिम के साथ ही लगा रहा और उसके साथ प्रत्येक स्थान पर गया। वे गिरजे में आए। वहाँ बहुत से यात्री इकट्ठे थे; कुछ रूसी और कुछ दूसरी जातियों के : ग्रीक, आरमेनियन, तुर्क और सीरियन। भीड़ के साथ एफिम 'पवित्र द्वार' में घुसा। एक पादरी उन्हें तुर्की सन्तरियों से आगे उस स्थान पर ले गया जहाँ रक्षक (ईसा) को सूली पर से उतारा गया था और उसका अभिषेक किया गया था और जहाँ

नौ बड़े बड़े शमादानों में मोमबत्तियाँ जल रही थीं। पादरी ने वे चीजें दिखाई और समझाई। एफिम ने वहाँ एक मोमबत्ती चढ़ाई। फिर पादरी एफिम को सीधा, सीढ़ियों के ऊपर गोलगोथा को ले गया, वह स्थान जहाँ सूली खड़ी थी। एफिम ने वहाँ प्रार्थना की। फिर उन्होंने उसे वह दरार दिखाई जहाँ धरती बहुत गहराई तक फट गई थी। इसके बाद वह स्थान दिखाया जहाँ ईसा के हाथ पाँवों में कीलें ठोकी गई थीं; फिर आदम का मकबरा जहाँ आदम की हड्डियों पर ईसा का खून गिरा था, फिर उन्होंने उसे वह पत्थर दिखाया जिस पर ईसा उस समय बैठा था जब कि काँटों का ताज उसके सिर पर पहनाया गया था; फिर वह लट्ठा दिखाया जिससे बाँध कर ईसा को कोड़े लगाए गए थे। फिर एफिम ने वह पत्थर देखा जिसमें ईसा के पैरों के लिए दो छेद बने थे। वे लोग उसे कुछ और भी दिखाना चाह रहे थे परन्तु भीड़ में हलचल सी मच उठी और सब लोग ईसा की समाधि की तरफ तेजी से चल पड़े। लातिनी प्रार्थना अभी समाप्त हुई थी और रूसी प्रार्थना शुरू हो रही थी। एफिम भीड़ के साथ चट्टान में कटी हुई समाधि को देखने भी गया।

उसने उस यात्री से पीछा छुड़ाने की कोशिश की जिसके खिलाफ उसके दिमाग में अब भी बुरी बातें आ रही थीं परन्तु यात्री ने उसका साथ नहीं छोड़ा बल्कि पवित्र समाधि पर पढ़ी जाने वाली प्रार्थना में उसके साथ गया। उन्होंने आगे बैठने की कोशिश की परन्तु बहुत देर हो चुकी थी। वहाँ इतनी भीड़ थी कि आगे बढ़ना या पीछे हटना असम्भव था। एफिम सामने देखता हुआ प्रार्थना कर रहा था और रह रह कर अपने बटुवे को टटोल लेता था। वह दुविधा में था: कभी उसने सोचा कि यात्री उसे धोखा दे रहा था और फिर उसने दुबारा सोचा कि अगर उस यात्री ने सच बोला हो और उसका बटुवा सचमुच चुरा लिया गया हो तो उसके साथ भी यही घटना घट सकती है।

१०.

एफिम वहाँ खड़ा हुआ उस छोटे गिरजे की तरफ घूरता रहा जिसमें पवित्र समाधि थी और उस पर छत्तीस मोमबत्तियाँ जल रही थीं। जब वह आदमियों के सिरों के ऊपर उचक कर देख रहा था उसने कोई ऐसी चीज देखी जिससे वह आश्चर्यचकित हो उठा। उन लैम्पों के बिल्कुल नीचे जिनमें पवित्र अग्नि जल रही थी, और हरेक के सामने, एफिम ने भूरा कोट पहने एक वृद्ध को देखा जिसकी चमकती हुई गंजी खोपड़ी बिल्कुल एलिशा बोद्रोव जैसी थी।

"यह वैसा ही है," एफिम ने सोचा, "परन्तु वह एलिशा नहीं हो सकता। वह मुझसे आगे नहीं निकल सका होगा। हमारे जहाज से पहले आने वाला जहाज एक हफ्ते पहले चल दिया था। वह उसे नहीं पकड़ सका होगा और वह हमारे जहाज पर था नहीं क्योंकि मैंने उस पर के हरेक यात्री को देखा था।"

मुश्किल से एफिम ने यह सोचा ही था कि वह वृद्ध प्रार्थना करने लगा और तीन बार झुका—एक बार भगवान् के सामने, फिर एक एक बार दोनों तरफ–अपने भाइयों की तरफ। और जैसे ही उसने अपना दाहिनी तरफ मुँह मोड़ा एफिम ने उसे पहचान लिया। यह एलिशा बोद्रोवा था जिसकी काली घुंघराली दाढ़ी गालों पर भूरी होने लगी थी, वही भौंहें थीं, वही आँखें और नाक थी और चेहरे का भाव भी वही था। हाँ, यह वही था।

एफिम अपने साथी को दुबारा पाकर बड़ा खुश हुआ और आश्चर्य करने लगा कि एलिशा उससे पहले कैसे निकल आया।

"शाबाश, एलिशा!" उसने सोचा: "देखो तो सही उसने कितनी प्रगति की। उसे रास्ते में कोई ऐसा मिल गया होगा जिसने उसे रास्ता बता दिया होगा। जब हम बाहर निकलेंगे तो मैं उसे ढूंढ लूँगा, इस खोपड़ी जैसी टोपी वाले से पीछा छुड़ा लूँगा और एलिशा के

साथ रहूँगा। शायद वह मुझे यह भी बता दे कि सबसे आगे कैसे पहुँचा जा सकता है।

एफिम ने चारों तरफ देखना जारी रखा जिससे कि एलिशा आँखों से ओझल न हो जाय। परन्तु जब प्रार्थना समाप्त हुई तो भीड़ चञ्चल हो उठी। भीड़ समाधि को चूमने के लिए आगे धक्के देने लगी और एफिम को एक तरफ कर दिया। उस पर फिर यह भय सवार हो गया कि कहीं उसका बटुआ चोरी न चला जाय। बटुवे को हाथ से दबाए, बाहर निकलने के लिए वह कुहनियों से रास्ता बनाने लगा। जब वह खुले में पहुँचा तो बहुत देर तक चारों तरफ, गिरजे के भीतर और बाहर एलिशा को खोजता फिरा। गिरजे में उसने अनेक तरह के बहुत से आदमियों को खाते, शराब पीते, पढ़ते और सोते हुए देखा। परन्तु एलिशा कहीं भी दिखाई नहीं दिया। इसलिए एफिम अपने साथी को ढूंढ़ने में असफल होकर सराय में वापस लौट आया। उस शाम को वह खोपड़ी जैसी टोपी वाला यात्री नहीं आया। वह बिना उसका एक रूबल चुकाए चला गया था और एफिम अकेला रह गया।

दूसरे दिन एफिम पवित्र समाधि पर फिर गया—ताम्बोव के एक बुड्ढे आदमी के साथ जिससे उसकी मुलाकात जहाज पर हुई थी। उसने सामने आने की कोशिश की परन्तु फिर पीछे धकेल दिया। इस-लिए वह एक खम्भे के सहारे खड़ा होकर प्रार्थना करने लगा। उसने सामने की तरफ देखा और वहाँ सबसे आगे लैम्पों के नीचे, भगवान की समाधि के बिल्कुल पास एलिशा खड़ा था, एक पादरी की तरह वेदी की तरफ अपने हाथ फैलाये और अपनी गंजी चमचमाती खोपड़ी लिए।

"अच्छा, अब," एफिम ने सोचा, "मैं उसे नहीं जाने दूँगा।"

वह सामने की तरफ आगे बढ़ा, परन्तु जब वह वहाँ पहुँचा तो एलिशा वहाँ नहीं था। यह स्पष्ट था कि वह चला गया था।

फिर तीसरे दिन एफिम ने ढूंढ़ा और देखा कि एलिशा समाधि पर, पवित्रतम स्थान पर, सब लोगों के सामने, अपनी बांहें फैलाए और ऊपर की तरफ निगाहें जमाए मानो कुछ देख रहा हो, खड़ा था। और उसकी गंजी खोपड़ी चमक रही थी।

"अच्छा, इस बार," एफिम ने सोचा, "वह मुझसे बच नहीं सकेगा। मैं जाकर दरवाजे पर खड़ा हो जाऊँगा तब हम एक दूसरे को खो नहीं सकेंगे।"

एफिम बाहर गया और दोपहर बीते तक दरवाजे पर खड़ा रहा। सब जा चुके थे परन्तु फिर भी एलिशा दिखाई नहीं दिया।

एफिम छः हफ्ते जेरुसलेम में रहा और हर जगह गया : बेथलेहम को, बेथानी को और जोर्डन को। पवित्र समाधि पर उसने अपने अन्तिम संस्कार के लिए एक नए कफन पर मोहर लगवाई और जोर्डन से उसने पवित्र जल की एक बोतल और पवित्र मिट्टी ली और मोमबत्तियाँ खरीदीं जिन्हें पवित्र अग्नि शिखा से जलाया गया था। आठ स्थानों पर उसने प्रार्थना करने के लिए अपना नाम लिखाया और सिर्फ घर लौटने के खर्च लायक पैसे छोड़ कर उसने अपना सारा धन वहीं खर्च कर दिया। फिर वह घर की तरफ चल दिया। वह जाफा तक पैदल गया, वहाँ से ओडेसा तक जहाज पर आया और वहाँ से पैदल घर की तरफ चल पड़ा।

११.

एफिम ने उसी सड़क से यात्रा की जिससे होकर वह आया था, और जैसे जैसे वह घर के नजदीक पहुँचता गया उसकी वही पुरानी चिन्ताएं उठ खड़ी हुईं कि उसकी गैरहाजिरी में काम कैसा चल रहा होगा। "साल भर में बहुत पानी बह जाता है," यह कहावत है।" एक घर बनाने में पूरी जिन्दगी गुजर जाती है परन्तु बर्बाद करने में देर नहीं

लगती," उसने सोचा। और उसे आश्चर्य होने लगा कि उसके बिना उसके पुत्र ने कैसे काम सम्हाला होगा, बसन्त ऋतु कैसी होगी, जाड़ों में जानवर कैसे रहे होंगे और झोंपड़ी बनना समाप्त हो गया होगा या नहीं। जब एफिम उस जिले में पहुँचा जहाँ पिछली गर्मियों में वह एलिशा से बिछुड़ा था तो वह बड़ी मुश्किल से इस बात का विश्वास कर सका कि वहाँ रहने वाले लोग वही पहले वाले हैं। गत बर्ष वे भूखों मर रहे थे परन्तु अब वे चैन से रह रहे थे। फसल अच्छी हुई थी, लोगों की हालत अच्छी हो गई थी और वे अपनी पुरानी मुसीबतों को भूल चुके थे।

एक शाम एफिम उसी स्थान पर पहुँचा जहाँ एलिशा पीछे रह गया था और जैसे ही वह गाँव में घुसा तो सफेद फ्राक पहने एक छोटी बच्ची झोंपड़ी में से दौड़ कर बाहर आई।

"बापू, बापू, हमारे घर आओ।"

एफिम आगे बढ़ जाना चाहता था परन्तु वह लड़की उसे आगे नहीं जाने दे रही थी। उसने हंसते हुए उसका कोट पकड़ लिया और झोंपड़ी की तरफ खींचा जहां एक स्त्री एक छोटे से बच्चे को लिए सहन में आ खड़ी हुई और उसकी तरफ इशारा किया।

"भीतर आओ बाबा," वह बोली, "खाना खाओ और रात को हमारे यहाँ ही रहो।"

इसलिए एफिम भीतर चला गया।

"अच्छा हो कि मैं एलिशा के बारे में पूछ लूँ," उसने सोचा, "मेरा ख्याल है कि यह वही झोंपड़ी है जिसमें वह पानी पीने के लिए घुसा था।"

उस औरत ने उसके थैले को उतारने में मदद की और मुँह धोने के लिए पानी दिया। फिर उसने उसे मेज पर बैठाया, उसके सामने दूध, दही की टिकियाँ और हलुआ रख दिया। एफिम ने उसे धन्यवाद दिया

और एक यात्री के प्रति इतना सौजन्य दिखाने के लिए उसकी प्रशंसा की। औरत ने अपना सिर हिलाया।

"यात्रियों का स्वागत करने का एक विशेष कारण है," वह बोली। "वह एक यात्री था जिसने हमें दिखाया था कि जिन्दगी क्या है। हम भगवान को भूले हुए जिन्दगी बिता रहे थे और भगवान ने दंड-स्वरूप हमें लगभग मौत के मुँह में पहुँचा दिया था। पिछली गर्मियों में हम लोग ऐसी स्थिति में पहुँच गए थे कि सब बीमार पड़ गये और असहाय हो उठे। हमारे पास खाने तक को कुछ भी नहीं रहा। और हमें मर जाना चाहिए था परन्तु भगवान ने हमारी सहायता करने के लिए एक वृद्ध पुरुष को भेज दिया—बिल्कुल ऐसा ही जैसे कि तुम हो। एक दिन वह पीने के लिए पानी मांगने भीतर आया, वह स्थिति देखी जिसमें कि हम लोग थे, हमारे ऊपर रहम खाया और हमारे साथ ठहर गया। उसने हमें खाना और पीने को पानी दिया और हम लोगों को फिर अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। और उसने हमारी जमीन छुड़ाई और एक गाड़ी और घोड़ा खरीदा और हमें दे दिया।"

इसी समय उस बुढ़िया ने झोंपड़ी में घुसते हुए छोटी स्त्री को टोका और कहा:

"हम नहीं जानते कि वह एक आदमी था या ईश्वर का भेजा हुआ कोई फरिश्ता। उसने हम सब को प्यार किया, हम सब पर दया दिखाई और हमें अपना नाम बिना बताए चला गया जिससे कि हमें यह भी नहीं मालूम कि हम किसके लिए प्रार्थना करें। मैं उस सम्पूर्ण दृश्य को अब भी अपनी आँखों के आगे देख रही हूँ। उस जगह मैं मौत का इन्तजार करती हुई लेटी हूँ जब एक गंजा वृद्ध पुरुष भीतर आता है। वह कोई दर्शनीय व्यक्ति नहीं था। उसने पीने के लिए पानी मांगा। मैं, क्योंकि मैं पापिनी जो हूँ, अपने आप सोचने लगी: "वह यहाँ क्या लूटने आ रहा है?" और जरा सोचो तो सही कि उसने क्या किया!

जैसे ही उसने हम लोगों को देखा, अपना थैला नीचे रख दिया, बिल्कुल इसी स्थान पर और उसे खोल डाला।"

इसी समय उस छोटी लड़की ने कहा :

"नहीं, दादी," वह बोली, "पहले उसने थैले को यहाँ झोंपड़ी के बीचोबीच रखा, और फिर उठा कर बेंच पर रखा था।"

और उन लोगों ने वे सब बातें याद करनी और उन पर बहस करनी शुरू कर दी, जो कुछ उसने कहा और किया था, कहाँ वह बैठा और सोया था और उनमें से हरेक से उसने क्या कहा था।

रात को वह किसान घोड़े पर घर लौटा और उसने भी एलिशा के बारे में कहना और यह बताना शुरू कर दिया कि वह उनके साथ कैसे रहा था।

"अगर वह न आया होता तो हम सब अपने पापों के कारण मर गए होते। हम लोग निराशा में पड़े हुए मर रहे थे, ईश्वर और मनुष्य के प्रति बड़बड़ा रहे थे। मगर उसने पुनः हमें अपने पैरों पर खड़ा कर दिया; और उससे ही हमने ईश्वर को जानना और यह विश्वास करना सीखा कि मनुष्य में अच्छाई होती है। भगवान उसकी रक्षा करें! हम लोग जानवरों की तरह रहते थे, उसने हमें इन्सान बना दिया।"

एफिम को खाना पानी देने के बाद उन्होंने उसे सोने की जगह दिखाई और खुद भी सोने लेट गए।

यद्यपि एफिम लेट गया, वह सो नहीं सका। वह अपने दिमाग से एलिशा को निकालने में असफल रहा बल्कि याद करने लगा कि उसने किस तरह उसे तीन बार जेरुसलेम में सबसे आगे खड़े हुए देखा था।

"तो यह बात है कि वह मुझसे पहले वहाँ कैसे पहुँच गया," एफिम ने सोचा। "भगवान ने मेरी तीर्थयात्रा को चाहे स्वीकार किया हो परन्तु उसने उसकी यात्रा को निश्चित रूप से स्वीकार कर लिया था!"

दूसरे दिन सुबह एफिम ने उन लोगों से विदा ली, जिन्होंने अपने काम पर जाने से पहले उसके झोले में कुछ पट्टियाँ रखदीं थीं, और अपनी यात्रा पर चल दिया था।

१२.

एफिम लगभग एक साल बाहर रहा था और एक दिन शाम को जब वह घर पहुँचा तो फिर बसन्त का मौसम आ गया। उसका पुत्र घर पर नहीं था बल्कि शराबखाने चला गया था और जब वापस लौटा तो जरा ज्यादा चढ़ाये हुए था। एफिम ने उससे सवाल करने शुरू कर दिए। हर चीज से यह जाहिर हो रहा था कि वह युवक अपने पिता की अनुपस्थिति में लापरवाह था। सारा पैसा गलत तरीके से खर्च कर डाला गया था और काम की उपेक्षा की गई थी। पिता ने पुत्र को डांटना शुरू किया और पुत्र ने बतत्तमीजी से जबाब दिया :

"तुमने खुद घर पर रह कर इन कामों को क्यों नहीं सम्हाला ?" उसने कहा। "तुम सारा पैसा लेकर बाहर चले गए और अब उसे मुझसे मांग रहे हो।"

बुड्ढा नाराज हो उठा और बेटे पर हाथ छोड़ दिया।

सुबह होने पर एफिम गाँव के मुखिया से अपने बेटे की हरकतों के बारे में शिकायत करने गया। जब वह एलिशा के घर के सामने होकर गुजर रहा था उसके मित्र की स्त्री ने दालान से उसका स्वागत किया।

"कैसे हो, पड़ौसी ?" उसने कहा। कैसे हो, प्यारे मित्र ! तुम जेरुसलेम सही सलामत पहुँच गये थे ?"

एफिम रुका।

"हाँ, भगवान् को धन्यवाद है," उसने कहा, "मैं वहाँ गया था। तुम्हारा आदमी मेरी नजरों से ओझल हो गया था परन्तु मैंने सुना कि वह सही सलामत घर आ गया।"

बुढ़िया बातें करने की शौकीन थी।

"हाँ, मित्र, वह वापस आ गया है," उसने कहा। "उसे वापस आए बहुत समय हो गया। और हम लोग खुश थे कि भगवान् ने उसे हमारे पास वापस भेज दिया। उसके बिना हम सबको सूना सूना सा लगता था। अब हम उससे ज्यादा काम करने की आशा नहीं कर सकते, उसके मेहनत करने के दिन बीत गए परन्तु फिर भी वह अभी घर का मुखिया है और जब वह घर रहता है तो ज्यादा आनन्द रहता है और हमारा लड़का कितना खुश था! उसने कहा, "जब पिताजी चले जाते हैं तो घर में जैसे अँधेरा छा जाता है।" उसके बिना बड़ा उदास लगता था, प्यारे मित्र। हम लोग उसे प्यार करते हैं और उसकी अच्छी तरह देख भाल करते हैं।"

"इस समय वह घर पर ही है क्या?"

"है, प्यारे मित्र! वह अपनी मक्खियों के पास है। वह मक्खियों को छत्तों में बैठा रहा है। उसका कहना है कि इस वर्ष वे खूब बैठी हैं। भगवान् ने मक्खियों को इतनी शक्ति दे रखी है कि मेरे पति को याद नहीं आता कि पहले भी कभी ऐसा हुआ था।" भगवान् हमारे पापों के अनुसार हमें सजा नहीं दे रहा। "वह कहा करता है। भीतर आओ, प्यारे पड़ोसी। वह तुम्हें दुबारा देख कर बहुत खुश होगा।"

एफिम दलान में होकर अहाते में गया और वहाँ से मक्खियों के पालने की जगह पहुँचा—एलिशा से मिलने के लिए। वहाँ पर एलिशा अपना भूरा कोट पहने, मुँह पर बिना जाली लगाए और बिना दस्तानों के, भोजपत्र के पेड़ के नीचे खड़ा ऊपर देख रहा था। उसकी बाँहें फैली हुई थीं और गंजी खोपड़ी चमक रही थी जिस मुद्रा में एफिम ने उसे जेरुसलेम में पवित्र समाधि पर खड़े देखा था। और उसके ऊपर पेड़ के पत्तों में छन छन कर आती हुई धूप उसी तरह पड़

रही थी जिस प्रकार कि उस पवित्र स्थान में अग्नि की लपटें उस पर चमक रही थीं और सुनहली मक्खियाँ उसके सिर के चारों तरफ उड़ती हुईं प्रभामंडल का सा दृश्य उपस्थित कर रही थीं और उसे काट नहीं रही थीं।

एफिम रुका। बुढ़िया ने अपने पति को पुकारा।

"देखो, तुम्हारा मित्र आया है," उसने जोर से कहा।

एलिशा ने प्रसन्न मुख से पीछे मुड़ कर देखा और धीरे धीरे अपनी दाढ़ी में से मक्खियों को निकालते हुए एफिम के पास आया।

"नमस्कार, मित्र, नमस्कार, प्यारे मित्र! तुम वहाँ कुशलता से पहुँच गये थे न?"

"मेरे पैर वहाँ तक मुझे ले गए और मैं जोर्डन नदी से तुम्हारे लिए थोड़ा सा जल लाया हूँ। इसे लेने तुम मेरे घर जरूर आना। परन्तु भगवान् ने मेरे प्रयत्नों को स्वीकार कर लिया था......।"

"अच्छा, भगवान् को धन्यवाद देना चाहिए! ईसा मसीह तुम्हारा कल्याण करे!" एलिशा बोला।

एफिम कुछ देर खामोश रहा और फिर बोला:

"मेरे पैर वहाँ पहुँच गये थे परन्तु कह नहीं सकता कि मेरी आत्मा या किसी दूसरे की आत्मा अधिक सच्चे रूप में वहाँ पहुँची थी......"

"यह भगवान् की मर्जी है, मित्र, भगवान् की मर्जी," एलिशा ने टोक कर कहा।

"लौटते समय मैं उसी झोंपड़ी पर रुका था जहाँ तुम पीछे रह गए थे।"

एलिशा चौकन्ना हो गया और जल्दी से बोला:

"भगवान् की मर्जी है, मित्र, भगवान् की मर्जी है। मकान में

चलो। मैं तुम्हें अपने यहाँ का थोड़ा सा शहद दूँगा।" और एलिशा ने बात बदली और घरबार की बातें करने लगा।

एफिम ने गहरी सांस ली और एलिशा ने उस झोंपड़ी के आदमियों के बारे में बातें नहीं कीं और न यह कि उसने कैसे उसे जेरुसलेम में देखा था। परन्तु वह अब समझ गया कि भगवान् के प्रति की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने और भगवान् की इच्छा पालन करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हरेक व्यक्ति जब तक जीवित रहे दूसरों के प्रति प्रेम रखे और दूसरों की भलाई करता रहे।

दो हुसार*

उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में, उन दिनों आजकल की तरह रेल की लाइनें या पत्थरों की सड़कें, गैस की रोशनी, मोमबत्तियाँ, स्प्रिंगदार गद्दों वाली छोटी गाड़ियाँ, बिना वार्निश किया हुआ फर्नीचर, चश्मे लगाए हुए निराश युवक, स्वतन्त्रता की समर्थक दार्शनिक नारियाँ आदि नहीं थीं। उन दिनों न सुन्दर आकर्षक कामनियाँ थीं जैसी कि आजकल हमारे समय में बहुत हैं। उस सरल अकृत्रिम युग में जब कोई मास्को से पीटर्सबर्ग की यात्रा एक कोच या गाड़ी द्वारा करता था जिसके साथ घर के बने हुए खाने पीने के सामान का एक पूरा रसोईघर रहता था, तो उसे लगातार आठ दिन तक कच्ची, धूलभरी या कीचड़ से भरी हुई सड़क से यात्रा करनी पड़ती थी और भुने हुए गोश्त और मामूली गोल रोटी पर दिन काटने पड़ते थे। उन दिनों जब शरद ऋतु की लम्बी सन्ध्याओं में पीली मोमबत्तियों को, जिनके चारों तरफ बीस या तीस प्राणियों के परिवार इकट्ठे हुआ करते थे, फूंक मार कर बुझाना पड़ता था। जब नृत्य शालाएँ मोम या ह्वेल मछली के तेल से बनी हुई मोमबत्तियों के झाड़ फनूसों से प्रकाशित रहती थीं; जब फर्नीचर करीने से सजाया जाता था; जब हमारे पिता युवक थे और अपने यौवन को झुर्रियों और सफेद बालों की अनुपस्थिति द्वारा ही

---

*एक विशेष प्रकार के फौजी घुड़सवारों का नाम। यह हंगरी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है—लुटेरा। हंगरी के सिपाही पहले हुसार थे। वे एक कलंगी पहना करते थे जो अब भी अंग्रेजी, जर्मनी और दूसरे देशों की हुसार रेजीमेन्टों में पहनी जाती हैं। ये घुड़सवार बड़े बहादुर माने जाते हैं।

प्रमाणित नहीं करते थे बल्कि इसके लिए वे लोग किसी स्त्री के पीछे द्वन्द्वयुद्ध करते थे या किसी महिला द्वारा साभिप्राय रूप से या अकस्मात गिराए गए रूमाल को उठाने के लिए कमरे के दूसरे कोने से दौड़ कर आते थे। जब हमारी माताएँ पतली कमर और लम्बी चौड़ी बांहों वाली पोशाक पहनती थीं और घरेलू मामलों को पर्चियाँ डाल कर तय करती थीं। जब सुन्दरी तरुणियाँ असूर्य स्पर्शी थीं। उन सरल सुन्दर दिनों में जब मैसोनिक लोक (फ्रीमैशन)१, मार्टीनिस्टों२, और तुगेन्दबुन्दों का जोर था, जब मिलारोदोवियों३, देवीदोवों४ और पुश्किनो५ का जमाना था—के—नामक सरकारी कस्बे में जायदाद वालों की एक सभा हुई और जनता के चुनाव हुए।

"खैर, कोई बात नहीं है, बड़े कमरे से काम चल जायगा," रोंएदार लबादा और हुसारों की टोपी पहने हुए एक नौजवान अफसर ने कहा जो अभी एक किराए की स्लेज गाड़ी पर से उतर कर के—नामक कस्बे के सबसे अच्छे होटल में घुस रहा था।

१—यह रूस में एक गुप्त सङ्गठन था जिसका उद्देश्य समानता और विश्वबन्धुत्व की भावना के आधार पर मनुष्यों का नैतिक स्तर ऊँचा करना था।

२—यह रूसी फ्रीमैशन वालों की एक सोसाइटी थी जिसका नामकरण फ्रांसीसी थियोसोफिस्ट लुई-क्लाउड-सन्त मार्टिन के नाम पर हुआ था।

३—एम. एच. मिलारोदोविच ने नेपोलियन के युद्ध प्रसिद्धि पाई थी। वह दिसम्बर की क्रांन्ति में सन् १८२५ में मार डाला गया था।

४—डी. वी. देवीदोव एक जनप्रिय कवि और छापेमार सेना का नायक था।

५—ए. ए. पुश्किन प्रसिद्ध रूसी कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और आलोचक था।

"योर एक्सेलेन्सी, प्रतिनिधियों की संख्या बहुत अधिक है," नौकरों ने कहा, जिन्होंने अर्दली से पहले ही यह मालूम कर लिया था कि किस हुसार का नाम काउन्ट तुर्बिन था और इसीलिए उन्होंने उसे 'योर एक्सेलेन्सी' कह कर सम्बोधित किया था।

"एफ्रेमोवो की मालकिन ने अपनी लड़कियों के साथ कहा था कि वह इसी शाम को जा रही है, इसलिए उनके जाते ही ग्यारह नम्बर का कमरा आपको मिल जायगा," नौकर ने गैलरी में काउन्ट के साथ धीरे धीरे चलते और चारों तरफ देखते हुए कहना जारी रखा।

बड़े कमरे में सम्राट एलेक्जेन्दर प्रथम के धुंधले आदमकद चित्र के नीचे वाली छोटी सी मेज पर बहुत से व्यक्ति बैठे हुए, जो सम्भवतः स्थानीय उच्चवर्गीय समाज से सम्बन्धित थे, शैम्पेन पी रहे थे कमरे के दूसरी तरफ कुछ मुसाफिर—जो रुएँदार झालर के नीले लबादे पहने व्यापारी थे, बैठे हुए थे।

कमरे में घुसते हुए और ब्लूचर, एक विशाल भूरे रंगवाले कुत्ते को, जिसे वह अपने साथ लाया था पुकारते हुए काउन्ट ने अपना लबादा उतार कर फेंक दिया, जिसके कालर पर अभी तक पाला जमा हुआ था, वोदका लाने की आज्ञा दी तथा अपनी नीली साटिन की कज्जाक'जाकेट पहने हुए मेज पर बैठ गया और वहाँ बैठे हुए व्यक्तियों से बातें करने लगा।

इस आगन्तुक के मुख की सुन्दर उज्ज्वल रूपरेखा ने उन लोगों को पहले से ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। उन्होंने उसे शेम्पेन का एक गिलास पीने को दिया। काउन्ट ने पहले एक गिलास वोदका का पिया और फिर अपने नवीन परिचितों का मनोरंजन करने के लिए शेम्पेन की एक दूसरी बोतल लाने की आज्ञा दी। गाड़ीवान बख्शीश मांगने भीतर आया।

"साश्का!" काउन्ट चीखा," इसे कुछ दे दो।"

गाड़ीवान साश्का के साथ बाहर चला गया मगर पैसे हाथ में लिए हुए फिर वापस आया।

"देखिए, योर एक्सेलेन्सी, मैंने हुजूर की खिदमत पूरी तरह नहीं की थी क्या? क्या आपने मुझे आधा रूबल देने का वायदा नहीं किया था और इसने मुझे सिर्फ चौथाई ही दिया है।"

"उसे एक रूबल दे दो, साश्का!"

"उसे काफी मिल चुका है!" उसने धीमे स्वर में कहा, "और दूसरी बात यह है कि मेरे पास और पैसे हैं ही नहीं।"

काउन्ट ने अपनी पाकेट बुक में से दो पाँच रूबल वाले नोट निकाले जो उसकी पूरी सम्पदा थी और उनमें से एक गाड़ीवान को दे दिया जिसने उसका हाथ चूमा और चला गया।

"मैंने सारा खर्च कर डाला है!" काउन्ट बोला। "ये मेरे आखिरी पाँच रूबल बचे हैं।"

"बिल्कुल हुसारों की सी बात कही है," एक सम्भ्रांत व्यक्ति ने कहा जो अपनी मूछों, आवाज और पैरों की एक विशेष चपलता के कारण स्पष्टतः एक अवकाशप्राप्त फौजी घुड़सवार प्रतीत हो रहा था। "क्या आप यहाँ कुछ समय तक ठहरेंगे, काउन्ट?"

"मुझे थोड़ा सा पैसा अवश्य मिलना चाहिए। मैं सिर्फ उसी की वजह से यहाँ ठहरा हूँ वर्ना मुझे यहाँ नहीं रुकना चाहिए था। और, शैतान उन्हें ले जाय, इस सराय में कमरे भी नहीं मिले।"

"मुझे आज्ञा दीजिए, काउन्ट," उस फौजी घुड़सवार ने कहा। "क्या आप मेरे साथ नहीं रहेंगे? मेरा कमरा सात नम्बर वाला है...... अगर आपको कोई शिकायत न हो तो सिर्फ आज रात भर के लिए। और फिर क्या आप दो दिन हमारे साथ ठहर सकेंगे? बात यह है कि 'मारीकल डी ला नोबलीस' आज रात को एक बाल-नृत्य का आयोजन कर रहे हैं। आप इसमें भाग लेकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान करेंगे।"

"मैं कहता हूँ कि वही है। यह वही द्वन्द्वयुद्ध लड़ने वाला हुसार है—वही प्रसिद्ध तुरबिन। वह मुझे जानता है—मैं तुमसे किसी भी चीज की शर्त बद सकता हूँ कि वह मुझे जानता है। क्योंकि वह और मैं लगातार तीन हफ्ते तक एक साथ नाचरंग में मस्त रहे थे जब मैं लेबेद्यानी में घोड़ों को सिखाया करता था। वहाँ एक बात हम दोनों ने एक साथ की थी......वह एक अच्छा आदमी है, क्यों है न ?"

"एक बहुत शानदार व्यक्ति। और व्यवहार का इतना सुन्दर। उसका—आप लोग उसे क्या कहते हैं ?—उसका तो इसमें नामनिशान भी नहीं है," उस सुन्दर नौजवान ने उत्तर दिया।" कितनी जल्दी हम लोग आपस में घुलमिल गए।...वह पच्चीस साल से ज्यादा नहीं लगता, क्यों है क्या ?"

"ओह, नहीं, वह इतना ही मालूम पड़ता है परन्तु है उससे ज्यादा का। तुम जानते हो कि उसे समझना पड़ता है। मिगुनोवा को किसने भगाया था ? उसने। यह वही था जिसने सेबलिन को मारा था। यह वही था जिसने मेतनेव को टांग पकड़ कर खिड़की से बाहर फेंक दिया था। यह वही था जिसने तीन लाख रूबल प्रिंस नेस्तोरोव से जीते थे। तुम जानते हो वह हमेशा जीवट के काम करता रहता है। वह एक जुआरी, एक द्वन्द्वयुद्ध लड़ने वाला, औरतों को मोहने वाला परन्तु हुसारों में एक उज्ज्वल रत्न के समान है—एक अमूल्य रत्न। वे अफवाहें जो यहां चारों तरफ फैली हुई हैं वास्तविकता की तुलना में कुछ भी नहीं हैं—काश कि कोई जानता कि वह कितना सच्चा हुसार है ! आह, वह भी क्या जमाना था !"

और उस घुड़सवार ने अपने साथ बात करने वाले उस नौजवान को काउन्ट द्वारा लेबेदयानी में किए गए ऐसे नाचरंगों का किस्सा सुनाया जो कभी नहीं हुआ था बल्कि कभी हो भी नहीं सकता था।

ऐसा हो भी नहीं सकता था क्योंकि पहली बात तो यह कि उस

दिन से पहले उसने काउन्ट को कभी भी नहीं देखा था और काउन्ट जब फौज में भर्ती हुआ था तो वह घुड़सवार उससे दो साल पहले ही फौज से स्तीफा दे चुका था। और दूसरी बात यह कि उस घुड़सवार ने वास्तविक रूप में कभी भी घुड़सवार फौज में नौकरी नहीं की थी बल्कि चार साल तक बेलेक्की रेजीमेन्ट में सबसे नीचे दर्जे का केडेट रहा था और कमीशन पाने से पहले ही रिटायर हो गया था। परन्तु दस साल पहले उसे उत्तराधिकार में थोड़ा सा धन मिल गया था और वह सचमुच लेबेदूयानी में रहा था जहाँ उसने कुछ अफसरों के साथ, जो वहाँ घोड़ों की खरीद कर रहे थे, सात सौ रूबल नाच रंग में उड़ा दिए थे। वह यहाँ तक आगे बढ़ गया था कि उसने उहलान१ युनीफार्म बनवा ली जिसका आगे का हिस्सा नारंगी रंग का था। इस युनीफार्म बनवाने का मतलब यह था कि उहलान रेजीमेन्ट में भर्ती होना चाहता था। घुड़सवार सेना में भर्ती होने की यह अभिलाषा और लेबेदूयानी में घोड़े खरीदने वाले उन अफसरों के साथ बिताए गए तीन हफ्ते उसके जीवन के सबसे सुन्दर और सुखद क्षण बन कर रह गए थे। इसलिए उसने अपनी अभिलाषा को पहले एक वास्तविकता का रूप दिया और फिर एक संस्मरण का, और वह अपने भूतकाल को एक घुड़सवार अफसर के रूप में बिताए जाने में पूर्ण विश्वास करने लगा और इन सब बातों ने जहाँ तक सज्जनता और सच्चाई का सम्बन्ध है उसके एक योग्य पुरुष बनने में बाधा नहीं डाली।

"हाँ, वे लोग, जिन्होंने कभी भी घुड़सवार सेना में नौकरी नहीं की है, हम लोगों को कभी भी नहीं समझ सकेंगे।"

वह एक कुर्सी पर पैर फैला कर बैठ गया और अपने निचले

१—यह फौजी घुड़सवारों के लिए प्रयुक्त पोल भाषा का शब्द है। प्रथम महायुद्ध से पूर्व जर्मनी और आस्ट्रिया की फौजों में उलहान रेजीमेन्टें थीं जो अंग्रेजी बल्लमदार रेजीमेन्ट के समान थीं।

जबड़े को आगे निकाल कर धीमी आवाज में कहने लगाः "तुम एक टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए, घोड़े पर सवार, आगे चले जा रहे हो और तुम घोड़े पर सवार न होकर शैतान के साक्षात अवतार पर सवार हो जो तुम्हारे नीचे उछल कूद कर रहा है और तुम शैतान को भी चुनौती सी देने वाली मुद्रा में बैठे हुए हो। टुकड़ी का कमान्डर मुआयना करने तुम्हारे पास बढ़ कर आता है। "लेफ्टीनेन्ट" वह कहता है, "हम लोग तुम्हारे बिना सफलता नहीं पा सकते—कृपया टुकड़ी को परेड के लिए ले चलो।"

"अच्छी बात है," तुम कहते हो और तुम पीछे मुड़ते हो, अपने मुछन्दर साथियों से चिल्ला कर कहते हो :

"आह, शैतान की मार, वे दिन ऐसे ही थे।"

काउन्ट स्नान गृह से भीगे बाल और लाल शरीर लिए हुए लौटा और सीधा सात नम्बर में चला गया जहाँ वह घुड़सवार एक ड्रेसिंग-गाऊन पहने बैठा हुआ पाइप पी रहा था और आनन्द के साथ सोच रहा था, और यह सोचना भय से खाली नहीं था कि इस प्रसिद्ध तुरबिन के साथ एक कमरे में रहने का सौभाग्य उसे प्राप्त हो रहा था। "अब सोचो," उसने विचारा "कि वह अचानक मुझे पकड़ लेता है, मुझे नंगा कर देता है, मुझे शहर के दरवाजे पर ले जाता है और बरफ में बैठा देता है, या...मुझ पर राल पोत देता है या केवल...परन्तु नहीं," उसने अपने आप को सान्त्वना दी, "वह अपने एक साथी के साथ ऐसा नहीं करेगा।"

"साश्का, ब्लूचर को खाना दो!" काउन्ट चिल्लाया।

साश्का, जिसने यात्रा के बाद फुर्ती लाने के लिए वोद्का का एक गिलास चढ़ा लिया था और जो स्पष्टतः नशे में था, भीतर आया।

"क्या, पी चुके! तुम शराब पी रहे थे, शैतान!...ब्लूचर को खाना दो।"

"वह भूखा नहीं मर जायगा। देखिए न, वह कितना चिकना हो रहा है!" कुत्ते को थपथपाते हुए साश्का ने जवाब दिया।

"खामोश! भाग जाओ और उसे खिलाओ!"

"आप चाहते हैं कि कुत्ते को खाना खिलाया जाय परन्तु जब कोई आदमी एक गिलास शराब पी लेता है तो आप उसे डाटते हैं।"

"ए! मैं तेरी खाल उधेड़ दूँगा!" काउन्ट ऐसी आवाज में चिल्लाया जिससे खिड़की के काँच झनझना उठे और वह घुड़सवार भी थोड़ा सा भयभीत हो उठा।

"आपको पूछना चाहिए कि क्या साश्का ने आज एक गस्सा भी खाना खाया है। हाँ, मुझे मारिए अगर आप एक कुत्ते को एक मनुष्य से ज्यादा ऊँचा समझते हैं," साश्का बड़बड़ाया।

परन्तु इतना कहते ही काउन्ट का उसके चेहरे पर ऐसा भयानक घूंसा पड़ा कि वह गिर पड़ा, दीवाल से उसका सिर टकराया और अपनी नाक पकड़े हुए वह कमरे से भागा और गैलरी में पड़ी हुई एक आराम कुर्सी पर जाकर गिर पड़ा।

"उन्होंने मेरे दाँत तोड़ डाले हैं," साश्का बड़बड़ाया उसने एक हाथ से अपनी खून से भरी हुई नाक पोंछी जब कि दूसरे हाथ से ब्लूचर की पीठ खुजाई जो अपने आप को चाट रहा था। "उसने मेरे दाँत तोड़ दिए हैं, ब्लूची, परन्तु फिर भी वह मेरा काउन्ट है और उसके लिए मैं आग में भी कूद सकता हूँ—हाँ! क्योंकि वह-मेरा काउन्ट है! तुम समझते हो, ब्लूची? खाना चाहते हो, क्यों?"

कुछ देर वहीं पड़े रहने के बाद वह उठा, कुत्ते को खाना खिलाया और तब पूरी तरह शान्त होकर काउन्ट की सेवा में हाजिर हुआ और उसे चाय पिलाई।

"मुझे सचमुच बड़ा दुख होगा," काउन्ट के सामने, जो दीवाल के सहारे पैर उठाए हुए बिस्तर पर लेटा हुआ था, खड़ा हुआ वह

घुड़सवार दीनता पूर्वक कह रहा था। "आप जानते हैं कि मैं भी एक पुराना फौजी हूँ और अगर मैं कह सकूँ तो एक साथी। आप दूसरे से उधार क्यों लें जब कि मुझे आपको दो सौ रूबल देकर अत्यंत आनंद प्राप्त होगा। अभी मेरे पास नहीं हैं-अभी तो सिर्फ सौ रूबल हैं परंतु बाकी मैं आज ही ला दूँगा। आप सचमुच मेरी भावनाओं को चोट पहुँचायेंगे, कउंट।"

"धन्यवाद, बुढ़ऊ," काउन्ट ने कहा और फौरन ही इस बात को सोचने लगा कि उन लोगों में कैसे सम्बन्ध होने चाहिए और घुड़-सवार के कन्धे को थपथपाते हुए बोला: "धन्यवाद! अच्छा, तो, अगर जाना ही है तो हम लोग नृत्य में चलेंगे। परन्तु अब हम लोग क्या करें? बताओ कि तुम्हारे शहर में क्या क्या है? कैसी सुन्दर लड़कियाँ हैं? नाचरंग के लिए कौन से आदमी उपयुक्त हैं? जुआ कैसा होता है?"

उस घुड़सवार ने बताया कि नृत्य में अनेक सुन्दरी युवतियाँ इकट्ठी होंगी, कि कोल्कोव, जो पुनः पुलिस कप्तान चुन लिया गया है, नाचरंग के लिए सबसे अच्छा साथी है, सिर्फ उसमें सच्चे हुसार की सी शान नहीं है—वर्ना वह एक बहुत अच्छा आदमी था। और यह कि जब से चुनाव शुरू हुए हैं तभी से इल्यूशिन की जिप्सी गाने वाली पार्टी बराबर गा रही है। स्तेश्का उसका प्रधान है। और यह कि उस को मार्शल के यहाँ से सब लोग उन्हीं का गाना सुनने के लिए जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं।

"और वहाँ ताश खेलने वाले भी बहुत हैं जो शैतान की तरह खेलते हैं," उसने कहना जारी रखा।

"लुखनोव खेलता है। उसके पास पैसा है और वह कुछ दिनों से अपनी यात्रा भंग कर ठहरा हुआ है। और इल्यिन नामक एक उहला तुरही बजाने वाला, जो आठ नम्बर में ठहरा हुआ है, बहुत हार

गया है। उन लोगों ने उसके कमरे में खेलना शुरू कर दिया है । वे हरेक शाम को खेलते हैं। और वह इलियन कितना अच्छा आदमी है। मैं तुम्हें बता रहा हूँ काउन्ट कि वह नीच नहीं है—वह अपनी आखिरी कमीज को भी दाँव पर लगा देगा।"

"अच्छा, तो, चलो, उसी के कमरे में चलें। देखें तो सही कि वे कैसे लोग हैं," काउन्ट ने कहा।

"हाँ, कृपया, प्रार्थना करता हूँ, चलिए। वे बहुत खुश होंगे।"

२.

ओहलान तुरही बजाने वाला अभी जगा था। पिछली शाम को वह आठ बजे खेलने बैठा था और पन्द्रह घंटों तक लगातार धीरे धीरे बहुत पैसे हार गया था–सुबह ग्यारह बजे तक। वह बहुत बड़ी रकम हार चुका है परन्तु उसे ठीक तरह से यह नहीं मालूम कि कितना हारा है क्योंकि उसके पास लगभग तीस हजार रूबल तो अपने थे और पन्द्रह हजार सरकारी खजाने के थे जो उसके अपने धन के साथ बहुत पहले से ही मिल गए थे और वह उन्हें गिनने में इसलिए डर रहा था कि कहीं यह बात साफ न हो जाय कि वह सरकारी धन भी हार गया है। दोपहर को वह सोया था और स्वप्न रहित ऐसी गहरी नींद सोया है जो सिर्फ वे ही युवक सोते हैं जो बहुत गहरी रकम हार जाते हैं। छः बजे जग कर (उसी समय जब काउंट तुरबिन होटल में पहुँचा था) और फर्श पर इधर उधर बिखरे पड़े ताशों, खड़िया के टुकड़ों और कमरे के बीचोंबीच रखी मेज पर खड़िया के निशानों को देख कर वह भयभीत होकर गुजरी रात के खेल को याद कर उठा और वह आखिरी ताश–एक गुलाम–भी याद आया जिस पर वह पाँच सौ रूबल हारा था। परंतु फिर भी उसे अभी तक इस सम्पूर्ण घटना की सत्यता पर विश्वास नहीं हुआ था इसलिए उसने तकिए के नीचे से अपना बटुआ

निकाला और पैसे गिनने लगा। उसने कुछ नोटों को पहचाना जो विभिन्न निशानों के साथ कई हाथों में घूमे थे और उसे सारा खेल याद हो आया। उसके पास अपने तीन हजार रूबल में से एक भी नहीं बचा था और सरकारी धन में से भी ढाई हजार रूबल चले गए।

इलियन लगातार चार रात तक खेलता रहा।

वह मास्को से आया था जहाँ सरकारी धन उसके सिपुर्द कर दिया गया था और क—नामक कस्बे में, 'पोस्ट-हाउस' के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उसे इस बहाने से रोक लिया था कि घोड़े नहीं थे, परन्तु असलियत यह थी कि उस सुपरिन्टेडेन्ट का उस होटल वाले से यह समझौता हो चुका था कि वह प्रत्येक यात्री को एक दिन के लिए रोक लिया करे। वह उहलान, एक स्वस्थ नवयुवक, जिसे अभी अपनी बर्दी के लिए अपने माता पिता से तीन हजार रूबल, रेजीमेन्ट में भर्त्ती होने से पहले मिले थे, क—नामक कस्बे में कुछ दिन बिताकर बड़ा प्रसन्न हुआ था। क्योंकि उन दिनों चुनाव हो रहे थे इसलिए उसे आशा थी कि वह पूरा आनंद मना सकेगा। वह वहाँ के एक अमीर परिवार को जानता था और सोच रहा था कि वह उन लोगों से मिलने जाय और लड़कियों से प्रेम प्रदर्शित करे कि उसी समय वह घुड़सवार उससे परिचय प्राप्त करने आ पहुंचा। उस घुड़सवार ने बिना किसी बुरी नियत से होटल के सैलून या बड़े हाल में लुखोनोव और दूसरे जुआरियों से उसका परिचय करा दिया, और उसी समय से वह उलहान, सुपरिन्टेन्डेन्ट से बिना घोड़ों के बारे में पूछे बराबर ताश खेल रहा था और इस दौरान में वह अपने उस परिचित अमीर से मिलने भी बहुत कम गया और चार दिन तक एक तरह से उसने अपना कमरा ही न छोड़ा।

कपड़े पहन कर चाय पीने के बाद वह खिड़की पर जाकर खड़ा हो गया। उसने अनुभव किया कि उन स्मृतियों से छुटकारा पाने के लिए उसका मन थोड़ी दूर तक घूम आने के लिए कर रहा है इसलिए उसने

अपना लबादा पहना और बाहर सड़क पर निकल आया। इस समय तक सूरज लाल छतों वाले सफेद मकानों के पीछे डूब चुका था और अंधेरा बढ़ने लगा था। जाड़े का मौसम होते हुए भी कुछ गर्मी थी। बड़े बड़े गीले बरफ के टुकड़े कीचड़ भरी हुई सड़क पर गिर रहे थे। अचानक यह सोचकर कि वह आज पूरे दिन सोता रहा है, एक असहनीय अवसाद की भावना ने उसे घेर लिया।

"यह दिन जो अब बीत चुका है फिर कभी नहीं आ सकेगा," उसने सोचा।

"मैंने अपनी जवानी बर्बाद कर दी!" अकस्मात उसने अपने आप से कहा—इसलिए नहीं कि उसने सचमुच यही सोचा था कि उसने अपनी जवानी बर्बाद कर डाली है–उसने इस बारे में तो सोचा भी नहीं था–परन्तु इसलिए कि उसे यह वाक्य याद हो आया था।

"और अब मैं क्या करूँ?" उसने सोचा, "किसी से उधार ले लूँ और चल दूँ?" फुटपाथ पर उसकी बगल में होकर एक महिला निकली। "यह बहुत बेवकूफ औरत है," किसी कारणवश उसने सोचा। "ऐसा कोई भी नहीं जिससे उधार ले सकूँ···मैंने अपनी जवानी बर्बाद कर डाली।" वह बाजार में आया। एक दूकानदार अपनी दूकान के सामने ग्राहकों को लुभाने के लिए लोमड़ी की रुंएदार खाल का कोट पहने हुए खड़ा था। "अगर मैं उस अट्ठे को वापस न लेता तो अपने नुकसान को पूरा कर लेता।" एक बुड्ढी भिखारिन ने गिड़गिड़ाते हुए उसका पीछा किया। "कोई भी नहीं है जिससे उधार लिया जा सके।" रीछ की खाल का लबादा पहने एक आदमी गाड़ी में बैठा हुआ बगल में से निकल गया। एक पुलिस वाला अपनी जगह पर खड़ा हुआ था। "मैं कौन सी अद्भुत बात कर सकता हूँ? उन्हें गोली मार दूँ? नहीं, यह ठीक नहीं···मैंने अपनी जवानी बर्बाद कर डाली!···आह, वहाँ कैसे अच्छे घोड़े के पट्टे और तस्मे लटक रहे हैं।

आह, काश कि मैं गाड़ी में बैठ कर निकल सकता। प्रसन्न हो सुन्दरियो! ...मैं वापस चला जाऊँगा। लुखनोव जल्दी आ जायगा और हम लोग खेलेंगे।"

वह होटल लौट आया और उसने फिर अपना धन गिना। नहीं, पहली बार उसने गलती नहीं की थी: अब भी सरकारी धन में से ढाई हजार रूबल गायब थे। "मैं पच्चीस रूबल का दाँव लगाऊँगा...फिर उसका सात गुना करूँगा, पन्द्रह गुना, तीस गुना, साठ गुना...तीन हजार रूबल। फिर मैं घोड़ों के पट्टे खरीदूँगा और चल दूँगा। वह मुझे नहीं जाने देगा, वह शैतान! मैंने अपनी जवानी बर्बाद कर डाली।"

उस उह्लान के दिमाग में यही विचार चक्कर काट रहे थे जब लुखोनोव सचमुच उसके कमरे में दाखिल हुआ।

"क्या तुम्हें जागे बहुत देर हो गई, माइकेल वासीलिच?" अपनी पतली नाक पर से सुनहरी फ्रेम का चश्मा उतार कर उसे सावधानी पूर्वक एक लाल रेशमी रूमाल से साफ करते हुए लुखोनोव ने धीरे से पूछा।

"नहीं, मैं अभी उठा हूँ–मैं बहुत गहरी नींद सोया था।"

"कोई हुसार या न जाने कौन आया है। वह जावालशेव्स्की के साथ ठहरा हुआ है—तुमने सुना था?"

"नहीं, मैंने नहीं सुना। परन्तु क्या बात है कि अभी तक और कोई भी नहीं आया?"

"वे लोग प्राखिन के यहाँ चले गये होंगे। अभी यहाँ आए जाते हैं।"

और देखा तो थोड़ी ही देर बाद कमरे में, एक दुर्गरक्षक सेना का अफसर जो हमेशा लुखनोव के साथ रहता था; एक ग्रीक व्यापारी जिसकी भूरी नोकदार भारी नाक, अन्दर को घुसी हुई काली आँखें

थे; और एक मोटा थुलथुल जमींदार—एक शराब खींचने वाली दूकान का मालिक जो सारी रात खेलता था, और हमेशा मामूली दाँवों पर आधा रूबल लगाता था, भीतर आए। हरेक ने खेल शुरू करने की इच्छा प्रकट की और वह भी जल्दी से जल्दी। परन्तु प्रमुख जुआरियों, खास तौर से लुखनोव ने, जो एक अत्यधिक शान्तिपूर्ण तरीके से मास्को में पड़ी एक डकैती का वर्णन कर रहा था, इस विषय की तरफ इशारा भी नहीं किया।

"जरा सोचिए तो सही," उसने कहा, "कि मास्को जैसे शहर में, जो एतिहासिक राजधानी और देश का एक प्रमुख नगर है, लोग शैतानों की सी पोशाकें पहन कर गुंडों के साथ घूमते हैं, बेवकूफ आदमियों को डराते हैं और राहगीरों को लूट लेते हैं—और यहीं सब कुछ समाप्त हो जाता है। पुलिस आखिरकार किसलिए है? सवाल यह है।"

वह उह्लान डाकुओं की इस कहानी को गौर से सुन रहा था परन्तु जब यह कहानी रुकी तो वह उठा और चुपचाप ताश लाने की आज्ञा दी। वह मोटा जमींदार सबसे पहले बोला।

"अच्छा, सज्जनो, कीमती समय को बर्बाद क्यों किया जाय? अगर हमें खेलना ही है तो शुरू कीजिए।"

"हाँ, कल रात को तुम आधे रूबलों की गड्डियाँ लेकर जो गए थे, इसलिए तुम्हें यह पसन्द है," ग्रीक ने कहा।

"मेरा ख्याल है कि हमें प्रारम्भ कर देना चाहिए।" उस दुर्ग रक्षक सेना के अफसर ने कहा।

इलिन ने लुखनोव को तरफ देखा। लुखनोव ने चुपचाप उससे आँखें मिलाते हुए शैतानों के से कपड़े और नाखूनों वाले डाकुओं की कहानी जारी रखी।

"आप 'बैंक' रखेंगे?" उह्लान ने पूछा।

"क्या अभी जल्दी नहीं है ?"

"बेलोव !" किसी अज्ञात कारणवश शर्माते हुए उहलान ने जोर से पुकारा, "मेरे लिए कुछ खाने को ले आओ—मुझे अभी तक खाने को कुछ भी नहीं मिला है, सज्जनो—और एक बोतल शेम्पेन और कुछ गड्डी ताश भी ले आना।"

इसी समय काउन्ट और जावालशेकी कमरे में घुसे। यह ज्ञात हुआ कि तुरबिन और इलिन दोनों एक ही डिविजन से सम्बन्धित हैं। वे दोनों तुरन्त एक दूसरे से मिले, आपस में गिलास मिलाए, साथ २ शेम्पेन पी और पाँच मिनट में ही आपस में घुलमिल गए। ऐसा लगा कि काउन्ट इलिन को बहुत पसन्द करने लगा था, उसने मुस्कराते हुए उसकी तरफ देखा और उसकी जवानी को लेकर उससे मजाक करने लगा।

"यह एक सच्चा उह्लान है !" उसने कहा। "कैसी मूंछें हैं ! हे भगवान् कैसी मूंछें हैं !"

इलिन के होठों पर जो थोड़े से रोंए थे वह भी बिल्कुल भूरे थे !

"मेरा ख्याल है कि तुम खेल शुरू करो, करने वाले हो ?" काउन्ट ने पूछा। "अच्छा, भगवान् करे तुम जीतो, इलिन ! मैं सोचता हूँ कि तुम एक माहिर खिलाड़ी हो," एक मुस्कराहट के साथ उसने आगे कहा।

"हाँ, ये लोग शुरू करना चाहते हैं," एक दर्जन ताशों की गड्डी के बन्डल को खोलते हुए लुखनोव ने कहा, "और आप भी खेलेंगे काउन्ट, क्यों खेलेंगे न ?"

"नहीं, आज नहीं। अगर मैं खेलता तो आप सब लोगों को नङ्गा कर देता। जब मैं खेलता हूँ तो बैंक फेल होने लगता है। परन्तु मेरे पास खेलने के लिए कुछ है ही नहीं—बोलोचोक के पास एक स्टेशन पर मैं सब कुछ हार गया। वहाँ उँगलियों में अंगूठियाँ पहने

हुए एक पैदल सेना के आदमी से मेरी मुलाकात हो गई थी—मेरा ख्याल है कि वह ताश बनाकर खेलता था—और उसने मुझे बिल्कुल साफ कर दिया।

"क्यों, क्या उस स्टेशन पर तुम बहुत देर तक ठहरे थे?" इलिन ने पूछा।

"मैं वहां बाईस घण्टे रहा था। मैं उस मनहूस स्टेशन को भूलूँगा नहीं। और वह सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मुझे नहीं भूल सकेगा।"

"क्या बात हुई?"

"मैं गाड़ी पर वहाँ आता हूँ, तुम जानते हो; उस पेशेवर लुटेरे से दीख पड़ने वाले सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास दौड़ कर जाता हूँ। "घोड़े नहीं हैं!" वह कहता है। अब मैं तुम्हें बता दूँ कि मेरा यह नियम है कि अगर घोड़े नहीं होते तो मैं अपना रुंएदार लबादा नहीं उतारता बल्कि सीधा सुपरिन्टेन्डेन्ट के निजी कमरे में जाता हूँ—आम लोगों से मिलने वाले कमरे में नहीं, उसके व्यक्ति गत निजी कमरे में, और यह कह कर कि अन्दर घुटन है सारे खिड़की किवाड़ खोल डालता हूँ। यही मैंने वहाँ किया। तुम्हें याद है कि पिछले महिने कैसा पाला पड़ा था? बीस डिग्री के लगभग। सुपरिन्टेन्डेन्ट बहस करने लगा, मैंने उसकी खोपड़ी में घूंसे लगाए। वहाँ एक बुढ़िया, लड़कियाँ और कुछ और औरतें थीं। वे हड़बड़ा उठीं, अपने बर्तन भांड़े उठाए और गांव की तरफ भागने लगीं।...मैं दरवाजे पर गया और बोला, "मुझे घोड़े दे दो और मैं चला जाऊँगा। अगर नहीं मिले तो कोई भी बाहर नहीं जाने पायेगा: मैं तुम सब को यहीं मार डालूँगा।"

"यह बहुत अच्छा राक्षसी कृत्य है।" हँसी से लोटपोट होते हुए उस मोटे जमींदार ने कहा। "इसी तरह केंकड़ों को औरों से अलग कर काबू में किया जाता है..."

"मगर मैंने पूरी सावधानी नहीं बरती और वह सुपरिन्टेडेन्ट

औरतों के बाद बाहर निकल गया। बन्धक के रूप में स्टोव के ऊपर सोती हुई सिर्फ एक बुढ़िया रह गई। वह निरंतर छींकती और प्रार्थना करती रही। इसके बाद हमने बातें आगे बढ़ाईं। सुपरिन्टेन्डेन्ट आया और दूर से ही मुझे इस बात के लिए फुसलाने लगा कि मैं बुढ़िया को चली जाने दूँ परन्तु मैंने ब्लूचर को उस पर लहका दिया। ब्लूचर सुपरिन्टेन्डेन्टों को काबू में करने में उस्ताद है। मगर फिर भी उस शैतान ने मुझे अगली सुबह तक घोड़े नहीं मिलने दिए। उसी बीच में वह फौजी आ गया। मैं दूसरे कमरे में उसके साथ चला गया और हम दोनों खेलने लगे। तुमने ब्लूचर को देखा है?...ब्लूचर!...'' उसने सीटी बजाई।

ब्लूचर दौड़ा हुआ भीतर आया और खिलाड़ियों ने नम्रतापूर्वक उसकी तरफ गौर से देखा यद्यपि यह स्पष्ट था कि वे लोग बिल्कुल और बातों की तरफ ध्यान देना चाह रहे थे।

"मगर आप लोग खेलते क्यों नहीं? मैं आपको परेशान नहीं करूँगा। आप देख ही रहे हैं कि मैं बातूनी हूँ," तुरबिन ने कहा। "खेल खेल ही है चाहे उसे कोई पसन्द करे या न करे।"

३.

लुखनोव ने दो मोमबत्तियाँ अपने पास खिसकाईं, नोटों से भरा हुआ एक बड़ा सा भूरा बटुवा निकाला और धीरे से, जैसे कोई रस्म अदा कर रहा हो, मेज पर रख कर उसे खोला, दो सौ रूबल वाले नोट निकाले और उन्हें ताशों के नीचे रख दिया।

"दो सौ बैंक के लिए हैं, कल की ही तरह," अपने चश्मे को ठीक करते हुए और ताशों की एक गड्डी को खोलते हुए उसने कहा।

"बहुत अच्छा," लुखनोव की तरफ बिना देखे तुरबिन से अपना वार्तालाप जारी रखते हुए इलिन बोला।

खेल शुरू हो गया। १लुखनोव मशीन की तरह ठीक प्रकार से पत्ते बाँट रहा था। कभी कभी रुक जाता और जान बूझ कर कुछ लिखता या अपने चश्मे में से घूरता हुआ धीमे स्वर में कह उठता "पास अप" मोटा जमींदार औरों से ज्यादा जोर से बोलता था, जोर जोर से अपने आप सोचता हुआ और जब अपने ताश के कौने को मोड़ता तो अपनी मोटी अंगुलियों को गीला कर लेता था। वह फौजी अफसर चुपचाप और सफाई के साथ अपने पत्ते पर अपना दाँव लिख लेता था और मेज के नीचे करके थोड़ा सा कौना मोड़ देता था। ग्रीक बैंकर के बगल में बैठा हुआ अपनी घुसी हुई काली आँखों से गौर से खेल देख रहा था और ऐसा लग रहा था मानो किसी चीज का इन्तजार कर रहा हो। मेज के पास खड़ा हुआ जावालशेक्की अचानक चंचल हो उठता, अपनी पतलून की जेब में से लाल या नीला ※ बैंक नोट निकालता, उस पर एक ताश रखता, अपनी हथेली उस पर मारता और कह उठता : "छोटा सात, मुझे मुसीबत से बचाओ!" फिर वह अपनी

---

१. यह खेल 'श्टोस' कहलाता था। मेज पर रखी हुई ताश की गड्डियों में से खिलाड़ी अपने ताश चुन लेते थे और अपने दाँव को ताशों के नीचे या ऊपर रख देते थे। बैंकर के पास एक गड्डी होती थी जिसमें से वह बारी बारी से दाहिनी और बांयीं तरफ ताश चलता था दाहिनी तरफ वाले ताश पर उसकी जीत होती थी और बांयी तरफ वालों से और खिलाड़ियों की। "पास अप" कहने पर खिलाड़ियों को बैंक के पैसे अदा करने पड़ते थे। "सिम्पिल" मामूली दाँव थे। अपने ताश का एक कौना मोड़ कर खिलाड़ी अपने दाँव को दुगुना बढ़ाता था।" "ट्रान्सपोर्ट" कहने पर यह छः गुना बढ़ जाता था। 'श्टोस' खेल बहुत दिनों से अब नहीं खेला जाता।

※—पाँच रुबल वाले नोट नीले और दस रुबल वाले लाल होते थे।

मूंछों को चबाता, बार बार पैर बदलता और जब तक कि उसका पत्ता बँटता बराबर उछलता कूदता रहता । इलिन बैठा हुआ बछड़े का गोश्त और कुकुरमुत्ते का अचार खा रहा था जो उसकी बगल में घोड़े के बालों के सोफे पर रखा हुआ था और शीघ्रता पूर्वक हाथों को अपने कोट से पोंछता हुआ एक के बाद दूसरा पत्ता रखता चला जा रहा था । तुरबिन ने जो पहले सोफे पर बैठा हुआ था फौरन ही स्थिति को भांप लिया । लुखनोव न तो इलिन की तरफ देखता था और न बोलता था । सिर्फ कभी कभी क्षण भर के लिए उसका चश्मा इलिन के हाथों की तरफ मुड़ जाता था । इलिन के ज्यादातर पत्ते पिट रहे थे ।

"यह बात है, मैं इस पत्ते को जीतना चाहता हूँ," मोटे जमींदार के एक पत्ते पर लुखनोव बोला । जमींदार आधा रूबल दाँव लगा कर खेल रहा था । उसने पत्ता नीचे रख दिया था ।

"तुम इलिन के जीतो, मेरी फिकर मत करो !" जमींदार ने कहा ।

और सचमुच औरों की अपेक्षा इलिन के पत्ते ज्यादा पिट रहे थे । वह हताश होकर हारे हुए पत्ते को मेज के नीचे कर फाड़ डालता और कांपती उँगलियों से दूसरा उठाता । तुरबिन सोफे पर से उठा और ग्रीक से बोला कि वह उसे बैंकर के बगल में बैठ जाने दे । ग्रीक दूसरी जगह बैठ गया । काउन्ट ने अपनी जगह सम्हाली और गौर से लुखनोव के हाथों को देखना शुरू कर दिया । वह क्षण भर के लिए भी अपनी आँखें उसके हाथों पर से नहीं हटा रहा था ।

"इलिन !" अचानक उसने अपने स्वाभाविक स्वर में कहा जिसने अप्रत्याशित रूप से औरों की आवाज को दबा दिया । "तुम एक ही सी चालें क्यों चल रहे हो ? तुम्हें खेलना नहीं आता ।"

"कोई कैसे खेलता है सब एक ही बात है ।"

"परन्तु इस तरह तो तुम निश्चित रूप से हार जाओगे। मुझे अपनी जगह खेलने दो।"

"नहीं, माफ कीजिये। मैं हमेशा खुद ही खेलता हूँ। अगर चाहो तो तुम भी खेलो।"

"मैं कह चुका हूँ कि मैं अपने लिए नहीं खेलूँगा मगर तुम्हारे लिए खेलना चाहूँगा। मुझे अफसोस है कि तुम हारते चले जा रहे हो।"

"मैं सोचता हूँ कि यह मेरी तकदीर है।"

काउन्ट चुप हो गया परन्तु कुहनियों पर झुक कर वह फिर बैंकर के हाथों को ध्यान से देखने लगा।

"घृणित!" अचानक वह ऊँचे और लम्बे स्वर में चीख पड़ा।

लुखनोव ने उसकी तरफ देखा।

"घृणित, अत्यन्त घृणित!" लुखनोव की आँखों से आँखें मिलाते हुए उसने और भी जोर से दुहराया।

खेल जारी रहा।

"यह ठीक नहीं है!" तुरबिन ने फिर कहा जैसे ही लुखनोव ने इलिन के एक भारी दाँव वाले पत्ते को पीटा।

"आप को क्या पसन्द नहीं आ रहा, काउन्ट?" नम्र विरोध के साथ बैंकर ने पूछा।

"यह! कि तुम इलिन को 'सिम्पिल' जीत लेने देते हो और उसके कौने वाले ताशों को पीट लेते हो। यह बुरी बात है।"

लुखनोव ने अपनी भोहों और कन्धों को धीरे से सिकोड़ते हुए सलाह दी कि सब बातों को भाग्य पर छोड़ दिया जाय और खेलना शुरु कर दिया।

"ब्लूखर!" उठते हुए और सीटी से कुत्ते को बुलाते हुए काउन्ट चीखा। "इसे पकड़!" उसने जल्दी से आगे जोड़ा।

ब्लूचर, सोफे के नीचे से निकलते समय उससे टकराया और

उस फौजी अफसर को लगभग उलटते हुए अपने मालिक की तरफ दौड़ा और घुर्राने लगा। वह चारों तरफ देखता जाता था और अपनी पूंछ हिला रहा था मानो पूछ रहा हो, "यहाँ कौन बदतमीजी कर रहा है, क्यों ?"

लुखनोव ने अपने पत्ते रख दिए और अपनी कुर्सी एक तरफ खिसकाई।

"इस तरह कोई भी नहीं खेल सकता," उसने कहा। "मुझे कुत्तों से नफरत है। यह कैसा खेल है कि जिसमें कुत्तों का झुण्ड का झुण्ड बुला लिया जाता है ?"

"खासतौर से ऐसा कुत्ता। मेरा ख्याल है कि ये 'जोंक' कहलाते हैं," फौजी अफसर ने सुर में सुर मिलाया।

"अच्छा, अब खेलना है या नहीं, माइकेल वासीलिच ?" लुखनोव ने अपने मेजवान से पूछा।

"कृपया, हमारे खेल में दखल मत दीजिए, काउन्ट," तुरविन की तरफ मुड़ते हुए इलिन बोला।

काउन्ट के शब्द, जो उसके स्वाभाविक स्वर में बोले जा रहे थे, वहाँ तक साफ सुनाई पड़ रहे थे। उसकी आवाज हमेशा तीन कमरों तक गूँजती रहती थी।

"क्या तुम पागल हो, क्यों ? तुम देख नहीं रहे कि वह चश्मेवाला एक नम्बर का ताश लगाने वाला है ?"

"अच्छा, अच्छा, काफी है ! तुम क्या कह रहे हो ?"

"इस बारे में काफी नहीं है। मैं कहता हूँ, खेलना बन्द करो। मेरे लिए इसका कोई महत्व नहीं। दूसरी बार मैं खुद तुम्हें मूंड़ लूँगा लेकिन मुझे तुम्हें मुंड़ते हुए देख कर दुख होता है और हो सकता है कि तुम्हारे पास सरकारी रुपया भी हो ?"

"नहीं…तुम ऐसी बातें क्यों सोचते हो ?"

"आह, मेरे बच्चे, मैं खुद ऐसी स्थिति में पड़ चुका हूँ इसलिए मैं इन ताश लगाने वालों की चालाकियों को खूब जानता हूँ। खेलना बन्द कर दो, मैं एक साथी के रूप में तुमसे कह रहा हूँ।"

"अच्छी बात है, मैं सिर्फ इस दाँव को खत्म कर लूँ।"

"मैं जानता हूँ कि एक दाँव का क्या मतलब होता है। अच्छी बात है, हम देखेंगे।"

वे वापस आ गए। उस एक दाँव में इलिन ने इतने पत्ते लगाए और उनमें से इतने पिटे कि वह बहुत बड़ी रक़म हार गया।

तुरबिन ने मेज के बीचोबीच अपने हाथ रख दिए। "अब इसे खत्म करो! बन्द करो।"

"नहीं, मैं बन्द नहीं कर सकता। मुझे अकेला छोड़ दो, छोड़ दो न!" तुरबिन की तरफ बिना देखे हुए कुछ मुड़े पत्तों को फेंटते हुए इलिन बोला।

"अच्छा, जहन्नुम में जाओ। हारते जाओ अगर इसमें तुम्हें मजा आ रहा है। मेरा जाने का समय हो गया। जावालशेवकी, चलो मार्शल के यहाँ चलें।"

वे बाहर चले गए। सब खामोश बैठे रहे और लुखनोव ने तब तक ताश नहीं बांटे जब तक कि उन लोगों के पैरों की और ब्लूचर के पंजों की आवाज गैलरी में से आनी बन्द न हो गई।

"कैसा शैतान है!" जमींदार ने हंसते हुए कहा।

"खैर, अब वह बाधा नहीं डालेगा," उस फौजी अफसर ने जल्दी से कहा और वह भी फुसफुसाते हुए।

और खेल चलने लगा।

४.

बैन्ड, मार्शल के कुछ किसानों द्वारा बनाया गया था जो भंडार घर में खड़े हुए थे। भंडार घर को इसी मौके के लिए साफ किया गया

था। बैन्ड वाले अपनी आस्तीनें ऊपर की तरफ चढ़ाए तैयार खड़े थे। उन्होंने इशारा पाते ही 'अलेक्जेन्दर' 'लिजाबेथ' की पुरानी धुन बजानी शुरू कर दी और मोमबत्तियों के उस स्निग्ध प्रकाश में कैथेराइन के जमाने का एक गवर्नर-जनरल, सीने पर एक तमगा लगाए, मार्शल की दुबली पतली बीबी की बांहों में बांह डाले, और बाकी के स्थानीय उच्चवर्गीय व्यक्ति अपने अपने साथियों को साथ लिए, उस विशाल नृत्य गृह के रंगविरंगे फर्श पर तरह तरह से नाचने लगे जब पूरे मोजे और पम्प शू, भारी कड़ा कॉलर वाला छोटा नीला कोट पहने और चमेली के अत्तर की खुशबू उड़ाते हुए, जो उसके कोट के किनारों, रूमाल और उसकी मूछों पर बुरी तरह छिड़का हुआ था, जावालशेव्की भीतर घुसा। वह सुन्दर हुसार जो उसके साथ आया था एक कसी हुई हल्के नीले रङ्ग की सवारी वाली ब्रीचिस और सुनहरी काम वाला लाल कोट जिस पर एक 'ब्लाडीमिर क्रॉस' और १८१२ का एक मेडल लगा हुआ था, पहने हुआ था। काउन्ट लम्बा नहीं था परन्तु उसकी शारीरिक गठन दर्शनीय थी। उसको स्वच्छ नीला और अत्यधिक प्रकाशमान नेत्र और घने घुँघराले गहरे भूरे रंग के बाल उसके सौन्दर्य को अत्यधिक आकर्षक बना रहे थे। उस नृत्य में उसके आने की प्रतीक्षा की जा रही थी क्योंकि उस सुन्दर नवयुवक ने, जो उससे हॉटल में मिला था, मार्शल को इस बात के लिए पहले से ही तैयार कर लिया था। इस समाचार के विभिन्न प्रभाव पड़े थे जो अधिकतर अच्छे नहीं थे।

"ऐसा होना असम्भव नहीं कि यह युवक परेशानी पैदा कर दे," आदमियों और बुढ़ियाओं की यही राय थी। "क्या हो अगर वह मुझे लेकर भाग जाय," यह विचार थोड़े बहुत रूप में सभी युवतियों का था अविवाहित या विवाहित सभी का।

जैसे ही पहला नृत्य समाप्त हुआ और जोड़े एक दूसरे को सलाम कर अलग हो गए—औरतें एक तरफ और मर्द दूसरी तरफ—जावाल-

शेक्की ने गर्व और प्रसन्नता के साथ अपनी मेजवान महिला से काउन्ट का परिचय कराया।

मार्शल की पत्नी, आन्तरिक उद्वेग का अनुभव करते हुए कि कहीं यह हुसार सबके सामने उसके साथ कोई भद्दा व्यवहार न कर बैठे, गुस्से से दूसरी तरफ मुड़ गई, यह कहते हुए कि—"बहुत खुशी हुई, मुझे उम्मीद है कि आप नृत्य करेंगे," और फिर उसकी तरफ सन्देह की दृष्टि से देखा, मानो कह रही हो कि—"अब, अगर तुमने किसी महिला का अपमान किया तो इससे साबित हो जायगा कि तुम पूरे गुंडे हो।" फिर भी काउन्ट ने किसी तरह शीघ्र ही अपने सौजन्य, सुन्दर व्यवहार और अपने दर्शनीय सौन्दर्य द्वारा उस महिला के उन कटु विचारों पर पूरी तरह विजय प्राप्त कर ली और पांच मिनट बाद मार्शल की पत्नी के चेहरे के भावों ने सब लोगों को यह सूचित कर दिया कि, "देखो, मैं ऐसे लोगों को काबू में करना जानती हूँ। वह फौरन समझ गया कि उसे किसके साथ व्यवहार करना है और अब पूरे बाकी समय तक वह मेरे साथ सुन्दर व्यवहार करता रहेगा।" साथ ही उसी समय उस नगर का गवर्नर, जो काउन्ट के पिता को जानता था, काउन्ट के पास आया और अत्यन्त विनम्रता पूर्वक उसे बात करने के लिए एक तरफ ले गया जिसने स्थानीय जनता को और भी शान्त कर दिया और उनके सम्मुख काउन्ट के महत्व को और भी अधिक बढ़ा दिया। इसके बाद जावालशेक्की ने काउन्ट का परिचय अपनी बहन से कराया जो एक भरे शरीर वाली विधवा नवयुवती थी और जिसने काउन्ट के वहाँ आगमन से लेकर अब तक काउन्ट पर से अपनी आँखें नहीं हटाई थीं। काउन्ट ने उसे अपने साथ 'वाल्ट्ज' नृत्य करने के लिए कहा जिसकी धुन बैन्ड ने अभी बजानी शुरू की थी और उसके प्रति आम विरोध की भावना उसके कुशल एवं कलापूर्ण नृत्य ने पूर्णतः दूर कर दी।

"कितना सुन्दर नर्तक है !" एक मोटी जमींदारिन ने कहा जो उसके नीली सवारी की ब्रीचिस से ढके हुए पैरों को कमरे में इधर से उधर तैरते हुए देख रही थीं और मन ही मन गिनती जाती थी—एक, दो, तीन—अद्भुत !"

"वह जा रहा है—जिग, जिग, जिग" दूसरा बोला, जो नगर में बाहर से आया हुआ एक अतिथि था और जिसे स्थानीय समाज वाले सभ्य नहीं समझते थे। "वह अपनी एड़ी की कीलों को आपस में टकराने से कैसे बचा लेता है ? बहुत होश्यार है !"

काउन्ट के कलापूर्ण नृत्य ने उस प्रान्त के तीन सर्वश्रेष्ठ नर्तकों की कला को आच्छन्न कर लिया जिनमें एक लम्बा सुन्दर बालों वाला गवर्नर का एडजुटेन्ट था जो अपने नृत्य की चपलता के लिए तथा अपनी संगिनी को अपने बहुत नजदीक चिपटा कर नाचने के लिए प्रसिद्ध था; दूसरा एक घुड़सवार था जो अपने आकर्षक भव्य अंग संचालन के लिए और अपनी एड़ियों द्वारा कभी कभी और बहुत धीरे से ताल देने के लिए मशहूर था, और तीसरा एक नागरिक था जिसके विषय में हरेक कहता था कि यद्यपि वह बहुत अधिक कुशल नहीं था फिर भी वह एक प्रथम श्रेणी का नर्त्तक और प्रत्येक नृत्य-समारोह का प्रमुख आकर्षण समझा जाता था। सचमुच, नृत्य के प्रारम्भ से ही वह नागरिक प्रत्येक महिला से, जिस क्रम से वह बैठी थी, बारी बारी से अपने साथ नृत्य करने के लिए आग्रह करता जाता था।[1] और वह कभी भी क्षण भर के लिए भी नहीं रुकता था, सिर्फ कभी कभी पूरी तरह से भीगे हुए 'कैम्ब्रिक' के रूमाल से अपने थके हुए परन्तु उत्फुल्ल मुख के पसीने को

१—नियम यह था कि किसी भी एक महिला के साथ पूरा नृत्य नहीं किया जाता था परन्तु प्रत्येक के साथ कमरे के कुछ चक्कर लगाए जाते, उसे उसके स्थान पर ले जाया जाता, उसे सलाम की जाती, धन्यवाद दिया जाता और नयी साथिन खोज ली जाती।

पोंछ लिया करता था। काउन्ट ने उन सब की किरकिरी कर दी और तीन प्रमुख महिलाओं के साथ नाचा : उस लम्बी, अमीर, सुन्दर, मूर्ख के साथ; उस मध्यम कद वाली पतली, और साधारण रूप से सुन्दर परन्तु बहुत सुन्दर पोशाक पहनने वाली के साथ तथा उस नन्हीं सी महिला के साथ जो साधारण परन्तु अत्यन्त चतुर थी। वह और के साथ भी नाचा—प्रत्येक सुन्दरी के साथ जिनकी संख्या वहाँ बहुत अधिक थी। परन्तु जिसने उसे सबसे अधिक सन्तुष्ट किया वह जत्रालशेकी की वह नन्हीं सी विधवा बहिन ही थी। उसके साथ काउन्ट ने विभिन्न प्रकार के नृत्य किए। जब वे दोनों 'क्राड्रिल' नामक नृत्य के मध्य में बैठे हुए थे तो काउन्ट ने उसकी प्रशंसा करनी शुरू कर दी : वीनस और डायल के साथ उसकी तुलना की, गुलाब और कुछ दूसरे फूलों के सामने उसे सुन्दर बताया। परंतु इन सारी प्रशंसाओं को सुन कर उस विधवा ने सिर्फ अपनी स्फटिक के समान सफेद गर्दन को नीचे झुकाया, नेत्र नीचे कर लिए और अपनी सफेद मसलिन की पोशाक को देखने लगी या अपने पंखे को कभी इस हाथ में और कभी उस हाथ में बदलने लगी। परंतु जब वह बोली : "नहीं, आप सिर्फ मजाक कर रहे हैं, काउंट," और इसी तरह के और शब्द कहे तो उसकी आवाज में इतनी विनम्र सरलता और आकर्षक मूर्खता थी कि उसकी तरफ देखने से सचमुच यह प्रतीत होता था कि वह एक नारी न होकर एक पुरुष के समान थी और वह भी गुलाब का फूल नहीं बल्कि कोई भड़कीला, सुगन्धिहीन, गुलाबी सफेदी लिए हुए जङ्गली फूल जो किसी अत्यधिक एकांत स्थान में किसी बर्फीले तूफान में से एकाकी खिल उठा हो।

सरलता और नवीनता के इस योग ने उसके निर्मल सौंदर्य के साथ मिल कर काउंट पर ऐसा अद्भुत प्रभाव डाला कि वार्तालाप के मध्य कई बार, उसकी आँखों में चुपचाप झाँकते हुए या उसकी सुन्दर

ग्रीवा की रेखाओं और भुजाओं को देखते हुए, उसके मन में इस इच्छा ने कि वह उसे अपनी भुजाओं में भर कर उसे चुम्बनों से ढक दे, काउंट को इतनी तीव्रता के साथ उद्वेलित कर दिया कि उसे आत्म-संवरण करने में बहुत भारी शक्ति लगानी पड़ी। विधवा ने उस प्रभाव को, जो वह काउंट पर डाल रही थी, प्रसन्नता के साथ देखा परंतु फिर भी अभी काउंट के व्यवहार की कुछ बातों से वह भयभीत और उत्तेजित हो उठी, यद्यपि वह नौजवान हुसार, अपनी उकसाने वाली विनम्रता के रहते हुए भी उस सीमा तक शालीन बना रहा जो हमारे युग में तृप्ति मानी जायगी। वह उसके लिए बादाम का तेल लेने दौड़ गया, उसका रूमाल उठाया, एक गंडमाला के रोगी युवक सामन्त के साथ से कुर्सी खींच ली जो उसकी खिदमतगारी करता हुआ इधर उधर नाचता फिरता था। उसने वह कुर्सी उसे जल्दी देने के लिए खींच ली थी। काउंट इसी तरह की हरकतें करता रहा।

जब उसने देखा कि उस दिन सम्मिलित हुए समाज के विचारों का उस महिला पर बहुत कम प्रभाव पड़ रहा है तो उसने विचित्र कहानियाँ सुना कर उसका मनोरञ्जन करने का प्रयत्न किया और उसे विश्वास दिलाया कि अगर वह उससे कहे तो वह सिर के बल खड़े होने को, मुर्गे की तरह बांग देने को, खिड़की में से बाहर कूद पड़ने को और बरफ के छेद में होकर पानी में कूद पड़ने को तैयार है। इससे उसे बहुत सफलता मिली। विधवा खिल उठी और खिलखिला कर हँसने लगी, अपनी सुन्दर स्वच्छ दँतावलि दिखाते हुए और अपने इस घुड़सवार से बहुत प्रसन्न हो उठी, प्रति क्षण काउंट उसे अधिकाधिक प्यार कर उठा, यहाँ तक कि 'क्काड्रिल' की समाप्ति पर वह उसके प्रेम में पूरी तरह आबद्ध हो चुका था।

'क्काड्रिल' के बाद जब उस विधवा का अठारह वर्षीय प्रेमी जो बहुत दिनों से उसकी पूजा करता आ रहा था (यह वही गंडमाला का

रोगी युवक था जिससे तुरबिन ने कुर्सी खींचली थी–एक स्थानीय सबसे बड़े अमीर जमींदार का पुत्र जो अभी तक सरकारी नौकरी में नहीं गया था) उसके पास आया। विधवा ने पूर्ण निर्लिप्तता के साथ उसका स्वागत किया और उस व्यग्रता का दसवाँ हिस्सा भी प्रदर्शित नहीं किया जिसका अनुभव उसे काउन्ट के साथ हो उठा था।

"अच्छा, तुम बहुत अच्छे हो!" उसने कहा, पूरे समय तक तुरबिन की पीठ पर निगाह जमाए हुए और अचेतन रूप से यह सोचते हुए कि उसकी पूरी जाकेट पर सुनहरा काम करने के लिए कितने गज सोने की डोरे की जरूरत पड़ी होगी। "तुम अच्छे आदमी हो। तुमने मुझसे वायदा किया था कि तुम मुझे घुमाने ले चलोगे और मेरे लिए इलायचीदाने लाओगे।"

"मैं आया था, अन्ना फेदोरोव्ना, परन्तु तुम पहले हो जा चुकी थीं और मैं तुम्हारे लिए थोड़ी सी बहुत ही अच्छी इलायचीदानों की मिठाई छोड़ आया था," नौजवान ने कहा जो–अपनी लम्बाई के बावजूद भी–बहुत तेज आवाज में बोल रहा था।

"तुम हमेशा बहाने ढूंढ़ लेते हो!··· मुझे तुम्हारी मिठाई नहीं चाहिए। महरबानी कर सोचना भी मत"

"मैं देख रहा हूँ, अन्ना फेदोरोव्ना, कि तुम मुझसे बदल गई हो और मैं जानता हूँ क्यों। मगर यह ठीक नहीं है," उसने आगे जोड़ा और यह स्पष्ट था कि वह अपनी बात पूरी करने में असमर्थ हो रहा था क्योंकि आन्तरिक उद्वेग के कारण उसके होंठ विचित्र रीति से और तेजी से कांपने लगे थे।

अन्ना फेदोरोव्ना ने उसकी बात नहीं सुनी और तुरबिन का अपनी निगाहों से पीछा करती रही।

गृह-स्वामी मोटा, बिना दाँत वाला, शाही सज धज वाला बृद्ध मार्शल काउन्ट के पास आया, उसकी बांह पकड़ी और उससे सिगरेट

और शराब पीने के लिए अध्ययन-कक्ष में चलने का आग्रह किया। जैसे ही तुरबिन ने कमरा छोड़ा, अन्ना फेदोरोव्ना ने महसूस किया कि अब यहाँ कोई काम नहीं रह गया और वह अपनी एक मित्र की बाहों में बाँहें डाले शृंगार गृह में चली गई। उसकी यह मित्र एक सूखी सी अधेड़ महिला थी।

"क्यों, वह अच्छा है न ?" उस महिला ने पूछा।

"सिर्फ वह परेशान ज्यादा करता है !" अन्ना फेदोरोव्ना ने शीशे के पास जाते हुए और उसमें अपने रूप को देखते हुए कहा।

उसका चेहरा खिल उठा, उसकी आँखें हंस उठीं, वह शर्माई भी और अकस्मात रंगमंच पर नाचने वालों की नकल करते हुए जिन्हें उसने चुनाव के दिनों में देखा था, वह एक पैर पर घूमी फिर अपनी गले से निकलने वाली ध्वनि में जो मोहक थी हंसी, अपने घुटने मोड़े और उछल पड़ी।

"जरा सोचो तो सही, कैसा आदमी है ! उसने सचमुच मुझसे कोई निशानी देने का आग्रह किया था," उसने अपनी मित्र से कहा, "परन्तु उसे कुछ भी न नहीं मिलेगा।" उसने अन्तिम शब्दों को गाते हुए कहा और चमड़े के दस्ताने वाली एक उंगली ऊपर उठाई जो कुहनी तक पहुंच गई।

अध्ययन-कक्ष में, जहाँ मार्शल तुरबिन को ले गया था, वोदका, शेम्पन, जाकुस्का आदि शराबों की तरह तरह की बोतलें सजी हुई थीं। उच्चवर्गीय व्यक्ति घूमते हुए या तम्बाखू के धुँए में बैठे हुए चुनावों के बारे में बातें कर रहे थे।

"जब हमारे पूरे उच्चवर्गीय समाज ने जो उसकी पूजा करता है, उसे चुन कर सम्मानित किया है," नए चुने गए पुलिस कप्तान ने कहा, जो खूब खुल कर पी चुका था, "उसे पूरे समाज के सामने इस तरह नियमों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए—कभी भी नहीं · · "

काउन्ट के प्रवेश ने वार्तालाप को भङ्ग कर दिया। हरेक उससे परिचय प्राप्त करना चाहता था और खास तौर से पुलिस कप्तान तो काउन्ट के हाथ को अपने हाथ में बहुत देर तक दबाए खड़ा रहा और बार बार उससे कहता रहा कि वह उसके साथ उस नए रेस्टॉरेन्ट में जाने से इन्कार न करे जहाँ वह नृत्य की समाप्ति के बाद सब को दावत देने जा रहा था और जहाँ जिप्सियों का गाना होने वाला था। काउन्ट ने निश्चित रूप से आने का वादा किया और उसके साथ थोड़ी सी शेम्पेन पी।

"मगर आप नृत्य क्यों नहीं कर रहे, सज्जनो?" जैसे ही वह कमरा छोड़ने को था काउन्ट ने कहा।

"हम लोग नर्त्तक नहीं हैं," पुलिस कप्तान ने हँसते हुए जबाव दिया। "हम लोगों में शराब का अधिक महत्त्व है, काउन्ट...और साथ ही, मैंने इन सब नवयुवकों को बढ़ते हुए देखा, काउन्ट! परन्तु मैं 'इकोसेसी' नृत्य कभी कभी नाच सकता हूँ काउन्ट...मैं नाच सकता हूँ, काउन्ट।"

"तो आओ और एक बार नाचो," तुरबिन ने कहा। "जिप्सियों का गाना सुनने के लिए जाने से पहले इससे हमें उत्साह प्राप्त होगा।"

"अच्छी बात है, सज्जनों! चलो और अपने मेजबान को सन्तुष्ट करो।"

और तीन या चार सामन्तों ने, जो नृत्य के प्रारम्भ होने से लेकर अब तक अध्ययन-कक्ष में बैठे हुए बराबर शराब पीते रहे थे, काले चमड़े या बुनी हुई सिल्क के दस्ताने पहने और लाल चेहरे लिए हुए काउन्ट के पीछे पीछे नृत्य गृह में जाने ही वाले थे कि उस गंडमाला वाले नवयुवक ने उन्हें रोक लिया और पीला चेहरा लिये और आँसूओं को मुश्किल से रोक पाते हुए वह काउन्ट से बातें करने लगा।

"तुम सोचते हो क्योंकि तुम काउन्ट हो इसलिए आदमियों

को धकिया सकते हो जैसे कि बाजार में चल रहे हो," कठिनता से सांस लेते हुए उसने कहा, "मगर यह उजड्डता है···"

और फिर जैसे कि पहले हुआ था, उसके कांपते हुए होठों ने उसके शब्दों के प्रवाह को रोक दिया।

"क्या ?" अचानक झुंझलाते हुए तुरबिन चीखा। "क्या कहा ? छोकरे ! "उसकी बांहें पकड़ कर और उन्हें इतनी जोर से दबाते हुए कि उस नौजवान का सिर क्रोध और भय से भन्ना उठा, काउंट चिल्लाया "क्या ? तुम लड़ना चाहते हो ? मैं तैयार हूँ।"

जैसे ही काउन्ट ने उन बांहों को छोड़ा जिन्हें वह बुरी तरह दबा रहा था, दो सामन्तों ने उन्हें पकड़ लिया और उस नौजवान को पिछले दरवाजे की तरफ घसीट ले गए।

"क्या ? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ? तुम पागल हो गए हो। मान लो कि हम तुम्हारे बाप से कह दें तो ! तुम्हें हुआ क्या है ?" उन्होंने उससे कहा।

"नहीं मैं पागल नहीं हूँ, लेकिन वह किसी को धक्का देता है और फिर माफी नहीं मांगता। वह सुअर है, हां सुअर है।" आँसू बहाते हुए वह नौजवान चीख उठा।

मगर उन लोगों ने उसकी बात नहीं सुनी और एक उसे घर पहुँचा आया।

दूसरी तरफ पुलिस कप्तान और जाबालशेकी काउन्ट को समझा रहे थे : "उसकी तरफ ध्यान मत दो, काउन्ट, वह अभी बच्चा है। वह अब भी कोड़े खाता है, वह सिर्फ सोलह साल का है······मालूम नहीं उसे क्या हो गया ? किस मक्खी ने उसे काट खाया ? और उसका बाप इतना सम्मानित व्यक्ति है—और हमारा उम्मीदवार है।"

अच्छा, अगर वह नहीं चाहता तो उसे जहन्नुम में जाने दो।"

और काउन्ट नृत्य-गृह में लौट आया और पहले की ही तरह

प्रसन्न बनी हुई उस सुन्दरी विधवा के साथ 'इकोसेसी' नृत्य नाचा, और अध्ययन कक्ष में से अपने साथ आए उन व्यक्तियों के पग-सञ्चालन को देख देख कर कहकहे लगा कर हँसने लगा। उसकी हँसी सारे कमरे में गूंज उठी कि इसी समय पुलिस कप्तान नाचने वालों के बीच में चारों खाने चित होकर गिर पड़ा।

५.

जब काउन्ट अध्ययन-कक्ष में था, अन्ना फेदोरोव्ना अपने भाई के पास आई और यह दिखाती हुई कि वह उस काउन्ट में बहुत कम रुचि रखती है, भाई से पूछने लगी :

"वह हुसार कौन है जो मेरे साथ नाच रहा था ? बता सकते हो, भइया ?"

उस घुड़सवार ने अपनी पूरी योग्यता की शक्ति लगाकर उसे बताया कि वह हुसार कितना बड़ा आदमी था और उसे यह भी बताया कि काउन्ट उस शहर में सिर्फ इसीलिए ठहरा हुआ था क्योंकि रास्ते में उसका रुपया चोरी चला गया था और यह कि उसने खुद काउन्ट को सौ रूबल उधार दे दिऐ थे लेकिन इतने काफी नहीं थे इसलिए बहन शायद उसे सौ रूबल और उधार दे दे। जावालशेव्की ने उससे यह भी कहा कि वह किसी भी हालत में इस बात का जिक्र किसी भी और से न करे—खास तौर पर काउन्ट से तो कभी भी न कहे। अन्ना फेदोरोन्ना ने उसी दिन रुपया भेजने का और इस मामले को गुप्त रखने का वायदा कर लिया परन्तु किसी भावना वश उत्तेजित होकर वह इस बात की तीव्र इच्छा कर उठी कि वह काउंट को जितना वह मांगे उतना उसे दे दे। उसने निश्चित करने में काफी सोचा विचारा और शर्माई परन्तु अन्त में बहुत प्रयत्न करके उसने इस विषय को उठाया :

"मेरे भाई ने मुझे बताया है कि रास्ते में आप किसी दुर्घटना

के शिकार बन गए थे, काउंट और यह कि तुम्हारे पास रुपया नहीं रहा है। अगर तुम्हें जरूरत हो तो क्या मुझसे नहीं ले सकोगे। मुझे बड़ी खुशी होगी।"

परंतु इतना कह कर अन्ना फेदोरोव्ना अचानक किसी बात से भयभीत हो उठी और शर्मा गई। काउंट के चेहरे की सारी प्रसन्नता हवा हो गई।

"तुम्हारा भाई बेवकूफ है!" उसने फौरन कहा, "तुम जानती हो कि जब एक व्यक्ति दूसरे का अपमान करता है तो दोनों में युद्ध होता है; मगर जब एक औरत एक आदमी का अपमान करती है, तब वह क्या करता है—तुम जानती हो?"

व्यग्रता से बेचारी अन्ना फेदोरोव्ना की गर्दन और कान लाल हो उठे। उसने आँखें नीची कर लीं और कुछ भी नहीं कहा।

"वह सब के सामने उस औरत का चुम्बन लेता है," उसके कान की तरफ झुकते हुए काउंट ने धीमी आवाज में कहा। "कम से कम मुझे अपने नन्ने से हाथ का चुम्बन लेने की आज्ञा दो," उसने बहुत देर तक चुप रहने के बाद फुसफुसाते हुए कहा, अपने साथी की उलझन पर तरस खाते हुए।

"मगर अभी नहीं!" अन्ना फेदोरोव्ना ने एक गहरी साँस लेकर कहा।

"तो कब? मैं आज सुबह ही जा रहा हूं और तुम पर मेरा यह कर्ज है।"

"अच्छा तब यह असम्भव है," अन्ना फेदोरोव्ना ने मुस्कराते हुए कहा।

"सिर्फ मुझे आज रात को अपना हाथ चूमने की आज्ञा दे दो। मैं मौका ढूंढने में असफल नहीं होऊँगा।"

"तुम मौका कैसे निकाल सकते हो?"

"यह तुम्हारा काम नहीं है। तुमसे मिलने के लिए सब कुछ सम्भव है...तो तय रहा ?"

"रहा।"

'इकोसेसी' नृत्य समाप्त हो गया। फिर उन्होंने 'मुजर्की' नृत्य किया और काउंट अत्यधिक कुशलता के साथ नाचा : रूमाल पकड़ते हुए एक घुटने पर झुकते हुए, वारसा फैशन से अपनी एड़ी की कीलों को आपस में टकराते हुए, जिसे देख कर वृद्ध पुरुष अपना खेल छोड़ कर नृत्यगृह में उसे देखने इकट्ठे हो गए और उस घुड़सवार ने, जो उनका सबसे अच्छा नाचने वाला था, अपनी हार स्वीकार करली। फिर उन लोगों ने भोजन किया और उसके बाद 'बाब' नामक नृत्य किया : इसके पश्चात नृत्य-समारोह बिखरने लगा। काउन्ट ने उस नन्हीं विधवा पर से अपनी निगाहें क्षण भर के लिए भी नहीं हटाईं। यह कोई बनावटी बात नहीं थी कि जब उसने कहा था कि वह उसकी खातिर बरफ के छेद में होकर पानी में कूदने के लिए तैयार था। चाहे यह उसकी सनक, प्यार या अक्खड़ता आदि में से कुछ भी हो, उसकी सम्पूर्ण मानसिक शक्ति उस शाम को इस बात पर केन्द्रित थी कि वह उससे मिले और प्यार करे। जैसे ही उसने देखा कि अन्ना फेदोरोव्ना मेजवान से विदा मांग रही है, वह दौड़ कर बाहर नौकरों के कमरे में गया और वहाँ से—बिना अपना रुंएदार लबादा लिए हुए—अहाते में उस जगह पहुँचा जहाँ गाड़ियाँ खड़ी हुईं थीं।

"अन्ना फेदोरोव्ना जायेत्सेवा की गाड़ी!" वह जोर से चिल्लाया।

एक चार सीटों वाली बन्द गाड़ी जिसकी बत्तियाँ जल रही थीं अपनी जगह से हिली और बरसाती के नीचे आ गई।

"रुको!" उसने कोचवान से कहा और घुटनों घुटनों बरफ में कूद कर गाड़ी की तरफ दौड़ा।

"क्या चाहते हो ?" कोचवान ने पूछा।

"मैं गाड़ी में बैठना चाहता हूँ," दरवाजा खोल कर चलती हुई गाड़ी में बैठने की कोशिश करते हुए काउन्ट ने कहा, "रुको, मैं कह रहा हूँ, बेवकूफ।"

"रुको, वास्का!" कोचवान ने चीख कर गाड़ी में जुते हुए घोड़े के सवार से कहा और घोड़ों की लगाम खींची। "आप दूसरों की गाड़ी में किसलिए बैठ रहे हैं? यह गाड़ी मेरी मालकिन, अन्ना फेदोरोव्ना की है, आपकी नहीं है, सरकार।"

"चुप रह, काठ के उल्लू! यह एक रूबल अपने लिए ले; बैठ जा और दरवाजा बन्द कर ले," काउन्ट बोला। परन्तु जब कोचवान नहीं हिला तो उसने खुद ही सीढ़ियाँ उठाईं और खिड़की को नीचा करते हुए किसी तरह दरवाजा बन्द कर लिया। गाड़ी के भीतर बदबू भर रही थी जैसा कि आमतौर पर पुरानी फैशन की गाड़ियों में, और खास तौर से उनमें जिनमें पीले कलाबत्तू का काम होता है, एक सड़ी दुर्गन्ध आती रहती है जैसी कि सुअर के पुराने और जले हुए बालों में से आती है। काउन्ट की टांगें घुटनों तक बरफ से भीग गई थी और उसे अपने पतले बूटों और सवारी की ब्रीचिस में बड़ी सर्दी लग रही थी। वास्तविकता यह थी कि जाड़े की ठंड उसके सारे शरीर में घुसी जा रही थी। ऊपर बैठा हुआ कोचवान बड़बड़ाया और ऐसा लगा मानो नीचे उतरने की तैयारी कर रहा हो। परन्तु काउन्ट ने न तो कुछ सुना और न अनुभव किया। उसका चेहरा लाल हो रहा था और दिल बुरी तरह धड़क रहा था। अपनी इस उद्वेगपूर्ण अवस्था में उसने खिड़की का पीला फीता पकड़ लिया और बगल की खिड़की में से बाहर झांका और उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व किसी की प्रतीक्षा की भावना में निमग्न हो गया।

यह प्रतीक्षा अधिक लम्बी नहीं रही। किसी ने बरसाती में से पुकारा, "जायेत्सेवा की गाड़ी!" कोचवान ने लगाम में झटका दिया, ऊँची स्प्रिंगों पर गाड़ी का ढाँचा हिला और घर की रोशनी से चमकती

हुईं खिड़कियाँ एक के बाद एक गाड़ी की खिड़कियों के सामने से निकलने लगीं।

"ध्यान रखना, मियाँ," काउन्ट कोचवान से बोला, सामने वाली खिड़की से बाहर सिर निकालते हुए, "अगर तुमने साईस से यह कहा कि मैं यहाँ हूँ तो मैं तुम्हें उधेड़ डालूँगा। और अगर अपनी जबान बन्द रखोगे तो दस रूबल और पाओगे।"

मुश्किल से वह खिड़की बन्द कर पाया था कि इससे पहले ही गाड़ी बुरी तरह कांपी और फिर रुक गई। वह कौने में खिसक गया, सांस रोक ली, और अपनी आँखें भी बन्द कर लीं, वह इतना भयभीत था कि कहीं कोई उसकी इस तीव्र लालसा को भंग न कर दे। दरवाजा खुला, गाड़ी की सीढ़ियाँ एक एक कर नीचे गिरीं, उसने एक औरत के कपड़ों की खसखसाहट सुनी, उस दुर्गन्ध पूर्ण गाड़ी में चमेली की खुशबू भर गई, नन्हें से पैर तेजी से सीढ़ियों पर चढ़े और अन्ना फेदोरोव्ना, अपने लबादे के छोर से काउन्ट की टांग को छूती हुई; जो खुल गई थी, उसकी बगल में गहरी सांस लेती हुई चुपचाप सीट में धंस गई।

वह उसे देख पाई या नहीं, यह कोई नहीं बता सकता, अन्ना फेदोरोव्ना स्वयं भी नहीं, परन्तु जब काउन्ट ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और कहा, "अच्छा, अब मैं तुम्हारे नन्हें हाथ का चुम्बन लूँगा," तो उसने बहुत कम भय का प्रदर्शन किया, कोई उत्तर नहीं दिया, मगर अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया जिसे उसने उसके दस्ताने के सिरे से भी काफी ऊपर तक चुम्बनों से ढक दिया। गाड़ी चल पड़ी।

"कुछ कह, तू नाराज है?" काउन्ट ने कहा।

वह चुपचाप अपने कौने की तरफ दब गई परन्तु अचानक किसी कारणवश फूट फूट कर रो पड़ी और उसने अपने आप अपना सिर काउन्ट के सीने पर टिका दिया।

६.

नव निर्वाचित पुलिस कप्तान और उसके मेहमान, वह घुड़सवार और दूसरे सामन्तगण बहुत देर से जिप्सियों का गाना सुन रहे थे और नए रेस्टोरेन्ट में बैठे हुए शराब पी रहे थे कि जब काउन्ट आया, एक नीले कपड़े वाला लबादा पहने हुए जिस पर रीछ की खाल की गोट लगी हुई थी और जो अन्ना फेदोरोव्ना के स्वर्गीय पति का था, और उन लोगों के साथ बैठ गया।

"सचमुच, योर एक्सेलैन्सी, हम लोग बड़ी बेसब्री से आपका इन्तजार कर रहे थे" एक सांवले भेंड़ी आँखों वाले जिप्सी ने अपने सफेद दाँत दिखाते हुए कहा, जैसे ही वह काउन्ट से ठीक दरवाजे पर मिला और लबादा उतारने में उसकी मदद करने के लिए दौड़ पड़ा। "लेबेदूयानी के मेले के बाद आपके दर्शन फिर नहीं हो सके।...स्तेश्का आपके लिए बहुत व्यग्र हो रही है।"

स्तेश्का, एक जवान, सुन्दर नन्हीं सी जिप्सिन थी जिसके भूरे चेहरे पर ईंट की सी लाल चमक थी और जिसकी गहरी, चमकती हुई काली आँखें जो लम्बी पलकों से झुकी हुईं थीं। वह भी उससे मिलने के लिए दौड़ी आई।

"आह, नन्हें काउन्ट! प्रियतम! प्राण! यह असली आनन्द है!" प्रसन्नता से मुस्कराते हुए वह अपने दाँतों में बड़बड़ाई।

इल्यूश्का, यह दिखाते हुए कि उसे बड़ी खुशी हुई है, खुद भी उससे मिलने के लिए दौड़ा आया। वृद्धाएं, विवाहिताएं, कुमारिकाएं अपने स्थानों से उछल पड़ीं और उन्होंने मेहमान को चारों तरफ से घेर लिया। कुछ उसे धर्म पिता कह रही थीं और कुछ धर्म-संस्कार के नाते भाई बना रही थीं।

तुरबिन ने सब जिप्सी युवतियों के अधरों का चुम्बन लिया। वृद्धाओं और पुरुषों ने उसे कन्धे या हाथ पर चूमा। सामन्तगण भी

अपने इस अतिथि के आगमन से प्रसन्न हो रहे थे, विशेष रूप से इसलिए कि वह मद्य पान का उत्सव अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर मन्द होने लगा था और प्रत्येक अपने को पूर्ण तृप्त अनुभव करने लगा था। शराब अपने उत्तेजक गुण से रहित होकर अब केवल पेट का भार बढ़ा रही थी। हरेक अपनी डींगों का खजाना समाप्त कर चुका था और सब लोग एक दूसरे से ऊब उठे थे। सब गीत गाए जा चुके थे और हरेक के दिमाग में वे गीत गड़बड़ा कर एक शोरगुल से भरा हुआ कामुकता का भाव छोड़ गए थे। अब इस बात का कोई महत्व नहीं रहा था कि किसी ने कौन सा अद्भुत या जीवट का काम किया था, परन्तु उन्हें यह लगने लगा था कि इनमें सहमति या विचित्रता की कोई भी बात नहीं थी। पुलिस कप्तान, जो फर्श पर अत्यन्त घृणित रूप में एक बुढ़िया के पैरों के पास लेटा हुआ था, अपने पैरों को छटपटाने और चीखने लगा : "शेम्पेन !...काउन्ट आ गए हैं !...शेम्पेन !... वह आ गए हैं...अब फिर शेम्पेन !...मैं शेम्पेन से स्नान करूँगा ! अच्छे सज्जनों !...मुझे अपने पुराने रईसों की सोहबत पसन्द है... स्तेश्का, मार्ग वाला गीत गाओ।"

वह घुड़सवार भी मतवाला हो रहा था परन्तु दूसरी तरह से। वह कौने में सोफे पर एक लम्बी सुन्दर लड़की ल्यूबाशा से बिल्कुल सट कर बैठा हुआ था और शराब के कारण अपनी आँखों को धुंधली समझ कर बराबर पलक झपका रहा था, सिर हिलाता जाता था तथा बार बार फुसफुसाहट के स्वर में उन्हीं शब्दों को दुहराते हुए उस लड़की से अपने साथ भाग चलने के लिए कह रहा था। ल्यूबाशा, मुस्कराती हुई और इस तरह सुनती हुई, मानो जो कुछ वह कह रहा था बड़ी मजेदार और फिर भी बड़ी दुखदाई बात थी, कभी कभी अपने पति-उस भेंड़ी आँखों वाले साश्का की तरफ देख लेती थी जो उसके सामने रखी हुई कुर्सी के पीछे खड़ा हुआ था। वह उस घुड़सवार की प्रेम-घोषणा के जवाब में

उसकी तरफ झुकी और उसके कान में फुसफुसाते हुए, जिससे कि दूसरे न देख लें, उससे बोली कि वह उसके लिए कुछ अतर और रिबन खरीद दे।

"हुर्रा !" जैसे ही काउन्ट भीतर घुसा घुड़सवार चिल्लाया।

वह सुन्दर युवक चेहरे पर थकान की भावना लिए तथा एक गीत गुनगुनाता हुआ बड़े प्रयत्न के साथ दृढ़ पग रखता हुआ कमरे में इधर से उधर घूम रहा था।

एक अधेड़ गृहपति, जो अमीरों के बार बार आग्रह करने से लालच वश वहाँ आ गया था एक सोफे पर पड़ा हुआ था। वह उस सोफे पर आते ही पड़ गया था और उसकी तरफ कोई भी ध्यान नहीं दे रहा था। अमीरों ने उससे कहा था कि वह जिप्सियों का गाना सुनने के लिए आए, क्योंकि उन्होंने कहा कि उसके बिना उस उत्सव का कोई महत्व नहीं रहेगा और इससे अच्छा तो यह होगा कि वहाँ जाया ही न जाय। कोई अफसर या न जाने कोई और जो वहाँ मौजूद था, मेज पर पैर सिकोड़े हुए बैठा था और अपने बालों में उंगलियाँ चला रहा था, यह दिखाने के लिए कि वह इस नाचरङ्ग में बड़ा मजा ले रहा है। जैसे ही काउंट भीतर घुसा इस अफसर ने अपनी कमीज के बटन खोल डाले और मेज पर और भी जम कर बैठ गया। संक्षेप में, तुरबिन के आगमन ने उस उत्सव में पुनः जीवन डाल दिया।

जिप्सी लड़कियाँ जो कमरे में इधर उधर घूम रही थीं फिर इकट्ठी हो गईं और एक घेरा बना कर बैठ गईं। काउन्ट ने प्रमुख गायिका स्तेश्का को अपने घुटनों पर बैठा लिया और शेम्पेन लाने को आज्ञा दी।

इल्यूश्का आया और अपनी सारङ्गी लेकर स्तेश्का के सामने खड़ा हो गया और नृत्य की धुन बजने लगी। मतलब यह कि जिप्सी गाने, 'जब तुम सड़क पर यात्रा करो, ओ हुसार !,' 'तुम सुन रहे हो, तुम जान रहे हो,' इत्यादि एक निश्चित क्रम से गाए जाने लगे। स्तेश्का

ने बहुत सुन्दर गाया। उसके सीने से निकली लहलहाती हुई स्वर लहरी, गाते समय की उसकी मुस्कराहट, उसकी हँसती हुई मादक आँखें और गीत के साथ अपने आप नाच उठने वाला उसका पैर, अन्तरा के समय उसकी तीखी आवाज–ये सब मिल कर किसी शक्तिशाली परन्तु बहुत कम प्रभावित होने वाले हृदय तंत्री के तार को छेड़ देते थे। यह स्पष्ट था कि वह उन्ही गानों में डूबी रहती थी जिन्हें गा रही थी। इल्यूरका ने सारङ्गी पर उसका साथ दिया—उसकी पीठ, पैर, मुस्कराहट और पूरा शरीर गाने के साथ सहानुभूति प्रकट कर रहा था और उत्सुकता पूर्वक उसे देखते हुए, सावधानी से सिर को ऊपर नीचे हिलाता जाता था और इस तरह तन्मय हो रहा था कि जैसे इस गाने को पहली बार सुन रहा हो। फिर अन्तिम सुरीली धुन पर उसने एकाएक अपने को सीधा किया और मानो यह अनुभव करते हुए कि वह संसार में सबसे श्रेष्ठ है, गर्व और दृढ़ता के साथ सारङ्गी को पैर से ठोकर मार कर फेंक दिया, चारों तरफ फिराया, कुचला, अपने बालों को पीछे किया और बुझाते हुए गाने वालों की तरफ देखने लगा। उसका सम्पूर्ण शरीर एड़ी से लेकर गर्दन तक अपनी प्रत्येक रग के साथ नाच उठा—और बीस स्वस्थ, शक्तिशाली कंठ, प्रत्येक दूसरों की अपेक्षा अद्भुत रीति से और अधिक शक्ति से वायुमंडल में गूंज उठे। बुढ़ियायें अपने रूमाल हिलाती हुईं कुर्सियों पर ऊपर नीचे होने लगीं और दाँत दिखाती हुईं और एक दूसरी से स्पर्धा करती हुईं अपनी अभ्यस्त और नपी तुली आवाज में साथ दे उठीं। आदमी तनी हुई गर्दनों और एक तरफ को झुके हुए सिरों के साथ कुर्सियों के पीछे खड़े हुए भुनभुना उठे।

जब स्तेश्का ने एक ऊँची तान ली तो इल्यूश्का अपनी सारङ्गी उसके पास ले गया मानो उसकी सहायता करना चाह रहा हो और वह सुन्दर नवयुवक यह कहते हुए कि अब ये लोग 'बेमोल'१ प्रारम्भ

कर रहे हैं, प्रसन्नता से चीख उठा।

जब नृत्य की धुन बजी और दुन्याशा कांपते कंधों और छाती के साथ काउंट के सामने नाची और आगे को तैरती हुई सी बढ़ गई तो तुरबिन उछल पड़ा, अपनी जाकेट उतार कर फेंक दी, और सिर्फ लाल कमीज पहने हुए प्रसन्नता पूर्वक सधे और नपे तुले पगों से उसके साथ नाचने लगा। उसने अपने पैरों से इतना सुन्दर नृत्य प्रदर्शन किया कि जिप्सियों ने प्रशंसा सूचक मुस्कराहट के साथ एक दूसरे की तरफ देखा।

पुलिस कप्तान एक तुर्क की तरह बैठ गया, मुट्ठियों से अपना सीना पीटा और चीखा, "शबाश!" और फिर काउंट की टांग पकड़ कर उससे कहने लगा कि दो हजार रूबल में से अब उसके पास सिर्फ पाँच सौ रह गए हैं परंतु वह जो काउंट चाहे वही कर सकता है अगर काउंट इसकी इजाजत दे। वह सुन्दर नौजवान एक जिप्सी लड़की को अपने साथ 'वाल्ट्ज' नृत्य करने के लिए फुसलाने लगा। वह घुड़सवार, काउंट के साथ अपनी घनिष्ठता का प्रदर्शन करने की इच्छा से उठा और काउंट को आलिंगन में आबद्ध कर लिया। "आह, मेरे प्यारे दोस्त," उसने कहा, "तू हमें छोड़ कर क्यों चला गया था, क्यो?" काउंट खामोश था। जाहिरा तौर से वह कुछ और सोच रहा था। "तुम कहाँ चले गए थे? आह, शैतान काउंट, मैं जानता हूँ तुम कहाँ गए थे?"

किसी कारण वश इस घनिष्ठता से काउंट क्रुद्ध हो उठा। बिना मुस्कराए हुए उसने घुड़सवार के चेहरे की तरफ चुपचाप देखा और एकाएक उस पर गालियों की ऐसी भयानक और कठोर बौछार

१—'बेमोल' फ्रांसीसी भाषा में मन्द स्वर को कहते हैं, मगर रूस में बहुत से व्यक्ति सङ्गीत के विषय में कुछ भी न जानते हुए कल्पना कर लेते थे कि इसका सम्बन्ध सङ्गीत की श्रेष्ठता से था।

७.

"घोड़े तैयार करो!" काउन्ट चीखा जैसे ही वह होटल के सैलून में अपने मेहमानों और जिप्सियों के साथ घुसा। "साश्का!-जिप्सी साश्का नहीं बल्कि मेरा साश्का--सुपरिन्टेन्डेन्ट से कहो कि अगर वह मुझे खराब घोड़े देगा तो मैं उसके कोड़े लगाऊँगा। और हमारे लिए थोड़ी चाय लाओ। जाबालशेक्की,तुम चाय का इन्तजाम करो: मैं इलिन के पास जा रहा हूँ, यह देखने कि उसका क्या हाल है···" तुरबिन ने आगे कहा और गैलरी में होकर उहलान के कमरे की तरफ चल दिया।

इलिन ने अभी खेलना खत्म किया था और अपना आखिरी पैसा हार कर सोफे पर औंधा पड़ा हुआ उसकी फटी हुई घोड़े के बालों वाली गद्दी में से एक के बाद दूसरा बाल निकालता उन्हें मुँह में रख कर उनके दो टुकड़े करता और फिर थूक देता।

दो मोमबत्तियाँ, जिनमें से एक बिल्कुल नीचे तक जल चुकी थी, ताशों से भरी हुई मेज पर जल रहीं थी और खिड़की में से भीतर आती हुई हल्की रोशनी से अशक्तता पूर्वक युद्ध कर रहीं थीं। इलिन का मस्तिष्क बिचार शून्य था। जुए के आकर्षण के घने कुहरे ने उसकी सम्पूर्ण अच्छाइयों को ढक लिया था, यहाँ तक कि उसे पश्चाताप भी नहीं हो रहा था। उसने यह सोचने का एक बार प्रयत्न किया कि अब उसे क्या करना चाहिए; एक भी पैसा पास न होने के कारण वह कैसे जा सकता है, सरकारी धन के पन्द्रह हजार रूबलों का भुगतान वह कैसे करेगा, उसके रेजीमेन्ट का कमांडर क्या कहेगा, उसकी माँ और साथी क्या कहेंगे, और वह स्वयं अपने से इतना भयभीत और असंतुष्ट हो उठा कि अपने को भुला देने की इच्छा से वह उठा और कमरे में इधर उधर घूमने लगा और घूमते हुए फर्श के तख्तों के जोड़ों पर ही कदम रखने की कोशिश करने लगा और एक बार फिर खेल की छोटी से छोटी बातों को स्पष्ट रूप से याद करने की कोशिश करने लगा।

उसने स्पष्ट रूप से कल्पना की, कि किस तरह वह अपना हारा हुआ धन फिर जीतने लगा था, किस तरह उसने एक नहले को वापस ले लिया और दो हजार रूबल पर हुकुम का बादशाह लगा दिया। दाहिनी तरह एक बेगम आई, बांयी तरफ एक इक्का, फिर दाहिनी तरफ ईंट का बादशाह आया और सब धन चला गया; परन्तु अगर, मान लो, दाहिनी तरफ छक्का आता और बांई तरफ ईंट का बादशाह तो वह सारी हारी हुई रक़म वापस जीत लेता, एक बार फिर गहरा दाँव लगा कर खेलता, पन्द्रह हजार रूबल जीत जाता और तब अपने लिए अपने रेजीमेन्ट के कमांडर से एक पोशाक खरीद लेता और साथ ही दो घोड़े और एक फिटन भी ले लेता। अच्छा, और फिर क्या होता?—यह एक बहुत बढ़िया चीज होती।

और वह सोफा पर फिर लेट गया और घोड़े के बालों को चबाने लगा।

"वे लोग नम्बर सात में क्यों गा रहे हैं?" उसने सोचा। "तुरबिन के यहाँ नाचरंग हो रहा होगा। क्या मुझे वहाँ जाना और खूब शराब पीना चाहिए?"

इसी समय काउन्ट भीतर घुसा।

"क्यों, दोस्त, साफ हो गए, क्यों, हो गए न?" वह चीखा।

"मैं सोने का बहाना करूँगा," इलिन ने सोचा, "वर्ना मुझे उससे बातें करनी पड़ेगीं और मैं सोना चाहता हूँ।"

फिर भी तुरबिन उसके पास तक आया और उसके सिर को थपथपाया।

"क्यों, मेरे प्यारे दोस्त, खाली हो गए--सब हार गए? मुझे बताओ न।"

इलिन ने कोई जवाब नहीं दिया।

काउन्ट ने उसकी बांह खींची।

"मैं हार गया। परन्तु इससे तुम्हें क्या ?" इलिन उनींदी, रूखी और असन्तुष्ट आवाज में बिना करवट लिए हुए बोला।

"सब कुछ ?"

"क्यों—हाँ। इससे क्या ? सब कुछ। इससे तुम्हें क्या मतलब ?"

"सुनो ! एक साथी के नाते मुझे सच सच बता दो," काउन्ट शराब के प्रभाव के कारण जो उसने पी रखी थी, कोमलता प्रदर्शित करने के लिए उसके बालों को थपथपाता रहा।" मैं सचमुच तुम्हें प्यार करने लगा हूँ। मुझे सच बात बता दो। अगर तुम सरकारी धन हार गए हो तो मैं तुम्हें इस मुसीबत से बचा लूँगा : अभी बता दो वर्ना देर करने से मामला बिगड़ जायगा... तुम्हारे पास सरकारी रुपया था ?"

इलिन सोफे पर से कूद पड़ा।

"अच्छा तो, अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें बता दूँ, मुझ से बोलो मत, क्योंकि...महरबानी कर मुझसे बोलो मत .... आत्म हत्या करना ही एक मात्र बचने का उपाय है।" वास्तविक निराशा से इलिन ने कहा और उसने अपने हाथों में अपना सिर पकड़ लिया और फूट फूट कर रोने लगा, हालांकि क्षण भर पहले ही वह शान्तिपूर्वक घोड़ों के बारे में सोच रहा था।

"क्या लड़कियों की तरह रोते हो ! ऐसा कौन आदमी है जिससे ऐसा नहीं हुआ ? यह कोई ऐसी भारी मुसीबत नहीं है, शायद हम लोग इसे सुधार लें। यहीं मेरा इन्तजार करना।"

काउन्ट बाहर चला गया।

"लुखनोव महोदय का कमरा कौन सा है ?" काउन्ट ने नौकर से पूछा।

नौकर ने उसे रास्ता बता दिया। खानसामा के यह कहने पर भी कि उसका मालिक अभी लौटा है और कपड़े उतार रहा है, काउन्ट भीतर चला गया। लुखनोव ड्रेसिंग गाउन पहने एक मेज पर बैठा

अपने सामने पड़ी हुई नोटों की गड्डियों को गिन रहा था। 'राइन' नामक शराब की एक बोतल, जिसका वह बहुत शौकीन था, मेज पर रखी हुई थी। जीत की खुशी में वह उसका आनन्द लेना चाहता था। लुखनोव ने अपने चश्मे में से उपेक्षा और कठोरता पूर्वक काउन्ट की तरफ देखा जैसे कि उसे पहचानता ही न हो।

"मेरा ख्याल है कि आप मुझे पहचानते नहीं," दृढ़तापूर्वक मेज की तरफ बढ़ते हुए काउन्ट ने पूछा।

लुखनोव ने पहचानने का भाव दिखाया और बोलाः "आप क्या चाहते हैं ?"

मैं आपके साथ खेलना चाहता हूँ," सोफे पर बैठते हुए तुरबिन बोला।

"अभी ?"

"हाँ।"

"किसी दूसरे समय खुशी से, काउन्ट! परन्तु इस समय मैं थका हुआ हूँ और सोने जा रहा हूँ। आप एक गिलास शराब पीना पसन्द करेंगे ? यह मशहूर शराब है।"

"मगर मैं थोड़ा सा खेलना चाहता हूँ–इसी समय।"

"मेरा इस रात और खेलने का इरादा नहीं है। शायद कुछ दूसरे लोग पसन्द करें लेकिन मैं नहीं खेलूंगा आप मुझे इसके लिए क्षमा करेंगे, काउन्ट।"

"तो आप नहीं खेलेंगे ?"

लुखनोव ने अपने कन्धे उचका कर काउन्ट की इच्छा पूरी करने में अपनी असमर्थता प्रकट की।

"किसी भी तरह नहीं ?"

फिर वही हरकत हुई।

"मगर मैं विशेष रूप से प्रार्थना करता हूँ···अच्छा, आप खेलेंगे ?"

खामोशी।

"आप खेलेंगे ?" काउन्ट ने फिर पूछा। "सावधान !"

वह खामोश रही और चश्मे में से घुरती हुई निगाह काउन्ट पर पड़ी।

"आप खेलेंगे ?" मेज पर हाथ मारते हुए काउन्ट जोर से चीखा जिससे उस पर रखी हुई बोतल उलट गई और शराब फैल गई। "तुम जानते हो कि तुम ईमानदारी से नहीं जीते हो...खेलोगे ? मैं तीसरी बार पूछ रहा हूँ।"

"मैं कह चुका, मैं नहीं खेलूँगा। यह सचमुच बड़ी अजीब बात है, काउन्ट ! और यह ठीक नहीं है कि आकर किसी के गले पर छुरी रख दी जाय," अपनी आँखें बिना ऊपर उठाए हुए लुखनोव ने कहा। क्षण भर स्तब्धता रही जिसके दौरान में काउन्ट का चेहरा पीला पड़ता चला गया। एकाएक एक भयानक घूंसे ने लुखनोव के सिर को भन्ना दिया। वह नोटों को पकड़ने की कोशिश करता हुआ सोफे पर गिर पड़ा और उसके गले से ऐसी भयानक चीख निकली कि जिसकी उस जैसे शान्त और प्रभावशाली व्यक्ति से कोई आशा नहीं करता था। तुरबिन ने, जो कुछ धन मेज पर पड़ा हुआ था, उसे इकट्ठा किया, अपने मालिक की मदद के लिए दौड़ कर आते हुए नौकर को धक्का देकर एक तरफ हटा दिया और तेज कदम उठाता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

"अगर तुम अपना सन्तोष चाहो तो मैं तुम्हारी सेवा के लिए प्रस्तुत हूँ। मैं आधा घंटे तक और अपने कमरे में रहूँगा," लुखनोव के दरवाजे की तरफ लौटते हुए काउन्ट ने कहा।

"चोर ! डाकू ! मैं तुम्हें पुलिस के हाथों में दे दूँगा..." सिर्फ इत.ा ही कमरे में से सुनाई पड़ा।

इलिन, जिसने काउन्ट द्वारा उसकी मदद करने के वायदे पर विश्वास नहीं किया था, इस समय तक अपने कमरे में सोफे पर पड़ा

हुआ निराशा के आँसुओं में डूबा हुआ था। जो कुछ उसके साथ सच-मुच बीत चुका था उसकी भावना, जिसे काउन्ट के दुलार और सहानुभूति ने, उसकी अद्भुत भावनाओं, विचारों और स्मृतियों को जो उसकी आत्मा में भर उठी थी, के बावजूद भी जाग्रत कर दिया था, उसे छोड़ नहीं रही थी। उसका यौवन, आशाओं से परिपूर्ण उसका सम्मान, सामाजिक महत्व, प्रेम और मित्रता के उसके स्वप्न—सब बुरी तरह भंग हो चुके थे। उसके आँसू सूखने लगे, निराशा की एक निष्क्रिय भावना उसे अधिकाधिक दबाती चली गई, और आत्मघात करने की भावना, जो अब उसमें विराग या भय की भावना उत्पन्न नहीं कर रही थी, अधिक शक्ति के साथ उस पर हावी होने लगी। ठीक उसी समय काउन्ट की पदचाप सुनाई पड़ी।

तुरबिन के चेहरे पर क्रोध के निशान अब भी देखे जा सकते थे, उसके हाथ कुछ कांप रहे थे, परन्तु उसके नेत्र कोमल प्रसन्नता और आत्म-सन्तोष से चमक रहे थे।

"यह रहे, वापस जीत लिए गए!" मेज पर बहुत सी नोटों की गड्डियाँ फेंकते हुए वह बोला। "देख लो कि पूरे हैं या नहीं और फिर जल्दी करो और बड़े कमरे में आ जाओ। मैं अभी यहाँ से जा रहा हूँ," उसने आगे कहा मानो इलिन के चेहरे पर छाए हुए प्रसन्नता, कृतज्ञता और चरम उद्वेग के भावों को न देख रहा हो और सीटी द्वारा एक जिप्सी गाना गाता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

८.

कमर में एक रूमाल बांधे हुए आकर साश्का ने घोषणा की कि घोड़े तैयार हैं परन्तु इस बात पर जोर दिया कि काउन्ट का लबादा, जो उसने कहा, फरदार कालर के साथ तीन सौ रूबल की कीमत का है, वापस आ जाना चाहिए और यह भद्दा नीला उस शैतान को वापस कर देना चाहिए जिसने मार्शल के यहाँ इसे बदल दिया था परन्तु तुरबिन

ने उससे कहा कि लबादे की ढूँढ़ खोज करने की कोई जरूरत नहीं है और इतना कह कर कपड़े बदलने अपने कमरे में चला गया।

वह घुड़सवार अपनी जिप्सी लड़की के पास बैठा हुआ हिचकियाँ लेता रहा। पुलिस कप्तान ने बोदका मंगाई और हरेक को फौरन आने और अपने साथ नाश्ता करने का न्यौता दिया, यह वायदा करते हुए कि उसकी बीबी जिप्सयों के साथ जरूर नाचेगी। वह सुन्दर नवयुवक बिस्तार के साथ इल्यूश्का को यह समझा रहा था कि, पियानो की ध्वनियों में अधिक गहराई होती है और यह कि सारङ्गी पर 'बेमोल' की ध्वनि बजाना सम्भव नहीं है। अफसर उदास मुद्रा में कोने में बैठा हुआ चाय पी रहा था और दिन के उजाले में अपनी इस चरित्रहीनता पर बहुत लज्जित हो रहा था। जिप्सी लोग, अपनी भाषा में, आपस में इस बात पर विवाद कर रहे थे कि अपने मेहमान का पुनः मनोरञ्जन करें जिसका स्तेश्का ने विरोध किया, यह कहते हुए कि 'बेरोरॉय' (जिप्सी भाषा में काउंट या प्रिंस या शाब्दिक अर्थ में 'महान सज्जन') नाराज हो जायेगा। साधारणतः प्रत्येक की दुश्चरित्रता की भावना अन्तिम रेखा तक समाप्त हो रही थी।

"अच्छा, एक विदाई का गीत, और फिर घर जाओ!" काउंट ने, सफरी पोशाक में, स्वस्थ, प्रसन्न और पहले से भी अधिक सुन्दर मुद्रा में वहाँ घुसते हुए कहा।

जिप्सयों ने फिर अपना घेरा बना लिया और प्रारम्भ करने ही वाले थे कि इलिन हाथ में नोटों की गड्डी लिए हुए भीतर घुसा और काउंट को एक तरफ ले गया।

"मेरे पास सरकारी खजाने के सिर्फ पन्द्रह हजार रूबल थे और तुमने मुझे सोलह हजार तीन सौ दिए हैं," वह बोला, "इसलिए ये तुम्हारे हैं।"

"यह बहुत अच्छी बात है। इधर दो।"

इलिन ने उसे गड्डी दे दी और सहमते हुए काउन्ट की तरफ देख कर कुछ कहने के लिए होंट खोले मगर सिर्फ शर्मा कर रह गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए और काउन्ट का हाथ पकड़ कर उसे दबाने लगा।

"तुम जाओ !...इल्यूश्का ! सुनो ! ये तुम्हारे लिए कुछ रुपया है, परन्तु तुम्हें गाते हुए मेरे साथ शहर से बाहर तक चलना पड़गा," और उसकी सारङ्गी पर इलिन द्वारा लाए हुए तेरह सौ रूबल फेंक दिए। परन्तु काउंट उस घुड़सवार से उधार लिए हुए सौ रूबल उसे वापस करना पूरी तरह भूल गया जो उसने एक दिन पहले उधार लिए थे।

सुबह के दस बज चुके थे। सूरज मकानों की छत्तों से ऊपर उठ आया था। लोगबाग सड़कों पर चल रहे थे। दूकानदारों ने बहुत पहले ही अपनी दूकानें खोल ली थीं। अमीर और अफसर सड़कों पर गाड़ियों में बैठे जा रहे थे और महिलाएं बाजार में खरीद फरोख्त कर रही थीं, उसी समय वह पूरा जिप्सी-दल, पुलिस कप्तान, घुड़सवार, सुन्दर नौजवान, इलिन और रीछ की खालों वाला नीला लबादा पहने हुए काउंट, के साथ होटल की बरसाती में बाहर आया।

धूप खिल रही थी। बरफ पिघलने लगी थी। बड़ी सफरी स्लेज गाड़ियाँ, हरेक कस कर पूँछ बँधे हुए तीन तीन घोड़ों द्वारा खींची जाने वालीं, कीचड़ उछालती हुई बरसाती में आ खड़ी हुईं और वह पूरी प्रसन्न पार्टी उसमें बैठ गई। काउंट, इलिन, स्तेश्का और इल्यूश्का, काउंट के अर्दली साश्का के साथ पहली गाड़ी में बैठे। गाड़ी के घोड़ों पर भौंकता और पूंछ हिलाता हुआ ब्लूचर उसके पास था। दूसरे लोग बचे हुए जिप्सी स्त्री पुरुषों के साथ दूसरी गाड़ियों में बैठ गए। गाड़ियाँ आगे बढ़ीं और जैसे ही उन्होंने होटल छोड़ा जिप्सियों ने गाना शुरू कर दिया।

वे गाड़ियाँ अपनी घंटियों और गीतों के साथ–रास्ते में मिलने वाली हर गाड़ी को फुटपाथ पर चढ़ कर बचने के लिए मजबूर करती हुई–पूरे शहर को पार कर शहर के फाटक की तरफ चलीं।

वे व्यापारी और राहगीर जो उन्हें नहीं जानते थे और खास तौर से वे लोग जो उन्हें जानते थे, तनिक भी आश्चर्यचकित नहीं हुए जब उन्होंने इन अमीरों को दिन दहाड़े जिप्सी लड़कियों और मतवाले जिप्सी मर्दों के साथ गाते हुए, सड़क पर निकलते हुए देखा।

जब वे लोग शहर के फाटक से बाहर निकल गए तो गाड़ियाँ रुक गईं और हरेक काउंट को विदा देने लगा।

इलिन,जिसने चलने से पहले खूब पी लीथी और पूरेरास्ते खुदही गाड़ी चलाता आया था, अचानक बहुत उदास हो उठा। उसने काउंट से रुकने की एक और प्रार्थना की और जब उसे यह ज्ञात हुआ कि ऐसा होना असम्भव है, तो वह एकाएक अपने नए मित्र की तरफ दौड़ा, उसे चूमा और आँसू भरी हुई आँखों से प्रतिज्ञा की कि वह जैसे ही वापस लौटेगा, जल्दी से जल्दी काउंट वाली रेजीमेन्ट में अपनी बदली कराने की कोशिश करेगा। काउंट विशेष रूप से प्रसन्न था। उसने घुड़सवार को; जो सुबह उससे बहुत घुलमिल गया था, बरफ में धकेल दिया; पुलिस कप्तान पर ब्लूचर को लहका दिया, स्तेश्का को अपनी बांहों में बांध लिया और उसे मास्को ले जाने की इच्छा प्रकट की, और अन्त में कूद कर अपनी स्लेज में चढ़ गया और ब्लूचर को, जो बीच में खड़ा होना चाह रहा था, अपने पास बैठा लिया। साश्का, घुड़सवार से एक बार फिर 'उन लोगों' से काउंट का लबादा वापिस ले लेने और उसे भेज देने के लिए कह कूद कर कोचवान की सीट पर जा बैठा। काउंट चिल्लाया, "चलो!", अपनी टोपी उतारी, सिर से ऊपर उसे हिलाया और कोचबान की तरह घोड़ों की तरफ सीटी बजाई। गाड़ियाँ अपनी विभिन्न दिशाओं में चल पड़ीं।

सामने बरफ से ढका हुआ एक लम्बा चौड़ा विशाल मैदान फैला हुआ था जिसमें होकर एक धुंधली पीली सी सड़क लहराती हुई चली जा रही थी। चमकती हुई धूप-जो पिघलती हुई बरफ पर रङ्ग-बिरंगे रूपों में चमक उठती थी-मुँह और पीठ पर बड़ी सुहावनी लग रही थी। पसीने में नहाए हुए घोड़ों पर से घनी भाप उठ रही थी। घन्टियाँ सुरीली आवाज में बज रही थीं। एक किसान, जो एक लदी हुई स्लेज को, जो बराबर सड़क के किनारे की तरफ खिसक आती थी, हांकते हुऐ तेजी से रास्ते पर से हट गया और हटते समय उसने लगामों में झटके दिए और अपने भीगे जूतों से छींटे उड़ाए जैसे ही वह उस कीचड़ भरी हुई सड़क पर दौड़ा। एक लाल चेहरे वाली मोटी किसान औरत, भेड़ की खाल के लबादे में लिपटे हुए एक बच्चे को अपनी छाती से छिपकाए हुए एक दूसरी सामान से लदी स्लेज गाड़ी पर बैठी, एक थके हुए मरियल से पतली पूंछ वाले सफेद घोड़े की लगाम झटक रही थी। काउंट को एकाएक अन्ना फेदोरोव्ना की याद हो आई।

"वापस मोड़ो!" वह जोर से चीखा।

गाड़ीवान एकदम समझ नहीं सका।

"वापस मोड़ो! वापस शहर को! जल्दी!"

एक बार फिर वह गाड़ी शहर के फाटक में होकर गुजरी और तेजी से अन्ना फेदोरोव्ना की लकड़ी की बरसाती के नीचे जा पहुँची। काउंट तेजी से दौड़ता हुआ सीढ़ियों पर चढ़ा, ड्योढ़ी और बैठक में होता हुआ गुजरा और उस विधवा को अब भी सोते हुए देखकर उसे अपनी भुजाओं में भर लिया, बिस्तर से बाहर उठाया, उसकी उनींदी आँखों को चूमा और जल्दीसे वापस भागा। अन्ना फेदोरोव्ना ने जो अभी उनींदी ही थी, अपने होंठ चाटे और पूछा, "क्या हुआ?" काउंट उछल कर अपनी गाड़ी में बैठा, कोचवान को चीख कर आज्ञा दी और बिना

देर किए तथा लुखनोव, या विधवा या स्तेश्का के विषय में जरा भी न सोच कर सिर्फ मास्को के अपने काम की याद कर, क—नामक कस्बे को हमेशा के लिए छोड़ कर चला गया।

बीस साल से ज्यादा समय गुजर गया था। नदियों में बहुत पानी बह गया था, बहुत से आदमी दुनियाँ से उठ गए थे, बहुत से नए पैदा हो गए थे, अनेक बढ़ कर जवान हो गए थे या बुड्ढे हो गए थे, अनेक नए विचार उत्पन्न हुए थे और समाप्त हो चुके थे, उसका बहुत बड़ा भाग जो प्राचीन और सुन्दर था और जो प्राचीन और बुरा था, समाप्त हो गया था, बहुत सी बातें जो सुन्दर और नई थीं, पनप गई थीं और इन सबसे अधिक वे जो अपरिपक्क, अद्‌भुत और नई थीं इस ईश्वरीय सृष्टि में जड़ जमा चुकीं थीं।

काउन्ट फेदोर तुरबिन बहुत पहले ही एक अजनबी द्वारा एक द्वन्द्वयुद्ध में मार डाला गया था जिसे उसने सड़क पर घोड़े के चाबुक से पीटा था। उसका बेटा, शारीरिक रूप से बिल्कुल अपने बाप की ही तरह, जैसे कि पानी की एक बूंद दूसरी बूंद की ही तरह होती है, इस समय तेईस वर्ष का सुन्दर नवयुवक हो चुका था और शाही घुड़सवार सेना में काम कर रहा था। परन्तु नैतिक रूप से यह युवक तुरबिन अपने पिता से तनिक भी नहीं मिलता था। उसमें उस बीते हुए युग की की तीव्र, उन्मत्त और स्पष्ट कहा जाय तो, साहसिक दुश्चरित्रता की छाया तक भी नहीं थी। अपनी बुद्धिमत्ता, सभ्यता और सांसारिक कार्यों के प्रति एक व्यवहारिक दृष्टिकोण, न्यायप्रियता, दूरदर्शिता आदि उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ थीं। इस नौजवान काउन्ट ने योग्यता पूर्वक नौकरी की थी और तेईस वर्ष की अवस्था में ही लेफ्टीनेन्ट का पद प्राप्त कर लिया था। युद्ध प्रारम्भ होने पर उसने सोचा कि अगर वह युद्ध क्षेत्र में जाने वाली सेना में अपनी बदली करा ले तो उसकी पदोन्नति और भी जल्दी और निश्चित रूप से

हो जायगी। इसलिए वह एक 'हुसार' रेजीमेन्ट में कप्तान बन गया और शीघ्र ही उसे एक 'स्क्वाड्रन' का कमान्डर बना दिया गया।

मई सन् १८४८ में स–नामक 'हुसार' रेजीमेन्ट क–नामक सूबे में होकर एक मुहिम पर जाने के लिए यात्रा कर रही थी और उसी स्क्वाड्रन को जिसका नायक नौजवान काउन्ट तुरबिन था, मोरोजोव्का नामक एक गाँव में, जो अन्ना फेदोरोव्ना की जमींदारी में था, एक रात बिताने के लिए ठहरना पड़ा।

अन्ना फेदोरोव्ना अभी जीवित थी परन्तु यौवन उससे इतनी दूर हट चुका था कि वह अपने को जवान नहीं समझती थी, जो एक नारी के लिए बहुत बड़ी बात होती है। वह बहुत मोटी हो गई थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि मोटी होने से औरत जवान दिखाई देने लगती है। परन्तु उसकी इस सफेदी मिश्रित मुटाई पर कोमल, गहरी झुर्रियाँ बिल्कुल साफ दिखाई देने लगी थीं। वह अब कभी शहर नहीं जाती थी। उसे गाड़ी में चढ़ने में भी बहुत मेहनत करनी पड़ती थी परन्तु वह अब भी पहले की ही तरह दयालु और मूर्ख थी (अब जब कि उसका सौंदर्य किसी को प्रोत्साहित नहीं कर पाता था तो सच बात कह देनी चाहिए)। उसके साथ उसकी तेईस वर्ष की बेटी लीसा, एक रूसी देहाती रमणी, और उसका भाई–हमारा परिचित वह घुड़-सवार–जिसने प्रसन्नता पूर्वक अपनी थोड़ी सी सारी सम्पत्ति उड़ा डाली थी और वृद्धावस्था में अपनी बहन अन्ना फेदोरोव्ना के यहाँ आकर आश्रय लिया था–रहते थे। उसके बाल बिल्कुल सफेद हो गए थे, ऊपरी होंठ नीचे लटक आया था और उसके ऊपर वाली मूंछों को अब भी सावधानी के साथ खिजाब लगा कर काला बनाया जाता था। उसकी पीठ झुक गई थी और सिर्फ उसके माथे और गालों पर ही झुर्रियाँ नहीं पड़ी थीं बल्कि नाक और गर्दन भी झुर्रियों से भर रही

थीं परन्तु फिर भी उसकी शिथिल टेढ़ी टांगों की चाल में एक घुड़-सवार के से तौर तरीके अब भी दिखाई पड़ते थे।

पूरा परिवार उस पुराने मकान की छोटी सी बैठक में बैठा हुआ था। बैठक के खुले दरवाजे में होकर बरामदे में जाने का सारा रास्ता था और खुली खिड़कियों में होकर तारे की सी शकल का पुराना बाग दिखाई देता था जिसमें नीबू के पेड़ खड़े हुए थे। श्वेतकेशा अन्ना फेदोरोव्ना, बकायन के रङ्ग की जाकेट पहने, एक सोफे पर बैठी महागनी लकड़ी की बनी एक गोल मेज पर ताश जमा रही थी। उसका बुड्ढा भाई साफ सफेद पतलून और नीला कोट पहने खिड़की पर बैठा एक लकड़ी के काँटे से सफेद रुई का धागा बना रहा था। यह समय बिताने का एक ऐसा साधन था जिसे उसकी भानजी ने उसे सिखाया था और जो उसे बहुत पसन्द था क्यों कि वह अब और कोई काम नहीं कर पाता था और उसकी आँखें अपने प्रिय कार्य समाचार पत्र पढ़ने के लिए बहुत कमजोर हो चुकी थीं। पिमोच्का, अन्ना फेदोरोव्ना की एक रक्षिता बालिका उसके पास बैठी हुई सबक याद कर रही थी— लीसा उसकी सहायता करती जाती थी और साथ ही अपने मामा के लिए काठ की सलाइयों से भेड़ की ऊन के मोजे बुनती जा रही थी। अस्तांगत सूर्य की अन्तिम किरणें, इस समय सदैव की भांति नीबू के कुञ्ज में से चमक रही थीं और सबसे दूर वाली खिड़की और उसके पास वाले टांड पर तिरछी पड़ रही थीं। बाग में और कमरे में इतनी शान्ति थी कि खिड़की के बाहर उड़ती हुई गौरैया के पङ्खों की तेज फटफटाहट और अन्ना फेदोरोव्ना की हल्की निश्वासों और उस वृद्ध द्वारा पैर फैलाने के समय की हुई कराहट की ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती थी।

"ये कैसे चले जाते हैं? मुझे बताओ लीसा! मैं हमेशा भूल जाती हूं," 'पेशेन्स' नामक खेल में ताशों को रखने में पूरी तरह अस मर्थ होकर अन्ना फेदोरोव्ना ने कहा।

अपने काम को बिना रोके हुए लीसा अपनी माँ के पास गई और पत्तों पर निगाह डाली।

"आह! तुमने तो सब गड़बड़ कर दिया, प्यारी माँ!" उन्हें पुनः ठीक तरह से लगाते हुए वह बोली। "इन्हें रखने का तरीका यह है। और जिस बात पर तुम अपना भाग्य आजमाने जा रही हो जल्दी ही सत्य प्रमाणित हो जायगा।" उसने चुपचाप एक पत्ता हटाते हुए आगे कहा।

"आह ठीक है, तुम हमेशा मुझे धोखा देती हो और कहती हो कि ठीक हो गया।"

"नहीं, सचमुच, इसका मतलब है···तुम्हें सफलता मिलेगी। यह बन गया।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है, चालाक बिल्ली! मगर हमारे चाय पीने का समय नहीं हुआ क्या?"

मैंने समोवार जलाने की आज्ञा दे दी है। मैं अभी जाकर देखती हूँ। तुम चाय यहीं पीना चाहती हो?···पिमोच्का जल्दी अपना सबक खत्म करो और चलो, दौड़ कर काम करें।"

और लीसा दरवाजे पर गई।

"लीसा, लिज्जी!" अपने कांटे पर गौर से देखते हुए उसके मामा ने पुकारा। "मेरा ख्याल है कि मैं एक फन्दा फिर भूल गया—इसे आकर ठीक कर दो, मेरी अच्छी सी बिटिया।"

"अभी आई, अभी आई! पहले चीनी का एक टुकड़ा तो तोड़ लूँ।"

और सचमुच तीन मिनट बाद वह वापस दौड़ी, अपने मामा के पास पहुँची और उसके कान में चिकोटी काटते हुए हंसकर बोली: "यह फन्दा भूल जाने की सजा है; और तुमने अपना काम पूरा नहीं किया है!"

"अच्छा, अच्छा, कोई बात नहीं, फिकर मत करो। इसे ठीक कर दो- कोई छोटी सी गांठ या न जाने क्या अटक गया है।"

लीसा ने काँटा उठाया, अपने गुलूबन्द में से एक पिन निकाली- जो दरवाजे में से आती हुई हवा से थोड़ा सा खुल गया—और पिन से किसी तरह फन्दा उठाकर उसमें दो गांठें लगाईं और कांटा मामा को लौटा दिया।

"अब मुझे इसके बदले में एक चुम्बन दो," अपना गुलाबी गाल उसकी तरफ करते हुए और पिन गुलूबन्द में लगाकर उसने कहा। "आज तुम्हें चाय के साथ 'रम' पीनी पड़ेगी। मालूम है, आज शुक्रवार है।"

और वह फिर चाय के कमरे में चली गई।

"मामा, यहाँ आओ, देखो 'हुसार' आ रहे हैं!" उसने वहाँ से अपनी साफ आवाज में पुकारा।

अन्ना फेदोरोव्ना अपने भाई के साथ चाय वाले कमरे में जिसकी खिड़कियाँ गाँव की तरफ खुलती थीं, हुसारों को देखने के लिए आई। खिड़कियों में से बहुत कम दिखाई पड़ रहा था। धूल के बादलों में सिर्फ एक झुंड सा चला आ रहा था।

"यह दुख की बात है, बहन, कि हमारे पास इतनी कम जगह है और एक तरफ का हिस्सा अभी अधूरा पड़ा है," बुड्ढे ने अन्ना फेदो-रोव्ना से कहा। "हम अफसरों को बुला सकते थे। हुसार अफसर इतने अच्छे और प्रसन्न युवक होते हैं, तुम जानती ही हो। उनसे बातचीत करना बड़ा अच्छा रहता।"

"हाँ, बेशक, मुझे बड़ी खुशी होती भइया, मगर तुम खुद ही जानते हो कि हमारे पास जगह नहीं है। यहाँ मेरा सोने का कमरा, लीसा का कमरा, बैठक और तुम्हारा यह कमरा, कुल इतनी ही तो जगह है। सचमुच अब हम उन्हें कहाँ ठहरा सकते हैं? गांव के मुखिया की झोंपड़ी

उनके लिए साफ की गई है। माइकेल मेत्वीत्र कहता है कि अब वह बिल्कुल साफ है।"

"और लिज्जी, हम इन लोगों में से तुम्हारे लिए एक दूल्हा भी चुन लेते-एक सुन्दर हुसार।"

"मैं 'हुसार' नहीं चाहती। मैं एक उहलान को ज्यादा पसन्द करूँगी। तुम भी तो उहलानों में थे, मामा?......मैं इन हुसारों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। कहा जाता है कि ये सब उद्दंड होते हैं।" और लीसा थोड़ी सी शर्माई मगर फिर अपनी सुरीली हंसी में हंस पड़ी।

"यह देखो उस्त्युस्का भागी आ रही है; उससे पूछना चाहिए कि उसने क्या देखा," उसने आगे कहा।

अन्ना फेदोरोव्ना ने उसे उस्त्युस्का को बुलाने के लिए कहा।

"तुमसे अपना काम नहीं किया जाता, तुम्हें तो सिपाहियों को दौड़ कर देखने की जल्दी पड़ जाती है," अन्ना फेदोरोव्ना बोली, "खैर, अफसर लोग कहाँ ठहरे हैं?"

"इरोमकिन के मकान में, मालकिन। दो हैं बहुत सुन्दर। उनका कहना है कि उनमें से एक काउन्ट है।"

"और उसका नाम क्या है?"

"काजारोव या तुरवीनोव...अफसोस - मैं भूल गई।"

"कैसी मूर्ख है; कोई बात ही नहीं बता पाती। तुम्हें कम से कम नाम तो मालूम कर लेना चाहिए था।"

"अच्छा, मैं अभी दौड़ कर वापस जाती हूँ।"

"हाँ, हाँ, मैं जानती हूँ कि इस तरह के काम में तू बहुत तेज है।...नहीं, देनियल को जाने दो। भइया, उससे कहो कि जाए और अफसरों से पूछे कि उन्हें किसी चीज की जरूरत तो नहीं है। आखिरकार उनके साथ नम्रता का व्यवहार तो करना ही चाहिए। कहना कि मालकिन ने पूछने भेजा है।"

बुड्ढे बुढ़िया फिर चाय पीने वाले कमरे में जा बैठे और लीसा नौकरों के कमरे की तरफ गई कि टूटी हुई चीनी को किसी डिब्बे में रख दे। उस्त्युस्का वहाँ खड़ी हुई हुसारों के बारे में बता रही थी।

"प्यारी मिस, वह काउन्ट कितना सुन्दर है!" वह बोल उठी। "काली भौहों वाले देवदूत की तरह। अगर ऐसा ही तुम्हारा दूल्हा होता तो बड़ा सुन्दर जोड़ा बनता।"

दूसरी नौकरानियाँ स्वीकृति सूचक मुद्रा में मुस्कराईं। बुढ़िया नर्स ने खिड़की में बैठे बुनते हुए एक गहरी सांस ली और सांस खींचते हुए प्रार्थना भी की।

"तो तुम्हें हुसार बहुत पसन्द आए?" लीसा बोली। "और जो कुछ तुमने देखा उसे बहुत अच्छी तरह से सुनाने में तुम माहिर हो। उस्त्युस्का! जाओ और हुसारों को कुछ खट्टी चीज पिलाने के लिए नीबू का रस ले आओ।"

और लीसा हंसती हुई चीनी का बर्तन हाथ में लिए बाहर चली गई।

"सचमुच मुझे यह देखना चाहिये कि वह हुसार कैसा है," उसने सोचा, "गेहुँआ या गोरा? और मैं सोचती हूँ कि हमारा परिचय प्राप्त कर उसे भी प्रसन्नता होगी...और अगर वह चला जाता है तो कभी भी नहीं जान सकेगा कि मैं यहाँ थी और उसके विषय में मैंने सोचा था। और ऐसे कितने अब तक यहां से गुजर चुके हैं? मामा और उस्त्युस्का के अतिरिक्त यहाँ मुझे और कौन देखता है? अपने बाल चाहे जैसे बनाऊँ, चाहे जैसी आस्तीनें पहनूँ, कोई भी मेरी तरफ प्रसन्नता की दृष्टि से देखने वाला नहीं," उसने एक गहरी सांस लेते हुए देखा जैसे ही उसकी निगाह अपनी भरी हुई गोल मटोल बांह पर पड़ी। "मेरा ख्याल है कि वह लम्बा है, उसकी आँखें बड़ी हैं और निश्चित रूप से छोटी काली मूछें हैं...एक मैं हूँ, बाईस साल से ज्यादा

की, और चेचकरन चेहरे वाले इवान इपातिच के अलावा और किसी ने भी मुझसे प्रेम प्रदर्शित नहीं किया; और चार साल पहले तो मैं और भी अधिक सुन्दर थी...इस तरह मेरी जवानी बिना किसी को तरङ्गित किए ऐसे ही बीत गई। ओह, मैं देहाती गरीब लड़की जो हूँ।"

चाय बनाने के लिए पुकारती हुई उसकी माँ की आवाज ने उस देहाती सुन्दरी को उसकी क्षणिक तन्मयता से जगा दिया। उसने चौंक कर सिर ऊपर उठाया और चाय बनाने चली गई।

कभी कभी अचानक घटित हुई घटनाओं के बड़े अच्छे परिणाम निकलते हैं और कोई जितना ही अधिक प्रयत्न करता है परिणाम उतना ही खराब होता है। देहात में लोग अपने बच्चों को बहुत कम पढ़ाते लिखाते हैं और इसलिए आमतौर से विना जाने ही उन्हें बहुत सुन्दर शिक्षा देते हैं। लीसा के सम्बन्ध में तो विशेष रूप से यही हुआ था। अन्ना फेदोरोव्ना ने अपनी सीमित बुद्धि और आलसी स्वभाव के कारण उसे कोई शिक्षा नहीं दी–उसे न सङ्गीत की शिक्षा दी और न 'अत्यधिक लाभदायक' फ्रांसीसी भाषा ही सिखाई। परन्तु उसके स्वर्गीय पति द्वारा अकस्मात एक स्वस्थ, सुन्दर बच्ची के रूप में पैदा होने के कारण उसने बच्ची को दो नर्सों के हवाले कर दिया, उसे दूध पिलाया, सूती छींट की फ्राकें और बकरी के चमड़े के जूते पहनाए, जंगली बेर और कुक्कुरमुत्ते इकट्ठे करने के लिए उसे बाहर घूमने भेजा। उसे पढ़ना, लिखना और हिसाब सिखाने के लिए मठ के एक विद्यार्थी को ट्यूशन पर लगाया और जब सोलह साल बीत गये तो उसने धीरे धीरे लीसा के रूप में एक मित्र, एक अत्यन्त दयालु, सदैव प्रसन्न रहने वाली आत्मा और एक कुशल गृह प्रबन्धिका पायी। अन्ना फेदोरोव्ना दयालु होने के कारण हमेशा कुछ बच्चों को–किसानों के बच्चों को या अनाथों को–पालती रहती थी। जब लीसा दस वर्ष की थी तभी से उसने उसकी देख भाल करनी शुरू कर दी थी। उन्हें पढ़ाती लिखाती कपड़े पहनाती, चर्च ले जाती और

जब वे बहुत ऊधम मचाते तो उन्हें रोकती। बाद में वृद्धावस्था का शिकार, उसका मामा, जिसकी बच्चों की तरह देखभाल करनी पड़ती थी, वहाँ आया। फिर नौकर और किसान इस युवती के पास अपनी प्रार्थनाएं और रोगों की शिकायतें लेकर आने लगे जिन्हें बाद में वह पीपरमेन्ट, एल्डरबेरी और कपूर मिली हुई स्प्रिट द्वारा ठीक करने लगी। फिर घर का पूरा प्रबन्ध था जो अपने आप ही उसके कन्धों पर आ पड़ा। तब उसके हृदय में प्रेम की एक अतृप्त आकांक्षा उत्पन्न हुई और जो प्रकृति और धर्म में अपना आश्रय ढूंढ़ने लगी। और लीसा अचानक एक फुर्तीली, अच्छे स्वभाव वाली, प्रसन्न, आत्म निर्भर, पवित्र और गम्भीर रूप से धार्मिक प्रवृत्ति की नारी बन गई। यह सत्य है कि जब वह चर्च में अपनी पड़ोसियों को क–नामक कस्बे से खरीदे हुए फैशनेबुल टोप लगाए अपने पास खड़े देखती तो उसमें झूठा अभिमान जाग्रत हो उठता और कभी कभी वह अपनी वृद्धा माँ की सनकों और बड़बड़ाने से दुखी होकर आँसू बहाने लगती। वह प्रेम के सपने भी देखती–बहुत ही भद्दे और कभी कभी उजड्ड तरीके से परन्तु ये स्वप्न उसकी व्यस्तता, जो उसके लिए एक आवश्यकता बन गई थी, में छिन्न भिन्न हो जाते थे और बाईस वर्ष की अवस्था वाली इस शारीरिक और चारित्रिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ कुमारी की शुद्ध और शान्त आत्मा में पश्चाताप की एक भी टीस या धब्बा नहीं था। लीसा औसत कद की, पतली होने के स्थान पर मोटी ताजी लड़की थी। उसकी आँखें जैतूनी रंग की–और ज्यादा बड़ी नहीं थीं। उसकी निचली पलकों पर एक हल्की सी छाया रहती थी और उसके केश हल्के भूरे रंग से थे। वह तनिक हिलती हुई लम्बे लम्बे क़दम रख कर चलती थी––डगमगाती हुई हंसिनी की तरह, जैसी कहावत है। उसका चेहरा, जब वह व्यस्त रहती और किसी विशेष कारणवश उत्तेजित नहीं होती थी, तो जो कोई उसकी तरफ देखता उससे यह कहता प्रतीत होता : "संसार में उस समय जीवित रहने में

आनन्द आता है जब कोई प्यार करने वाला हो और आत्मा शुद्ध हो।" क्रोध, व्यग्रता, शंका या दुख के क्षणों में भी उसके व्यक्तित्व के अतिरिक्त उसकी आँसू भरी आँखों, उसकी गांठें पड़ी हुई बांयी भौंह और कसे हुए होंठों द्वारा, बुद्धि से अछूती एक कोमल दृढ़ आत्मा के दर्शन होते रहते थे। इस भावना के दर्शन उसके गालों में पड़ने वाले गढ़ों में, उसके मुँह के कोनों में और जीवन में प्रसन्नता और मुस्कराहट के अभ्यस्त चमकते हुए नेत्रों में होते थे।

जब वह स्क्वाड्रन मोरोज़ोव्का गाँव में घुसा तो हवा अब भी गर्म थी हालांकि सूरज डूब रहा था। उनके सामने, गाँव की धूल भरी सड़क पर अपने झुंड से बिछुड़ी हुई एक चितकबरी गाय रुक रुक कर रंभाती हुई दौड़ी चली आ रही थी परन्तु उसे इस बात का ख्याल कभी भी नहीं हुआ कि उसे सिर्फ यही करना है कि एक तरफ मुड़ जाय। किसान वृद्ध, मनुष्य, बच्चे, औरतें और जमींदार के घर के नौकर सड़क के दोनों तरफ झुंड बांध कर खड़े हो गए और रह रह कर खुर बजाते और हिनहिनाते हुए घोड़ों को मोड़ते हुए, हुसारों को धूल के बादलों में से गुजरते हुए देखने लगे। स्क्वाड्रन के दाहिनी तरफ दो अफसर थे जो लापरवाही के साथ अपने सुन्दर काले घोड़ों पर सवार थे। इनमें से एक कमान्डर काउन्ट तुरबिन था और दूसरा पोलोजोव नामक एक बिल्कुल नई उमर का कैडेट था जिसकी अभी पदोन्नति हुई थी।

सब से अच्छी झोंपड़ी में से सफेद लिनिन की जाकेट पहने हुए एक 'हुसार' बाहर निकला, अपनी टोपी उठाई और अफसरों के पास गया।

"हमारे लिए क्वार्टर कहां निश्चित किए हैं?"

"आपके लिए सरकार?" अपने पूरे शरीर को झटका देते हुए क्वार्टर-मास्टर-सार्जेन्ट ने उत्तर दिया, "गांव के मुखिया की झोंपड़ी

साफ कर दी गई है। मैं जमींदार के घर ठहरना चाहता था परन्तु वे कहते हैं कि वहाँ जगह नहीं है। मालकिन बड़ी झगड़ालू है।"

"अच्छी बात है!" घोड़े पर से उतर कर काउन्ट ने कहा और जैसे ही वह मुखिया की झोंपड़ी पर पहुंचा उसने अपने पैर फैलाए। "और मेरी फिटन आ गई?"

"आ रही है सरकार!" क्वार्टर मास्टर सार्जेन्ट ने दरवाजे से दीख पड़ने वाली एक चमड़े से मढ़ी हुई गाड़ी की तरफ इशारा करते हुए कहा और झोंपड़ी के दरवाजे की तरफ दौड़ा जहाँ उन अफसरों को देखने के लिए आए हुए किसानों की भीड़ जमा हो रही थी। उसने जल्दी में एक बुढ़िया को धक्का भी दे दिया जैसे ही उसने अभी साफ की हुई झोंपड़ी का दरवाजा तेजी से खोला और काउन्ट को मार्ग देने के लिए एक तरफ हट कर खड़ा हो गया।

झोंपड़ी काफी बड़ी और लम्बी चौड़ी तो थी परन्तु पूरी तरह साफ नहीं थी। जर्मन खानसामा एक संभ्रान्त व्यक्ति के से कपड़े पहने हुए, भीतर खड़ा सूटकेस में से कपड़े छाँट रहा था जो उसने एक लोहे के पलंग पर बिस्तर लगा कर उसके ऊपर रखा था।

"छिः छिः, कैसा गन्दा घर है!" काउन्ट कुढ़ कर बोला, "तुम्हें किसी भले आदमी के यहाँ इससे अच्छी जगह नहीं मिली, दयादेन्को?"

"अगर सरकार का हुक्म हो तो मैं जमींदार के यहाँ कोशिश करूँ" क्वार्टर मास्टर सार्जेन्ट ने जबाब दिया, "मगर वह भी विशेष अच्छा नहीं है—झोंपड़ी से ज्यादा अच्छा दिखाई नहीं देता।"

"अब रहने दो, जाओ।"

काउन्ट बिस्तर पर लेट गया और हाथ सिर के नीचे रख लिए।

"जोहन!" उसने खानसामे को पुकारा, "तुमने बीच में फिर एक गट्टर सा बना दिया है। क्या बात है कि तुमसे बिस्तर भी ठीक से नहीं बिछाया जाता।"

जोहन उसे ठीक करने के लिए आया।

"नहीं, अभी रहने दो। लेकिन मेरा ड्रेसिंग गाऊन कहाँ है?" काउन्ट ने असन्तुष्ट स्वर में कहा। खानसामे ने उसे ड्रेसिंग गाऊन दे दिया। पहनने से पहले काउन्ट ने उसके सामने के हिस्से को गौर से देखा। "मैं यही सोच रहा था। यह दाग अभी तक साफ नहीं हुआ। कोई तुमसे भी खराब नौकर हो सकता है?" खानसामे के हाथ से ड्रेसिंग गाऊन छीन कर उसे पहनते हुए उसने आगे कहा। "यह बताओ कि तुम यह जान बूझ कर करते हो?...चाय तैयार है?"

"मुझे समय नहीं मिला था," जोहन ने कहा।

"मूर्ख!"

इसके बाद काउन्ट ने उस फ्रांसीसी उपन्यास को उठा लिया जो उसके लिए यथास्थान रख दिया गया था और कुछ देर तक चुपचाप पढ़ता रहा। जोहन बाहर समोवार तैयार करने चला गया। काउन्ट स्पष्ट रूप से क्रुद्ध मुद्रा में था सम्भवतः इसका कारण यात्रा की थकान, धूल भरा चेहरा, कसे कसाये कपड़े और भूखा पेट आदि बातें थीं।

"जोहन!" वह फिर चिल्लाया," मुझे उन दस रूबलों का हिसाब दो। तुमने शहर में क्या खरीदा था?"

उसने दिए हुए हिसाब को देखा और खरीदी हुई चीजों की मँहगाई के प्रति असन्तोष व्यक्त किया।

"चाय के साथ 'रम' देना।"

"मैंने रम नहीं खरीदी थी," जोहन ने कहा।

"बहुत अच्छे!...मैंने 'रम' खरीदने के लिए तुमसे कितनी बार कहा है?"

"मेरे पास पूरे पैसे नहीं थे।"

"तो पोलोजोव ने क्यों नहीं खरीदी? तुम्हें उसके नौकर से थोड़ी सी ले लेनी चाहिए थी।"

"कोरेनेट पोलोज़ोव से ? मुझे नहीं मालूम। उसने चाय और चीनी खरीदी थी।"

"मूर्ख !...भाग जाओ !...सिर्फ तुम्हीं एक आदमी हो जो यह जानते हो कि मुझे गुस्सा कैसे दिलाया जाता है।...तुम जानते हो कि मुहिम के सफर में मैं चाय के साथ हमेशा 'रम' पीता हूँ।"

"स्टाफ की तरफ से आपके लिए ये दो खत आए हैं," खान-सामा ने कहा।

काउन्ट ने ख़त खोले और बिना उठे हुए ही उन्हें पढ़ना शुरू कर दिया। कोर्नेट स्क्वाड्रन का प्रबन्ध कर प्रसन्न मुद्रा से भीतर आया।

"क्यों, क्या हाल है, तुरबिन ? यहाँ बहुत अच्छा लगता है। मगर मैं बहुत थक गया हूँ। बहुत गर्मी थी।"

"बहुत खूबसूरत !...गन्दी बदबूदार झोंपड़ी और हुजूर की कृपा से चाय के साथ रम भी नहीं मिल रही ; तुम्हारे उस काठ के उल्लू ने भी नहीं खरीदी और न इसने। तुम्हें कम से कम कह तो देना चाहिए था।"

और उसने अपना खत पढ़ना जारी रखा। जब समाप्त कर चुका तो उसकी गोली बनाई और जमीन पर फेंक दी।

इसी समय गैलरी में कोरनेट अपने अर्दली से फुसफुसाते हुए कह रहा था: "तुमने 'रम' क्यों नहीं खरीदी ? तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे पास काफी पैसे थे।"

"मगर सब चीज हम ही क्यों खरीदें। हालत यह है कि मुझे ही सब चीजों के पैसे देने पड़ते हैं जबकि इसका यह जर्मन पाइप पीने के अलावा और कुछ भी नहीं करता।"

यह स्पष्ट था कि काउन्ट का दूसरा खत खराब नहीं था क्योंकि उसे पढ़ते समय वह मुस्कराया।

"किसका है ?," कमरे में वापस लौट कर चूल्हे के पास कुछ तख्तों पर अपने लिए सोने की जगह बनाते हुए पोलोज़ोव ने पूछा।

"मीना ने भेजा है," उसे खत पकड़ाते हुए काउन्ट ने प्रसन्न होकर कहा। "तुम पढ़ना चाहते हो? वह कितनी मजेदार औरत है! ...सचमुच वह हमारी इन युवती महिलाओं से बहुत अच्छी है... देखो तो सही कि इस खत में कितनी भावनाएं और बुद्धिमत्ता है। सिर्फ एक बात खराब है–वह पैसे मांग रही है।"

"हाँ, यह बुरी बात है," पोलोजोव बोला।

"यह सच है कि मैंने उसे थोड़े से पैसे भेजने का वायदा किया था मगर उसी समय यह मुहिम आ गई, और साथ ही...फिर भी अगर मैं तीन महीने और इस स्क्वाड्रन का कमान्डर रहा तो उसे थोड़े से पैसे भेज दूँगा। सचमुच, वह इसके योग्य है; कितनी आकर्षक है, क्यों है न?" ख़त पढ़ते हुए पोलोजोव के चेहरे को गौर से देखते हुए वह बोला।

"व्याकरण की भयानक अशुद्धियाँ हैं परन्तु सुन्दर लिखा है और यह प्रकट होता है कि वह सचमुच तुम्हें प्यार करती है," कोरनेट ने कहा।

"हूँ...मेरा भी यही ख्याल है! ऐसी ही औरतें सच्चा प्यार करती हैं जब वे एक बार प्यार करना शुरू करती हैं।"

"और दूसरा ख़त किसका था," हाथ वाला खत उसे वापस करते हुए कोरनेट ने पूछा।

"ओह, वह.. एक आदमी ने भेजा है, एक जंगली जानवर ने जिसने जुए में मुझसे कुछ रुपये जीत लिए थे और वह तीसरी बार मुझे इसकी याद दिला रहा है...मैं इस समय तो उसे दूँगा नहीं...एक बेवकूफी से भरा ख़त है!" स्पष्टतः उस घटना की स्मृति से क्षुब्ध होकर काउन्ट बोला।

इसके बाद कुछ देर तक दोनों अफसर खामोश रहे। पोलोजोव, जो स्पष्टतः काउन्ट के प्रभाव में था, रह रह कर काउन्ट के सुन्दर

परन्तु चिन्तित मुख की तरफ देख लेता था—जो निगाह जमाए खिड़की से बाहर देख रहा था। वह दुबारा बातचीत शुरू करने का साहस न कर चुपचाप चाय पीता रहा।

"परन्तु, तुम जानते हो कि यह बहुत ही अच्छा रहेगा," सिर को एक झटका देकर पोलोजोव की तरफ करवट लेते हुए काउन्ट बोला, "मान लो कि इस वर्ष नौकरी की लम्बाई के लिहाज़ से हम लोगों की पदोन्नति हुई और साथ ही युद्ध में भाग लिया तो मैं अपने साथी कप्तानों से आगे निकल जाऊँगा।"

वार्तालाप अभी उसी विषय पर चल रहा था और वे लोग चाय का दूसरा दौर पी रहे थे जब कि बुड्ढा देनियल भीतर आया और उसने अन्ना फेदोरोव्ना का सन्देश दिया।

"और मुझसे यह भी कहा गया है कि मैं यह पूछ लूँ कि क्या आप काउन्ट फेदोर इवानिच तुरबिन के पुत्र हैं?" देनियल ने आगे अपनी तरफ से जोड़ते हुए कहा। उसे काउन्ट का नाम मालूम हो गया था और उसे स्वर्गीय काउन्ट के क—नामक कस्बे के उस क्षणिक प्रवास की घटना याद हो आई थी। "हमारी मालकिन, अन्ना फेदोरोव्ना उनसे अच्छी तरह परिचित थीं।"

"वे मेरे पिता थे। और अपनी मालकिन से कहना कि मैं उनका बहुत शुक्रगुजार हूँ। हमें किसी चीज की जरूरत नहीं है मगर कहना कि हम लोगों ने तुमसे यह पूछने के लिए कहा कि क्या हमें कहीं दूसरी जगह और साफ कमरा नहीं मिल सकता—जमींदार की कोठी में या और कहीं।"

"क्यों, तुमने यह क्यों कहा?" पोलोजोव ने पूछा जब देनियल चला गया। "इससे क्या होता है? सिर्फ एक रात की ही तो बात है—इससे क्या बिगड़ता है? और इससे उन्हें परेशानी होगी।"

"क्या ख्याल है! मेरा विचार है कि हमारे हिस्से में ये धुंए से

भरी झोंपड़ी ही पड़ी हैं।...यह बिल्कुल साफ है कि तुम व्यवहारिक मनुष्य नहीं हो। अवसर मिले तो हमें उससे लाभ क्यों नहीं उठाना चाहिए और कम से कम एक रात को मनुष्यों की तरह रह लेना चाहिए और इसके अतिरिक्त हमें पाकर वे लोग भी प्रसन्न होंगे...सबसे खराब बात तो यह है कि अगर यह महिला सचमुच पिता से परिचित निकली तो, "काउन्ट ने मुस्कराते हुए कहा जिससे उसके सफेद दाँत चमक उठे।" अपने स्वर्गीय पापा के कारण मुझे हमेशा शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। हमेशा उनके बारे में कोई बदनामी वाली घटना या उनके द्वारा छोड़े गये कर्ज की बात सुनाई पड़ती है। यही कारण है कि मैं पिता के इन परिचितों से मिलने से नफरत करता हूँ। फिर भी उस जमाने की यही रीति थी," उसने गम्भीर होते हुए आगे कहा।

"मैंने तुम्हें कभी बताया था," पोलोजोव बोला, "कि एक बार मेरी मुलाकात इलिन नामक एक उहलान ब्रिगेड-कमान्डर से हुई थी? वह तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। वह तुम्हारे पिता को बहुत चाहता है।"

"मुझे यकीन है कि यह इलिन बेकार का आदमी है। लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि ये भले आदमी, जो मेरा परिचय प्राप्त करने के लिए विश्वास दिलाते हैं कि वे मेरे पिता को जानते थे, अत्यन्त प्रसन्नता का सा प्रदर्शन करते हुए मेरे पिता के विषय में ऐसी कहानियाँ सुनाते हैं कि उन्हें सुनकर मुझे शर्म आती है। यह सच है–मैं प्रवंचना नहीं करता परन्तु स्थिति पर भावुकता से ऊपर उठकर विचार करो– कि उनका स्वभाव बड़ा ही उत्साही था और कभी कभी वे ऐसे काम कर बैठते थे जो खराब होते थे। फिर भी वे ऐसे ही दिन थे। हमारे युग में वे एक सफल व्यक्ति साबित हो सकते थे क्योंकि अगर उनके साथ न्याय किया जाय तो यही कहना पड़ेगा कि उनमें असाधारण विशेषताएं थीं।"

पन्द्रह मिनट बाद वह नौकर अपनी मालकिन की इस प्रार्थना

के साथ वापस लौटा कि अगर वे लोग उसके यहाँ ही रात बिताएं तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता होगी।

११.

यह सुनकर कि वह हुसार काउन्ट फेदोर तुरबिन का पुत्र है, अन्ना फेदोरोव्ना बुरी तरह व्याकुल हो उठी।

"ओह, मेरे भगवान! प्यारा बच्चा!...देनियल, दोड़ कर जा और कह कि तेरी मालकिन उन्हें घर बुला रही है!" वह कूदने लगी और तेज कदम रखती हुई नौकरों के कमरे की तरफ चली। "लिज्जी! उस्युस्का!...तुम्हारा कमरा फौरन ठीक हो जाना चाहिए। लीसा, तुम अपने मामा के कमरे में जा सकती हो। और तुम, भइया, तुम्हें बैठक में सोने में कोई आपत्ति तो नहीं होगी, क्यों होगी? सिर्फ एक रात की बात है।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं, बहन। मैं फर्श पर सो सकता हूँ।"

"वह सुन्दर होना चाहिए अगर वह अपने बाप की तरह है तो सिर्फ उसे एक बार देखना चाहती हूँ, प्यारा बच्चा! तुम उसे अच्छी तरह देखना, लीसा। बाप सुन्दर था...तुम यह मेज़ कहाँ लिए जा रहे हो? इसे यहीं रहने दो," व्यस्तता के साथ अन्ना फेदोरोव्ना ने कहा। "दो बिस्तर लाओ—एक फोरमैन के यहाँ ले आओ और बिल्लौर की मोमबत्तियाँ रखने की दीवट लाओ, वही जो भइया ने मेरे जन्मदिन पर मुझे दी थीं। वे टांड़ पर रखी हैं और उसमें चर्बी वाली मोमबत्ती लगा दो।"

आखिरकार सब तैयारियाँ पूरी हो गईं। अपनी माँ के द्वारा हस्तक्षेप किए जाने पर भी लीसा ने दोनों अफसरों के लिए कमरा अपने ढङ्ग से ही सजाया। उसने बिल्कुल साफ सुगन्धित चादरें निकालीं, बिस्तर लगाये, पास ही एक छोटी सी मेज पर मोमबत्तियाँ और पानी की एक बोतल रखी, नौकरों के कमरे में सुगन्धित कागज लगाए और

अपने छोटे से बिस्तर को मामा के कमरे में उठा ले गई। अन्ना फेदोरोव्ना थोड़ी सी शान्त हुई, अपनी जगह जाकर बैठ गई और फिर ताश उठा लिये और उन्हें मेज पर लगाने की जगह अपनी मोटी कुहनी मेज पर टेकी और विचार मग्न हो गई।

"ओह, समय, समय कितनी जल्दी बीत जाता है!" वह अपने आप बुदबुदाई। "कितने दिन बीत गए? ऐसा लगता है कि वह मेरे सामने खड़ा है। आह, वह उजड्ड आदमी था!..." और उसकी आँखों में आँसू भर आए। "और अब यह लिज्जी है...परन्तु फिर भी, वह वैसी नहीं है जैसी कि मैं उसकी उमर में थी—वह एक अच्छी लड़की है लेकिन वैसी नहीं है..."

"लीसा, तुम शाम को वह मसलिन वाली पोशाक पहनना।"

"क्यों, माँ, तुम उन्हें हम लोगों को देखने के लिए तो यहाँ बुला नहीं रही हो? अच्छा हो कि न बुलाओ" लीसा ने, अफसरों से मिलने की अपनी उत्कंठा को शमन करने में असमर्थ होते हुए कहा "अच्छा हो कि न बुलाओ, माँ।"

और सचमुच उन्हें देखने की उसकी इच्छा उस भय से कम तीव्र थी जिस व्याकुलता पूर्ण आनन्द की कल्पना उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

हो सकता है कि वे लोग खुद ही हम लोगों का परिचय प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करें, लिज्जी!" उसके बालों को थपथपाते हुए और यह सोचते हुए अन्ना फेदोरोव्ना बोली—"नहीं, उसके बाल वैसे नहीं हैं जैसे कि मेरे उसकी उमर में थे।...ओह, लिज्जी, मैं कितना चाहती हूँ कि तुम..." और वह सचमुच अपनी बेटी के लिए अत्यन्त व्याकुलता पूर्वक किसी वस्तु की आकांक्षा कर उठी। परन्तु वह उस काउन्ट के साथ उसके विवाह की कल्पना नहीं कर सकी, और न वह इस बात की इच्छा कर सकी कि उसके काउन्ट के साथ वही सम्बन्ध हों

जो उसके बाप के साथ स्वयं उसके थे। परन्तु फिर भी वह बिलकुल उसी तरह की इच्छा से उद्वेलित हो उठी। सम्भव है कि वह अपनी बेटी की आत्मा में भी उसी भावना को देखने के लिए व्याकुल हो उठी हो जिसका अनुभव उसने उसके लिए किया था जो मर चुका था।

वह वृद्ध अश्वारोही भी काउन्ट के आगमन से कुछ सीमा तक उद्वेलित हो उठा था। उसने स्वयं को अपने कमरे में बन्द कर लिया और पन्द्रह मिनट बाद एक हंगरी फैशन की जाकेट और हल्के नीले रंग की पतलून पहने हुए बाहर निकला और उस लड़की के से आनन्दपूर्ण लज्जालु भाव से, कमरे में अभ्यागतों का स्वागत करने के लिए आया, जब वह जीवन में पहली बार नृत्य की पोशाक पहनती है।

"मैं आजकल के हुसारों को देखना चाहता हूँ, बहन! स्वर्गीय काउन्ट सचमुच एक सच्चा हुसार था। मैं देखूँगा, मैं देखूँगा!"

अफसर लोग इस समय तक, पिछले प्रवेश द्वार से, उनके लिए निश्चित किए गए कमरे में पहुँच चुके थे।

"यह देखो! उस कंकड़ों से भरी हुई झोंपड़ी से क्या यह स्थान अच्छा नहीं है?" काउन्ट ने जिस हालत में वह था, धूल भरे बूट पहने हुए, उसी हालत में बिस्तर पर, जो उसके लिए तैयार किया गया था, लेटते हुए कहा।

"बेशक यह अच्छा है; परन्तु फिर भी, मालकिन का अहसानमन्द होना···"

"ओह, क्या वाहियात बात करते हो! हरेक को हर मामले में व्यावहारिक बनना चाहिए। वे लोग बहुत खुश हैं, मुझे यकीन है··· क्यों, सुन रहे हो।" वह चिल्लाया, "इस खिड़की पर डालने के लिए कोई कपड़ा लाओ वर्ना रात में हवा के झोंके आएंगे।"

इसी समय बुड्ढा अफसरों का परिचय प्राप्त करने के लिए भीतर आया। हालांकि उसने यह बात तनिक शर्माते हुए कही मगर वह यह कहना नहीं भूला कि वह और स्वर्गीय काउन्ट साथी रहे थे, कि

काउन्ट उसे बहुत पसन्द करता था और उसने यह भी बताया कि काउन्ट ने कई बार उसकी मदद की थी। उसने किन अहसानों का जिक्र किया ? क्या इस बात का कि काउन्ट ने उससे उधार लिए हुए सौ रूबल नहीं लौटाए थे, या उसे बरफ के ढेर में फेंक दिया था, या उसे गालियाँ दी थीं, इन बातों की व्याख्या करना वह पूरी तरह उड़ा गया। इस नए काउन्ट ने उस घुड़सवार के साथ अत्यन्त विनीत व्यवहार किया और रात्रि के आश्रय के लिए धन्यवाद दिया।

"अगर आपको पूरा आराम न मिल सके तो क्षमा करेंगे, काउन्ट," (वह 'योर एक्सेलैन्सी' कहते कहते रुक गया क्योंकि वह महत्वपूर्ण व्यक्तियों से बातें न करने का इतना अभ्यस्त हो चुका था) "मेरी बहन का घर बहुत छोटा है। मगर हम लोग उस पर कोई कपड़ा लटका देंगे और फिर सब ठीक हो जायगा," बुड्ढे ने आगे कहा और इस बहाने से कि उसे पर्दे की तलाश करनी है, परन्तु खास बात यह थी कि वह उन अफसरों का विवरण सुनाने के लिए व्यग्र हो रहा था, उसने सलाम किया और कमरे से बाहर चला आया।

सुन्दरी उस्त्युस्का अपनी मालकिन का शाल खिड़की पर ढकने के लिए भीतर आई और इसके अलावा मालकिन ने उससे यह भी पुछवाया था कि वे लोग चाय पीना पसन्द करेंगे।

मोहक एवं सुन्दर वातावरण ने काउन्ट पर सुन्दर प्रभाव डाला था। वह प्रसन्नता से मुस्कराया, उस्त्युस्का से ऐसा मजाक किया कि वह उसे बदमाश कह उठी, उससे पूछा कि उसकी छोटी मालकिन सुन्दर है और उस्त्युस्का के इस प्रश्न—कि वे लोग चाय पियेंगे—के उत्तर में वह बोला कि वह चाय ला सकती है परन्तु खास बात यह थी कि अभी तक उनका खाना तैयार नहीं हुआ था इसलिए शायद उन्हें वहाँ वोदका और कुछ खाने को मिल जाय और अगर हो तो 'शेरी' नामक शराब भी।

उस नए काउन्ट की विनम्रता पर मामा फूले फिर रहे थे और अफसरों की इस नई पीढ़ी की तारीफों के पुल बांध रहे थे, यह कहते हुए कि वर्तमान पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से बहुत ऊँची है। उनकी कोई तुलना ही नहीं हो सकती।

अन्ना फेदोरोव्ना सहमत नहीं हो सकी—काउन्ट फेदोर इवानिच तुरबिन से कोई भी श्रेष्ठ नहीं हो सकता—और अन्त में वह बहुत नाराज हो उठी और रूखे स्वर में कह उठी, "वह, जिसने आखिरी बार तुम्हें मारा था, भइया, हमेशा सब से अच्छा है।...यह ठीक है कि आजकल के आदमी ज्यादा चालाक हैं परन्तु काउन्ट फेदोर इवानिच 'इकोसेसी' नृत्य इतना सुन्दर करता था और इतना सुन्दर था कि हरेक उसके लिए पागल हो उठता था यद्यपि उसने मेरे अलावा और किसी की भी तरफ ध्यान नहीं दिया था। इसलिए तुमने देखा कि पुराने जमाने में भी अच्छे आदमी थे।"

इसी समय वोदका, नाश्ता और 'शेरी' की मांग आई।

"अब देखो, भइया, तुम कभी ठीक काम नहीं करते, तुम्हें खाने की आज्ञा दे देनी चाहिए थी," अन्ना फेदोरोव्ना ने कहना प्रारम्भ किया, "लीसा, इन्तजाम करो, बेटी।"

लीसा कुक्कुरमुत्तों का अचार और ताजा मक्खन लेने के लिए भंडार घर की तरफ दौड़ी गई और रसोइये को गोश्त के कोफ्ते तैयार करने का हुक्म दिया।

"परन्तु 'शेरी' १ के लिए क्या किया जाय? तुम्हारे पास कुछ बची है, भइया?"

"नहीं बहन, मेरे पास कभी रही ही नहीं।"

"यह कैसे हो सकता है? क्यों, तुम चाय के साथ क्या पीते हो?"

१—शेरी स्पेन देश की सफेद शराब को कहते हैं।

"रम पीता हूँ, अन्ना फेदोरोव्ना ।"

"क्या हमारे लिए यह लज्जा की बात नहीं है ? वही थोड़ी सी दे दो—एक ही नाव है । परन्तु क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि उन्हें यहीं बुला लिया जाय, भइया ? तुम सब जानते हो मेरा ख्याल है कि वे बुरा नहीं मानेंगे ।"

घुड़सवार ने घोषणा की कि वह इस बात की जमानत दे सकता है कि काउन्ट का स्वभाव इतना अच्छा है कि वह इन्कार नहीं करेगा और यह कि वह उन्हें शर्तिया ले आएगा । अन्ना फेदोरोव्ना गई और किसी कारणवश एक रेशमी पोशाक और नई टोपी पहन आई परन्तु लीसा इतनी व्यस्त थी कि उसे अपनी चौड़ी बांहों वाली गुलाबी छींटदार पोशाक बदलने का अवसर ही नहीं मिला । इसके अलावा वह बुरी तरह उत्तेजित हो रही थी । उसने अनुभव किया कि कोई आश्चर्यपूर्ण वस्तु उसकी प्रतीक्षा कर रही थी और जैसे कि उसकी आत्मा पर एक काला बादल नीचा उतर कर छा गया हो । उसे ऐसा लगा कि यह सुन्दर हुसार काउन्ट एक बिल्कुल नया, दुर्बोध परन्तु सुन्दर पुरुष होना चाहिए । उसका चरित्र; उसकी आदतें, उसकी बोली आदि सभी बातें अद्भुत, उसकी जानी हुई प्रत्येक वस्तु से बिल्कुल भिन्न होनी चाहिए । जो कुछ वह सोचता है या कहता है वह बुद्धिमत्ता पूर्ण और ठीक होना चाहिए, जो कुछ वह करता है सम्माननीय होना चाहिए, उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सुन्दर होना चाहिए । उसे इस बारे में कोई शंका नहीं हुई । अगर वह सिर्फ नाश्ता और 'शेरी' ही क मांगाकर शराब और अत्तर से स्नान करना चाहता तो भी उसे आश्चर्य नहीं होता और वह उसे दोष नहीं देती, बल्कि उसे पूर्ण विश्वास हो जाता कि यह ठीक और जरूरी था ।

जब घुड़सवार ने उन्हें अपनी बहन की इच्छा बताई तो काउन्ट फौरन तैयार हो गया । उसने अपने बाल काढ़े, यूनीफॉर्म पहनी और अपना सिगार-केस ले लिला ।

"चलो" उसने पोलोज़ोव से कहा।

"सचमुच न जाना ही अच्छा रहेगा," पोलोज़ोव ने जवाब दिया "हम लोगों की वजह से उनका और ज्यादा खर्च हो जायगा।"

"वाहियात! वे और भी ज्यादा खुश होंगे; इसके अलावा मैंने और बातों का पता चला लिया है: उनके एक सुन्दर लड़की है... चलो!" फ्रांसीसी भाषा में काउन्ट ने कहा।

"अगर आपकी इच्छा हो तो चलिए," घुड़सवार ने फ्रांसीसी भाषा में कहा, सिर्फ उन अफसरों को यह जताने के लिए कि वह भी फ्रांसीसी भाषा जानता है और जो कुछ उन्होंने कहा उसे समझ गया है।

१२.

जब वे लोग कमरे में घुसे तो लीसा उन लोगों की तरफ देखने में भयभीत होने के कारण शर्मा उठी और उसने अपनी आँखें नीची करलीं और चायदानी को भरने का बहाना करती रही। अन्ना फेदोरोव्ना इसके विपरीत जल्दी से उछली, अभिवादन किया और काउन्ट पर आँखें जमाए हुए उससे बातें करने लगी—कभी कहती कि वह अपने बाप से कितना मिलता है, कभी अपनी बेटी का उससे परिचय कराती, कभी उसे मुरब्बा, चाय या घर की बनी हुई मिठाइयाँ देती। पोलोज़ोव की साधारण रूपरेखा के कारण किसी ने भी उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया और वह इस बात से बहुत प्रसन्न था क्योंकि वह सद्व्यवहार की सीमा के भीतर रहते हुए लीसा की तरफ देख रहा था और उसके सौन्दर्य का सूक्ष्म निरीक्षण कर रहा था जिसे देखकर वह आवाक् रह गया था। मामा अपनी बहन और काउन्ट की बातचीत सुनते हुए, अपने होठों पर शब्द लिए उस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था जब वह उन्हें अपने फौजी घुड़सवारी के जीवन की बातें सुनाए। चाय पीते समय काउन्ट ने सिगार सुलगाई और लीसा को खाँसी रोकने में बड़ा

कष्ट होने लगा। वह बड़ा बातूनी और सुन्दर था। पहले तो उसने अन्ना फेदोरोव्ना के धारा प्रवाह व्याख्यान के बीच बीच में अपनी कहानियाँ सुनाना प्रारम्भ किया और अन्त में उसने बोलने का एकाधिकार सा प्राप्त कर लिया। उसके श्रोताओं को एक बात बड़ी अजीब सी लगी; अपनी कहानियों में वह अक्सर ऐसे शब्दों का प्रयोग करता था जो उसके अपने समाज में तो बुरे नहीं समझे जाते थे परन्तु जो यहाँ बड़े भद्दे लगते थे। इन शब्दों ने अन्ना फेदोरोव्ना को कुछ डरा दिया और लीसा के शर्म के मारे कान तक लाल हो उठे। परन्तु काउन्ट ने इस बात को तरफ गौर नहीं किया और अपनी स्वाभाविक विनम्र मुद्रा में बातें करता रहा।

लीसा ने चुपचाप प्याले भर दिए। उसने इन प्यालों को अभ्यागतों के हाथों में न पकड़ा कर उनके पास मेज पर रख दिया क्योंकि वह अभी तक अपनी उत्तेजना को दूर नहीं कर पाई थी। वह चुपचाप खड़ी काउन्ट की बातों को सुनती रही। उसकी कहानियों ने जो ज्यादा प्रभावशाली नहीं थीं और उसके हिचकिचाते हुए बोलने ने धीरे धीरे उसे शान्त कर दिया। उसने काउन्ट से वे अत्यन्त चतुरतापूर्ण बातें नहीं सुन पाई जिनकी कि वह उससे आशा कर रही थी और न उसने उसमें वह शिष्टता ही पाई जिसकी उसने अस्पष्ट रूप से कल्पना कर रखी थी। चाय के तीसरे दौर के समय, जब उसकी शर्माई हुई निगाह काउन्ट की निगाह से एक बार मिल चुकी थी और काउन्ट ने अपनी आँखें नीची नहीं की थीं बल्कि हल्की मुस्कराहट के साथ चुपचाप उसकी तरफ देखता रहा था, तो उसने अपने हृदय में उसके प्रति द्वेष की भावना उठती हुई अनुभव की और शीघ्र ही उसे ज्ञात हो गया कि सिर्फ उसमें कोई भी विशेषता ही नहीं थी बल्कि वह उन लोगों से जिनसे लीसा की मुलाकात हो चुकी थी किसी भी रूप में भिन्न नहीं था। उसने यह भी अनुभव किया कि उससे डरने की कोई जरूरत

नहीं यद्यपि उसके नाखून लम्बे और साफ थे और यह कि उसके सौंदर्य में भी कोई विशेषता नहीं थी। लीसा ने अचानक अपने स्वप्न को भंग कर दिया यद्यपि उसे थोड़ी सी आन्तरिक वेदना अवश्य हुई और वह खामोश हो गई। सिर्फ अल्प भाषी पोलोज़ोव की अपने ऊपर जमी हुई निगाह से वह विचलित हो उठी।

"शायद 'वह' यह नहीं है बल्कि वह है!" उसने सोचा।

१३.

चाय के बाद अन्ना फेदोरोव्ना ने मेहमानों को बैठक में चलने के लिए कहा और फिर अपनी पुरानी जगह पर बैठ गई।

"आप आराम करना पसन्द नहीं करेंगे, काउन्ट?" उसने पूछा और नकारात्मक उत्तर सुन कर कहने लगी: "मैं अपने प्यारे मेहमानों का मनोरञ्जन किस तरह करूँ? आप ताश खेलते हैं, काउन्ट? अच्छी बात है, भइया, तुम इन्तजाम करो; एक गड्डी ताशों की ले आओ।"

"परन्तु खुद 'प्रिफरेन्स' नामक खेल खेलती हो," घुड़सवार ने उत्तर दिया। "सब लोग क्यों न खेलें? आप खेलेंगे, काउन्ट? और आप भी।"

अफसरों ने उनके मेजवान,जो चाहें सो करने की इच्छा प्रकट की

लीसा अपनी पुरानी ताशों की गड्डी उठा लाई जिसे वह उस समय काम में लाती थी जब उसकी माँ का सूजा हुआ मुँह ठीक हो जाता था, जब उसका मामा जिस दिन शहर गया होता उसी दिन लौट आता या उसका कोई पड़ोसी आ जाता। ये ताश, यद्यपि वह इन्हें दो महीनों तक काम में ला चुकी थी उनसे साफ थे जिनसे अन्ना फेदोरोव्ना भाग्य बताया करती थी।

"परन्तु शायद आप छोटा दाँव लगा कर नहीं खेलते होंगे?" मामा ने पूछा। "अन्ना फेदोरोव्ना और मैं आधा कोपेक का दाँव लगा कर खेलते हैं...और फिर भी वह सारे पैसे जीत जाती है।"

"ओह, जैसे आप चाहें, मुझे खुशी होगी," काउन्ट ने जवाब दिया।

"तो अच्छी बात है, एक कोपेक 'एसिग्नेट'[1] से सिर्फ एक बार अपने प्यारे मेहमानों की खातिर में। उन्हें मुझसे जीत लेने दो, एक बुढ़िया से!" अपनी आराम कुर्सी में बैठते हुए और अपने लबादे को ठीक करते हुए अन्ना फेदोरोव्ना ने कहा। "और शायद मैं ही उनसे एकाध रूबल जीत लूँ," अपनी वृद्धावस्था में ताशों के प्रति अनुरक्ति बढ़ने के कारण उसने सोचा।

"अगर आप चाहें तो मैं खेल का नया तरीका सिखा दूँगा," काउन्ट ने कहा, "यह बहुत अच्छा है।"

प्रत्येक ने इस नए पीटर्सबर्ग फैशन के खेल को पसन्द किया। मामा को तो पूर्ण विश्वास था कि वह इसे जानता है; यह बिल्कुल वैसे ही खेला जाता है जैसे कि 'बोस्टन' खेलते थे; सिर्फ वह थोड़ा सा भूल गया है। परन्तु अन्ना फेदोरोव्ना तो इसे बिल्कुल ही नहीं समझ पाई और तब तक उसकी समझ में नहीं आया जब तक कि उसने अन्त में मुस्काराते हुए और सिर हिला कर यह न स्वीकार कर लिया कि वह समझ गई और यह कि यह बहुत आसान है। खेल के बीच में बड़ी हंसी होती जब अन्ना फेदोरोव्ना खाली इक्का और बादशाह पर ही चाल चल देती और हार जाती। वह परेशान हो उठी और झेंपती हुई मुस्कराने लगी और जल्दी से कहने लगी कि इस नए खेल का उसे अभी अभ्यास नहीं हो पाया है। मगर वे लोग उससे जीतते चले गए, विशेष रूप से काउन्ट जो ऊँचे दाँव लगाता हुआ बड़ी सावधानी के साथ खेल रहा था। वह बहुत चौकन्ना था और अपने दुश्मनों के दाँव

१—साढ़े तीन 'एसिग्नेटों' की कीमत एक चाँदी के रूबल के बराबर होती थी। यह सिक्का पहले चलता था, परन्तु बाद में बन्द कर दिया गया।

पर बड़ी होश्यारी से दाँव लगाता था और उसने पोलोजोव द्वारा मेज के नीचे से किये गए इशारों को समझने से और पोलोजोव द्वारा की गई गल्तियों को, जब वह उसका साथी था, मानने से इन्कार कर दिया।

लीसा कुछ और मिठाईयाँ, तीन तरह के मुरब्बे और कुछ खास तौर से बनाए हुए सेव, जो पिछले मौसम से अब तक रखे हुए थे, लाई और अपनी माँ के पीछे खेल देखती हुई और कभी कभी अफसरों की तरफ, विशेष रूप से काउन्ट के सफेद हाथों के सुन्दर गुलाबी नाखूनों को देखती हुई खड़ी रही, जो ताशों को फेंक रहे थे और पैसों को अभ्य-स्त, सधे हुए और सुन्दर ढङ्ग से उठा रहे थे।

अन्ना फेदोरोव्ना ने फिर चिड़चिड़ाकर, दूसरों से आगे बढ़ कर सात हाथ बोल दिए, सिर्फ चार बनाए और उसी हिसाब से सजा भुग-तनी पड़ी और अत्यन्त अनिच्छापूर्वक, भाई के कहने पर हारे हुए नम्बरों को लिख लिया, बहुत परेशान हो उठी और उछल कूद करने लगी।

"फिकर मत करो माँ, तुम फिर जीत जाओगी।" अपनी माँ की सहायता करने की इच्छा और उसका इस हास्यास्पद स्थिति से उद्धार करने की नियत से लीसा मुस्कराती हुई बोली। "एक बार मामा को हारने दो फिर वे पकड़े जायेंगे।"

"अगर तुम मेरी मदद करो लीसा बेटी।" बेटी की तरफ एक भयभीत दृष्टि डालते हुये अन्ना फेदोरोव्ना ने कहा। "मुझे नहीं मालूम कि ये कैसे चले जाते हैं......।"

"लेकिन मैं भी यह खेल नहीं जानती," मन ही मन माँ की हार का अनुमान लगाती हुई लीसा बोली, "इस तरह से तो तुम बहुत हार जाओगी माँ! पिमोच्का की नई पोशाक के लिए कुछ भी नहीं बचेगा," उसने मज़ाक करते हुए आगे कहा।

"जी हाँ, इस तरह खेलने से तो आसानी से दस रूबल हारा

काउन्ट ने अपनी जीत को गिना भी नहीं बल्कि जैसे ही खेल खत्म हुआ वह उठा, उस खिड़की पर गया जहाँ खड़ी हुई लीसा एक प्लेट पर भोजन के लिए अचार निकाल रही थी, और बिल्कुल शान्ति के साथ उसने वह काम किया जिसे पोलोजोव उस पूरी शाम तक करने के लिए इच्छुक रहा था परन्तु सफलता नहीं मिली थी—वह लीसा के साथ मौसम के बारे में बातें करने लगा।

इस समय पोलोजोव की स्थिति बड़ी विचित्र हो उठी थी। काउन्ट की अनुपस्थिति में और विशेष रूप से लीसा की अनुपस्थिति में, जो उसके मिजाज को संभाले रही थी, अन्ना फेदोरोव्ना स्पष्ट रूप से नाराज हो उठी थी।

"सचमुच यह बुरी बात है कि हम लोग आपसे इस तरह जीत लें," पोलोजोव कुछ भी कहने के लिए बोल उठा, "यह सचमुच लज्जाजनक है।"

"हाँ, बेशक, आप लोग नए नए खेल ईजाद कर लें और मैं उन्हें खेलना जानती नहीं…तो फिर, 'एसिग्नेटों' में कुल कितना हुआ ?" उसने पूछा।

"बत्तीस रूबल, सवा बत्तीस," घुड़सवार ने दुहराया जो अपनी जीत की खुशी में अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में था। "पैसे दो बहिन, भुगतान करो।"

"मैं सब दे दूँगी परन्तु अब तुम लोग मुझे फिर नहीं फांस सकते। नहीं!…मैं अपनी पूरी जिन्दगी में अपनी पूरी जिन्दगी में भी इस रकम को वापस नहीं जीत पाऊँगी।"

और अन्ना फेदोरोव्ना तेजी से इधर उधर हिलती हुई अपने कमरे को चली गई और नौ 'एसिग्नेट' लेकर वापस लौटी। उसने आखिरकार पूरी रकम तब चुकाई जब बुड्ढे ने बारम्बार उससे तक़ाजा करना शुरू कर दिया।

पोलोजोव भयभीत हो उठा कि यदि वह अन्ना फेदोरोव्ना से बोला तो कहीं वह डाट न बैठे। इसलिए चुपचाप वहाँ से उठा और काउन्ट और लीसा के पास गया जो खिड़की पर खड़े हुए बातें कर रहे थे।

भोजन के लिए बिछाई गई मेज पर दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं। यदा कदा मई की रात्रि की ताजी हवा उनकी लौ को हिला जाती थी। खिड़की के बाहर, जो बाग की तरफ खुलती थी, भी प्रकाश था परन्तु यह बिल्कुल दूसरी ही तरह का प्रकाश था। चाँद, जो लगभग पूर्णिमा का सा चाँद था और इस समय तक अपना पीलापन छोड़ चुका था, जंभीरी के वृत्तों के ऊपर उठता चला जा रहा था और हल्के सफेद बादलों को जो रह रह कर उसे छिपा लेते थे, अधिकाधिक उज्ज्वल बनाता जा रहा था। तालाब के किनारे मेंढक जोर जोर से टर्र टर्र कर रहे थे, जिसकी ऊपरी सतह का एक भाग जो चाँदनी से चमक रहा था उस झुरमुट में से दिखाई पड़ रहा था। छोटी २ चिड़ियाँ एक सुङ्गधित बकायन की झाड़ी में उसकी शाखाओं पर, जो ओस से भीग रही थीं और कभी २ खिड़की के बिल्कुल पास हिल उठती थीं, इधर उधर फुदक रही थीं।

"कैसा सुहावना मौसम है!" काउन्ट ने लीसा के पास पहुंच कर कहा और खिड़की कीं निचली चौखट पर बैठ गया। "मेरा ख्याल है कि आप खूब घूमती हैं?"

"जी हाँ," काउन्ट से बात करने में जरा भी झिझक न महसूस करते हुए लीसा ने कहा, "सुबह सात बजे के लगभग मैं जमींदारी का सम्भालने लायक जरूरी काम देखती हूँ और अपनी माँ की पालिता कन्या पिमोच्का को साथ लेकर घूमने चली जाती हूँ।"

"देहात में रहना बड़ा सुन्दर होता है!" अपना चश्मा लगाते हुए और कभी लीसा और कभी बाग की तरफ देखते हुए काउन्ट ने

कहा, "और आप रात को चाँदनी में कभी बाहर नहीं निकलतीं?"

"नहीं, परन्तु दो साल पहले मैं और मामा चाँदनी रातों में हमेशा घूमने जाया करते थे। उन्हें एक विचित्र बीमारी थी—अनिद्रा की। जब पूर्णिमा का चाँद निकलता तो वे सो नहीं पाते थे। उनका छोटा सा कमरा—वह—सीधा बाग की तरफ खुलता है, खिड़की नीची है परन्तु चाँदनी बिल्कुल सीधी इसके भीतर आती है।"

"अजीब बात है; मेरा ख्याल था कि वह आपका कमरा है," काउन्ट ने कहा।

"नहीं, मैं सिर्फ आज रात को ही वहाँ सोऊँगी। आपके पास मेरा कमरा है।"

"क्या यह सम्भव है? हे मेरे भगवान्, मैं आपको इस तरह परेशान करने के लिए अपने को कभी भी क्षमा नहीं कर सकूँगा!" एक आँख वाले चश्मे को नीचे गिराते हुए काउन्ट ने कहा, जो इस बात का प्रतीक था कि उसकी भावनाएँ सच्ची हैं। "अगर मुझे यह मालूम होता कि मैं आपको तकलीफ दे रहा था..."

"इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं है, बल्कि मैं बहुत खुश हूँ। मामा का कमरा इतना सुन्दर है, इतना रोशनीदार और खिड़की भी इतनी नीची है। मैं तब तक वहाँ बैठी रहूँगी जब तक कि नींद नहीं आएगी या मैं बाग में उतर जाऊँगी और बिस्तर पर जाने से पहले थोड़ी देर तक घूमूँगी।"

"कितनी तेज लड़की है!" चश्मे को फिर लगाते हुए और उसकी तरफ देखते हुए काउन्ट ने सोचा। फिर उसने खिड़की की चौखट और अधिक अच्छी तरह बैठने का बहाना करते हुए लीसा के पैर अपना पैर छुआ दिया। "और कितनी चालाकी से उसने मुझे बता दिया कि अगर मैं चाहूँ तो उससे बाग में होकर खिड़की पर सकता हूँ।" उसकी दृष्टि में लीसा का आकर्षण भी समाप्त हो गया-विजय इतनी सरल दिखाई दी।

"और कितना आनन्द रहे," उसने कहा, गम्भीर होकर कुञ्ज की तरफ देखते हुए, "अगर इस तरह की रात्रि, अपनी प्रेमिका के साथ इस उद्यान में व्यतीत की जाय।"

लीसा इन शब्दों से और उसके द्वारा बार-बार परन्तु दिखाई देने में अकस्मात स्पर्श हो जाने वाले पैर के लगाए जाने से, परेशान हो उठी। अपनी परेशानी को छिपाने के लिए वह बिना सोचे ही बोल उठी, "जी हाँ, चाँदनी में घूमना अच्छा लगता है।" वह बहुत बेचैन हो उठी थी। उसने उस अमृतवान का मुँह बांध दिया था जिसमें से उसने अचार निकाला था और खिड़की से हटने ही वाली थी कि पोलोज़ोव उनके पास आ गया और लीसा के मन में इच्छा उठी कि यह आदमी कैसा है, यह भी देख लें।

"कितनी प्यारी रात है!" वह बोला।

"क्या बात है कि ये लोग मौसम के अलावा और कोई बात ही नहीं करते," लीसा ने सोचा।

"कितना अद्‌भुत दृश्य है!" पोलोज़ोव ने आगे कहा, "परन्तु मेरा ख्याल है कि आप इससे ऊब उठी होंगी," उसके हृदय में उन लोगों से जिन्हें वह बहुत पसन्द करता था, भद्दी बातें करने की प्रवृत्ति उठ खड़ी होती थी।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं? एक ही तरह की पोशाक या एक ही तरह के खाने से तो कोई भी ऊब सकता है, परन्तु एक सुन्दर बाग से नहीं अगर कोई घूमने का शौकीन है—विशेष रूप से उस समय जब चाँद आसमान में ऊँचा होता है। मामा की खिड़की में से पूरा तालाब दिखाई देता है। मैं आज रात को देखूँगी।"

"परन्तु मैं सोचता हूँ कि यहाँ बुलबुलें नहीं हैं?" काउन्ट बोला, इस बात से बहुत असन्तुष्ट होकर कि पोलोज़ोव वहाँ आ गया था और अपने मिलने के लिए स्थान निश्चित करने की बात कहने से अपने को रोक गया।

"नहीं, परन्तु पारसाल तक तो हमेशा रहती थीं जब किसी शिकारी ने एक को पकड़ लिया, और इस साल भी अभी पिछले हफ्ते ही एक ने गाना शुरू किया था परन्तु यहाँ पुलिस अफसर आया और उसकी घन्टियों की आवाज से वह डर गई। दो साल पहले मामा और मैं, दोनों, छायादार पगडंडी पर बैठ जाते थे और दो घन्टे या उससे भी अधिक देर तक सुनते रहते थे।

"यह बातून तुम्हें क्या बता रही है?" मामा ने उनकी तरफ आते हुए पूछा। "आप कुछ खाना पसन्द नहीं करेंगे?"

भोजन के उपरान्त, जिसके दौरान में काउन्ट ने भोजन की प्रशंसा और अपनी खुराक द्वारा मालकिन के क्रोध को बहुत कुछ कम कर दिया था, अफसरों ने नमस्कार की और अपने कमरे में चले गए। काउन्ट ने मामा से हाथ मिलाया और अन्ना फेदोरोव्ना को आश्चर्य-चकित करते हुए उसका हाथ भी बिना चूमे हुए अपने हाथ में ले लिया और यहाँ तक कि लीसा से भी, उसकी आँखों में सीधा देखते हुए, और अपनी सुन्दर मुस्कान से हल्के मुस्कराते हुए हाथ मिलाया। उस दृष्टि ने लड़की को फिर लज्जित कर दिया।

"वह बहुत सुन्दर है," लीसा ने सोचा, "परन्तु अपने को समझता बहुत है।"

१४.

"मैं कहता हूँ कि तुम्हें अपनी हरकतों पर शर्म नहीं आती?" जब वे अपने कमरे में आ गए तो पोलोज़ोव ने कहा, "मैंने जानबूझ कर हारने की कोशिश की और बराबर तुम्हें मेज के नीचे से इशारा करता रहा। तुम्हें लज्जा नहीं आई? बुढ़िया बहुत परेशान हो उठी थी, तुम जानते हो।"

काउन्ट दिल खोल कर हँसा।

"बुढ़िया बड़ी मजेदार है···कितनी नाराज हो गई थी!···"

दुबारा वह इतनी प्रसन्नता के साथ हँसने लगा कि जोहन ने भी, जो उसके सामने खड़ा था, अपनी आँखें नीची कर लीं और हल्की सी मुस्कराहट के साथ पीठ फेर ली।

"और परिवार के एक मित्र के साथ! हा-हा-हा!···" काउन्ट बराबर हँसता रहा।

"नहीं, सचमुच यह बड़ी बुरी बात थी। मैं उसके लिए बहुत दुखी था," पोलोज़ोव ने कहा।

"क्या वाहियात बात है! तुम अभी तक कैसी बच्चों की सी बातें करते हो! क्यों, तुम चाहते थे कि मैं हार जाता? कोई क्यों हारे? जब मैं खेलना नहीं जानता था तब हारा करता था। दस रूबलों से बहुत काम चल सकता है, दोस्त! तुम्हें जीवन को व्यवहारिक दृष्टि से देखना चाहिए वर्ना तुम हमेशा मुसीबत में पड़े रहोगे।"

पोलोज़ोव का मुँह बन्द कर दिया गया था; साथ ही वह खुद चुप रहना और लीसा के विषय में सोचना चाह रहा था जो उसे एक असाधारण रूप से पवित्र और सुन्दर लड़की लगी थी। उसने कपड़े उतारे और अपने लिए बिछाए गए कोमल स्वच्छ बिछौने पर लेट गया।

"यह फौजी शान और शौकत कितनी वाहियात होती है!" उसने शॉल से ढकी हुई खिड़की में से, जिसमें होकर चाँदनी चुपचाप भीतर आ रही थी, बाहर देखते हुए सोचा। "एक एकान्त स्थान में एक प्रेममयी, चतुर, सरल हृदया पत्नी के साथ रहना कितना आनन्द-दायक होगा—हाँ, यह एक और शाश्वत प्रसन्नता है।"

परन्तु किसी कारण वश उसने अपने इन विचारों को अपने मित्र पर प्रकट नहीं किया और उस ग्रामीण बालिका के विषय में चर्चा भी नहीं चलाई यद्यपि उसे विश्वास था कि काउन्ट भी उसी के विषय में सोच रहा था।

"तुम कपड़े क्यों नहीं उतार रहे ?" उसने काउन्ट से पूछा जो कमरे में इधर से उधर घूम रहा था।

"किसी कारण वश मुझे अभी नींद नहीं आ रही। तुम चाहो तो मोमबत्ती बुझा सकते हो। मैं ऐसे ही लेट जाऊँगा।"

और वह फिर इधर से उधर घूमने लगा।

"किसी कारण वश अभी नींद नहीं आ रही," पोलोज़ोव ने दुहराया, जो आज शाम के बाद अपने ऊपर पड़े हुए काउन्ट के प्रभाव से और कभी भी इतना क्षुब्ध नहीं हुआ था जितना कि इस समय हो रहा था और विद्रोह करना चाहता था। "मैं खूब जानता हूँ," उसने मन ही मन तुरबिन को सम्बोधित करते हुए सोचा, "कि तुम्हारे इस सुन्दर मस्तिष्क में क्या चल रहा है! मैंने देखा था कि तुम उसे कितनी प्रशंसायुक्त दृष्टि से देख रहे थे। परन्तु तुम ऐसे सरल, पवित्र प्राणों को पूरी तरह पहचानने की शक्ति नहीं रखते। तुम मीना को और अपने कन्धों पर कर्नल का तमगा चाहते हो। ...मुझे सचमुच उससे पूछना चाहिए कि वह उसे कैसी लगी।"

और पोलोज़ोव ने उसकी तरफ करवट ली—परन्तु फिर विचार बदल दिया। उसने अनुभव किया कि वह काउन्ट के सामने अपनी राय स्थिर रखने में असमर्थ रहेगा, अगर लीसा के बारे में काउन्ट के विचार वही हुए जिनकी उसने कल्पना की थी और यह कि वह उससे अपनी असहमति प्रकट न करने में असफल हो जायगा क्योंकि वह काउन्ट के प्रभाव के सम्मुख झुकने का इतना अभ्यस्त बन चुका था और जो उसे दिन प्रतिदिन अधिकाधिक कठोर और अन्यायपूर्ण प्रतीत होने लगा था।

"कहाँ जा रहे हो ?" उसने पूछा जब काउन्ट ने टोपी पहनी और दरवाजे की तरफ चला।

"मैं यह देखने जा रहा हूँ कि अस्तबलों में सब ठीक ठाक है या नहीं।"

"अद्भुत !" पोलोज़ोव ने सोचा मगर मोमबत्ती बुझा दी और दूसरी तरफ करवट ले ली, उन भद्दे विद्वेषपूर्ण और विरोधी भावों को दूर भगाने का प्रयत्न करने के लिए जो अपने भूतपूर्व मित्र के सम्बन्ध में उसके दिमाग में उछल कूद मचा रहे थे ।

इस समय तक अन्ना फेदोरोव्ना, सदैव की भांति अपने भाई, बेटी और पालित कन्या को चूम कर और प्रत्येक पर क्रॉस का चिन्ह बना कर अपने कमरे में जा चुकी थीं । आज बहुत दिन बाद उस वृद्धा ने इतनी प्रबल भावनाओं का अनुभव किया था और वह शान्तचित्त होकर प्रार्थना भी न कर सकी । वह स्वर्गीय काउन्ट की उन दुख जनक स्मृतियों से अपने को मुक्त न कर सकी; जिस छलिया ने इतनी निर्दयतापूर्वक उसके ऊपर अत्याचार किये थे । फिर उसने सदैव की भांति कपड़े उतारे, क्वाश का आधा गिलास पिया, जो उसके बिस्तर के पास एक छोटी मेज पर तैयार रखा था, और लेट गई । उसकी प्यारी बिल्ली चुपचाप कमरे में घुसी । अन्ना फेदोरोव्ना ने उसे ऊपर बुला लिया और उसे थपथपाने और उसकी घुर्र घुर्र की आवाज सुनने लगी मगर सो न सकी ।

"यह बिल्ली ही है जो मुझे सोने नहीं देती" उसने सोचा और बिल्ली को भगा दिया । बिल्ली धीरे से फर्श पर कूदी और अपनी झब्बे-दार पूंछ हिलाती हुई अंगीठी पर उछल कर चढ़ गई । और अब, वह नौकरानी जो अन्ना फेदोरोव्ना के कमरे में सोया करती थी, आई, चटाई की जगह इस्तैमाल होने वाला अपना कम्बल बिछाया, मोमबत्ती बुझाई और पवित्र मूर्त्ति के आगे दिया जला दिया । अन्त में वह पड़ कर खर्राटे लेने लगी परन्तु अभी तक अन्ना फेदोरोव्ना की उत्तेजक कल्प-नाओं का शमन करने के लिए निद्रा का आगमन न हो सका । जब उसने अपनी आखें बन्द कीं तो उस हुसार का चेहरा उसके सामने आ खड़ा हुआ और वह उसे विभिन्न रूपों में कमरे में इधर उधर देखने लगी;

जब उसने आँखें खोल कर दिए की धुंधली रोशनी में दराजों वाली आलमारी, मेज और ऊपर लटकती हुई एक सफेद पोशाक की तरफ देखा। कभी उसे पंखों वाले बिस्तर पर बहुत गर्मी लग उठती, कभी छोटी मेज पर रखी हुई घड़ी की टिकटिक उसके लिए असह्य हो उठती और वह नौकरानी तो इस तरह खर्राटे भर रही थी जो असहनीय हो उठा था। उसने नौकरानी को जगाया और खर्राटे न भरने की ताक़ीद की। उसके दिमाग में, दुबारा अपनी बेटी, स्वर्गीय काउन्ट और नए काउन्ट और उस 'प्रिफेरेन्स' नामक खेल से सम्बन्धित विचार अद्भुत रीति से गड्ड मड्ड होकर उठ खड़े हुए। कभी उसने देखा कि वह काउन्ट के साथ नाच रही है। उसने अपने सुडौल गोरे कन्धों को देखा, उन पर किसी के चुम्बनों का अनुभव किया और फिर अपनी लड़की को नए काउन्ट के आलिंगन पाश में आबद्ध देखा। उस्त्युस्का फिर खर्राटे लेने लगी।

"नहीं, आजकल आदमी वैसे नहीं रहे। वह दूसरा मेरे लिए बिना बात आग में कूद पड़ने को तैयार था। परन्तु यह वाला एक मूर्ख की तरह सो रहा है, कोई भय नहीं, जीत कर खुश है-प्रेम करना ही नहीं जानता।...दूसरे वाले ने घुटनों के बल बैठ कर किस तरह कहा था, "तुम मुझसे क्या करने को कहती हो? मैं इसी जगह अपने को मार डालूँगा, या जो कुछ तुम चाहो वही करूँगा।" और वह अपने को मार डालता अगर मैं उससे ऐसा करने के लिए कह देती।"

अचानक उसने गैलरी में नंगे पैरों की दौड़ने की आवाज सुनी और लीसा, अपने ऊपर एक शाल डाले हुए पीली पड़ी हुई और कांपती हुई दौड़ी आई और अपनी माँ के बिस्तर पर लगभग गिर सी पड़ी।

उस संध्या को अपनी माँ का अभिवादन कर लीसा अकेली उस कमरे में चली गई थी जिसमें उसका मामा सोया करता था। उसने एक सफेद ड्रेसिंग जाकेट पहनी और अपने घने लम्बे बालों पर एक

रूमाल बांध कर मोमबत्ती बुझा दी, खिड़की खोली और अपने पैरों को ऊपर सिकोड़ कर रुपहली चाँदनी से चमकते हुए तालाब पर अपनी आँखें जमाए हुए एक कुर्सी पर बैठ गई।

अपने सारे कार्य और रुचियाँ अचानक उसे एक नए ही रूप में दिखाई दे उठीं: उसकी चंचल स्वभाव वाली माँ जिसके प्रति उसकी आत्मा में अदम्य स्नेह का सागर लहराया करता था; उसका अशक्त और सब का प्यारा मामा; घरेलू और गाँव के किसान-नौकर जो अपनी युवती स्वामिनी की पूजा करते थे; दूध देने वाली गाएं और बछड़े और वह सम्पूर्ण प्रकृति जो कई बार मर चुकी थी और फिर नवीन रूप में जीवित हो उठी थी और जिसमें पल कर वह बड़ी हुई थी—औरों को प्यार करती हुई और औरों का प्यार पाती हुई—ये सब बातें जो उसकी आत्मा को इतना प्रसन्न और प्रकाशित रखती थीं, अचानक अपूर्ण लगने लगीं, नीरस और व्यर्थ प्रतीत होने लगीं। यह ऐसा था मानो किसी ने उससे कहा हो: "नन्ही सी मूर्ख, बीस वर्ष तक तुम्हारा जीवन व्यर्थ ही रहा, दूसरों की सेवा करते हुए और बिना यह जाने कि क्यों, और बिना इस बात का अनुभव किए हुए कि जीवन और सुख क्या होता है!" जब उसने चारों ओर छिटकी हुई चन्द्रिका को, निस्तब्ध उद्यान को देखा वह इस बात को और भी गम्भीरता से सोचने लगी, बहुत अधिक गम्भीरता से जितना कि उसने पहले कभी भी नहीं सोचा था, और ये विचार क्यों उत्पन्न हुए? काउन्ट के प्रति एकाएक उत्पन्न हुए प्रेम के कारण नहीं जैसा कि औरों ने सोचा होता। इसके विपरीत वह तो उसे पसन्द ही नहीं आया था। वह पोलोज़ोव में अधिक आसानी से रुचि ले सकती थी परन्तु वह सीधा सादा, निर्धन और शान्त प्रकृति का था। वह अनिच्छा पूर्वक उसे भूलने और नाराज और क्षुब्ध होकर काउन्ट के विषय में सोचने का प्रयत्न करने लगी। "नहीं, यह बात नहीं है," उसने अपने से कहा। उसका आदर्श अत्यन्त सुन्दर था। यह

एक ऐसा ही आदर्श था जिससे, ऐसी रात्रि में, प्रकृति के प्रांगण में, उसके सौन्दर्य को कलुषित किए बिना, प्रेम किया जा सकता था—एक आदर्श जिसे किसी कठोर वास्तविकता से संयुक्त करने के लिए सीमित नहीं किया जा सकता था।

पहले, एकांत और किसी ऐसे व्यक्ति की अनुपस्थिति, जिसने उसके ध्यान को अपनी ओर खींचा होता, उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न कर देता था और उस प्रेम को वहीं निर्मल रूप में अवस्थित कर देता था, जो ईश्वर ने हम सब को बिना पक्षपात के समान रूप से प्रदान कर रखा है, और अब वह एक अवसाद पूर्ण आनन्द की स्थिति में बहुत दिनों तक रह चुकी थी जिसने हृदय में किसी वस्तु की भावना को उत्पन्न कर दिया था और वह रह रह कर अपने हृदय के इस गुप्त रहस्य को, उसके आनन्द का अनुभव करने के लिए और बिना विचार किए किसी पर भी उसे उड़ेलने के लिए उत्कंठित हो उठती थी। भगवान् करे वह मृत्यु के बाद भी इस आनन्द को भोगती रहे । कौन जानता है कि यह सबसे अच्छा और सबसे शक्तिमान न हो और यह कि क्या यही केवल सत्य और सम्भावित आनन्द हो।

"ओ मेरे भगवान," लीसा ने सोचा, "क्या यह हो सकता है कि मेरा यौवन और प्रसन्नता व्यर्थ ही नष्ट हो गई है और यह फिर नहीं आएगी···कभी नहीं आएगी ? क्या यह सत्य है ?" और उसने चन्द्रिका-स्नान आकाश और उसमें विचरण करते हुए लघु मेघ खंडों को तरफ देखा जो तारों को छिपाते हुए चन्द्रमा के पास सरकते चले जा रहे थे। "अगर वह सबसे ऊँचा सफेद बादल का टुकड़ा चन्द्रमा को छू लेता है तो यह इस बात का प्रमाण होगा कि यह सत्य है," उसने सोचा। वह कुहरे जैसी धुंधली सी रेखा उस चमकीली तश्तरी के नीचे वाले आधे भाग पर छा गई और धीरे धीरे घास पर, नीबुओं की चोटियों पर और तालाब पर छिटकी हुई चाँदनी हल्की पड़ने लगी

और वृक्षों की काली छायायें धुंधली हो उठीं। जैसे कि मानो बाहरी संसार पर छायी हुई दुखदायी छायाओं को शांत करने की खातिर पत्तों में होकर एक हल्का सा हवा का झोंका बह उठा और उस खिड़की तक ओस से भीगी पत्तियों, भीगी धरती और खिले हुए बकायन के फूलों की खुशबू भर लाया।

"परन्तु यह सच नहीं है," उसने स्वयं को सान्त्वना दी, "अब अगर बुलबुल आज रात को गाती है तो यह इस बात का सबूत होगा कि जो कुछ मैं सोच रही हूँ सब वाहियात बातें हैं और यह कि मुझे निराश नहीं होना चाहिए," उसने सोचा। और वह बहुत देर तक किसी चीज का इन्तजार सा करती हुई वहीं बैठी रही जब तक कि सब कुछ फिर चमकने लगा और चेतन हो उठा और बादल के टुकड़े बार बार चन्द्रमा को पार करते हुए सारी वस्तुओं को धुंधला बनाने लगे। खिड़की के पास बैठी हुई वह नींद के झोंके लेने लगी कि इसी समय नीचे तालाब की तरफ से बुलबुल की सुरीली लहराती हुई गाने की आवाज आई और उसने उसे जगा दिया। देहाती सुन्दरी ने आँखें खोल दीं और एक बार फिर उसकी आत्मा प्रकृति के रहस्यमय सम्पर्क के कारण नवीन आनन्द से ओतप्रोत हो उठी, जो उसके सामने बाहर इतनी शांत और चमकती हुई फैली हुई थी। अवसाद की एक मधुर और अस्पष्ट भावना ने उसके हृदय को आक्रान्त कर लिया और पवित्र असीम प्रेम के अश्रु–अच्छे सन्तोष प्रदायक अश्रु–शान्ति की कामना से उसके नेत्रों में छलछला उठे। वह दोनों हाथों पर झुक गई। उसने बांहों को मोड़ कर खिड़की की चौखट पर रख लिया और उन पर अपना सिर टेक कर बैठ गई। उसकी प्रिय प्रार्थना उसके मन में उठी और वह अब भी आँसुओं से भीगी आँखें लिए हुए सो गई।

किसी के हाथ के स्पर्श ने उसे जगा दिया। वह चैतन्य हो उठी। परन्तु वह स्पर्श कोमल और सुखप्रद था। वह हाथ उसे और

भी जोर से दबाने लगा। अचानक वह वास्तविकता से अवगत हो उठी, चीखी, उछली और अपने को यह समझती हुई कि उसने काउन्ट को नहीं पहचान पाया है जो चाँदनी में नहाया हुआ खिड़की के पास खड़ा हुआ था, कमरे से बाहर भागी।...

१५.

और सचमुच वह काउन्ट ही था। जब उसने लड़की की चीख और चहारदीवारी के बाहर से आती हुई चौकीदार की भारी आवाज सुनी जो उस चीख से जाग पड़ा था, वह सिर के बल सीधा ओस से भीगी हुई घास में होकर बाग की गहराई की तरफ भागा, एक जगार होने पर भागते हुए चोर की तरह अपने को अनुभव करते हुए। "मैं कैसा बेवकूफ हूँ," उसने अचेतनावस्था में दुहराया, "मैंने उसे डरा दिया। मुझे उसको चुपचाप प्यार की बातें कर जगाना चाहिए था। मैं जङ्गली जो ठहरा।" वह रुका और कान लगा कर सुनने लगा। चौकीदार फाटक में होकर बाग में आया, रेतीली पगडंडी पर अपनी लाठी घसीटता हुआ। छिपना जरूरी था इसलिए काउन्ट तालाब की तरफ चला गया। मेंढ़कों ने उसे चौंका दिया जैसे ही वे उसके पैरों के नीचे होकर तालाब में कूदे। यद्यपि उसके जूते पूरी तरह भीग गए थे, वह पालथी मार कर बैठ गया और अपने सम्पूर्ण कृत्य पर विचार करने लगा। कैसे वह चहारदीवारी पर चढ़ा, उसकी खिड़की की तरफ देखा और अन्त में एक सफेद सी छाया देखी; कैसे, हल्की सी खस-खसाहट की ध्वनि को सुनते हुए वह कई बार खिड़की के पास आया और वापस लौट गया; कैसे एक क्षण को उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह प्रतीक्षा कर रही थी, अपने धीमेपन पर क्षुब्ध हो उठा और फिर सोचा कि यह असम्भव था कि वह इस मिलन के लिए इतनी शीघ्रता से प्रस्तुत हो जाती; किस तरह अन्ततः अपने को यह समझाते

हुए कि यह एक देहात में पली हुई लड़की की लज्जा मात्र है जिसने उसे सोने का बहाना बनाने को बाध्य कर दिया है, वह दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ा और स्पष्ट रूप से देखा कि वह किस तरह बैठी हुई थी परन्तु फिर किसी कारण वश दुबारा भाग खड़ा हुआ और अपनी इस कायरता के लिए अपने को बुरी तरह धिक्कारने के उपरांत ही वह साहस कर उसके पास आया और उसका हाथ छुआ।

चौकीदार ने फिर भारी स्वर में आवाज लगाई और जैसे ही वह बाग के बाहर गया दरवाजा चर्रा उठा। खिड़की का दरवाजा बन्द हो गया था और भीतर से खड़खड़ियाँ चढ़ा दी गईं थीं। यह बड़ी उत्तेजक अवस्था थी। काउन्ट एक बार फिर इस सारी घटना को दुहराने के लिए बहुत कुछ उत्सर्ग करने को प्रस्तुत हो उठा; इस बार वह इतनी मूर्खता से काम नहीं करता।...

"और वह एक अद्भुत लड़की है—इतनी स्वस्थ—अत्यन्त आकर्षक! और मैंने उसे हाथ से निकल जाने दिया।...मैं वाहियात मूर्ख जो ठहरा!" वह अब सोना नहीं चाहता था इसलिए नींबुओं के उस छायादार कुञ्ज में एक विह्वल व्यक्ति के समान दृढ़ पगों से इधर-उधर घूमने लगा।

और यहाँ रात्रि ने भी उसे सान्त्वना प्रदायक अवसाद और प्रेम की आवश्यकता के उपहार प्रदान किए। चन्द्रमा की सीधी पीली किरणें नीबुओं की घनी हरियारी में से छन छन कर मिट्टी की पगडंडी पर प्रकाश के वृत्त बना रही थीं। प्रकाश के ये चकत्ते उन स्थानों पर भी पड़ रहे थे जहाँ घास की कुछ कोंपलें फूट आईं थीं या टूटी हुई टहनियाँ छितरी हुई पड़ी थीं। एक झुकी हुई शाखा के एक तरफ पड़ता हुआ प्रकाश ऐसा लग रहा था मानो वह शाखा सफेद काई से ढकी हुई हो। रुपहली पत्तियाँ रह रह कर फुसफुसा उठती थीं। मकान में रोशनी नहीं थी। पूर्ण स्तब्धता थी। एक मात्र बुलबुल का सङ्गीत

उस प्रकाशमान, प्रशान्त और असीम वातावरण में आपूरित हो रहा था। "ओह, भगवान्, कैसी सुन्दर रात है ! कितनी मादकता है इसमें।" बाग की स्वच्छ वायु का पान करते हुए काउन्ट ने सोचा। "फिर भी मुझमें पश्चाताप की भावना उठ रही है—मानो कि जैसे मैं अपने आप से और दूसरों से असन्तुष्ट हो उठा हूँ, पूरे जीवन से असन्तुष्ट हो उठा हूँ। एक अत्यधिक मोहक युवती ! सम्भवतः उसे सचमुच वेदना पहुँची थी···" यहाँ आकर उसके स्वप्न आपस में गड़-बड़ा उठे। उसने स्वयं को इस बाग में उस देहाती युवती के साथ विभिन्न स्थितियों में होने की कल्पना की। फिर उस लड़की का स्थान उसकी प्रेमिका मीना ने ले लिया। "उँह, मैं भी कैसा बेवकूफ हूँ। मुझे तो सिर्फ उसकी कमर पकड़ कर उसे चूम लेना भर था।" और पश्चाताप करते हुए कि वह ऐसा नहीं कर सका, काउन्ट अपने कमरे में लौट आया।

पोलोज़ोव अभी तक जाग रहा था। उसने एक दम करवट ली और काउन्ट की तरफ मुँह कर लिया।

"अभी सोए नहीं ?" काउन्ट ने पूछा।

"नहीं।"

"मैं बताऊँ कि क्या हुआ था ?"

"बताओ ?"

"नहीं, अच्छा हो कि न बताऊँ वर्ना,···अच्छी बात है, मैं बताऊँगा—पैर ऊपर करलो।"

और काउन्ट मन ही मन उस षड़यन्त्र की बात को उड़ाते हुए जो असफल रहा था, अपने साथी के विचार पर मोहक रूप से मुस्क-राता हुआ बैठ गया।

"तुम यकीन करोगे ? उस नवयुवती ने मुझे मिलने का अवसर दिया था।"

"क्या कह रहे हो ?" बिस्तर पर से उछलते हुए पोलोज़ोव ने कहा ।

"नहीं, सुनो तो सही ।"

"मगर कैसे ? कब ? यह नामुमकिन है ।"

"क्यों, हम लोगों द्वारा खेल समाप्त कर देने के बाद जब तुम नम्बर जोड़ रहे थे, उसने मुझे बताया था कि वह रात को खिड़की पर बैठेगी और यह कि कोई भी खिड़की से भीतर आ सकता है । देखा तुमने, दुनियाँदार होना कैसा होता है ! जब तुम उस बुढ़िया के साथ हिसाब लगा रहे थे मैंने इस छोटे से मामले को तय कर लिया था। क्यों, तुमने खुद भी तो उसे अपने सामने कहते सुना था कि वह आज रात खिड़की पर बैठ कर तालाब का दृश्य देखेगी ।

"हाँ, मगर उसका इस तरह का कोई अभिप्राय नहीं था ।"

"हाँ, यही बात है जिसे मैं समझ नहीं पा रहा हूँ : यह बात उसने किसी मतलब से कही थी या वैसे ही ? हो सकता है कि सचमुच वह इतनी शीघ्र राजी नहीं होना चाहती थी परन्तु इससे प्रकट ऐसा ही हुआ था । इसका नतीजा भयानक निकला । मैंने बड़ी बेवकूफी की," अपने प्रति एक घृणा का भाव दिखा कर उसने मुस्कराते हुए कहा ।

"क्या कह रहे हो ? तुम कहाँ गए थे ?"

काउंट ने केवल अपनी उस बारबार उस तक जाने की असमर्थता की बात को छिपाते हुए उससे जो कुछ हुआ था सब बता दिया ।

"मैंने मामले को खुद ही बिगाड़ दिया था : मुझे और अधिक साहस से काम लेना चाहिए था । वह चीखी और खिड़की छोड़ कर भाग गई ।

"तो वह चीखी और भाग गई," काउंट की मुस्कराहट के प्रत्युत्तर में बरबस मुस्कराते हुए पोलोज़ोव ने कहा, जो उस पर इतने दिनों से गहरा प्रभाव जमाए हुए था ।

"हाँ, मगर अब सोने का समय हो गया।"

पोलोज़ोव ने फिर दरवाजे की तरफ पीठ कर ली और लगभग दस मिनट तक चुपचाप पड़ा रहा। भगवान् जानता होगा कि उसकी आत्मा में क्या विचार उठ रहे थे परन्तु जब उसने फिर करवट बदली तो उसके चेहरे पर वेदना और दृढ़ता के भाव थे।

"काउंट तुरबिन !" एकाएक उसने कहा।

"तुम पागल हो गए हो ?" काउंट ने चुपचाप जवाब दिया, "...क्या बात है, कोरनेट पोलोज़ोव ?"

"काउंट तुरबिन, तुम गुन्डे हो !" पोलोज़ोव चीखा और दुबारा बिस्तर पर से नीचे कूद पड़ा।

१६.

स्क्वाड्रन दूसरे दिन चला गया। उन दोनों अफसरों ने अपने मेजवान से फिर न तो मुलाकात ही की और न उनसे विदा ही मांगी और न वे आपस में ही एक दूसरे से ही बोले। वे पहले ही रुकने के स्थान पर द्वन्द्वयुद्ध लड़ने की सोच रहे थे। परन्तु कप्तान शुल्ज ने, जो एक भला आदमी और बहुत अच्छा घुड़सवार था, जिसे रेजीमेन्ट में सब प्यार करते थे और काउंट ने उसे अपने नीचे वाले स्थान के लिए चुना था, उस मामले को इतनी अच्छी तरह सुलझा दिया कि सिर्फ वे लोग एक दूसरे से लड़े ही नहीं बल्कि रेजीमेन्ट में और कोई भी इस बात को नहीं जान पाया, और तुरबिन और पोलोज़ोव, हालांकि अब आपस में मित्रता का व्यवहार नहीं करते थे, तो भी अब एक दूसरे से आत्मीयता पूर्वक बोलने, दावतों और ताश की पार्टियों में मिलने जुलने लगे।

एक घोड़े की कहानी

आसमान बराबर ऊपर उठता गया, ऊषा की लालिमा अधिकाधिक विस्तार पाती गई, ओस की हल्की रुपहली आभा पीली पड़ती चली गई, द्वितीया के चाँद का प्रकाश निरन्तर फीका पड़ता चला गया, बन में जीवन की जागृति के चिन्ह मुखर होने लगे। लोग नींद से जाग उठे, और जमींदार के अस्तबल से रह रह कर बार बार घोड़ों के फुरफुराने की ध्वनि आने लगी, नीचे पड़ी हुई घास के रौंदे जाने का शब्द उठने लगा और किसी बात पर मूर्खता पूर्ण तरीके से लड़ते हुए एक स्थान पर एकत्रित कर दिए गए घोड़ों की क्रोध से भरी हुई हिनहिनाने की आवाजें आने लगीं।

"हो-ओ-ओ! बहुत समय है! भूखे हो?" शीघ्रता से चरचराते हुए दरवाजे को खोलते हुए घोड़ों के पुराने व्यापारी ने कहा। "तुम कहाँ चल दिए?" उसने चीखते हुए एक घोड़ी को टोका जो दरवाजे में से बाहर निकलने की कोशिश कर रही थी।

रखवाला नेस्टर एक कज्जाक जाकेट पहने और उस पर एक कढ़ी हुई पेटी बाँधे हुए था। उसके हन्टर के तस्मे उसके बांये कंधे से बंधे हुए थे और एक तौलिया जिसमें एक रोटी का टुकड़ा बंधा हुआ था उसकी पेटी से लटक रहा था। उसके हाथों में एक ज़ीन और लगाम थी। रखवाले की इन व्यंग्यपूर्ण बातों से घोड़े न तो भयभीत हुए और न उन्होंने बुरा ही माना। उन्होंने ऐसा भाव दिखाया कि जैसे उनके लिए इन बातों का कोई महत्व नहीं और वे आराम से धीरे धीरे फाटक से हट गए परन्तु एक बुड्ढी घोड़ी नहीं हटी जिसका रंग भूरा और अयाल घने थे। उसने एक कान पीछे किया और तेजी से मुड़ कर खड़ी

हो गई। उसके पीछे खड़ी हुई एक बछेड़ी जिसका इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं था, इस मौके का लाभ उठाकर हिनहिनाई और पास खड़े हुए एक घोड़े के दुलत्ती झाड़ दी।

"हे !" रखवाला और भी जोर से और कड़े स्वर में चीखा और अहाते के दूसरे कौने की तरफ चला गया।

उस अहाते के सब घोड़ों में से (वहाँ लगभग सौ घोड़े थे) एक चितकबरे रंग का खस्सी किया हुआ घोड़ा एक बन्द घेरे में एकाकी खड़ा अधखुली आँखों से एक लकड़ी के लट्ठे को चाटता हुआ सबसे कम अधीरता दिखा रहा था।

यह बताना असम्भव है कि उस लट्ठे में घोड़े को क्या मज़ा आ रहा था परन्तु चाटते समय उसकी मुद्रा गम्भीर और विचारपूर्ण थी।

"चाटना बन्द करो !" रखवाला उसके पास जाते हुए और लीद के ढेर पर ज़ीन और एक चमकीला कपड़ा रखते हुए चीखा।

उस घोड़े ने चाटना बन्द कर दिया और बिना हिले डुले नेस्टर की तरफ देर तक देखता रहा। वह घोड़ा न हँसा, न नाराज हुआ, न झुंझलाया परन्तु उसका सारा पेट एक गहरी सांस लेने से फूल उठा और वह मुड़ कर खड़ा हो गया। घुड़सवार ने घोड़े की गर्दन में अपना हाथ लपेटा और लगाम चढ़ा दी।

घोड़े ने अपनी पूंछ हिलाई मानो कह रहा हो, "कोई खास बात नहीं, नेस्टर !" नेस्टर ने ज़ीन का कपड़ा और ज़ीन उस पर रखी। इससे घोड़े ने कनौतियाँ पीछे कीं, शायद अपना असन्तोष व्यक्त करने के लिए, परन्तु इसके लिए उसे हरामी की उपाधि मिली और ज़ीन के तस्मे कस दिए गए।

इस पर घोड़े ने एक गहरी सांस ली परन्तु उसके मुँह में एक उङ्गली ठूंस दी गई और पेट में एक घुटना लगा जिससे कि उसे अपनी सांस बाहर निकाल देनी पड़ी। इतना होने पर भी, जब जीन का कपड़ा

उस पर बांधा जाने लगा तो उसने फिर कनौतियाँ पीछे की ओर चारों तरफ देखा। हालांकि वह जानता था कि इससे कुछ होना जाना नहीं फिर भी उसने यह जरूरी समझा कि वह यह बता दे कि उसे यह हरकत पसन्द नहीं और यह कि वह इसके विरोध में सदैव अपना असन्तोष ही व्यक्त करेगा। जब उस पर ज़ीन कस दी गई तो वह सुन्न रह गया आगे वाला दाहिना पैर उठाया और घास का एक तिनका चबाने लगा। यह भी उसने अपने किसी विशेष विचार के कारण ही किया क्यों उस समय तक उसे यह मालूम हो गया होगा कि घास के उस टुकड़े में कोई भी जायका नहीं होता।

छोटी रकाब में पैर रख कर नेस्टर घोड़े पर सवार हुआ, अपना लम्बा चाबुक खोला, घुटनों के नीचे दबे हुए कोट को खींच कर सीधा किया, कोचवानों, शिकारियों और घुड़सवारों की सी विशेष सजधज के साथ बैठा और लगाम में झटका दिया। घोड़े ने कहीं भी चलने की अपनी तैयारी का प्रदर्शन करते हुए गर्दन ऊपर उठाई परन्तु हिला नहीं। वह जानता था कि चलने से पहले काफी चीख पुकार मचेगी और यह कि नेस्टर, उसकी पीठ पर से ही, वास्का को, पुराने साईस को और दूसरे घोड़ों को अनेक आज्ञाएं देगा। और नेस्टर चीखा: "वास्का! हलो; वास्का। तुमने बच्चे वाली घोड़ियों को खोल दिया? कहाँ जा रहे हो, शैतान! हो ओ-ओ! सो रहे हो क्या···फाटक खोलो! बच्चों वाली घोड़ियों को पहले बाहर निकालो।" उसने इसी प्रकार की और आज्ञायें दीं।

फाटक चरमराया। वास्का उदास और उनींदा फाटक पर अपने घोड़े की लगाम पकड़े खड़ा हुआ दूसरे घोड़ों को बाहर निकाल रहा था। घोड़े एक दूसरे के पीछे, घास पर सावधानी से पैर रखते और उसे सूंघते हुए फाटक से बाहर निकलने लगे। बछेड़ियाँ, अयाल और पूंछ कटे हुए साल साल भर के छोटे बच्चे, दूध पीते हुए बछेड़े और गर्भिणी

घोड़ियाँ अपने भारी पेट को लिये हुए सावधानी पूर्वक फाटक से बाहर निकलने लगीं। बछेड़ियाँ कभी कभी दो दो या तीन तीन के झुंड में इकट्ठी हो जातीं और एक दूसरी की पीठ पर अपना सिर रखे और फाटक में खुरों की ठोकरें मारती हुई, जिसके लिए साईस से उन्हें हर बार डाट खानी पड़ती थी, आगे बढ़ने लगीं। छोटे छोटे दूध पीते बच्चे कभी कभी गलत घोड़ियों के नीचे दौड़ कर जा पहुँचते और अपनी माताओं के हिनहिनाने के प्रत्युत्तर में जोर से हिनहिना उठते।

खेल में मस्त एक बछेड़ी सीधी फाटक से बाहर निकली, इधर उधर में अपना सिर झुकाया, पिछली टाँगों से दुलत्तियाँ फेंकी और चीखी परन्तु इतना करने पर भी उसका यह साहस नहीं हुआ कि वह एक चितकबरी बुड्ढी घोड़ी झुलदिवा से आगे निकल जाय, जो धीमे और भारी कदमों से, अपने पेट को इधर उधर झुलाती हुई हमेशा की तरह सब घोड़ों से आगे चल रही थी।

कुछ ही मिनटों में वह अहाता जो जीवन की हलचलों से परिपूर्ण था सूना हो गया, उस खाली बन्द बाड़े के नीचे गढ़ा हुआ लट्ठा एकाकी खड़ा रह गया। वहाँ सिर्फ लीद मिली खुंदी हुई घास दिखाई पड़ रही थी। वह घोड़ा इस दृश्य को देखने का अभ्यस्त हो चुका था इसलिए शायद उसे कुछ निराशा सी हुई, मानो कि सलाम कर रहा हो, इस तरह उसने सिर नीचा किया और फिर ऊपर उठा लिया। उस कस कर बंधे हुए तस्मे के रहते हुए जितनी गहरी सांस वह ले सकता था ली और अपनी कड़ी और तिरछी टांगों के बल लंगड़ाता हुआ, नेस्टर को अपनी हड्डियों वाली पीठ पर लादे, झुंड के पीछे चल दिया।

"मैं जानता हूँ कि जैसे ही हम लोग सड़क पर पहुंचेंगे वैसे ही वह दियासलाई जलाएगा और पीतल जड़े हुए और एक जंजीर लगे हुए काठ के पाइप को सुलगा कर पीने लगेगा," घोड़े ने सोचा, "मुझे इससे आनन्द मिलता है क्योंकि सुबह ही सुबह जब चारों

तरफ ओस छायी रहती है, मुझे इसकी गन्ध अच्छी लगती है। यह मुझे उन सुखद क्षणों की याद दिलाता है; मगर यह बड़ी परेशानी की बात होती है कि जब उसका पाइप उसके मुँह में दबा होता है तो वह बुड्ढा अकड़ जाता है, अपने को कुछ समझने लगता है और तिरछा होकर, हमेशा तिरछा होकर बैठ जाता है—और इससे उसकी बगल में तकलीफ होने लगती है। कुछ भी हो, इससे निस्तार नहीं हो सकता। दूसरों के आनन्द के लिए दुख उठाना मेरे लिए कोई नयी बात नहीं है। मैं इसमें घोड़ों को प्राप्त होने वाले एक विशेष प्रकार के आनन्द का भी अनुभव करने लगा हूँ। उसे अकड़ने दो, बेचारा! बेशक जब वह अकेला होता है और उसे दूसरा कोई नहीं देख रहा होता उसी समय वह अकड़ता है-उसे तिरछा होकर बैठ लेने दो।" घोड़े ने सोचा और तिरछी टांगों से सावधानी पूर्वक क़दम रखता हुआ बीच सड़क में चलता रहा।

२.

घोड़ों को नदी किनारे लाकर, जहाँ उन्हें चरना था, नेस्टर घोड़े पर से उतर पड़ा और ज़ीन खोल कर उतार ली। तब तक वह झुंड धीरे धीरे उस बिना चरे हुए चरागाह में इधर उधर फैल गया, जो ओस और कुहरे से ढका हुआ था और जिसके बगल में नदी चक्कर खाती हुई बह रही थी।

जब नेस्टर ने घोड़े की लगाम उतार ली तो उसकी गर्दन के नीचे खुजाने लगा जिसके प्रतिदान में घोड़े ने अपनी आँखें बन्द कर अपनी कृतज्ञता और सन्तोष प्रकट किया।

"तो तुम इसे पसन्द करते हो, बुड्ढे कुत्ते!" नेस्टर ने कहा।

दरअसल वह घोड़ा इस दुलार को कतई पसन्द नहीं करता था और सिर्फ सौजन्यतावश ही यह दिखाता था कि यह उसे अच्छा लगता है। उसने नेस्टर के शब्दों की स्वीकृति में अपना सिर हिलाया। परन्तु एकाएक, बिल्कुल अचानक और बिना किसी भी कारण के, शायद यह

सोचकर कि अधिक घनिष्टता से यह घोड़ा कहीं अपने को महत्वपूर्ण समझने का भ्रम न कर उठे, नेस्टर ने बिना किसी प्रकार की चेतावनी दिए उसका सिर अपने से दूर कर दिया और लगाम को जोर से घुमा कर, उसके बकसुए से घोड़े की सूखी दुबली पतली टाँग पर जोर से चोट की और बिना एक भी शब्द कहे एक टीले पर पड़े हुए एक पेड़ के तने के पास चला गया जहाँ वह अक्सर बैठा करता था।

यद्यपि नेस्टर की इस हरकत ने घोड़े की भावनाओं को चोट पहुँचाई थी परन्तु उसने किसी भी तरह इसे प्रकट नहीं होने दिया और धीरे से अपनी खुरीं पूंछ हिलाते और इधर उधर सूंघते हुए तथा घास पर मुँह मार कर अपने दिमाग को दूसरी तरफ लगाता हुआ वह धीरे-धीरे नदी की तरफ चल दिया। उसने जवान घोड़ियों, बछेड़ों और दूध पीते बच्चों की, ठिठोलियों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, जो उसके चारों तरफ प्रातःकाल के वातावरण से प्रसन्न हुए खेल रहे थे; और यह जानते हुए कि, विशेष रूप से उसकी अवस्था में तन्दुरुस्त रहने का यही तरीका है कि पेट खाली होने पर खूब पानी पिया जाय और फिर बाद में खाया जाय, उसने एक ऐसा स्थान चुना जहाँ नदी का तट काफी चौड़ा और सबसे कम ढलुवाँ था। वहाँ पहुँच कर अपने खुरों और पैर के बालों को पानी में भिगोते हुए उसने अपनी थूथन पानी में डुबोई और अपने फटे हुए होठों से पानी खींचने लगा। पानी पीते समय उसकी कोखें फूलती जा रहीं थीं और प्रसन्नता के मारे वह अपनी कटी हुई पूंछ के ठूंठ को हिलाता जा रहा था।

एक शैतान भूरी बछेड़ी, जो हमेशा इस बुड्ढे घोड़े को परेशान किया करती थी और उसके साथ हर तरह की भद्दी हरकतें करती रहती थी, इस समय उसके पास पानी में आई मानो कि उसे अपना कोई काम करना हो परन्तु उसका असली इरादा उसके पास वाले पानी को गंदला करना था। मगर उस घोड़े ने जो इस समय तक पेट भर चुका

था, मानो उस बछेड़ी की हरकतों की तरफ कोई ध्यान न दिया हो, इस तरह एक के बाद दूसरा पैर कीचड़ में से बाहर निकाला, सिर को झटका दिया और उस जवान झुण्ड से एक तरफ हट कर चरने लगा। अपने पैरों को, घास को बेकार कुचलने से बचाने के लिए, इधर उधर रखता हुआ, विना शरीर सीधा किए वह लगभग तीन घन्टे तक चरता रहा। उसने तब तक घास चरी जब तक कि उसकी बाहर निकली हुई पसलियों से बोरे को तरफ बाहर न लटक आया। वह अपनी चारों सूजी हुई टांगों पर एक सा भार दिए हुए चर रहा था जिससे उसे कम से कम तकलीफ हो, विशेष रूप से उसने अपनी अगली बांई टांग पर बहुत कमजोर दिया जो सब से कम जोर थी और सुन्न रह जाया करती थी।

वृद्धावस्था कभी अत्यन्त भव्य, कभी कुरूप और कभी दयनीय होती है। परन्तु वह कुरूप और भव्य दोनों ही हो सकती है और उस घोड़े की वृद्धावस्था लगभग ऐसी ही थी।

वह काफी ऊँचा था—लगभग पन्द्रह मुट्ठी ऊँचा। उसका असली रङ्ग भूरा था—काला और सफेद मिला हुआ परन्तु अब उसके गहरे काले धब्बे धुंधले भूरे रङ्ग के हो गये थे। उस पर तीन निशान थे, एक सिर पर, जो नाक के एक तरफ से प्रारम्भ होकर आधी गर्दन तक चला गया था। उसके लम्बे अयाल, जिसमें अनेक गांठें सी पड़ी हुई थीं, कुछ स्थानों पर सफेद थे और कुछ पर भूरे थे। दूसरा निशान उसकी दाहिनी तरफ पेट के बीच तक फैला हुआ था। तीसरा निशान पुट्ठे पर था जो उसकी पूंछ के कुछ हिस्से को छूता हुआ टांगों पर आधी दूर तक चला गया था। बाकी की पूंछ सफेद और चित्तीदार थी। बड़ा हड्डियों वाला सिर, आँखों के ऊपर गहरे गड्ढे और नीचे लटकता हुआ एक काला होंठ जो कभी फट गया था, उसकी गर्दन पर नीचे और भारीपन के साथ लटके रहते थे। उसकी गर्दन इतनी पतली

थीं जो ऐसी लगती थी मानो लकड़ी में से काट कर बनाई गई हो। लटकते हुए होठ में से एक काली, कटी हुई जीभ और नीचे वाले घिसे घिसाए दाँतों के खूंटे दिखलाई पड़ते थे। कान जिनमें से एक फटा हुआ था, दोनों तरफ नीचे लटके रहते थे और सिर्फ कभी कभी भनभनाती हुई मक्खियों को उड़ाने के लिए हिल उठते थे। सामने वाले बालों में से जिनका एक गुच्छा अब भी एक कान के पीछे लटकता रहता था, बाकी के उड़ गए थे। गंजा माथा गहरा और खुरदरा था और उसकी जबड़े की हड्डियों की खाल दोनों तरफ थैलों की तरह लटक आई थी। उसकी गर्दन की नसों में गाठें पड़ गईं थी और मक्खी के छू भर देने से वे ही सिकुड़ने और कांपने लगती थीं। उसके चेहरे का भाव कठोर धैर्य को झलकाता हुआ विचारशील और दुखपूर्ण था।

उसकी आगे की टांगे घुटनों पर से धनुष की तरह मुड़ी हुई थीं, दोनों खुरों पर सूजन थी, और एक टांग पर, जिस पर वह भूरा धब्बा आधी दूर तक नीचे चला गया था, घुटने पर कलाई के बराबर एक सूजन थी। पिछली टांगें अच्छी हालत में थीं परन्तु यह साफ दिखाई देता था कि बहुत पहले ही उसके कूल्हों ने इतनी रगड़ खाई थी कि कई जगह पर दुबारा बाल नहीं जमे थे। उसके शरीर की दुर्बलता के कारण उसकी टांगें लम्बाई में एक सी नहीं दिखाई पड़ती थीं। पसलियाँ यद्यपि सीधी थीं, इतनी निकल आईं थीं और उन पर खाल इतनी कस गई थी कि ऐसी मालूम पड़ती थी मानो उनके बीच की जगह सूख गई हो। उसकी पीठ और पुट्ठों पर पहले मारे गए हन्टरों के निशान पड़े हुए थे और पीछे एक ताजा घाव था जो अब भी सूजा हुआ था और पक गया था। उसकी पूंछ का कटा हुआ काला ठूंठ जो रीढ़ की हड्डी जैसा लगता था, बिल्कुल नंगा नीचे की तरफ लटकता रहता था। उसके गहरे भूरे पुट्ठे पर–पूंछ के पास–एक घाव का निशान था, मानो किसी ने काट लिया हो, आदमी की हथेली के बराबर और सफेद बालों

से ढका हुआ। दूसरा एक घाव का निशान उसके एक कन्धे पर दिखाई पड़ता था। उसकी पूंछ और पिछले पैरों के घुटने गन्दे रहते थे क्योंकि उसे हमेशा पेट को बीमारी रहती थी। सारे शरीर पर उगे हुए बाल यद्यपि छोटे थे परन्तु सीधे खड़े रहते थे। फिर भी इस घोड़े की इस घिनौनी वृद्धावस्था के कारण कोई भी जब उसे देखता था तो अपने आप सोचने लगता था और घोड़ों का कोई विशेषज्ञ तो फौरन ही कह उठता कि अपने जमाने में यह एक अच्छा घोड़ा रहा होगा। वह विशेषज्ञ यह भी कहता कि रूस में घोड़ों की केवल एक ही नस्ल ऐसी थी जिसके इतनी चौड़ी हड्डियाँ, इतने बड़े घुटने, ऐसे खुर, ऐसी सुडौल टांगों की हड्डियाँ, ऐसी गठी हुई सुडौल गर्दन और सबसे अधिक ऐसा ढाँचा, आँखें—बड़ी, काली और साफ—और सिर और गर्दन पर नसों का ऐसा मजबूत जाल और इतनी कोमल खाल और बाल होते हैं।

उस घोड़े की रूपरेखा में सचमुच कुछ ऐसी भव्यता थी और उसकी वृद्धावस्था की अरुचिकर निर्बलता जो उसके बालों के रंगबिरंगे होने से और भी अधिक प्रकट होती थी, और उसकी चालढाल जिससे आत्म-विश्वास, शान्ति पूर्ण दृढ़ता, जिसका सम्बन्ध सौन्दर्य और शक्ति से होता है, आदि के अद्‌भुत मिश्रण ने उसके रूप को और भी भव्य बना दिया था। एक जीवित खंडहर की भांति वह उस ओस से भीगे चरागाह के मध्य अकेला खड़ा हुआ था जबकि उसके पास ही बिखरे हुए झुंड के पैर पटकने की, फुरफुराने की, यौवन पूर्ण हिनहिनाहट की और चिल्लाने की आवाजें आ रहीं थीं।

३.

इस समय तक सूरज जंगल के ऊपर पहुँच चुका था और तेजी से घास और नदी के मोड़ों पर चमक रहा था। ओस भाप बन कर उड़ रही थी और बूदों के रूप में इकट्ठी हो रही थी। सुबह के कुहरे का बचा हुआ अंश हलके धुंए की तरह गायब होता जा रहा था। बादलों

के छोटे छोटे टुकड़े छितरा रहे थे परन्तु अभी तक हवा चलनी प्रारम्भ नहीं हुई थी। राई के हरे पौधे, जिनकी बालें नली की तरह उठी हुई थीं, नदी के उस पार चमक रहे थे। ताजी हरियाली और फूलों की सुगन्ध छा रही थी। कोयल अपनी भारी आवाज में जंगल में पुकार रही थी और नेस्टर पीठ के बल लेटा हुआ यह हिसाब लगा रहा था कि अभी उसे कितने वर्ष और जीवित रहना है। लवा पक्षी राई के खेतों और चरागाह के ऊपर उड़ रहे थे। एक भटका हुआ खरगोश घोड़ों के झुंड के बीच में आ गया और फिर मैदान में भाग कर एक झाड़ी के पास छिप कर सुनने लगा।

वास्का नीचे घास पर सिर रखे झपकी ले रहा था। बछेड़ियाँ दूर तक घूमती हुईं उसके चारों तरफ घेरा सा बांध कर ढलान पर बिखर गईं। बड़ी अवस्था वाली घोड़ियां फुरफुराती हुईं, ओस पर एक लम्बा सा निशान छोड़ती जा रही थीं और बराबर ऐसे स्थान की तलाश कर रही थीं जहाँ कोई आकर उन्हें छेड़ न सके। वे अब चर नहीं रही थीं फिर भी भोजन के उपरान्त जायका बदलने के लिए जायकेदार पौधों और घास की पत्तियों को कुतर कर खा रही थीं। सारा झुंड अनजाने ही एक ही दिशा में बढ़ता जा रहा था।

और फिर झुलदिबा ने सब के आगे धीरे धीरे कदम रखकर चलते हुए उन्हें आगे बढ़ने की सम्भावना से अवगत कराया। मिद्गी, एक काली जवान घोड़ी जिसके पहला ही बच्चा हुआ था, बराबर हिन-हिनाती इधर उधर कूदती और भरभराती हुई, पूंछ ऊँची किए अपने बकायन के रंग वाले दूध पीते बछेड़े की तरफ, फुरफुरा रही थी। जवान रेशमी कन्या, जिसकी खाल चिकनी और चमकीली थी अपना सिर इतना नीचे झुकाये हुए कि जिससे उसके माथे पर के रेशमी बाल उसके माथे और आँखों को ढक रहे थे, घास के साथ खेल रही थी। वह घास कुत-रती, रुक जाती और ओस से भीगे हुए अपने पैर को खुरों के पीछे उगे

हुए कोमल बालों से सहलाती। एक बड़ा दूध पीता बछेड़ा अपनी ठूंठदार लहराती पूंछ कलंगी की तरह ऊपर उठाए, शायद उसने अपने लिए एक नया खेल ढूंढ़ लिया हो इस तरह अब तक अपनी माँ के चारों तरफ छब्बीस बार दौड़ लगा चुका था। उसकी माँ चुपचाप घास कुतर रही थी क्योंकि वह अपने बेटे की आदत से इस समय तक पूरी तौर से वाकिफ हो चुकी थी और सिर्फ कभी कभी अपनी बड़ी काली आँख के कौने से उसकी तरफ देख लेती थी।

एक सबसे छोटा दूध पीता बछेड़ा, काला, बड़े सिर वाला, अपने माथे पर के बालों को कानों के बीच में किए हुए मानो आश्चर्य चकित हो उठा हो, पूंछ को उस तरफ मोड़े हुए जिस तरफ माँ के पेट में वह मुड़ गई थी, कनौतियाँ खड़ी किए और आँखें जमाए एक जगह स्थिर खड़ा होकर अपनी माँ के चारों तरफ भागते हुए उस बछेड़े को देख रहा था और कोई भी नहीं बता सकता था कि वह बच्चा उसकी तरफ ईर्ष्या से देख रहा था या उसके इस कार्य के लिए उसकी भर्त्सना कर रहा था। कुछ बच्चे दूध पी रहे थे, थनों में हूदें मारते हुए; कुछ, न जाने किस कारण, अपनी माताओं द्वारा बुलाए जाने पर भी भद्दे रूप से कुदकते हुए बिल्कुल दूसरी तरफ चले जा रहे थे मानो कुछ ढूंढ़ रहे हों और फिर किसी कारण वश, जो पहले की ही तरह अज्ञात था, रुकते और कान के पर्दे फाड़ने वाली आवाज में निराश होकर हिनहिना उठते, कुछ करवट के बल लोट रहेथे, कुछ चरना सीख रहेथे; कुछ अपनी पिछली टांगों से कान के पीछे खुजा रहे थे। दूसरी दो गर्भिणी घोड़ियाँ अलग चल रहीं थीं और धीरे धीरे पैर उठाती हुईं अब भी चर रहीं थीं। स्पष्टत: उनकी स्थिति का सब सम्मान कर रहे थे और छोटे घोड़ों में से कोई भी उनके पास जाने और परेशान करने का साहस नहीं कर सका। अगर कोई शैतान बछेड़ी उनके पास जाने का इरादा भी करती

तो कान और पूंछ की एक फरफराहट ही ऐसी शैतानों को उनके व्यवहार की असभ्यता का ज्ञान कराने के लिए यथेष्ठ थी।

छोटे अयालों वाले साल भर के बछेड़े और बछेड़ियाँ यह दिखाते थे कि वे पूर्ण युवा और गम्भीर बन गए थे। वे बहुत कम उछलते कूदते या किलोलें करने वाले समूहों में शामिल होते थे। वे एक बड़प्पन के साथ चर रहे थे। महीन बाल कटे हुए हंस जैसी गर्दन को मोड़ते हुए और अपनी छोटी २ झाड़ू जैसी पूंछों को इस तरह हिलाते हुए मानो उनके भी लम्बी पूछें हैं। बड़े घोड़ों की ही तरह वे जमीन पर लेटते, लौटते या एक दूसरे से देह रगड़ते। सब से प्रसन्न झुण्ड में दो और तीन साल की बछेड़ियाँ और ऐसी घोड़ियाँ थीं जो अभी गर्भिणी नहीं हुई थीं। वे लगभग सदैव एक साथ इस तरह चलती थीं मानो कुमारी कन्याओं का किलोल करता हुआ एक झुण्ड हो। उनमें तुम्हें पैर पटकने की, प्रसन्न होकर हिनहिनाने की और फुसकारने की आवाजें सुनाई दे सकती थीं। वे पास पास सिमट आतीं, एक दूसरे की गर्दन पर अपना सिर रख लेतीं, एक दूसरे को सूंघती, कूदतीं और कभी २ हल्की दुल्की और धीमी चाल से, अपनी पूंछों को झण्डे की तरह ऊपर उठाए दौड़तीं और चुहलबाजियाँ करती हुई अपनी साथिनों से आगे निकल जातीं। इन सब में सबसे अधिक सुन्दर और शैतान वही भूरे रङ्ग की बछेड़ी थी। जो वह सोचती दूसरी वही करतीं; जहाँ कहीं वह जातीं सुन्दरियों का वह सारा झुण्ड उसका अनुगमन करता। उस सुबह वह शैतान विशेष रूप से खेलने के मूड में थी। वह उमङ्ग में भर उठी थी जैसे कि कभी २ मनुष्य उमङ्गित हो उठते हैं। नदी किनारे वह पहले ही उस बुड्ढे घोड़े के साथ शैतानी कर चुकी थी और उसके बाद यह दिखातीं हुई कि किसी चीज से भयभीत हो उठी है, उसने पानी में दौड़ लगाई, बुरी तरह चीखी और मैदान में पूरी तेजी से दौड़ी जिससे वास्का को उसके पीछे और उसके साथ दौड़ने

वालियों के पीछे अपने घोड़े को तेजी से दौड़ाना पड़ा। फिर थोड़ी देर चरने के बाद वह जमीन पर लोटने लगी, फिर पुरानी घोड़ियों के सामने तेजी से दौड़ कर उन्हें परेशान करने लगी। कुछ देर बाद उसने एक छोटे से बच्चे को उसकी माँ से अलग कर दिया और उसके पीछे इस तरह दौड़ी मानो उसे काट लेगी। उसकी माँ भयभीत हो उठी और चरना बन्द कर दिया। वह बच्चा अत्यन्त दीनता पूर्वक चीख उठा परन्तु उस शैतान ने उसे छुआ तक नहीं। वह उसे सिर्फ डराना चाहती थी और अपनी साथिनों, जो उसकी इस हरकत को अनुमोदन की दृष्टि से देख रही थीं, के मनोरञ्जन के लिए यह हरकत कर रही थी। फिर वह नदी के उस पार हल में जुते एक चितकबरे घोड़े को बरगलाने के लिए चल पड़ी। वह रुकी, एक तरफ को झुकाते हुए गर्व से उसने अपना सिर उठाया, फुरफुरी ली और एक मधुर, कोमल और लम्बी ध्वनि में हिनहिना उठी। उस ध्वनि में शैतानी, भावना और एक विशिष्ट अवसाद भरा हुआ था। इसमें प्रेम की अभिलाषा और प्रतिज्ञा और उसके लिए एक कसक की भावना ओतप्रोत थी।

वहाँ, सरकन्डों के घने झुण्ड में अनाज चुगने वाला एक सारस अपनी साथिन को व्यग्रतापूर्वक पुकारते हुए इधर उधर दौड़ रहा है, वहाँ कोयल और लवा प्रेम के गीत गा रहे हैं और फूल अपने दूत पवन के द्वारा एक दूसरे से अपने सुगंधित पराग का आदान-प्रदान कर रहे हैं।

"क्योंकि मैं भी जवान, सुन्दर और स्वस्थ हूँ," उस शैतान बछेड़ी की हिनहिनाहट ने पुकारा, "फिर भी मुझे अभी तक इस मधुर भावना का अनुभव करने का अवसर नहीं दिया गया है, और यही नहीं कि यह मुझे नहीं दिया गया है अपितु कभी भी किसी प्रेमी ने—एक ने भी—मेरी तरफ नहीं देखा है!"

और यह हिनहिनाहट, अवसाद, यौवन और भावनाओं से

परिपूर्ण, उस नीची जमीन और मैदान पर फैलती हुई, दूर, उस चित-कबरे घोड़े तक पहुंच गई। उसने कनौतियाँ खड़ी कीं और रुक गया। किसान ने अपने जूते से उसके ठोकर लगाई परन्तु वह घोड़ा उस दूर से आती हुई सुरीली हिनहिनाहट से ऐसा मन्त्र-मुग्ध हो उठा था कि खुद भी हिनहिना उठा। किसान क्रोध से भर उठा, लगाम खींची और उस घोड़े के पेट में इतनी जोर से ठोकर मारी कि वह अपना हिन-हिनाना पूरा नहीं कर सका और आगे चल दिया। परन्तु उस छोटे से चितकबरे घोड़े ने एक मधुरता और दुख का अनुभव किया और बहुत देर तक सुदूर स्थित उस राई के खेत से अधूरी और व्यग्रतापूर्ण हिन-हिनाहट की ध्वनि उस झुण्ड तक आती रही।

अगर उस बछेड़ी की आवाज ने ही उस चितकबरे को इतना वशीभूत कर लिया था कि वह अपना कर्त्तव्य पालन करना भूल बैठा तो अगर कहीं वह उस शैतान सुन्दरी को कनौतियाँ खड़ी किए, नथुने चौड़ाए हवा को सूंघते, दौड़ पड़ने को तैयार, अपने सारे सुन्दर शरीर को कंपकंपाते और उसे पुकारते हुए देख लेता तो न जाने क्या हो जाता।

परन्तु उस शैतान ने अपने द्वारा पड़े हुए प्रभाव के बारे में अधिक देर तक नहीं सोचा। जब उस चितकबरे की हिनहिनाहट समाप्त हो गई तो वह फिर घृणा भरे स्वर में हिनहिनाई, सिर नीचा किया और जमीन को टाप से खुरचने लगी और फिर उस बुड्ढे घोड़े को जगाने और परेशान करने के लिए चल दी। वह बुड्ढा घोड़ा हमेशा इन प्रसन्न जवान बछेड़ियों द्वारा छेड़ा जाता और परेशान किया जाता था। वह मनुष्यों की अपेक्षा इनके द्वारा अधिक सताया जाता था। वह किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाता था। मनुष्यों को उसकी जरूरत थी मगर ये जवान बछेड़े उसे क्यों परेशान करते थे ?

४.

वह बुड्ढा था, वे जवान थे; वह दुबला था, वे चिकने पड़े हुए थे; वह दुखी था, वे प्रसन्न थे; इसलिए वह उनके लिए पूर्ण अपरिचित था, एक विदेशी, एक नितान्त भिन्न प्राणी जिसके ऊपर दया दिखाना उनके लिए असम्भव था। घोड़े केवल अपने ही प्रति दयालु होते हैं और कभी कभी ही उनके प्रति भी जिनके रूप में वे आसानी से अपने होने की कल्पना कर सकते हैं। परन्तु क्या यह उस बुड्ढे घोड़े का दोष था कि वह बुड्ढा, गरीब और कुरूप था?···

कोई सोच सकता है कि नहीं, परन्तु घोड़ों के नीतिशास्त्र के अनुसार वह दोषी था और सिर्फ वही ठीक थे जो शक्तिवान्, युवक और प्रसन्न थे–वे, जिनके सामने अभी पूरा जीवन पड़ा हुआ था, जिनकी प्रत्येक रग अतिरिक्त शक्ति से फड़कती रहती थी और जिनकी पूंछ सीधी खड़ी रहती थी। हो सकता है कि वह बुड्ढा घोड़ा खुद इस बात को समझता था और अपने शान्त क्षणों में इस बात से सहमत होने के लिए प्रस्तुत था कि वह इस समय तक अपना जीवन व्यतीत कर चुका था और यह कि उसे उस जीवन का मूल्य चुकाना था; परन्तु फिर भी वह एक घोड़ा था और कभी कभी क्रोध की भावना को दबाने में असमर्थ हो उठता था। वह दुख और विरक्ति से भर जाता था जब उनकी तरफ देखता जो उसे सताते थे क्योंकि उन पर भी उनके जीवन के अन्त में यही बीतने वाला था। उस घोड़े के प्रति दया के अभाव का दूसरा कारण उन जवान घोड़ों का 'उच्चवर्गीय गर्व' था। उनमें से प्रत्येक अपनी वंशावली, माँ और बाप द्वारा, उस प्रसिद्ध भूरे रंग के चिकने घोड़े से स्थापित करता था जबकि इस बुड्ढे घोड़े के माता पिता का कोई पता ही नहीं था। वह अकस्मात ही वहाँ आ गया था। उसे तीन वर्ष पहले एक मेले में से अस्सी 'एसिग्नेट रूबल' देकर खरीदा गया था।

वह भूरी बछेड़ी, जैसे चहलक़दमी कर रही हो, इस तरह उस

बुड्ढे घोड़े की बिल्कुल बगल में से निकली और उसे धक्का दिया। वह फौरन ही समझ गया कि यह क्या था और बिना आँखें खोले उसने कनौती पीछे की और दाँत दिखा दिए। बछेड़ी ने उसके चारों तरफ चक्कर काटे मानो उसके दुलत्ती मारना चाह रही हो। घोड़े ने आँखें खोलीं और एक तरफ हट गया। वह अब और अधिक सोना नहीं चाहता था इसलिए चरने लगा। वह शैतान अपने साथियों के साथ फिर उसके पास आई। एक बहुत ही मूर्ख दो वर्ष की सफेद धब्बों वाली बछेड़ी, जो हर बात में उस भूरी बछेड़ी की नकल किया करती थी, उसके साथ आगे बढ़ी और जैसा कि नकल करने वाले हमेशा करते हैं, उकसाने वाली से भी आगे बढ़ गई। वह भूरी हमेशा इस तरह जाती थी मानो अपने ही किसी काम से जा रही हो और बिना घोड़े की तरफ देखे उसकी नाक के सामने से निकलती जिससे वह यह नहीं जान पाता कि उसे नाराज होना चाहिए अथवा नहीं और यह सचमुच बड़ी मजेदार बात होती।

इस बार भी उसने यही किया, परन्तु उस सफेद धब्बों वाली ने जो उसके पीछे पीछे चल रही थी और विशेष रूप से उत्साहित हो उठी थी, अपनी छाती से उस घोड़े में सीधी टक्कर मारी। उसने फिर अपने दाँत दिखाए, हिनहिनाया और इतनी फुर्ती से, कि जिसकी उससे कोई भी आशा नहीं कर सकता था, उसके पीछे दौड़ा और पिछले पुट्ठे में काट खाया। उस सफेद धब्बों वाली ने अपनी पूरी शक्ति से दुलत्ती झाड़ी और उस घोड़े की पतली दिखाई पड़ने वाली पसलियों में बड़ी गहरी चोट की। वह जोर से फुसकारा और उसके पीछे फिर दौड़ने ही वाला था कि उसने कुछ सोचा और एक गहरी सांस लेता हुआ एक तरफ को हट गया। जवानों के उस पूरे झुंड ने घोड़े की इस बदतमीजी को अपना व्यक्तिगत अपमान समझा जो उसने उस सफेद धब्बों वाली बछेड़ी के साथ की थी और फल स्वरूप उसे पूरे बचे हुए दिन भर एक क्षण के

लिए भी चैन से नहीं चरने दिया, जिससे कि रखवाले को उन्हें कई बार शान्त करना पड़ा और वह यह नहीं समझ सका कि उन्हें हो क्या गया है।

उस बुड्ढे घोड़े ने अपने को इतना अपमानित अनुभव किया कि खुद ही नेस्टर के पास पहुँच गया जो घोड़ों को घर ले चलने की तैयारी कर रहा था। उसने अपने को प्रसन्न और शान्त अनुभव किया जब उस पर ज़ीन कसी गई और वह बुड्ढा आदमी उस पर सवार हो गया।

भगवान जानता है कि नेस्टर को अपनी पीठ पर ले जाते हुए बुड्ढा घोड़ा क्या सोच रहा था। आया वह कटुता पूर्वक उस नवीन रक्त के प्रति सोच रहा था जो क्रूर और निर्दयी था या वह उन लोगों को क्षमा कर रहा था जिन्होंने उसे सताया था, एक घृणामिश्रित और शान्त गर्व के साथ जो बुढ़ापे में हो जाता है। तथ्य यही रह जाता है कि उसने घर वापस लौटे हुए अपने विचारों के साथ विश्वासघात नहीं किया।

उस संध्या को, जब नेस्टर अपने घोड़ों को लिए हुए घरेलू नौकरों की झोंपड़ियों के पास होकर गुजर रहा था तो उसने अपनी सामने वाली सीढ़ियों के पास एक किसानी घोड़े और गाड़ी को खड़े हुए देखा। कुछ मित्र उससे मिलने आये थे। घोड़ों को भीतर हांकते समय वह इतनी जल्दी में था कि उसने उस बुड्ढे घोड़े को बिना ज़ीन उतारे ही छोड़ दिया और चीख कर वास्का से ज़ीन खोलने के लिए कह कर फाटक बन्द किया और अपने मित्रों के पास चला गया। इस कारण से कि उस प्रसिद्ध भूरे रेशम जैसे घोड़े के बेटे की नातिन, उस सफेद धब्बों वाली बछेड़ी का इस भद्दे रूखे, मेले से खरीदे गए घोड़े ने जिसे अपने माँ बाप का भी पता नहीं था, अपमान किया था और जिसने पूरे झुंड के उच्चवर्गीय गर्व के क्रोध को जाग्रत कर दिया था या इस कारण से कि ऊँची ज़ीन और बिना सवार के वह घोड़ा दूसरे घोड़ों के सामने एक अजीब भद्दा सा दृश्य उपस्थित कर रहा था, कारण चाहे इनमें से कोई

भी हो परन्तु उस रात को उस बाड़े में एक बिल्कुल अजीब सा दृश्य उत्पन्न हो गया था। सब घोड़े, जवान और बुड्ढे, अपने दाँत निकाले उसे सारे बाड़े में दौड़ाते फिरे। उसकी नंगी पसलियों में पड़ने वाली दुलत्तियों और उसके कराहने की आवाज कोई भी सुन सकता था। वह इसे और ज्यादा न तो सह सका और न अपना बचाव ही कर सका। वह बाड़े के बीचोंबीच खड़ा हो गया। अपने चेहरे से उसने पहले वृद्धावस्था से उत्पन्न अशक्त, असहाय द्रोह का भाव दिखाया और फिर उस पर निराशा झलक उठी। उसने अपनी कनौतियां गिरा लीं और फिर कुछ ऐसी बात हुई कि जिसने सब घोड़ों को खामोश कर दिया। घोड़ियों में सबसे बड़ी व्याज़ापुरिखा उसके पास गई, उसे सूंघा और गहरी सांस ली। उस बुड्ढे ने भी आह खींची··· ।

५.

चाँदनी में डूबे हुए उस बाड़े के बीच में उस घोड़े की ऊँची और दुबली पतली काया अब भी अपने ऊपर नोकदार उठी हुई ज़ीन का बोझ लादे हुए खड़ी थी। घोड़े निस्तब्ध और पूर्ण शान्ति के साथ उसके चारों तरफ खड़े थे मानो उन्होंने उससे कोई नई बात सीखी हो, बिल्कुल नई बात। और सचमुच उन्होंने कुछ नई, बिल्कुल अप्रत्याशित बात सीखी थी।

उन्होंने उससे यह सीखा था······

प्रथम रात्रि

हाँ, मैं सुशील प्रथम और 'बाबा' नामक घोड़ी का पुत्र हूँ। मेरा खान्दानी नाम मुजहिक (किसान) प्रथम है। वंशवृक्ष के अनुसार मैं मुजहिक प्रथम हूं, लोगबाग मुझे 'पवन वेग' कहते थे क्योंकि मैं लम्बे लम्बे डग रख कर तूफान की तेजी से चलता था। मेरे समान तेज

दौड़ने वाला रूस में और कोई भी नहीं था। जन्म से, मुझसे अच्छी नस्ल का घोड़ा इस संसार में और कोई भी नहीं है। मैं तुमसे यह बात कभी नहीं कहता। इससे क्या लाभ होता? तुम मुझे कभी भी नहीं पहचान सकते थे। यहाँ तक कि व्याजापुरिखा, जो मेरे साथ खेनोवो में रही थी, मुझे अभी तक नहीं पहचान सकी है। तुम मेरा विश्वास नहीं करते अगर मेरी गवाही देने के लिए व्याजापुरिखा यहां न होती और मैं तुमसे यह कभी नहीं कहता। मुझे घोड़ों की हमदर्दी की जरूरत नहीं। परन्तु तुमने जानने की इच्छा प्रकट की थी। हाँ, मैं वही 'पवन वेग' हूँ जिसे घोड़ों के पारखी ढूँढ़ते फिर रहे हैं और ढूंढ़ नहीं पा रहे हैं—वही 'लम्बी डगों वाला' जिसे काउन्ट खुद जानता था और जिससे उसने इसलिए अपना पीछा छुड़ा लिया था क्योंकि मैंने उसके प्रिय घोड़े 'हंस' को दौड़ में हरा दिया था।

जब मैं पैदा हुआ था तो यह नहीं जानता था कि चितकबरा होने का क्या अर्थ होता है। मैंने सोचा था कि मैं भी एक घोड़ा हूँ। मुझे याद है कि अपने रंग के विषय में जब मैंने पहली राय सुनी थी तो उसे सुनकर मेरी माँ पर और मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा था।

मेरा ख्याल है कि मैं रात में पैदा हुआ था। सुबह होने तक, अपनी माँ द्वारा चाटे जाने के बाद, मैं पैरों पर खड़ा हो गया था। मुझे याद है कि मैं बराबर कुछ मांगता रहता था और हर चीज मुझे बड़ी अद्‌भुत और फिर भी बड़ी साधारण सी लग रही थी। हमारा अस्तबल एक लम्बे रास्ते की तरफ खुलता था और उस पर जालीदार किवाड़ लगे हुए थे जिनमें होकर सब दिखाई देता था।

मेरी माँ ने मुझे दूध पिलाना चाहा परन्तु मैं अभी इतना अजान था कि अपनी नाक कभी तो उसके आगे वाले पैरों के बीच में और कभी थनों के बीच में घुसेड़ देता था। अचानक उसने जालीदार दरवाजे की तरफ देखा और अपनी टांग उठा कर एक तरफ हटकर खड़ी

हो गई। ड्यूटी पर तैनात साईस जाली में से हमारे थान की तरफ देख रहा था।

"आहा, बाबा ने बच्चा दिया है!" वह बोला और चटखनी हटाने लगा। वह ताजी बिछाई हुई घास पर चलता हुआ आया और मुझे हाथों में पकड़ लिया। "देखो न तारास!" वह चीखा, "इसका रङ्ग कैसा चितकबरा है—बिल्कुल नीलकंठ की तरह।"

मैं उसके पास से भागा और घुटनों के बल गिर पड़ा।

"देखो न जरा इसे—नन्हे से शैतान को।"

मेरी माँ परेशान हो उठी परन्तु फिर भी वह मुझे बचाने नहीं आई बल्कि सिर्फ एक गहरी सांस लेकर एक तरफ खड़ी हो गई। दूसरे साईस मुझे देखने आए और उनमें से एक प्रधान-साईस को बताने दौड़ गया।

जब मेरे धब्बों को देखा तो हरेक हँसने लगा और मेरे तरह तरह के नाम रखने लगा परन्तु न तो मैं ही और न मेरी माँ इन शब्दों को समझ सकीं। उस समय तक मेरे सब नाते-रिश्तेदारों में कोई भी चितकबरा नहीं था। हमने यह नहीं सोचा कि इसमें कोई बुरी बात थी। उस समय भी सबने मेरी शक्ति और शरीर की प्रशंसा की।

"देखो कितना फुर्तीला है!" साईस ने कहा, "इसे रोकना बड़ा कठिन है।"

थोड़ी देर में प्रधान साईस आया और मेरे रङ्ग को देख कर आश्चर्य करने लगा, वह कुछ दुखी भी प्रतीत हुआ।

"और इस नन्हें शैतान को रखेगा कौन?" वह बोला, "जनरल इसे अस्तबल में नहीं रहने देंगे। ओह बाबा, तुमने मुझे मुसीबत में डाल दिया!" उसने मेरी माँ से कहा, "तुम्हें ज्यादा से ज्यादा एक धब्बे वाला पैदा करना चाहिए था—मगर यह तो पूरे का पूरा चितकबरा है!"

जिसके अयाल अभी कटे ही थे। यह बड़ी प्यारी, खुशमिजाज और नन्हीं मुन्नी सी लगती थी, मगर–मैं यह उसका अपमान करने के लिए नहीं कह रहा हूँ–यद्यपि तुम लोगों में वह अब एक बहुत अच्छी नस्ल की घोड़ी मानी जाती है उस समय उसकी गिन्ती उस घुड़साल के सब से रद्दी घोड़ों में की जाती थी। वह खुद इस बात की ताईद करेगी।

मेरी चितकबरी रूपरेखा, जिसे मनुष्य इतना नापसन्द करते थे, सारे घोड़ों को बड़ी आकर्षक लगती थी। वे सब मेरे पास आते, मुझे प्रशंसायुक्त दृष्टि से देखते और मेरे साथ खेलते। मैं इस बात को भूलने लगा कि मनुष्य मेरी चितकबरी रूपरेखा के विषय में क्या कहते हैं और इससे मुझे प्रसन्नता मिलने लगी। परन्तु मैंने शीघ्र ही अपने जीवन के प्रथम दुख का अनुभव किया जिसका कारण मेरी माँ बनी। जब बरफ पिघलने लगी तो गौरैया मोरियों के नीचे चहचहाने लगीं, हवा में बसन्त की मादक सुगन्ध भर उठी और मेरे साथ मेरी माँ का व्यवहार बदल गया।

उसकी सारी चालढाल बदल गई। वह बिना बात चंचल हो उठती और अहाते में चारों तरफ दौड़ने लगती जो उसकी सम्मान योग्य अवस्था से मेल नहीं खाता था; फिर वह कुछ सोचती और हिनहिनाना प्रारम्भ कर देती और अपनी साथिन घोड़ियों को काटती और लातें मारती और फिर मुझे सूंघती और असन्तोष व्यक्त करती हुई फुसकारने लगती। फिर बाहर धूप में जाने पर वह अपनी चचेरी बहन 'व्यापारी की बधू' की गर्दन पर अपना सिर रख देती, आँखें बन्द कर उसकी पीठ रगड़ती और मुझे अपने थनों से दूर हटा देती।

एक दिन घुड़साल का साईस आया और उसके गले से एक रस्सी का फंदा डाल कर थान से बाहर ले गया। वह हिनहिनाई और मैंने उसका उत्तर दिया और उसके पीछे दौड़ा परन्तु उसने मुड़ कर

मेरी तरफ देखा तक नहीं। चाबुक-सवार तारास ने मुझे तब तक पकड़े रखा जब तक कि उन्होंने मेरी माँ के जाने के बाद दरवाजा बन्द न कर दिया।

मैं उछला और चाबुक-सवार को घास पर गिरा दिया परन्तु दरवाजा बन्द था और मैं केवल अपनी माँ की दूर होती हुई हिनहिनाहट सुन पा रहा था; और उस हिनहिनाहट से मुझे पुकारने के स्थान पर कोई और ही भावना व्यक्त हो रही थी। उसकी पुकार के उत्तर में बहुत दूर से आती हुई एक शक्तिशाली आवाज आई जो 'सज्जन प्रथम' की आवाज थी जैसा कि मुझे बाद में पता चला, जो दो साईसों द्वारा दोनों तरफ से पकड़ कर मेरी माँ से मिलाने के लिए ले जाया जा रहा था।

मुझे याद नहीं कि तारास मेरे थान में से कैसे निकला। मैं बड़ा उदास हो रहा था क्योंकि मैं जान गया था कि मैं अपने प्रति अपनी माँ का प्यार खो बैठा हूँ और यह इस कारण कि मैं चितकबरा हूँ, और मनुष्यों द्वारा अपने विषय में कही जाने वाली बातों को याद करते हुए मैंने सोचा और मैं क्रोध की ऐसी तीव्र भावना से भर उठा कि अपने सिर और घुटनों को दीवाल से मारने लगा और तब तक मारता रहा जब तक कि पसीने से नहा न गया और पूरी तरह थक न गया।

कुछ देर बाद मेरी माँ मेरे पास लौट आई। मैंने उसे रास्ते में दुलकी और एक विशेष ढङ्ग से चलते हुए सुना। उन्होंने उसके लिए दरवाजा खोला और मैं मुश्किल से उसे पहचान सका—वह इतनी जवान और खूबसूरत लग रही थी। उसने मुझे सूंघा, फुरफुराई और हिन-हिनाने लगी। उसका पूरा व्यवहार यह बता रहा था कि वह मुझे प्रेम नहीं करती।

उसने मुझसे सज्जन की सुन्दरता और अपने प्रति उसके प्रेम का उल्लेख किया। वे मुलाकातें जारी रहीं और मेरा और मेरी माँ का सम्बन्ध दिन प्रति दिन उपेक्षा पूर्ण होता चला गया।

उसके कुछ ही दिन बाद हम लोग चरने के लिए ले जाये जाने लगे। अब मुझे नई खुशियों का पता चला जिससे मैं अपनी माँ के प्रेम के अभाव को भूलने लगा। मेरे मित्र और साथी बन गए। साथ साथ हम लोगों ने घास चरना, बड़ों की तरह हिनहिनाना और पूछें उठाकर अपनी माताओं के चारों तरफ दौड़ना सीखा। वे दिन बड़े सुख के थे। मैं सब कुछ भूल गया, हरेक मुझे प्यार करता था, मेरी प्रशंसा करता था और मेरे हर काम को अनुग्रह के साथ देखता था। परन्तु यह दशा ज्यादा दिनों तक नहीं रही।

इसके कुछ ही दिनों बाद मेरे साथ एक भयानक घटना घटी···

खस्सी घोड़े ने एक गहरी सांस ली और दूसरे घोड़ों से अलग चला गया।

पौ बहुत पहले ही फट चुकी थी। फाटक चरमराया। नेस्टर भीतर आया और घोड़े अलग हो गए। रखवाले ने खस्सी घोड़े की पीठ पर ज़ीन कसी और घोड़ों को बाहर हांक ले गया।

६.

द्वितीय रात्रि

जैसे ही घोड़े अन्दर लाए गए वे फिर उस चितकबरे के चारों तरफ इकट्ठे हो गए जिसने कहानी शुरू की :

अगस्त में उन्होंने मुझे मेरी मां से अलग कर दिया और इससे मुझे कोई विशेष दुख नहीं हुआ। मैंने देखा कि वह फिर गर्भिणी थी (उसके गर्भ में मेरा भाई प्रसिद्ध मुछन्दर था) और यह कि अब मैं उसके लिए वह नहीं रहा जो पहले था। मुझे जलन नहीं हुई परन्तु मैंने अनुभव किया कि मैं उसके प्रति उदास हो उठा हूँ। साथ ही मैं यह जानता था कि अपनी माँ से अलग होने के बाद मुझे सब बच्चों के साथ अलग रखा जायेगा जहाँ हम लोगों को दो दो और तीन तीन की टोलियों

में रखा गया और प्रतिदिन झुंड के साथ बाहर खुले में निकाला जाने लगा। मैं डार्लिंग के साथ एक ही थान पर था। डार्लिंग एक सवारी का घोड़ा था जिस पर बाद में सम्राट सवारी किया करते थे और जिसके अनेकों चित्र और मूर्तियाँ बनाई गईं थीं। उस समय वह एक छोटा सा बछेड़ा था जिसकी खाल चिकनी, हंस की सी गर्दन और सीधी और सितार के तारो की तरह कसी हुई सुन्दर टाँगें थीं। वह हमेशा खुश, मस्त और विनम्र बना रहता था। हमेशा किलोल करने के लिए, आपस में चाटने के लिए और घोड़ों या आदमियों को बनाने के लिए तैयार रहता था। इस तरह एक साथ रहते रहते हम लोग आपस में मित्र बन गए और हमारी यह मित्रता हमारे पूरे यौवन काल तक स्थिर रही। वह प्रसन्न और चंचल था। उस समय ही वह प्रेम करने, बछेड़ियों के पीछे घूमने लगा था और मेरी निष्कपटता की हँसी उड़ाया करता था। मेरे दुर्भाग्य से मेरे अहंकार ने उसकी नकल करनी प्रारम्भ कर दी और शीघ्र ही मैं उस प्रवाह में बह उठा और प्रेम करने लगा। और समय से पूर्व की यह भावना मेरे जीवन में सबसे बड़ा परिवर्तन लाने का कारण बनी। यह हुआ कि मैं वह गया···व्याजापुरिखा मुझसे एक साल बड़ी थी और हम लोग गहरे मित्र थे। परन्तु पतझड़ आने पर मैंने देखा कि वह मुझे देख कर शर्माने लगी थी।···

परन्तु मैं अपने प्रथम प्रेम के उस दुर्भाग्य पूर्ण भाग की बात नहीं बताऊँगा, उसे स्वयं मेरे उस पागलपन से भरे हुए प्रेम की याद है जो मेरे जीवन के महत्वपूर्ण परिवर्तन के साथ ही समाप्त हो गया था।

चाबुक सवार उसे अलग हटाने और मुझे मारने के लिए दौड़ पड़े। उस रात को मुझे एक विशेष स्थान में बन्द कर दिया गया जहाँ मैं रात भर हिनहिनाता रहा मानो आगे होने वाली घटनाओं को जान रहा हूँ।

सुबह होने पर जनरल, प्रधान-साईस, अस्तबल वाला और

चाबुक सवार उस गैलरी में आए जहाँ मेरा थान था और वहाँ भयङ्कर उथल पुथल मची। जनरल प्रधान-साईस पर चीखा जिसने यह कहते हुए अपनी सफाई देने की कोशिश की कि उसने उन लोगों से मुझे बाहर निकालने के लिए नहीं कहा था बल्कि उन साईसों ने अपनी मर्जी से ही ऐसा किया था। जनरल ने कहा कि वह सब के कोड़े लगवायेगा और यह कि जवान घोड़ों को वे लोग पूरे समय तक बांध कर नहीं रख सके। फिर वे लोग खामोश हो गए और वहाँ से चले गए। मैं कुछ भी नहीं समझा परन्तु मैंने यह महसूस किया कि वे लोग मेरे विषय में कुछ स्कीम बना रहे हैं।

उस दिन के बाद मैंने हिनहिनाना हमेशा के लिए बन्द कर दिया। मैं वह बन गया जो अब हूँ। मेरे लिए सारी दुनियाँ बदल गई। मेरी दृष्टि में प्रत्येक वस्तु अपना आकर्षण खो बैठी। मैं अपने में ही सीमित हो उठा और चिन्तन करने लगा। पहले तो प्रत्येक वस्तु मुझे अरुचिकर लगी। यहाँ तक कि मैंने खाना, पीना और घूमना भी बन्द कर दिया और जहाँ तक खेलने का सवाल था, कहना पड़ता है कि, मैं उसके विषय में सोचता तक न था। कभी कभी मेरे मन में उमङ्ग उठती कि मैं दुलत्ती झाड़ूँ, सरपट दौड़ूँ या हिनहिनाना प्रारम्भ करूँ परन्तु फौरन ही यह प्रश्न उठ खड़ा होता: क्यों? किसलिए, और मेरी सारी शक्ति समाप्त हो गई।

एक शाम को चरागाह से घर वापस लौटते हुए झुण्ड के साथ मुझे लाया जा रहा था। मैंने दूर एक धूल का बादल उठता देखा जिसमें हमारी घुड़साल की सब बच्चे वाली घोड़ियों की धुंधली शकलें दिखाई पड़ रहीं थीं। मैंने प्रसन्नता से भरी हुई हिनहिनाहट और टापों की आवाजों को सुना। मैं रुक गया हालांकि मेरे गले में पड़ा हुआ चाबुक सवार का फन्दा मेरी गर्दन को काटे डाल रहा था और मैं उस झुण्ड की तरफ इस तरह देखने लगा जैसे कोई उस प्रसन्नता की तरफ देखता

है जो सदैव के लिए समाप्त हो चुकी है और फिर कभी लौट कर नहीं आएगी। वे पास आईं और मैंने उनमें उन सब परिचित, सुन्दर, भव्य, स्वस्थ और चमकीली शकलों को देखा। उनमें से कुछ मेरी तरफ देखने को मुड़ीं। मैं उस पीड़ा के प्रति अचेत था जो चाबुक-सवार के झटके मुझे पहुँचा रहे थे। मैं अपने को भूल गया और पुरानी आदत के अनुसार अपने आप हिनहिना उठा और दुलकी चाल चलने लगा, परन्तु मेरी हिनहिनाहट में उदासी, अपमान और निराशा की ध्वनि भरी थी। झुण्ड वाली घोड़ियां जोर से नहीं हँसीं परन्तु मैंने देखा कि उनमें से अनेकों ने सौजन्यता के नाते मेरी तरफ मुड़ कर भी न देखा। स्पष्टतः उन्हें यह विरक्तिपूर्ण, दयनीय, अरुचिकर और सबसे अधिक अपमान जनक लगा कि वे मेरी पतली, भद्दी गर्दन, मेरे बड़े सिर, (इस बीच में मैं दुबला हो गया था) मेरी लम्बी भद्दी टांगों और उस मूर्खता पूर्ण उमङ्ग से भरी हुई चाल की तरफ देखतीं जिससे मैं साईस के चारों तरफ कूद रहा था। किसी ने भी मेरी हिनहिनाहट का जबाब नहीं दिया—सब ने दूसरी तरफ मुँह मोड़ लिया। अचानक मैं इन सब बातों को समझ गया, समझ गया कि किस सीमा तक मुझे इनसे हमेशा के लिए अलग कर दिया गया है और मुझे याद नहीं कि मैं साईस के साथ घर कैसे पहुँचा।

इससे पहले से ही मुझ में गम्भीरता और विचारशीलता की प्रवृत्ति उत्पन्न हो उठी थी परन्तु अब मुझमें एक निश्चित परिवर्तन हो गया। मेरे चितकबरेपन ने, जो मनुष्यों में अद्भुत घृणा उत्पन्न कर देता था, जो मेरा भयानक और अप्रत्याशित दुर्भाग्य था और उस घुड़साल ने जिसके कारण मेरी स्थिति बड़ी विचित्र हो उठी थी, जिसका मैं अनुभव तो करता था परन्तु वर्णन करने में असमर्थ हूँ, मुझे स्वयं में सीमित कर दिया। मैं मनुष्यों के अन्याय के विषय में सोचता जो मुझे मेरे चितकबरे होने के कारण दोष देते थे; मैं मातृ प्रेम की अस्थि-

रता और नारी मात्र के साधारण प्रेम के विषय में सोचता कि यह शारीरिक स्थिति पर निर्भर करता है । और इस सबसे अधिक मैं प्राणियों की उस जातिगत विशेषताओं के प्रति सोचता जिनसे हमारा इतना घनिष्ट सम्बन्ध था और जिन्हें हम मनुष्य कहते थे—उनकी उन विशेषताओं के बारे में जिनके कारण उस घुड़साल में मेरी स्थिति इतनी विचित्र हो उठी थी जिसका मैं अनुभव करता था और समझ नहीं पाता था ।

मनुष्यों की इस विचित्रता और उनके चरित्र की इस विशेषता का अर्थ जिस पर यह निर्भर थी, मेरे सन्मुख इस घटना से स्पष्ट हो उठा ।

जाड़े की ऋतु में छुट्टियों के दिनों में यह घटना घटी थी । दिन भर न तो मुझे खाना दिया गया और न पानी पिलाया गया । जैसा कि मुझे बाद में पता चला कि हुआ यह था कि जो लड़का हमें खाना देता था वह शराब के नशे में धुत पड़ा रहा था । उस दिन प्रधान-साईस वहाँ आया और उसने देखा कि मेरे सामने खाना नहीं था । इस पर वह उस अनुपस्थित लड़के को गालियाँ देने लगा और फिर चला गया ।

दूसरे दिन वह लड़का एक दूसरे साईस के साथ हमारे अस्तबल में हमें घास डालने आया । मैंने देखा कि वह विशेष रूप से पीला और उदास था और यह कि उसकी पीठ की हरकत में कुछ ऐसी विशेषता थी जो दया की भावना उत्पन्न करती थी ।

उसने गुस्से से घास को नांद के ऊपर फेंका । मैंने उसके कन्धे पर सिर रखने के लिए गर्दन बढ़ाई मगर उसने घूंसे से मेरी नाक पर ऐसी गहरी चोट की कि मैं चौंक कर पीछे हट गया । फिर उसने मेरे पेट में ठोकर लगाई ।

"अगर यह खजैला जानवर यहाँ न होता तो कुछ भी नहीं होता," वह बोला ।

"क्या बात है स?" दूसरे साईस ने पूछा।

"तुम देखते हो कि वह काउन्ट के घोड़ों को तो देखने नहीं आता मगर अपने घोड़े को दिन में दो बार देखता है।"

"क्या कहा, क्या उन्होंने उसे इस चितकबरे को दे दिया है?" दूसरे ने पूछा।

"दे दिया है या बेच दिया है–शैतान ही जानता होगा! काउन्ट के घोड़े सब भूखों मर जांय, उसे परवाह नहीं मगर मैंने उसके बछेड़े को चारा न देने की हिम्मत कैसे कर डाली।" "लेट जाओ" वह कहता है, और उन्होंने मुझे कोड़े मारने शुरू कर दिये! उसमें जरा भी ईसाईयत नहीं है। वह एक मनुष्य की अपेक्षा एक जानवर के प्रति अधिक दया दिखाता है। वह गले में क्रॉस नहीं पहनता, इसीसे यह जाहिर होता है, उसने खुद कोड़े गिने थे, राक्षस कहीं का! जनरल ने मुझे खुद इस तरह से कभी नहीं मारा था। मेरी सारी पीठ पर निशान उभड़ आए हैं। तुम देख सकते हो कि उसमें ईसाई की आत्मा नहीं है।"

उन्होंने कोड़े मारने और ईसाइयत के बारे में जो कुछ कहा उसे मैं भली प्रकार समझ गया, परन्तु इन बातों का अर्थ मेरी समझ में बिल्कुल भी नहीं आया कि 'उसके अपने बछेड़े, उसके बछेड़े', से उनका क्या मतलब था और उन शब्दों से जिनसे यह ध्वनि निकलती थी कि मुझमें और उस प्रधान-साईस में कोई सम्बन्ध था। वह सम्बन्ध क्या था इसे मैं उस समय बिल्कुल भी नहीं समझ सका। मेरी समझ में उसका मतलब उस समय आया जब बहुत दिनों बाद उन्होंने मुझे दूसरे घोड़ों से अलग कर दिया। उस समय मैं कतई नहीं समझ सका कि 'मुझे एक आदमी की सम्पत्ति कह कर पुकारने का क्या अभिप्राय है। मेरे लिए 'मेरा घोड़ा' शब्द का प्रयोग करना, एक जिन्दा घोड़े के लिए, मुझे ऐसा ही विचित्र लगा जैसे कि कहा जाय—'मेरी धरती', 'मेरी हवा', या 'मेरा पानी'।

परन्तु उन शब्दों ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। मैं उनके विषय में बराबर सोचता रहा और बहुत दिनों बाद और मनुष्यों से तरह तरह के सम्बन्ध रखने के उपरान्त अन्त में मेरी समझ में वह अर्थ आया जो वे लोग इन विचित्र शब्दों का लगाया करते थे जिससे साबित होता है कि मनुष्य अपने जीवन में कार्यों से संचालित न होकर शब्दों से संचालित होता है। वे लोग कार्य करने या न करने के अवसर को इतना महत्व नहीं देते जितना कि आपस में निश्चित किए गए शब्दों द्वारा विभिन्न वस्तुओं के बारे में बातें करने को देते हैं। ऐसे शब्द जो उन लोगों में बड़े महत्वपूर्ण समझे जाते हैं वे हैं 'मेरा' और 'अपना' जिनका प्रयोग वे विभिन्न वस्तुओं, प्राणियों या उद्देश्यों के लिए करते हैं, यहाँ तक कि जमीन, आदमी और घोड़ों के लिए भी इन शब्दों का प्रयोग होता है। उन लोगों ने यह समझौता कर रखा है कि उनमें से केवल एक ही व्यक्ति किसी विशेष वस्तु को 'अपनी' कह सकता है। और वह जो इस परम्परागत शब्द का प्रयोग जितनी भी अधिक वस्तुओं के लिए कर सकता है, सबसे ज्यादा सुखी समझा जाता है। ऐसा क्यों है, मैं नहीं जानता परन्तु होता यही है। पहले मैं बहुत दिनों तक इस शब्द का अर्थ यह समझता रहा था कि इससे उनका अभिप्राय किसी होने वाले लाभ से है परन्तु यह व्याख्या गलत साबित हुई।

उदाहरणार्थ उनमें से अनेक जो मुझे अपना घोड़ा कहते थे मुझ पर सवार नहीं होते थे, कुछ दूसरे ही व्यक्ति मुझ पर सवारी किया करते थे; न वे मुझे खाना ही देते थे—कुछ दूसरे ही व्यक्ति यह काम करते थे। साथ ही जो मेरे साथ अच्छा व्यवहार करते थे वे उन लोगों में से नहीं थे जो मुझे 'अपना घोड़ा' कहते थे बल्कि वे लोग कोचवान, पशुओं के डाक्टर और आमतौर पर बिल्कुल दूसरे ही लोग हुआ करते थे। बाद में जब मेरे ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत हो गया तब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि 'मेरा' शब्द सिर्फ घोड़ों के मामले में ही न होकर

अन्य वस्तुओं के विषय में भी मनुष्य की नीच, व्यापारिक प्रवृत्ति का प्रतीक था जिसे वे सम्पत्ति के अधिकार की भावना कहते हैं। एक व्यक्ति जो किसी विशेष मकान में नहीं रहता और कहता है कि 'मेरा घर' और उसका सम्बन्ध केवल उसकी इमारत और मरम्मत आदि तक ही सीमित रहता है। इसी तरह एक व्यापारी 'मेरा कपड़े का व्यापार' की बातें करता है और उस दूकान में उसका अपना बनाया हुआ एक भी कपड़ा नहीं होता।

ऐसे भी व्यक्ति हैं जो कहते हैं कि जमीन उनकी है यद्यपि उन्होंने उस जमीन को न तो कभी देखा है और न उस पर चले ही हैं। ऐसे भी व्यक्ति हैं जो दूसरे व्यक्तियों को अपना कहते हैं परन्तु उन्होंने उन दूसरों को कभी देखा तक नहीं है और मालिकों और उन दूसरों का एकमात्र सम्बन्ध यही है कि वे उनका अहित करते हैं।

ऐसे भी व्यक्ति हैं जो औरतों को अपनी औरतें या बीबियाँ कहते हैं फिर भी वे औरतें दूसरे व्यक्तियों के साथ रहती हैं। और मनुष्य जीवन में उन कामों को करने की इच्छा नहीं करते जिन्हें वे उचित कहते हैं परन्तु अधिक से अधिक वस्तुओं को 'अपनी' कहना चाहते हैं।

अब मुझे विश्वास हो गया है कि हम लोगों और मनुष्यों में मुख्य अन्तर यही है। इसलिए उन बातों का तो जिक्र करना ही व्यर्थ है जिनमें हम इन मनुष्यों से श्रेष्ठ हैं, सिर्फ इसी एक बात पर हम गर्व से कह सकते हैं कि प्राणियों के रहन सहन में हमारा दर्जा इन मनुष्यों से ऊँचा है। मनुष्यों के कार्य—कम से कम उनके जिनसे मेरा सम्बन्ध रहा है–शब्दों से संचालित होते हैं जबकि हमारे कार्य कार्यों से होते हैं।

यह यही अधिकार था जिसके द्वारा उस प्रधान-साईस को मुझे 'अपना घोड़ा' कहने का अधिकार प्राप्त हुआ था और इसी के कारण उसने उस लड़के को कोड़े लगाए थे। इस नवीन खोज ने मुझे हैरान कर दिया और मेरे चितकबरेपन के कारण मनुष्यों में उत्पन्न विचारों और

रायों और मेरी माँ के विश्वासघात द्वारा मुझमें उत्पन्न हुई विचारशीलता आदि ने मिल कर मुझे गम्भीर और चिन्तनशील प्रवृत्ति का बना दिया जैसा कि मैं हूँ।

मैं तीन तरह से अभागा था : मैं चितकबरा था, मैं खस्सी था और मनुष्यों का यह विचार था कि मैं न तो ईश्वर का था और न अपना, जैसा कि प्रत्येक प्राणी के लिए स्वाभाविक होता है, बल्कि मैं उस प्रधान-साईस का था।

उनके मेरे प्रति इन विचारों के कई परिणाम निकले। पहला परिणाम यह था कि मुझे दूसरे घोड़ों से अलग रखा गया, अच्छा खाना दिया गया, अक्सर कसरत कराई गई और दूसरों से पहले ही मुझे जोत दिया गया। मुझे सबसे पहले उस समय जोता गया जब मैं तीसरी साल में चल रहा था। मुझे याद है कि उस प्रधान-साईस ने, जो सोचता था कि मैं उसका हूँ, किस तरह मुझे दूसरे और साईसों की मदद से जोतना शुरू किया, यह उम्मीद करते हुए कि मैं काबू में नहीं आऊँगा या विरोध करूँगा। उन्होंने गाड़ी के बमों तक ले जाने के लिए मुझे रस्सियों से बांधा; मेरी पीठ पर चमड़े का एक चौड़ा पट्टा रखा और उसे बमों से बांध दिया जिससे कि मैं लात न मार सकूँ, इसके विपरीत जबकि मैं काम करने की तत्परता और उत्सुकता प्रकट करने का अवसर प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा था।

उन लोगों को आश्चर्य हुआ कि मैं एक पुराने घोड़े की तरह चलने लगा। उन्होंने मुझे रोक रोक कर चलाना शुरू किया और मैंने दुलकी चाल चलने का अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया। प्रति दिन मैं अधिक से अधिक उन्नति करता गया कि तीन महीने बाद उस जनरल ने स्वयं और बहुत से दूसरे लोगों ने मेरी चाल को पसन्द किया। परन्तु कैसी अजीब बात थी कि इस कारण से कि वे लोग मुझे अपना न समझ कर उस प्रधान साईस का समझते थे इसलिए उन्होंने मेरी चाल को पूर्ण उपेक्षा से देखा।

मेरे साथी घोड़ों की दौड़ कराई जाती थी, उनकी चाल का विवरण लिखा जाता था, लोग उन्हें देखने जाते थे, मुलम्मेदार गाड़ियों में उन्हें जोता जाता था, और कीमती झूलें डाली जाती थीं। मुझे मामूली गाड़ी में जोतकर प्रधान-साईस के काम से चेशमेन्का और दूसरे फार्मों पर ले जाया जाता था। यह सब मेरे चितकबरा होने का नतीजा था और विशेष रूप से इस बात का कि वे लोग मुझे काउन्ट की सम्पत्ति न समझकर उस प्रधान-साईस की समझते थे।

कल, अगर हम लोग जिन्दा रहे तो मैं बताऊँगा कि उस प्रधान साईस द्वारा मुझे अपनी सम्पत्ति समझने का क्या परिणाम निकला।

उस पूरे दिन घोड़ों ने उस खस्सी का सम्मान किया परन्तु उसके प्रति नेस्टर का व्यवहार पहले के ही समान कठोर बना रहा। उस किसान का वह छोटा घोड़ा झुंड के पास आते समय फिर हिनहिनाया और उस भूरी बछेड़ी ने नखरे भरी आवाज में फिर उसका उत्तर दिया।

७.

तृत्तीय रात्रि

द्वितीया का चाँद निकल आया था और उसकी हल्की किरणों के प्रकाश में अहाते के बीच में खड़े हुए 'पवन वेग' का शरीर दिखाई पड़ रहा था। घोड़े उसके चारों तरफ इकट्ठे हो रहे थे।

खस्सी ने कहना शुरू किया :

मेरे लिए जबसे आश्चर्यजनक परिणाम, कि मैं न तो काउन्ट का था और न भगवान का बल्कि उस प्रधान-साईस का था, यह निकला कि वही चीज जो हमारा विशेष गुण मानी जाती है-तेज चाल-वही मेरे देश निकाले का कारण बनी। वे लोग हंस को दौड़ा रहे थे। वह प्रधान-साईस चेशमेन्का से लौटते हुए मुझे वहाँ ले गया और रुक गया। हँस आगे निकल गया। वह तेज दौड़ रहा था परन्तु साथ ही बन कर

दौड़ रहा था और उसकी चाल में वह सफाई नहीं थी जिसका मैंने अभ्यास कर रखा था। वह विशेषता यह थी कि जैसे ही पहला कदम जमीन से उठे वैसे ही दूसरा जमीन पर पड़ना चाहिए और इस तरह अपनी शक्ति बिना इधर उधर के प्रदर्शन में लगाए मैं सीधा आगे बढ़ने में लगता था। हँस हमारे सामने से निकल गया। मैंने घेरे में आगे बढ़ने का प्रयत्न किया और प्रधान-साईस ने मेरे ऐसा करने में बाधा नहीं डाली।

"क्या ख्याल है, मेरे इस चितकबरे की बानगी देखना चाहते हो?" वह चीखा और जब दूसरी बार हँस हमारे बराबर आया तो उसने मुझे छोड़ दिया। हंस पहले से ही तेज दौड़ रहा था इसलिए पहले चक्कर में मैं पीछे रह गया परन्तु दूसरे में मैंने उसे पकड़ना प्रारम्भ कर दिया, उसकी गाड़ी के पास पहुँचा, बराबर आया और उससे आगे निकल गया। उन्होंने दुबारा हमारी दौड़ कराई और दुबारा भी वही हुआ। मैं उससे तेज दौड़ा। और यह देख कर सब परेशान हो उठे। जनरल ने कहा कि मुझे फौरन किसी दूर देश में बेच देना चाहिए जिससे मेरे बारे में कुछ भी सुनने में न आए। 'और अगर काउन्ट को मालूम पड़ गई तो मुसीबत उठ खड़ी होगी।" इसीलिए उन्होंने मुझे एक गाड़ी के घोड़े के रूप में एक घोड़ों के व्यापारी को बेच दिया। मैं उसके साथ अधिक दिनों तक नहीं रहा। मुझे एक हुसार ने खरीद लिया जो फौज के लिए घोड़े खरीदने आया था।

यह सब इतना अन्यायपूर्ण, इतना क्रूर था कि वे लोग जब मुझे खेरनोवो से दूर ले गए और मुझे उस सब से अलग कर दिया जो मेरा जाना पहचाना और प्रिय था तो मुझे बड़ी खुशी हुई। उनके साथ रहने में मुझे बड़ी वेदना होती थी। उनके सामने प्रेम, सम्मान और स्वतन्त्रता थी; मेरे लिए कठोर परिश्रम, अपमान; अपमान और परिश्रम जीवन के अन्त तक के लिए था। और क्यों? क्योंकि मैं

चितकबरा था और इसी कारण मुझे किसी का घोड़ा बनना पड़ा था।

'पवन वेग' उस समय ज्यादा कहानी नहीं सुना सका। उस अहाते में एक घटना घटी जिसने सब घोड़ों को परेशान कर दिया। 'सौदागर की बेगम', एक घोड़ी जिसका पेट बच्चे के कारण बढ़ा हुआ था और जो खड़ी हुई गौर से कहानी सुन रही थी, अचानक मुड़ी और धीरे धीरे अस्तबल की तरफ चली गई और वहाँ जाकर कराहने लगी जिसने सब घोड़ों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। पुरानी घोड़ियाँ जानती थीं कि उसे क्या तकलीफ थी परन्तु जवान उत्तेजित हो उठे और उस खस्सी को छोड़ कर उस छटपटाती हुई घोड़ी को घेर कर खड़े हो गए। 'सौदागर की बेगम' लेटी फिर उठ कर खड़ी हो गई और फिर लेट गई। सुबह के पहर वहाँ एक नया बछेड़ा आ गया जो अपनी नन्हीं सी टांगों पर लड़खड़ाता हुआ खड़ा था। नेस्टर ने चीख कर साईस को पुकारा। घोड़ी और बच्चे को थान पर ले जाया गया और दूसरे घोड़े उनके बिना ही चरने के लिए चल दिये।

८.

चतुर्थ रात्रि

शाम को जब दरवाजा बन्द हो गया और सब निश्चिन्त हो गए तो चितकबरे ने कहना प्रारम्भ किया :

मुझे मनुष्यों और घोड़ों दोनों को ही बारीकी से देखने का मौका मिला उस समय जब मुझे एक के पास से दूसरे के हाथों में बदला जाता रहा।

अब से अधिक समय तक मैं दो मालिकों के पास रहा : एक प्रिंस (हुसारों का एक अफसर) के पास और बाद में एक बुढ़िया के पास जो 'अद्भुत कर्मी' सन्त निकोलस के गिरजे के पास रहती थी।

अपने यौवन के सबसे अधिक आनन्दप्रद दिवस मैंने उस हुसार अफसर के साथ बिताए।

हालांकि वही मेरी वर्बादी का कारण था और हालांकि उसने किसी भी चीज को या किसी भी प्राणी को कभी प्यार नहीं किया फिर भी मैं उसे प्यार करता था और उसी कारण वश अब भी उसे याद कर लेता हूँ।

मुझे वह इसलिए पसन्द था क्योंकि वह सुन्दर, सुखी, धनवान था और इसी लिए किसी को भी प्यार नहीं करता था।

तुम लोग हम घोड़ों की उच्च भावनाओं को समझते ही हो। उसकी उपेक्षा और मेरी उस पर निर्भरता ने उनके प्रति मेरे प्रेम को विशेष शक्ति प्रदान की थी। "मुझे मार डालो, मुझे तब तक दौड़ाओ जब तक कि मेरी सांस न टूट जाय!" अपने अच्छे दिनों में मैं सोचा करता था, "और मैं और भी सुखी हूँगा।"

उसने मुझे एक एजेन्ट से खरीदा था जिसे उस प्रधान-साईस ने मुझको आठ सौ रूबल में बेच दिया था और उसने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि और किसी के भी पास चितकबरे घोड़े नहीं थे। वे मेरे जीवन के सबसे अच्छे दिन थे। उसके एक प्रेमिका थी। मैं इस बात को जानता था क्योंकि मैं प्रतिदिन अपने मालिक को उसके पास ले जाया करता था और कभी दोनों को बाहर ले जाता था।

उसकी प्रेमिका एक सुन्दर स्त्री थी। वह सुन्दर था, उसका कोचवान सुन्दर था और मैं उन सब को प्यार करता था क्योंकि वे सब सुन्दर थे। उस समय जीवन व्यतीत करने में आनन्द आता था। हमारा समय इस तरह व्यतीत होता था : सुबह साईस मेरी मालिश करने आता था—कोचवान खुद नहीं बल्कि साईस। साईस एक लड़का था जो किसान परिवार का था। वह दरवाजा खोलता, उस जगह भरी हुई घोड़ों की गन्ध और भाप को बाहर निकालता, लीद और घास

कूड़े को बाहर फेंकता, मेरी झूल को उतारता और एक ब्रुश लेकर मेरे शरीर पर फेरना शुरू करता और सफेद रुंओं और दूसरी गन्दी चीजों को झाड़ कर फर्श पर डालता जाता जो मेरे खुरों की चोटों से जगह २ खुद गया था। मैं खेल ही खेल में उसकी बांह पकड़ लेता और जमीन को खुर से खरोचने लगता। फिर एक एक कर हम लोगों को ठंडे पानी से भरे हुए टब के पास ले जाया जाता और वह लड़का मेरे चमड़े को जिसे उसने इतने परिश्रम से रगड़ कर चिकना बनाया था, मेरे चौड़े खुर वाले पैर को, तीर की तरह सीधी मेरी टांगों को, मेरे चिकने पुट्ठों को और मेरी पीठ को जो इतनी चौड़ी थी कि उस पर सोया जा सकता था, मुग्ध दृष्टि से देखता रहता था। कठरे में घास का ढेर लगा दिया जाता, चरनी में जौ भर दिए जाते। तब फियोफान, प्रधान कोचवान भीतर आता।

मालिक और कोचवान एक दूसरे से मिलते थे। उनमें से कोई भी अपने अतिरिक्त और किसी से न तो डरता था और न किसी की चिन्ता करता था और इसीलिए सब लोग उन्हें चाहते थे। फियोफान एक लाल कमीज, एक काली मखमली निकर वौकर (घुटनों तक आने वाली पतलून) और एक बिना बांहों का कोट पहना करता था। मैं इसे बहुत पसन्द करता था जब छुट्टी वाले दिन वह बालों पर पोमेड लगाए, बिना बांहों वाला कोट पहने अस्तबल में आता और दहाड़ता : "क्यों पशुराज, भूल गए अपने को !" और मेरी जांघ को अस्तबल वाले कांटे के हैन्डल से धकेलता मगर इस तरह नहीं कि मेरे चोट लग जाय बल्कि सिर्फ मजाक करते हुए। मैं फौरन समझ जाता कि यह मजाक है और अपना एक कान पीछे करता और दाँत बजाता।

हमारे पास एक कोयले जैसा काला घोड़ा था जो जोड़ी से चलाया जाता था। रात को वे लोग मुझे उसके साथ जोतते थे। वह फौजी, जो उसका नाम था, मजाक नहीं समझता था परन्तु शैतान की

तरह कमीना था । मैं अस्तबल में उसके बगल में बांधा जाता था और कभी कभी हम एक दूसरे को बुरी तरह काट लिया करते थे । फियोफान उससे डरता नहीं था । वह आता, जोर से चिल्लाता और सीधा उसके पास चला जाता; ऐसा लगता मानो वह काला फौजी उसे मार डालेगा, परन्तु नहीं वह बगल में हट जाता और फियोफान उस पर साज डाल देता ।

एक बार मुझे और उसको एक साथ जोता गया और हम कुस्नेत्स्की पुल की तरफ दौड़े, जो पुल न होकर एक लम्बी चौड़ी सड़क है । न तो मालिक और न कोचवान ही डरा : वे हंस रहे थे, राहगीरों को चीख कर हटाते जा रहे थे, हमें पकड़े हुए थे, और इधर उधर मोड़ते जाते थे–जिससे कि वह काला फौजी किसी को भी कुचलने में सफल नहीं हो सका ।

उनकी सेवा में मैं अपने सबसे अच्छे गुण और अपना आधा जीवन खो बैठा । उन्होंने ग़लत तरीके से पानी पिला कर मुझे बर्बाद कर दिया और मेरे पैरों और खुरों का सत्यानाश कर डाला । परन्तु इन सब बातों के होते हुए भी वे मेरे जीवन के सबसे सुन्दर दिवस थे । बारह बजे वे मुझे जोतने आते, मेरे खुरों पर ग्रीस लगाते, मेरे सामने के बालों और अयालों को चिकना करते और मुझे बमों के बीच में खड़ा कर देते ।

वह स्लेज गाड़ी बेंत की बनी हुई थी और उस पर मखमल का खोल चढ़ा हुआ था; साज में छोटे छोटे चाँदी के बकसुए लगे हुए थे; लगामें रेशम की थीं और उनमें गांठें लगी हुई थीं । वह पूरा साज ऐसा था कि जब सारे जोत का सामान, सब छोटे तस्मे और चीजें लगा दी जाती थीं और साज को चढ़ा कर कस दिया जाता था तो तुम यह नहीं बता सकते थे कि कहाँ वह साज समाप्त होता है और कहाँ से घोड़ा प्रारम्भ होता है । हमें अस्तबल में आराम से जोता जाता था । फियोफान जिसका पीछे का हिस्सा उसके कन्धों से चौड़ा था, बांहों के नीचे लाल

पेटी लगाए, भीतर आता; साज की जाँच करता, अपनी जगह बैठता, अपने कोट को अपने चारों तरफ लपेटता, स्लेज की रकाबों में पैर रखता, कुछ मजाक की बात करता और सिर्फ दिखाने भर के लिए हाथ पर हमेशा एक चाबुक लटकाये रखता यद्यपि उसने मुझे शायद ही कभी मारा हो, और कहता, "चलो !" और खेलता हुआ सा एक के बाद दूसरा कदम उठाता मैं फाटक से बाहर निकल आता और रसोइया जो गन्दा पानी बाहर फेंकने आया होता सीढ़ियों पर रुक जाता और वह किसान जो अहाते में लकड़ी ला रहा होता अपनी आँखें फाड़ कर देखता। हम बाहर आते, कुछ दूर चलते और रुक जाते। साईस और दूसरे कोचवान बाहर निकलते और बातें शुरू हो जातीं। हरेक इन्तजार करता: कभी कभी हमें दरवाजे पर इधर उधर हिलते, पीछे लौटते और फिर खड़े होते तीन घंटे तक प्रतीक्षा करनी पड़ती।

अन्त में बड़े कमरे में कुछ हलचल होती: भूरे बालों वाला टिहोन अपना बड़ा पेट लिए, कोट पहने दौड़ कर बाहर आता और चीखता, "चलो !" उन दिनों उन लोगों का "आगे बढ़ो" कहने का भद्दा तरीका नहीं था, जैसे कि मैं जानता ही नहीं था कि मुझे आगे बढ़ना है न कि पीछे हटना है। फियोफान टिटकारी भरता और मैं आगे बढ़ जाता; प्रिंस बाहर आता, तेजी से और लापरवाही से, जैसे कि उस स्लेज में घोड़े में या फियोफान में कोई विशेषता ही न हो। फियोफान अपनी पीठ सीधी किए और अपने हाथों को इस तरह आगे बढ़ाए बैठा रहता जैसे इस हालत में और अधिक देर तक रहना असम्भव हो। प्रिंस सिर पर फौजी टोपी और एक बड़ा कोट पहने होता जिसके कॉलर पर रुपहली काम होता जो उसके सुन्दर चेहरे, काली भौंहों वाले सुन्दर गुलाबी चेहरे को छिपाए रहता जिसे कि कभी भी नहीं छिपाना चाहिए था। वह अपनी तलवार, जूते की कील और ऊपरी जूतों की पीतल की एड़ियों को खड़खड़ाता, कालीन पर तेजी से कदम रखता हुआ मानो

जल्दी में हो, बाहर आता और मेरी तरफ या फियोफान की तरफ, जिन्हें उसे छोड़ कर और सब पसन्द करते थे, कोई ध्यान नहीं देता। फियोफान टिटकारी भरता, मैं लगामों को खींचता और धीरे धीरे एक एक कदम रख कर हम लोग दरवाजे पर आते और रुक जाते। मैं कनखियों से प्रिंस की तरफ देखता और अपने सुन्दर सिर को अयालों के साथ एक झटका देता अगर प्रिंस प्रसन्न मुद्रा में होता तो फियोफान के साथ मजाक करता। फियोफान मजाक से ही उत्तर देता, अपने सुन्दर सिर को थोड़ा सा एक तरफ मोड़ कर और बिना हाथों को नीचे किए अपनी लगाम को हल्का सा झटका देता जिसे मैं समझ जाता: और फिर एक, दो, तीन··· लम्बे कदम उठने लगते, प्रत्येक पुट्ठा फड़क उठता और स्लेज के सामने से कीचड़ भरी बरफ को इधर उधर फेंकता मैं चल पड़ता। उन दिनों भी चीखने का "हो-ओ-ओ!" जैसा भद्दा तरीका नहीं था जैसे कि कोचवान के पेट में या और कहीं दर्द हो रहा हो। बल्कि उस समय यह गुप्त संकेत सूचक वाक्य बोला जाता था—"हटो", "होश्यारी से" आदि। फियोफान रह रह कर आवाज देता और रास्तागीर दीवाल से सट जाते और गर्दनें बढ़ा कर उस सुन्दर घोड़े, सुन्दर कोचवान और सुन्दर मालिक की तरफ मुड़ कर देखने लगते।

मुझे विशेष रूप से दुलकी चाल से चलते हुए घोड़े से आगे बढ़ जाने में बड़ा मजा आता था और मैं दूर पर अगर किसी कामचोर घोड़े को, जिस पर विजय पाने में आनन्द मिलता, देख लेता तो बवन्डर की तरह आगे बढ़ता और क्रमशः उसके पास, और पास पहुँच जाता। अब, कीचड़ को स्लेज के बिल्कुल पीछे फेंकते हुए मैं उस गाड़ी के मालिक के बराबर आ जाता और उसके सिर पर फुसकार उठता: फिर मैं घोड़े के साज और गाड़ी के गुम्बद पर पहुँचता और तब उसका दिखाई देना बन्द हो जाता और बहुत पीछे दूर से आती हुई

उसकी आवाज सुनाई देती रहती। परन्तु प्रिंस, फियोफान और मैं, सब खामोश रहते और यह दिखाते कि हम लोग सिर्फ घूमने निकले हैं और अपने काम से जा रहे हैं और यह कि सीधे घोड़ों पर सवार मालिकों की तरफ ध्यान भी नहीं दे रहे हैं जब उनके बगल में होकर गुजरते हैं। मुझे अच्छी दुलकी चाल चलने वाले को जीतने में मजा आता था परन्तु मुझे सामने से आते हुए घोड़ों से मिलने में विशेष आनन्द आता था। एक क्षण, एक शब्द, एक झलक—और हम लोग उस समय तक अलग हो चुके होते और हरेक एकाकी अपने रास्ते पर उड़ा चला जाता''' ।

फाटक चरमराया और नेस्टर और वास्का की आवाजें सुनाई पड़ीं।

पांचवीं रात्रि

मौसम बदलने लगा। सुबह से ही वातावरण में सुस्ती भरी रहती और ओस गिरना बन्द हो चुका था परन्तु अब भी गर्मी थी और मच्छर परेशान करते थे। जैसे ही घोड़े भीतर लाए गए वे चितकबरे के चारों तरफ इकट्ठे होने लगे और उसने अपनी कहानी इस तरह समाप्त की :

मेरे जीवन के सुखमय दिन शीघ्र ही समाप्त हो गए। उस दशा में मैं केवल दो वर्ष ही रह सका। दूसरे जाड़ों की समाप्ति के लगभग मेरे जीवन की सबसे सुखद घटना घटी और इसके तुरन्त बाद ही मेरा सबसे बड़ा दुर्भाग्य प्रारम्भ हुआ। यह नुमायश के दिनों की बात थी। मैं प्रिंस को घुड़दौड़ में ले गया। 'प्रकाश' और 'सांड़' दौड़ रहे थे। मुझे नहीं मालूम कि मंडप के नीचे क्या हो रहा था परन्तु मुझे मालूम है कि प्रिंस बाहर आया और फियोफान को मैदान में ले चलने की आज्ञा दी। मुझे याद है कि किस तरह वे मुझे भीतर ले गए और 'प्रकाश' के बगल में खड़ा कर दिया। 'प्रकाश' एक दौड़ने वाली

हल्की गाड़ी में जुता हुआ था और मैं, जैसा कि था, एक भारी स्लेज में जुता हुआ था। मोड़ पर मैंने उसे पछाड़ दिया और जनता ने उच्च हास्य और प्रशंसा युक्त शब्दों द्वारा मेरा स्वागत किया।

जब मुझे वापस ले जाया गया तो एक भीड़ मेरे पीछे पीछे आई और पाँच या छः आदमियों ने मेरे बदले में प्रिंस को हजारों रूबल देने चाहे। वह अपने सफेद दाँत चमका कर सिर्फ हँस दिया।

"नहीं," वह बोला, "यह घोड़ा नहीं है बल्कि एक मित्र है। मैं उसे सोने के पहाड़ों के बदले में भी नहीं बेचूँगा। अच्छा सज्जनो, विदा!"

उसने गाड़ी का पर्दा खोला और भीतर बैठ गया।

"ओस्टोजेन्का स्ट्रीट।"

उसकी प्रेमिका वहाँ रहती थी और हम वहाँ के लिए उड़ दिए...।

वह हमारा अन्तिम सुखी दिवस था। हम उसके घर पहुँचे। वह उसे अपनी कहता था परन्तु वह किसी और को प्यार करती थी और उसके साथ भाग गई थी। प्रिंस को इस बात का पता उसके घर पर चला। इस समय पाँच बजे थे और मुझे बिना गाड़ी में से खोले वह उसका पीछा करने चल पड़ा। उन्होंने वह किया जो मेरे साथ पहले कभी भी नहीं किया गया था। उन्होंने मुझे हन्टर से मारा और सरपट दौड़ाया। जीवन में पहली बार मैं चाल भूला और शर्मिन्दा हुआ और उसे ठीक करने की इच्छा की परन्तु एकाएक मैंने प्रिंस को अस्वाभाविक स्वर में चीखते सुना : "आगे बढ़ो!" हन्टर हवा में सनसनाया और मेरी पीठ पर पड़ा और मैं सरपट भागा, स्लेज के आगे वाले लोहे के डन्डे से अपने पैरों को टकराता हुआ। सोलह मील जाने के बाद हमने उस प्रेमिका को जा पकड़ा। मैंने प्रिंस को वहाँ पहुंचा दिया परन्तु पूरी रात कांपता रहा और एक तिनका भी नहीं खा सका। सुबह होने पर उन्होंने मुझे पानी पिलाया। मैंने पिया और उसके बाद फिर मैं कभी

भी वैसा घोड़ा नहीं बन सका जैसा कि पहले था। मैं बीमार था; उन्होंने मुझे सताया और अंगहीन बना दिया—मेरा इलाज करते हुए जैसा कि आदमी इस काम को कहते हैं। मेरे खुर झड़ने लगे, मेरे शरीर में सूजन आ गई और मेरे पैर टेढ़े हो गये। मेरी छाती भीतर को बैठ गई और मैं पूरी तरह लंगड़ा और कमजोर हो गया। मुझे एक घोड़ों के व्यापारी को बेच दिया गया जिसने मुझे खाने को गाजर और कुछ दूसरी चीजें दीं और मुझे ऐसा बना दिया जो मेरे पहले रूप से नितान्त भिन्न था यद्यपि अनाड़ी को धोखा देने के लिए यह मेरा बाहरी रूप अच्छा ही रहा। मेरी शक्ति और मेरी चाल समाप्त हो चुकी थी।

साथ ही, जब मेरे खरीददार आते तो वह व्यापारी मेरे थान पर आता और मुझे एक भारी हन्टर से पीटता जिससे कि मैं भयभीत और पागल हो उठूँ। फिर वह मेरी उभरी हुई धारियों को, जो हन्टर की मार से उभर आईं होतीं, रगड़ कर मिटाता और फिर बाहर ले जाता।

एक बुढ़िया ने मुझे उस व्यापारी से खरीद लिया। वह हमेशा 'अद्‌भुत कर्मा' सन्त निकोलस के गिरजे में मुझे जोत कर जाती थी और अपने कोचवान को कोड़ों से पिटवाया करती थी। वह मेरे अस्तबल में बैठ कर रोया करता था और मुझे मालूम हुआ कि आँसुओं का जायका अच्छा और नमकीन होता है। फिर वह बुढ़िया मर गई। उसका कारिन्दा मुझे गाँव ले गया और एक फेरी लगाने वाले व्यापारी के हाथ बेच दिया। वहाँ मुझे खाने को गेहूँ दिया गया जिससे मेरी हालत और ज्यादा खराब हो गई। उसने मुझे एक किसान को बेच दिया। वहाँ मैंने हल चलाया पर खाने को मुश्किल से ही कुछ मिलता। मेरा पैर हल के फार से कट गया और मैं फिर बीमार हो गया। फिर एक जिप्सी ने कोई चीज देकर बदले में मुझे ले लिया। उसने मुझे बहुत तकलीफ दी और अन्त में मुझे यहाँ के कारिन्दा को बेच दिया। और अब मैं यहाँ हूँ। सब खामोश थे। वर्षा की हल्की हल्की फुहारें पड़नी शुरू हो गई थीं।

६.

दूसरी शाम को जैसे ही झुंड घर को लौटा उन्होंने अपने मालिक को एक अतिथि के साथ देखा। कुलदिबा ने घर के पास आते हुए कनखियों से उन दोनों आदमियों की तरफ देखा : एक नौजवान मालिक था जो मूंज का टोप लगाए हुए था; दूसरा एक लम्बा, मोटा, सूजा हुआ सा फौजी आदमी था; बुड्ढो घोड़ी ने उसकी तरफ तिरछी निगाह से देखा और मुड़ कर उसके पास गई; दूसरे घोड़े जो जवान थे ठिठके और झिझके, विशेष रूप से उस समय जब मालिक और उसका मेहमान किसी मतलब से उनके बीच में आए, एक दूसरे को कुछ दिखाते और बातें करते।

"उस चितकबरी भूरी घोड़ी को मैंने वोयकांव से खरीदा था," मालिक कह रहा था।

"और तुमने उस सफेद पैरों वाली काली बछेड़ी को किससे खरीदा था ? बहुत सुन्दर लगती है," मेहमान कह रहा था। उन्होंने अनेक घोड़ों को दौड़ा कर और खड़ा करके देखा तथा उस भूरी बछेड़ी को भी देखा।

"यह ख्रेनोव के सवारी के घोड़े की नस्ल में से है," मालिक ने कहा।

चलते हुए वे सब घोड़ों को नहीं देख सके इसलिए मालिक ने नेस्टर को बुलाया। बुड्ढा चितकबरे के एंड लगाता हुआ दुलकी चाल से आगे बढ़ा। चितकबरा एक टांग से लंगड़ाता था परन्तु इस तरह चल रहा था कि जब तक उसमें ताकत बाकी रहेगी वह किसी भी हालत में काम करने से इन्कार नहीं करेगा भले ही वे लोग उसे उस तरह दुनियाँ के छोर तक दौड़ाते फिरें। वह सरपट दौड़ने के लिए भी प्रस्तुत था और उसने अपनी दाहिनी टांग से ऐसा करने की कोशिश भी की।

"मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि रूस में इससे अच्छा और कोई भी घोड़ा नहीं है," एक घोड़ी की तरफ इशारा करते हुए मालिक ने कहा। मेहमान ने उसकी प्रशंसा की। मालिक उत्तेजित होकर इधर उधर घूमा, आगे दौड़ा और उसने मेहमान को सारे घोड़े, उनकी वंशावली और नस्ल बताते हुए, दिखा दिए।

यह साफ जाहिर हो रहा था कि मेहमान को मालिक की बातें बड़ी नीरस लग रही थीं परन्तु रुचि दिखाने के लिए उसने कुछ बनावटी सवाल पूछे।

"हाँ, हाँ," उसने अन्यमनस्कता पूर्वक कहा।

"जरा देखिए न," मालिक ने एक प्रश्न का उत्तर बिना दिये ही कहा। "उसकी टांगों को देखिए···मुझे उसकी बहुत कीमत देनी पड़ी थी परन्तु उसका तीसरा बच्चा इस समय गाड़ी में जुत रहा है।"

"और दुलकी अच्छी चलती है?" मेहमान ने पूछा।

इस तरह वे लोग सब घोड़ों के सामने होकर निकल गए। अब देखने के लिए और कोई भी घोड़ा नहीं रहा। तब वे खामोश हो गए।

"अच्छा, अब चलना चाहिए?"

"हाँ, चलिए।"

वे फाटक में होकर निकले। मेहमान खुश था कि नुमायश समाप्त हो गई और अब वह घर जा सकता है जहाँ जाकर वे लोग खाना खा सकेंगे, शराब और तम्बाखू पी सकेंगे और इस विचार से उसके चेहरे पर चमक दिखाई पड़ने लगी। जैसे ही वह नेस्टर के सामने होकर निकला, मेहमान ने चितकबरे के पुट्ठे को अपने बड़े मोटे हाथ से थपथपाया।

"इस पर कैसी चित्रकारी की गई है!" उसने कहा। "किसी

समय मेरे पास भी ऐसा ही चितकबरा घोड़ा था; तुम्हें याद है कि मैंने तुम्हें उसके विषय में बताया था ?"

मालिक ने यह जान कर कि जिसके विषय में बातें की जा रहीं थीं वह उसका अपना घोड़ा नहीं था, उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया परन्तु अपने झुंड की तरफ देखता रहा।

अचानक अपने कान के ऊपर उसने एक धीमी, कमजोर, बुड्ढे घोड़े की सी हिनहिनाहट सुनी। यह चितकबरा था जिसने हिनहिनाना शुरू किया था, फिर रुका और मानो लज्जित हो उठा हो इस तरह बीच में ही बन्द हो गया।

न तो मालिक ने और न उस मेहमान ने ही इस हिनहिनाहट की तरफ कोई ध्यान दिया और वे घर के भीतर चले गए।

इस सूजे हुए से मोटे आदमी में उस चितकबरे ने अपने प्यारे मालिक सेरपु खोव्स्कोय को पहचान लिया जो किसी समय तेज, सुन्दर और धनवान था।

१०.

वर्षा धीरे-धीरे होती रही। अस्तबल के अहाते में घुटन छा रही थी परन्तु मालिक के घर में स्थिति बिल्कुल भिन्न थी। एक शानदार कमरे में एक शानदार सन्ध्याकाल की चाय के लिए मेज सजाई गई थी और उसके चारों तरफ मेजबान, मेजबानिन और उनका मेहमान बैठे हुए थे।

मेजबानिन, जिसका गर्भिणी होना उसके शरीर से बिल्कुल स्पष्ट प्रकट हो रहा था, तनी हुई, कन्धों को पीछे किए समोवार के पास बैठी थी। वह मोटी थी। उसकी आँखें बड़ी थीं जिनमें नम्रता और आन्तरिक भाव की चमक थी।

मेजबान अपने हाथ में एक विशिष्ठ, दस साल पुरानी, जैसा

कि उसका कहना था कि वैसी और किसी के भी पास नहीं थीं और वह उनके विषय में अपने मेहमान से शेखी मारने को तैयार था, सिगारों का डिब्बा लिए हुए बैठा था। मेजबान पच्चीस वर्ष का, स्वस्थ, विलास में पाला हुआ, नवयुवक था। घर में वह एक नया ढीला, मोटा लन्दन का बना हुआ सूट पहने हुए था। उसकी घड़ी की चेन में कीमती बड़े रक्षाजन्त्र लटक रहे थे। उसके स्वर्ण-मंडित वैदूर्यमणि जड़े हुए कमीज के कफ के बटन भी बड़े और भारी थे। उसके नेपोलियन तृतीय की तरह की एक दाढ़ी थी। उसकी मूछों की नोकें इस तरह बाहर निकली हुई थीं जैसी केवल पेरिस में ही सीखी जा सकती थीं।

मेजबानिन रेशमी मसलिन की बड़े बड़े रङ्ग-बिरंगे फूलोंदार छींट की पोशाक पहने और एक अजीब फैशन की सोने की जूड़े की पिनें लगाए हुई थी जो उसके घने, हल्के भूरे रङ्ग के बालों को सम्हाले हुए थीं। ये सुन्दर तो थीं परन्तु उस पर जंच नहीं रही थीं। अपनी कलाइयों और हाथों में वह कई ब्रेसलेट और अंगूठियाँ पहने हुए थी जो सब की सब कीमती थीं।

टी-सेट पतली सुन्दर चीनी मिट्टी का था और समोवार चाँदी का। एक नौकर चमकीला कोट, बास्कट और टाई पहने आज्ञा की प्रतीक्षा में दरवाजे पर मूर्ति की तरह खड़ा हुआ था। फर्नीचर पर सुन्दर पच्चीकारी हो रही थी और दीवाल पर चिपकाये जाने वाला कागज गहरे रङ्ग का था जिस पर बड़े बड़े फूल बने हुए थे। फर्श, परदे आदि का रङ्ग भी चमकीला था। मेज के पास, अपने गले के पट्टे की चाँदी की घन्टियाँ टुनटुनाती हुई, एक भूरे रङ्ग की शिकारी कुतिया लेटी हुई थी जिसका बड़ा अजीब सा, उच्चारण करने में कठिन, अंग्रेजी नाम था जिसका उसके मालिक और मालकिन बड़े भद्दे तरीके से उच्चारण कर पाते थे।

कोने में, सुनहरी कामदार और पौधों से घिरा हुआ एक पियानो

रखा था। हरेक वस्तु से नवीनता, विलासिता और अप्रतिमता का भाव टपकता था। हर चीज सुन्दर थी परन्तु सब से एक दिखावट, फिजूल-खर्ची, अमीरी और सुरुचि सम्पन्न बुद्धि का अभाव घोषित होता था।

मालिक, जो दुलकी चलने वाले घोड़ों की जाति का शौकीन था, एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था जिसके शरीर से रक्त छलका सा पड़ता था। वह, उस कभी न समाप्त होने वाले वर्ग का व्यक्ति था जो सेबिल की गोट वाला कोट पहन कर घोड़े पर सवार होकर चलते हैं, अभिनेत्रियों को कीमती गुलदस्ते भेंट करते हैं, सब से कीमती शराबें जिन पर बहुत ही फैशनेबुल लेबिल चिपके होते हैं, अत्यधिक उच्च श्रेणी के रेस्टोरेन्टों में बैठ कर पीते हैं, दाता का नाम खुदी हुई इनामें बांटते हैं और बहुत ही ज्यादा खर्चीली प्रेमिका रखते हैं।

नितिका सेरपुखोव्स्कोय, उनका मेहमान, चालीस से ऊपर, लम्बा, मोटा, गंजा और भारी मूछों और गलमुच्छों वाला आदमी था। किसी समय वह अवश्य बहुत सुन्दर रहा होगा परन्तु अब स्पष्टतः शारीरिक, चारित्रिक और आर्थिक रूप से बहुत नीचे गिर चुका था।

उसके ऊपर इतना और ऐसा कर्ज था कि जेल से बचने के लिए उसे सरकारी नौकरी स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा था और अब एक घुड़साल का प्रधान, एक पद जो उसके रिश्तेदारों ने उसके लिए ढूंढ़ा था, ब ने के लिए एक सूबे के कस्बे को जा रहा था।

वह एक फौजी कोट और नीली पतलून, जैसी कि सिर्फ अमीर आदमी ही बनवा सकते थे, पहने हुआ था। उसकी कमीज और इंग्लैन्ड की बनी हुई घड़ी भी वैसी ही कीमती थी। उसके बूटों का तला अद्भुत था, आदमी की उंगली के बराबर मोटा।

नितिका सेरपुखोव्स्कोय अपने जीवन में बीस लाख रूबल का स्वामी था और अब उस पर एक लाख बीस हजार का कर्ज था। इस तरह के मामलों में जीवन में हमेशा ऐसे क्षण आते हैं जो उसे कर्ज

लेने को बाध्य कर देते हैं और वह दस वर्ष तक और वैसा ही विलास पूर्ण जीवन व्यतीत कर लेता है।

फिर भी ये दस वर्ष समाप्त होने को आ रहे थे, वह वेग समाप्त हो चुका था और जीवन नितिका के लिए भार हो उठा था। उसने इस समय तक शराब पीना शुरू कर दिया था, मतलब यह कि नशे में धुत्त रहने लगा था, एक ऐसी बात जो उसके जीवन में पहले कभी नहीं हुई थी, यद्यपि वास्तविकता यह थी कि उसने जीवन में न तो कभी शराब पीनी शुरू ही की थी और न कभी छोड़ी ही थी। उसका पतन उसकी दृष्टि की व्याकुलता से भली प्रकार देखा जा सकता था। (उसकी आँखें बहुत चंचल हो उठी थीं;) इसका पता उसके स्वर की लड़खड़ाहट और उसकी चाल ढाल की अस्थिरता से भी लगता था। यह व्याकुलता उस व्यक्ति को और अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ती थी जिसका उससे अभी ही सम्पर्क स्थापित हुआ हो, क्योंकि यह स्पष्ट था कि वह बहुत पहले से जीवन भर, किसी भी वस्तु या व्यक्ति से भयभीत न होने का अभ्यस्त रहा था और यह कि गहरे दुखों के कारण वह अभी हाल में ही भय-भीत होने की इस अवस्था को पहुँचा था जो उसके लिए बड़ा अस्वा-भाविक सा लगता था।

उसके मेजवान और मेजवानिन ने इस बात पर गौर किया और आपस में एक दूसरे की तरफ इस तरह देखा जिससे प्रकट हुआ कि वे एक दूसरे को समझ गए थे और इसीलिए सोने के समय तक के लिए इस विषय पर विस्तार से बातें करने का अवसर टाल रहे थे और बेचारे नितिका से तब तक बातें करते रहे और उसकी तरफ ध्यान लगाए रहे।

अपने नौजवान मेजवान की इस शान शौकत को देख कर सेर-पुखोव्स्कोय परेशान हो उठा। जब उसने अपने फिर न आने वाले बीते हुए दिनों को याद किया तो उसके मन में द्वेष की भावना उत्पन्न हुई।

"मेरे सिगार पीने पर तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं, मेरी ?"

उसने उस महिला की तरफ मुड़ते हुए एक ऐसे लहजे में पूछा जो सिर्फ सांसारिक अनुभवों के बाद ही किसी के स्वर में उत्पन्न हो उठता है—एक ऐसा स्वर जो विनम्र और मित्रता पूर्ण होता है परन्तु उसमें सम्मान की भावना नहीं होती, जिस स्वर में संसार को देखे भाले हुए व्यक्ति, पत्नियों के विपरीत, रखैल औरतों से बातें करते हैं। इसलिए नहीं कि वह उसका अपमान करना चाहता था बल्कि इसके विपरीत वह इस समय उसकी और उसके रखने वाले की सद्‌भावना प्राप्त करना चाहता था यद्यपि वह इस बात को स्वयं भी स्वीकार करने को प्रस्तुत नहीं था। परन्तु वह ऐसी औरतों से इसी स्वर में बात करने का अभ्यस्त था। वह जानता था कि अगर वह उसके साथ एक सम्मानित महिला जैसा व्यवहार करता तो उसे इससे आश्चर्य होता और वह अपने को अपमानित अनुभव करती। साथ ही वह अपने मित्र की वास्तविक पत्नी के लिए एक सम्मान की भावना सुरक्षित रखना चाहता था जो स्थिति में उसके बराबर था। वह हमेशा अपने मित्रों की रखैलियों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था, परन्तु इसलिए नहीं कि वह पत्रिकाओं में प्रकाशित इस सिद्धान्त में विश्वास करता था (वह कभी भी ऐसा रद्दी साहित्य नहीं पढ़ता था जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान, विवाह की महत्वहीनता आदि बातों पर लिखा जाता था) बल्कि इसलिए कि सब सभ्य व्यक्ति इसी तरह का व्यवहार करते थे, और वह एक सभ्य व्यक्ति था, भले ही उसका पतन हो गया हो।

उसने एक सिगार उठाई। परन्तु उसके मेजबान ने भद्दे तरीके से मुट्ठी भर कर सिगारें उठाईं और उसे देने लगा।

"जरा देखो तो सही कितनी अच्छी हैं। सब ले लो।"

सेरपुखोव्स्कोय ने उसका सिगार वाला हाथ एक तरफ हटा दिया और उसकी आँखों में लज्जा और अपमान की चमक उत्पन्न हो उठी।

"धन्यवाद !" उसने अपना सिगार-केस निकाला। "मेरी पीकर देखो !"

मेजवानिन समझदार थी। उसने उसकी व्याकुलता देखी और जल्दी से उससे बात करने लगी।

"मुझे सिगार बहुत पसन्द हैं। मैं इन्हें खुद पीती अगर मेरे चारों तरफ पीने वाले और लोग न होते।"

और वह सुन्दर और मधुर रूप से मुस्करा उठी। उत्तर में वह भी मुस्कराया परन्तु अनिच्छापूर्वक। उसके दो दाँत गायब थे।

"नहीं, इसे लो !" मूर्ख मेजवान कह उठा। "दूसरी इतनी तेज नहीं हैं। फ्रिट्ज, दूसरा डिब्बा लाओ। वहाँ दो हैं।"

जर्मन नौकर दूसरा डिब्बा ले आया।

"तुम बड़ी पसन्द करते हो ? कड़ी वाली ? ये बहुत अच्छी हैं। सब ले लो !" उसने कहना जारी रखा, उन सिगारों को लेने के लिए उस पर जोर डालते हुए।

यह स्पष्ट था कि वह इस बात से खुश था कि उसे एक ऐसा व्यक्ति मिल गया था जिसके सामने वह अपनी कीमती और दुर्लभ वस्तुओं के विषय में डींग हांक सकता था और इसमें उसे कोई बुराई नहीं दीखी। सेरपुखोव्स्कोय ने अपनी सिगार सुलगाई और जल्दी से वह बात कहने लगा जिस पर वे लोग वार्तालाप कर रहे थे।

"तो एग्लास्नी को तुमने कितने में खरीदा था ?" उसने पूछा।

"मुझे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी, पाँच हजार से कम नहीं। परन्तु कुछ भी हो मैं उसके लिए निश्चिन्त हूँ। मुझे कहना पड़ता है कि उसके बच्चे कितने अच्छे हैं !"

"वे दौड़ते हैं ?" सेरपुखोव्स्कोय ने पूछा।

"खूब अच्छी तरह। उस दिन उसके बछेड़े ने तीन इनाम जीती थीं : तुला में, मास्को में, और पीटर्सबर्ग में। वह वोयकोव के 'कृष्ण'

के साथ भी दौड़ा था ! उस शैतान कोचवान ने उसकी चाल बिगाड़ दी नहीं तो वह दूसरे घोड़े को झंडी से भी पीछे छोड़ जाता।"

"वह थोड़ा सा हरा है। उसमें डच रक्त जरा ज्यादा मालूम पड़ता है–मेरी तो यही राय है।" सेरपुखोव्स्कोय ने कहा।

"परन्तु, घोड़ियों के बारे में क्या राय है ? मैं कल तुम्हें दिखाऊँगा। 'देव कन्या' के मैंने तीन हजार दिए थे और दो हजार 'कोमल महिला' के।"

और मेजवान ने फिर अपनी चीजों को गिनाना शुरु कर दिया। मेजवानिन ने देखा कि सेरपुखोव्स्कोय के लिए यह दुखदायी हो रहा है और यह कि वह सुनने का सिर्फ बहाना कर रहा है।

"आप और चाय लेंगे ?" उसने मेजवान से पूछा।

"नहीं," मेजवान ने कहा और बातें करता गया। वह उठी; मेजवान ने उसे रोका, अपनी भुजाओं में भर लिया और चुम्बन लिया।

सेरपुखोव्स्कोय ने जैसे ही उनकी तरफ देखा तो उनकी खातिर जबरदस्ती मुस्कराने लगा जो बिलकुल अस्वाभाविक था, परन्तु जब मेजवान उठा और मेजवानिन को अपनी भुजाओं में भरे दरवाजे के पास ले गया तो नितिका का चेहरा अचानक बदल गया। उसने गहरी सांस ली, और उसके फूले हुए चेहरे पर अचानक निराशा का भाव झलक उठा। उसमें घृणा का भाव भी झलक रहा था।

मेजवान लौटा और मुस्कराता हुआ नितिका के सामने बैठ गया। कुछ देर तक वे लोग खामोश रहे।

"हाँ, तुम कह रहे थे कि तुमने उसे वायकोव से खरीदा था," बनावटी लापरवाही से सेरपुखोव्स्कोय ने कहा।

११.

"हाँ, मैं एग्लाहनी की बावत कह रहा था। मैं दुबोविस्की के

यहाँ से कुछ घोड़ियाँ खरीदना चाह रहा था, परन्तु उसके पास सिर्फ रद्दी माल रह गया था।"

"वह असफल हो गया..." सेरपुखोव्स्कोय बोला और एकाएक चुप हो गया और चारों तरफ देखने लगा। उसे याद आया कि उसे उस दिवालिए के बीस हजार रूबल देने हैं। अगर यह कहना पड़ता कि कोई दिवालिया हो गया था तो यह बात निश्चयपूर्वक उस के विषय में कही जा सकती है। वह हंसने लगा।

दोनों फिर बहुत देर तक खामोश बैठे रहे। मेजवान सोच रहा था कि अपने मेहमान से किस बात के विषय में डींग हांके। सेरपुखोव्स्कोय सोच रहा था कि क्या कहे जिससे यह साबित हो सके कि वह अपने को दिवालिया नहीं समझता। परन्तु दोनों को सोचने में परेशानी हो रही थी, यद्यपि वे लोग सिगारों की मदद लेते हुए प्रयत्न कर रहे थे।

"क्यों, पीने का समय कब होगा ?" सेरपुखोव्स्कोय सोच रहा था।

"मुझे खूब डट कर पीनी चाहिए वर्ना यह आदमी उबा कर मुझे मार डालेगा," मेजवान सोच रहा था।

"तुम यहाँ काफी अरसे तक ठहरोगे ?" सेरपुखोव्स्कोय ने पूछा।

"दूसरे महीने तक। अच्छा। अब खाना खाया जाय, क्यों ? फ्रिट्ज़, खाना तैयार है ?"

वे लोग भोजन-गृह में गए। वहाँ एक लटकते हुए लैम्प के नीचे एक मेज बिछी हुई थी जिस पर मोमबत्तियाँ और तरह तरह की अद्भुत वस्तुएँ सजी हुई थीं : रस निकालने वाली नलियाँ, कार्क लगी हुई छोटी छोटी गुड़ियाँ, काँच के बर्तनों में अलभ्य मदिरायें, अजीब भूख को बढ़ाने वाले पदार्थ, और वोदका आदि। उन्होंने थोड़ी सी शराब पी, खाया, फिर थोड़ी और पी, थोड़ा और खाया और बातें होने लगीं। सेरपुखोव्स्कोय खिल उठा और बिना झिझक के बातें करने लगा।

उन्होंने औरतों की बातें कीं कि किस ने इसे रखा था या उसे, एक जिप्सिन को, गाने वाली को या एक फ्रांसीसी औरत को।

"और तुमने उस मेट्टी को छोड़ दिया?" मेजवान ने पूछा।

यह वही रखैल औरत थी जिसने सेरपुखोव्स्कोय को बर्बाद कर डाला था।

"नहीं, उसने मुझे छोड़ दिया। आह, मेरे भाई, अब मैं सोचता हूँ कि मैंने अपनी जिन्दगी में कितना नाली में बहा दिया। अब मैं खुश हूँ, सचमुच उस समय जब मेरे पास हजार रूबल हैं और हरेक से दूर हो जाने से प्रसन्न हूँ। मैं मास्को में इसे सहन नहीं कर सकता था। लेकिन ये बातें करने से क्या फायदा।"

सेरपुखोव्स्कोय की बातें सुनते सुनते मेजवान ऊब उठा। वह अपने बारे में बातें करना चाह रहा था–डींग हांकना। परन्तु सेरपुखोव्स्कोय भी अपने बारे में बातें करना चाहता था, अपने शानदार बीते हुए जीवन के बारे में। मेजवान ने उसके गिलास में शराब उंड़ेली, और इन्तजार करने लगा कि वह चुप हो जिससे कि वह अपने बारे में और इस बारे में कह सके कि अब उसने अपनी घुड़साल का प्रबन्ध इतना सुन्दर कर रखा है जैसा किसी ने कभी भी नहीं कर पाया था, और यह कि उसकी मेरी उसे हृदय से प्रेम करती है न कि केवल उसके धन की खातिर।

"मैं तुम्हें यह बताना चाहता था कि मेरी घुड़साल में......" उसने कहना प्रारम्भ किया परन्तु सेरपुखोव्स्कोय ने उसे टोक दिया।

"मैं कह सकता हूँ कि वे भी दिन थे," सेरपुखोव्स्कोय ने कहना प्रारम्भ किया, "जब मैं ऐश के साथ रहना पसन्द करता था और जानता था कि कैसे रहा जाता है। अब तुम घोड़ों की चाल के विषय में बातें करते हो–बताओ तुम्हारा सबसे तेज घोड़ा कौन सा है?"

मेजवान, इस बात से खुश होकर कि उसे अपनी घुड़साल के

विषय में बातें करने का मौका मिला है, बताना शुरू कर रहा था कि सेरपुखोव्स्कोय ने उसे फिर टोक दिया।

"हाँ, हाँ," वह बोला, "तुम पालने वाले लोग इस काम को सिर्फ अहंकार वश करते हो, आनन्द के लिए नहीं और न जीवन की पूर्णता के लिए ही। परन्तु मेरे करने का तरीका यह नहीं था। मैं तुमसे अभी कुछ देर पहले कह रहा था कि एक बार मेरे पास एक घोड़ा था, चितकबरा, बिल्कुल वैसे ही निशानों वाला जैसे पर कि तुम्हारा वह आदमी सवार था। ओह, कैसा घोड़ा था! तुम नहीं जान सकोगे: यह सन् १८४२ की बात है। मैं अभी मास्को में आया था। वहाँ एक घोड़े के व्यापारी के पास गया और मैं क्या देखता हूँ कि एक चितकबरा खस्सी घोड़ा खड़ा है। उसमें सब अच्छे लक्षण थे। और कीमत? एक हजार। वह मेरी पसन्द का था। मैंने उसे खरीद लिया और सवारी करनी शुरू करदी। मेरे पास कभी नहीं रहा और तुम्हारे पास भी नहीं है और न कभी हो सकेगा—उस जैसा घोड़ा। मैंने सवारी, ताकत और खूबसूरती के लिहाज से इतना अच्छा घोड़ा कभी भी नहीं देखा। तुम उस समय बच्चे थे इसलिए तुम्हें मालूम नहीं परन्तु मैं सोचता हूँ तुमने सुना जरूर होगा। सारा मास्को उसे जानता था।"

"हाँ, उसके विषय में मैंने सुना हैं," मेजवान ने अनिच्छापूर्वक उत्तर दिया, "परन्तु मैं तुम्हें अपने घोड़ों के बारे में बताना चाह रहा था..."

"आह, तुमने सुना था! मैंने उसे जैसा वह था वैसे ही खरीद लिया था, बिना वंश का पता लगाए और बिना किसी सार्टीफिकेट के। मुझे उसके बारे में पता तो बाद में चला था। वोयकोव और मैंने मिल कर खोज की थी। वह 'सज्जन प्रथम' का बेटा था, वे उसे 'पवन वेग' कहते थे क्योंकि वह लम्बी डग भरता हुआ तेज दौड़ता था। अपने चितकबरे धब्बों के कारण उसे खेनोव की घुड़साल से हटा कर प्रधान-

साईस को दे दिया गया था जिसने उसे खस्सी बना कर एक व्यापारी को बेच दिया। आजकल ऐसे घोड़े नहीं रहे, बच्चू। आह, वे दिन थे! आह, बीती हुई जवानी!" उसने एक जिप्सी गीत की कड़ी गाई। उस पर नशा चढ़ने लगा था। "आह, वे दिन कितने अच्छे थे। मैं पच्चीस साल का था और अस्सी हजार रूबल सालाना की मेरी आमदनी थी। मेरा एक भी बाल सफेद नहीं हुआ था। मेरे सारे दाँत मोती की तरह चमकते थे। जिस काम में मैंने हाथ डाला, सफलता मिली—और यह सब समाप्त हो गया है।"

"हाँ, उस समय घोड़े इतने फुर्तीले नहीं थे," उस क्षणिक चुप्पी का लाभ उठाते हुए मेजवान ने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरे पहले बछेड़ों ने उसी समय चलना प्रारम्भ कर दिया था जब वे सिर्फ···"

"तुम्हारे घोड़े! परन्तु वे ज्यादा तेज थे···"

"कैसे ज्यादा तेज थे?"

"ज्यादा फुर्तीले थे। मुझे यह सब इस तरह याद है जैसे कि अभी की बात हो। मैं इस चितकबरे को साथ लेकर दौड़ में हिस्सा लेने के लिए मास्को से चला। मेरा कोई भी घोड़ा नहीं दौड़ रहा था। मैं दौड़ने वालों को पसन्द नहीं करता। मेरे पास ऊँची नस्ल के घोड़े थे: जनरल, कोलियर, मुहम्मद। उस चितकबरे को मैं गाड़ी में जोतता था। मेरा कोचवान बहुत अच्छा आदमी था; मैं उसे प्यार करता था। परन्तु वह भी पीने लगा। खैर, तो मैं घुड़दौड़ के मैदान में पहुँचा।"

"सेरपुखोव्स्कोय," वे मुझसे कहते हैं, "तुम दौड़ने वाले घोड़ों क अपना अस्तबल कब बनाओगे?" इन मूर्खों से शैतान समझे। मैंने उनसे कहा, मेरे पास एक चितकबरा घोड़ा है जो तुम्हारे सब घोड़ों को पछाड़ देगा।' 'ओह नहीं, नहीं पछाड़ सकता।' 'मैं एक हजार की शर्त लगाता हूँ।' हमने शर्त बदी और दौड़ होने लगी। उसने उन्हें पाँच सैकिन्ड में हरा दिया; मेरे लिए एक हजार रूबल की शर्त जीती। परन्तु यह कुछ

भी नहीं है ! मैंने तीन घन्टे में तीन तेज घोड़ों द्वारा छयासठ मील तय किये थे । सारा मास्को जानता है ।"

और सेरपुखोव्स्कोय ने लगातार और इस सफाई से झूठ बोलना शुरू कर दिया कि मेजबान को बीच में एक भी शब्द कहने का मौका नहीं मिला और वह मुँह लटकाए सामने बैठा रहा और रह रह कर दोनों के गिलासों में शराब डालता रहा, अपना ध्यान बटाने के लिए ।

पौ फटने लगी थी । परन्तु वे फिर भी बैठे रहे । मेजवान बुरी तरह ऊब उठा था । वह उठ खड़ा हुआ ।

"अगर सोना है तो सोने के लिए चला जाय," सेरपुखोव्स्कोय ने उठकर लड़खड़ाते हुए कहा और जोर से धुंआ फेंकता हुआ अपने कमरे की तरफ चल दिया ।

मालिक अपनी प्रेमिका के साथ बिस्तर पर लेट गया ।

"नहीं, उसे सहन नहीं किया जा सकता," उसने कहा । "वह पी लेता है और लगातार बके चला जाता है ।"

"और मेरी तरफ ध्यान देता है ।"

"मुझे भय है कि कहीं पैसे न माँगने लगे ।"

सेरपुखोव्स्कोय अपने बिस्तर पर पूरे कपड़े पहने लेटा था और धुंए के गुब्बारे छोड़ रहा था ।

"देखो, मैंने कितना झूंठ बोला," उसने सोचा, "खैर, कोई बात नहीं । शराब अच्छी थी, परन्तु वह बदजात सूअर है । उसके व्यवहार में ओछापन है । और मैं भी एक गन्दा सूअर हूँ," उसने अपने आप से कहा और जोर से हँस पड़ा । "पहले मैं औरतें रखा करता था और अब मुझे रखा जाता है । हाँ, विन्कलर की लड़की मुझे रखे हुए है । मैं उससे रुपये लेता हूँ । उसकी ठीक सेवा होती है । फिर भी, तुम्हें कपड़े उतार देने चाहिए । परन्तु तुम अपने बूट कभी भी नहीं उतार सकोगे ।" "ए, कोई है !" उसने जोर से पुकारा परन्तु वह

आदमी जो उसकी सेवा के लिए नियुक्त किया गया था बहुत पहले ही सोने चला गया था।

वह उठ कर बैठ गया, अपनी जाकेट और वास्कट उतारी और किसी तरह अपनी पतलून से भी बाहर निकल आया; परन्तु जहाँ तक बूटों का सम्बन्ध था, वह बहुत देर तक उन्हें नहीं उतार सका—उसकी तोंद बीच में अड़ जाती थी। किसी तरह उसने एक बूट उतार लिया, दूसरे से वह झगड़ता रहा, झगड़ता रहा, हाँफ गया और पूरी तरह पस्त हो गया। और इस तरह एक पैर बूट में फंसाए वह लम्बा पड़ गया और खर्राटे भरने लगा और सारा कमरा तम्बाखू, शराब और बुढ़ापे की दुर्गन्ध से भर उठा।

१२.

अगर 'पवन वेग' ने उस रात को कुछ सोचा भी तो वास्का ने उसे परेशान कर डाला। उसने उस पर एक कम्बल डाला और उसे भगाता ले गया और एक सराय के दरवाजे पर, एक किसान के घोड़े के पास उसे सुबह तक खड़ा रखा। उन घोड़ों ने एक दूसरे को चाटा। सुबह जब पवन वेग झुंड में वापस लौटा तो अपने को बराबर रगड़ता रहा।

"बुरी तरह खुजली मच रही है," उसने सोचा।

पाँच दिन गुजर गए। उन्होंने एक पशुओं के डाक्टर को बुलाया जिसने खुश होकर कहा :

"यह खुजली है, उसे जिप्सियों को बेच देने दो।"

"क्या फायदा? उसका गला काट दो और यह काम आज ही हो जाना चाहिए।"

प्रभात निर्मल और शान्त था। झुंड चरागाह को चला गया परन्तु 'पवन वेग' को पीछे छोड़ दिया गया। एक विचित्र आदमी आया,

"शायद मुझे दवाई देना चाहता है-अच्छा, देने दो !" उसने सोचा।

और दरअसल उसने अनुभव किया कि उसके गले को कुछ कर दिया गया है। इसमें तकलीफ हुई। वह कांपा और एक पैर से उसने लात मारी परन्तु अपने को रोक गया और इन्तजार करने लगा कि देखें अब क्या होता है···फिर उसने अनुभव किया कि कोई पतली सी चीज़ उसकी गर्दन और छाती पर बहती चली जा रही है। उसने एक खूब गहरी सांस ली और पहले से अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगा।

उसके जीवन का सारा भारीपन हल्का हो गया।

उसने आँखें बन्द कर लीं और सिर नीचे की तरफ झुकाता गया। उसे कोई भी नहीं पकड़े हुए था। फिर उसकी टांगें कांपी और उसका सारा शरीर लड़खड़ाने लगा। वह इतना भयभीत नहीं हुआ जितना कि उसे आश्चर्य हुआ।

हर चीज उसके लिए इतनी नई सी थी। उसे आश्चर्य हुआ और वह आगे और पीछे भागने की कोशिश करने लगा परन्तु इसमें सफलता पाने के स्थान पर उसकी टांगें लड़खड़ाईं, कांपी और वह एक तरफ को घुटनों के बल झुकता चला गया और जैसे ही उसने कदम आगे बढ़ाने की कोशिश की वैसे ही आगे गिरा और बांयीं बगली से जमीन पर लम्बा हो गया।

बधिक ने इन्तजार किया जब तक कि उसकी सांस बन्द न हो गई। उसने कुत्तों को दूर भगाया जो नजदीक खिसक आए थे, घोड़े की टांगें पकड़ीं, उसे पीठ के बल चित किया, वास्का से एक टांग पकड़ने को कहा और उसकी खाल उतारने लगा।

"यह भी एक घोड़ा था," वास्का ने कहा।

"अगर उसे अच्छी खुराक दी जाती तो चमड़ा अच्छा होता।" बधिक ने कहा।

घोड़ों का झुण्ड शाम को पहाड़ी की तलहटी में वापस आया और उन्होंने जो बांयी तरफ थे, नीचे की तरफ कुछ लाल सी चीज देखी जिसके चारों तरफ कुत्ते व्यस्त थे और ऊपर गिद्ध और कौए मँडरा रहे थे। उनमें से एक कुत्ते ने लाश पर पंजे जमा कर और सिर को झटका देते हुए, एक कड़क की सी आवाज के साथ उस चीज को तोड़ लिया जिसे वह पकड़े हुए था। भूरी बछेड़ी रुक गई। उसने अपनी गर्दन और सिर आगे को निकाला और देर तक हवा को सूंघती रही। वे बड़ी मुश्किल से उसे वहाँ से हटा सके।

एक हफ्ते बाद एक लम्बा चौड़ा हड्डियों का ढाँचा और दो कन्धों की हड्डियाँ उस ईंटों के भट्टे के पीछे पड़ी रह गईं, बाकी की सब ले जाई जा चुकी थीं। गर्मियों में हड्डियाँ इकट्ठी करने वाला एक किसान आया और उन सब हड्डियों को उठा ले गया और काम में ले आया।

सेरपुखोव्स्कोय की लाश, जो धरती पर खाती पीती और घूमती रही थी, इसके बहुत दिनों बाद जमीन में गाड़ी गई। न तो उसका चमड़ा, न उसका गोश्त और न उसकी हड्डियाँ किसी भी काम में आ सकीं।

बहुत दिनों से किसी को भी उसकी जरूरत नहीं रही थी और वह सिर्फ एक भार बना हुआ था परन्तु फिर भी उन मुर्दों ने, जो मुर्दे को दफना रहे थे, यह जरूरी समझा कि उस फूली हुई लाश को, एक नए अच्छे बने हुए कफन में रख दें। फिर इस नए कफन के बक्स को शीशे के दूसरे बक्स में रखें और उसे मास्को भेज दें और वहाँ पुरानी हड्डियों को खोद कर उसी जगह इस सड़ती हुई लाश को, दफना दें और फिर इस सारे काम पर मिट्टी डाल दें।

॥ इति शुभम् ॥

मुद्रकः—ला० रमेशचन्द्र अग्रवाल, सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस, मथुरा।